विक्रमादित्य वीरगाथा

पुस्तक २

राष्ट्रीय बेस्टसेलर श्रृंखला

मेरु पर षड्यंत्र की साजिश

मेरु

शत्रुजीत नाथ

VIKRAMADITYA VEERGATHA

BOOK 2

THE CONSPIRACY AT MERU

NATIONAL BESTSELLING SERIES

SHATRUJEET NATH

JAICO PUBLISHING HOUSE

Ahmedabad Bangalore Bhopal Chennai
Delhi Hyderabad Kolkata Lucknow Mumbai

[illegible], [illegible]-2 [illegible], 7-[illegible] [illegible], [illegible], [illegible] - 400 001, jaicopub@jaicobooks.com, www.jaicobooks.com

© Shatrujeet Nath

VIKRAMADITYA VEERGATHA: BOOK 2

THE CONSPIRACY AT MERU

ISBN 978-81-8495-887-4

[illegible]: 2016

[illegible] ([illegible]): 2021

[illegible],
[illegible], [illegible], [illegible]
[illegible], [illegible]

मेरे पुराने दोस्तों को: मनोज, विजी, हरि, पीके, राजा, संतोष, शंकर, सुरेश और पॉल। ईश्वर करे हम हमेशा अपने पापों से एक कदम आगे रहें।

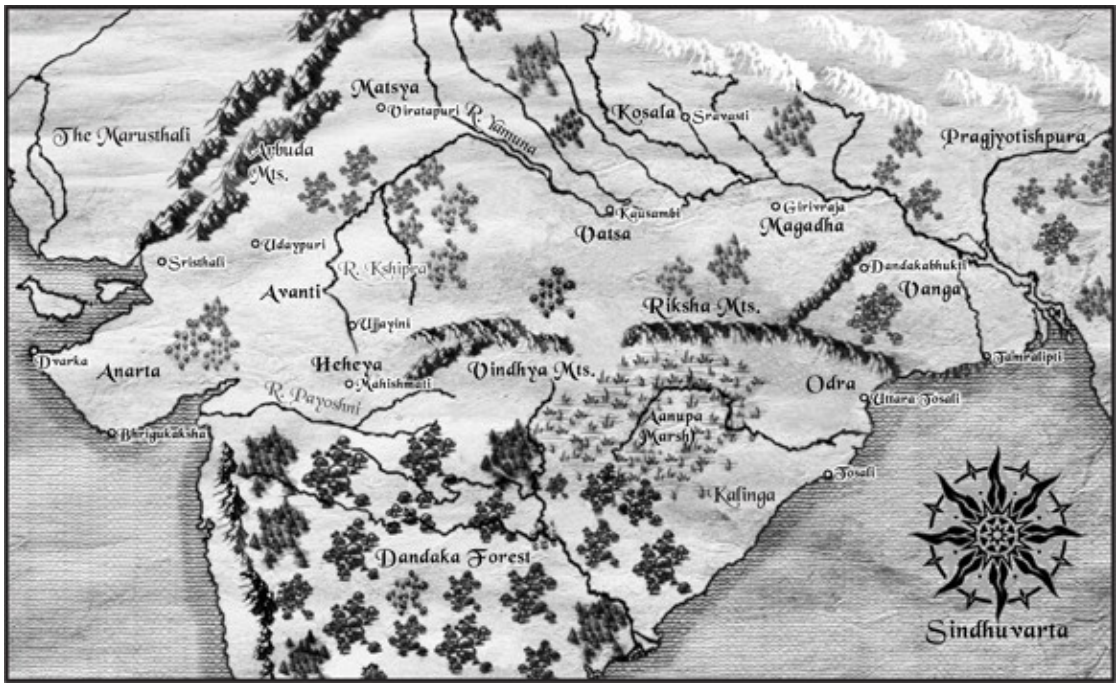
Matsya
Virataputri
R. Yamuna
Kosala
Sravasti
The Marusthali
Arbuda Mts.
Pragjyotishpura
Kausambi
Girivraja
Magadha
Vatsa
Udayapuri
Sristhali
R. Kshipra
Dandakabhukti
Avanti
Vanga
Riksha Mts.
Ujjayini
Dvarka
Anarta
Heheya
Vindhya Mts.
Tamralipti
Mahishmati
Odra
R. Payoshni
Uttara Tosali
Lamupa Marsh
Bhrigukaksha
Tosali
Kalinga
Dandaka Forest
Sindhuvarta

□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□

(□□□□□□□□ □□□□ □□□)

□□□□□□□

□□□□□ □□ □□□□□□□□□

□□□□□□□□	□□□□□ □□ □□□□□□□□
□□□□ □□□□□□	□□□□□ □□ □□□□□□
□□□□□□□□□□	□□□□□□□□□ □□ □□□□□□
Aparupa	girl in Udaypuri
□□□□□□□□	□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□
□□□□□□□□	□□□□ □□ □□□□
Chirayu	□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□
Dhanavantri	□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□
Ghatakarpara	□□□□□ □□ □□□□□□; □□ □□□□□ □□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□
□□□□□□□□	□□□□□ □□ □□□□□□
□□□□	□□□□□□ □□ □□□□□□
Kshapanaka	□□□□□ □□ □□□□□□; □□□□ □□ □□□ Vishakha
□□□	□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□□□□
Mahendraditya	□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□; □□□□ □□□□□□□□□□□□□, □□□□□□ □□ □□□□□□□
□□□ □□□□□	□□□□ □□ □□□□; □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□
Pralupi	□□□□□□□□□□□□ □□ □□□; □□□□□□□□ □□ □□□
Satyaveda	□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□
□□□□	□□□□□ □□ □□□□□□; □□ □□□□

	[illegible]
Udayasanga	[illegible]
Upashruti	[illegible]
	[illegible]
Ushantha	[illegible]
	Mahendraditya
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
	[illegible]
Vetala Bhatta	[illegible]
[illegible]	[illegible]
Vishakha	[illegible]

[illegible]

[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
Daipayana	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
Shoorasena	[illegible]
	Siddhasena
Siddhasena	[illegible]
[illegible]	[illegible]

[illegible]

[illegible]

Himavardhan	[illegible]
Shashivardhan	[illegible]
[illegible]	[illegible]

[illegible]

[illegible]	[illegible]

□□□□□□□□

□□□□□□□ □□□□□□□□□

□□□□□□

□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□

□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□

Harihara

□□□□□□□ □□ □□□□□; □□□□□□ □□ □□□□□□□

□□□□□□□

□□□□□□□□ □□ □□□□□□□

□□□□□□□□

□□□□□□□ □□ □□□□□

□□□□□□□ □□□□□□□□□□

□□□□□

□□□□□□□ □□ □□□□□; □□□□□□ □□ □□□□□□□

□□□□□□□□ □□□□□□□□

□□□□□□□

□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□

Yugandhara

□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□; □□□□□□ □□ □□□□□□□

□□□□□□ □□□□□□□□

Sudasan

□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□

□□□□□□

□□□□□□

□□□□□□□ □□ □□□□□□-□□□□□□□□ □□ □□□□□□□

Brihaspati

□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□

□□□□□□

□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□; □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□

Gandharvasena

□□□□ □□

□□□□□□

□□□□□□ □□ □□□□□□□; □□□□□□□ □□ □□□□□

□□□□□

□□□□□□ □□ □□□□□□

□□□□□□

□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□

□□□□

□□□□□□□ □□ □□□□□□□

□□□□□□

□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□

□□□□□□□□

□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□; □□□□□□□□ □□□□

□□□□□□

Shachi

□□□□□□ □□ □□□□□□; □□□□□ □□ □□□□□

□□□□□□□

□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□

□□ □□□□□

[illegible]	[illegible] [illegible] [illegible]
Urvashi	[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]	asura general; son of Shukracharya
Andhaka	[illegible] [illegible]
Chandasura	asura general; son of Shukracharya
[illegible]	[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
Hiranyaksha	[illegible] [illegible] [illegible]; [illegible] [illegible]
[illegible]	[illegible] [illegible]; [illegible] [illegible] [illegible]
Shukracharya	[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible]	[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]	[illegible]-[illegible]
[illegible]	[illegible] [illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible] [illegible]

[illegible]

([illegible])

[illegible]	[illegible]
agnikantaka	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
badi-maa	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
danava	[illegible]
Dasa-Mahavidyas	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
gurudev	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
kamandalam	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible] [illegible]	[illegible]
mahisha	[illegible]
[illegible]	[illegible]

	□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□ □□□□□□□
modaka	□□ □□□□□ □□□□□□□
□□□□□	□□□□□
□□□□	□□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□
□□□□□□□□	□□ □□□□□□□□ □□□□□□□
□□□□	□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□
□□□□□□□	□□□□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□
parijata	□□□□□□ □□□□□□
peepal	□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□
pishacha	□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□
pranaam	□□□□□□□□
□□□□□ □□□□□	□□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□
	□□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□□□□ □□□□□□□
□□□□-□□□□□	□□□□□ □□□□□□□; □□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□
□□□□□□□	□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□□
sambrani	□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□
□□□□□□□	□□□□□□□ □□ □□□□□□□
samsaptaka	□□□□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□ □□□□□□□
shrikhand	□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□
□□□□	□□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□
suvarnaka	□□□□□□□ □□□□□ □□□□□
□□	□□□□; □□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□
□□□□□□□	□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□
vaidyanath	□□□□□□□□□; □□□□ □□ □□ □□□□□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□
vajra / vajrayudha	□□□□□□□□; □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□
□□□□□□□□□□	□□ □□□□□□□□ □□□□□□
□□□□□	□□ □□□□□□□□ □□□□□□

अंतर्वस्तु
ढकना
शीर्षक पेज
प्रमुख पात्रों की सूची
भारतीय शब्दावली
धुआँ
संदेशों
वादा
उपहार
बहन की
खाना
तितलियों
अमरावती
भाई बंधु।
क्योंकि
प्रस्ताव
सपने
Dvarka
Udayasanga
बेड़ा
अही
यक्ष
नर-सिंह
घास का मैदान

Aparupa
गठबंधन
युद्धविराम संधि
मेरु
घुड़सवार
Gandharvasena

धुआँ

वह धुएं में लड़खड़ाता हुआ चल रहा है, मुश्किल से सांस ले पा रहा है, मानो मुश्किल से ही जीवित है।
धुआँ हर तरफ फैला हुआ है। धुएं के घने गुबार उसे घेर रहे हैं, उसे दबा रहे हैं। ऊपर का आकाश धुंधला रहा है, नीचे की ज़मीन अस्पष्ट दिखाई दे रही है।
उसकी आँखों में जलन हो रही है। गले में अटक रहा है। नाक को जकड़ रहा है।
मानो उसे खत्म करने के तरीके ढूंढ रहा हो।
गर्म। तीखी गंध। जलती हुई लकड़ी की महक से भरा हुआ। और जले हुए मांस की दुर्गंध से भी।
उसके मन में कहीं न कहीं यह बात घर कर गई है कि उसे यहाँ होना ही नहीं चाहिए था। उसे मौका मिलते ही भाग जाना चाहिए था। लेकिन अब इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। वह यहीं है, धुएँ में। इसलिए वह घुटता-घुटता हुआ, धूसर-सफेद धुएँ के दम घोंटते हुए, आगे बढ़ता रहता है। अंधा, पर बहरा नहीं।
एक महिला की चीख, भय से भरी और तीखी, धुएं के बीच गूंज उठी। लेकिन एक दूसरी आवाज़ ने उसे लगभग तुरंत ही शांत कर दिया - धीमी लेकिन अधिक भयावह - मांस और हड्डी से टकराती हुई कुल्हाड़ी की गड़गड़ाहट।
तीखे धुएं ने उसे जकड़ लिया और वह घुटनों के बल गिर पड़ा, उसकी त्वचा नीचे की पथरीली बजरी से रगड़ खा रही थी। वह एक पल के लिए अनिश्चित रूप से

डगमगाया, उसका एक हिस्सा धुएं के आलिंगन में समा जाना चाहता था। लेकिन एक दूसरा, अधिक दृढ़ हिस्सा था जो आगे बढ़ना चाहता था। यही वह हिस्सा था जो जानना चाहता था - जानना ज़रूरी था - कि क्या हो रहा है; यही वह हिस्सा था जिसने उसे आग और धुएं में धकेल दिया और उसे भागने से रोक दिया।
खांसते और खर्राटे लेते हुए, वह खुद को चारों हाथों-पैरों के बल आगे बढ़ने के लिए मजबूर करता है।
उसके आसपास चीख-पुकार धीरे-धीरे कम होती जा रही थी। भागते कदमों की गड़गड़ाहट भी थम गई थी, हालांकि उसे दूर से किसी के आदेश देने का आभास हो रहा था। वह आगे बढ़ता रहा, जगह-जगह खून से लथपथ ज़मीन पर खुद को घसीटता हुआ। एक पल ऐसा आया जब उसका हाथ किसी ठंडी और मांसल चीज़ को छू गया – एक आदमी का हाथ, कंधे से नीचे कटा हुआ, खून अभी भी चिपचिपा था और ऊतक और हड्डी के खुले हुए टुकड़े के आसपास जमा हुआ था। उसका पेट बुरी तरह से हिलने लगा, लेकिन मतली से लड़ते हुए वह आगे बढ़ता रहा।
वह धुएं से निकलकर एक चौड़े, कीचड़ भरे रास्ते पर आ पहुँचता है। रास्ता पूरी तरह से धुएं से मुक्त नहीं है, लेकिन जिस जगह से वह अभी निकला है, उससे कहीं बेहतर है। लड़खड़ाते पैरों पर खड़ा होकर वह सड़क के बीचोंबीच कमर झुकाकर खड़ा हो जाता है और गहरी साँसें लेता है। हर साँस उसके लिए एक संघर्ष है, चिंता से उसका पेट बुरी तरह सिकुड़ गया है। उसकी आँखों से आँसू लगातार बह रहे हैं।
धीमी, उथली सांसें लेते हुए, वह अपनी नम आंखों को पोंछता है, अपने मुंह और ठोड़ी से थूक और नाक से निकले बलगम को साफ करता है, और अपने आसपास के वातावरण का जायजा लेता है।
सड़क सुनसान है, बाईं ओर मुड़कर जंगल में चली जाती है। दाईं ओर, यह धुएं के हल्के-हल्के गुबार से ढके एक तटबंध की ओर ऊपर उठती है। तटबंध के उस पार से धीमी-धीमी आवाज़ें सुनाई देती हैं।
वह रुककर सुनने लगता है। हवा की दिशा में अचानक बदलाव आता है, और उसे तटबंध की ओर से और भी दर्द भरी चीखें सुनाई देती हैं।
धुएं के गुबार से ठीक बाहर, रास्ते के किनारे से चिपके हुए, वह चुपके से तटबंध की ओर बढ़ता है।

लगभग शिखर पर पहुँचकर, वह घुटनों के बल बैठ जाता है, फिर पेट के बल लेट जाता है और बाकी का रास्ता रेंगते हुए नीचे गड्ढे जैसी आकृति में सावधानीपूर्वक झाँकता है।
धुएं के गुबार के बीच से उसे इस छोटी, घाटीनुमा इमारत में आधा दर्जन इमारतें दिखाई देती हैं। एक को छोड़कर बाकी सभी आग की लपटों में घिरी हैं। भाले लिए सैनिक हथकड़ियों में जकड़े चार लोगों को एक बची हुई इमारत - एक अनाज भंडार - में धकेल रहे हैं। हालांकि वह उन्हें स्पष्ट रूप से नहीं देख पा रहा है, लेकिन तीन कैदी महिलाएं हैं, जो विलाप कर दया की भीख मांग रही हैं। चौथा व्यक्ति, एक पुरुष, ऐसा प्रतीत होता है कि बोलने की शक्ति पूरी तरह खो चुका है।
तटबंध के पास, एक आदमी घोड़े पर सवार होकर सैनिकों को देख रहा है। घुड़सवार की पीठ तटबंध की ओर है, उसका चेहरा दिखाई नहीं दे रहा है। लेकिन उसकी शारीरिक बनावट, उसके काठी पर बैठने का तरीका, उसके बाएं कंधे का हल्का झुकाव, कुछ जाना-पहचाना सा लगता है...
सैनिकों ने अपने भयभीत कैदियों को अनाज भंडार में धकेल दिया और उनके पीछे दरवाजा बंद कर दिया, जिससे वे अंदर ही बंद हो गए। घुड़सवार के इशारे पर, एक सैनिक ने जलती हुई मशाल ली और अनाज भंडार में आग लगा दी।
तटबंध के ऊपर लेटे हुए, अनाज भंडार को आग की चपेट में आते और जलते हुए देखते हुए, भय से उसका गला सूख रहा था, उसे अब यह जानने की जरूरत नहीं थी कि क्या हो रहा है।
उसे पता है।
उसने बहुत कुछ देख लिया है। पकड़े जाने से पहले भाग निकलने का समय आ गया है।
उसके पीछे अचानक एक चीख गूंजती है, जिसके बाद और भी चीखें और गालियां सुनाई देती हैं, और पैरों की धमक सुनाई देती है।
बहुत देर हो चुकी है। वह मिल चुका है। अब भागने या छिपने की कोई जगह नहीं है।
इतना भयभीत कि हिल भी नहीं पा रहा था, अब पकड़ और मौत निश्चित थी, वह खाई में बेतहाशा घूर रहा था, तभी पास आते कदमों की भारी आहट सुनाई दी। वह

घुड़सवार को घूर रहा था, जो हल्के-हल्के घूमते धुएं में एक धुंधली सी आकृति जैसा लग रहा था।
चीख-पुकार की आवाज़ों से खिंचा चला घुड़सवार अपना सिर घुमाकर, कंधे के ऊपर से तटबंध की ओर देखता है। और फिर से, उस आदमी के बारे में कुछ – उसके काले घने बालों का लहराना, बिना ढके सिर का आकार, उसके कंधों की सहज और आत्मविश्वासी मुद्रा – एक स्मृति को जगा देती है, जो दूर और मायावी है, फिर भी अपनी निरंतरता में मोहक है।
उसे यह जानना होगा कि सवार कौन है।
बढ़ती हुई उत्सुकता के साथ, वह घुड़सवार के मुड़ने और उसकी ओर देखने का इंतजार करता है...

संदेशों

उज्जैनी के श्मशान घाट पर काम करने वाले लगभग दस लोगों के लिए वह एक और लंबा और नीरस दिन था। लगातार पाँच दिनों तक वे लकड़ियाँ जमा करते, चिताएँ बनाते और शवों को दफ़नाते रहे, फिर पुरानी चिताओं का मलबा हटाकर नई चिताएँ तैयार करते रहे। यह कठिन और कमरतोड़ मेहनत थी, और इससे अतीत के उन दिनों की असहज यादें ताज़ा हो जाती थीं, जब मरुस्थली के बर्बरों का सिंधुवर्त पर राज था और अवंती के मृतकों की चिताएँ महीनों तक जलती रहती थीं। इसलिए, हर दिन के अंत में, वे अपने थके-हारे, कालिख से सने शरीरों को घर ले जाते थे, इस उम्मीद में कि आज का दिन आखिरी हो। कि अगले दिन उज्जैनी से क्षिप्रा नदी के पार शवों को ले जाने वाली नावें न चलें।
फिर भी, उनके राज्य पर हुए तीनों हमलों में मारे गए लोगों का शव आता रहा, और उनके पीछे शोक मनाने वालों की भीड़ उमड़ती रही, जिनमें से कई तो अपने प्रियजनों की तरह ही भावहीन थे। तीसरे दिन तक, उन लोगों ने शवों की गिनती करना बंद कर दिया था जिन्हें वे ठिकाने लगाने में मदद कर रहे थे। वे बस अपना काम करते रहे, अपने चारों ओर फैली सारी विपत्ति के बावजूद भावहीन बने रहे।
उनके काम की प्रकृति को देखते हुए, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी कि पाँचवीं शाम को श्मशान घाट पर शुक्राचार्य की गठीली आकृति को देखकर वे लोग

अनजान रह गए। असुरों का महापुजारी सूर्यास्त से कुछ देर पहले वहाँ पहुँचा, लेकिन सीधे प्रकट होने के बजाय, वह श्मशान घाट के किनारे लगे कंटीले जंगल में मंडराता रहा और थके-हारे, निराश सेवकों को दिन का काम समाप्त करते हुए देखता रहा।
सूरज ढलने के बाद ही - और जब शोक मनाने वालों की भीड़ लगभग खत्म हो चुकी थी - वह धीरे-धीरे बाहर निकला, अपनी पैनी नज़र दाएं-बाएं घुमाते हुए, यह सुनिश्चित करने के लिए कि वह उस जगह पर अकेला है। फिर भी, उसने तब तक इंतज़ार किया जब तक कि अंतिम तीन सेवक अपने घर वापस नहीं चले गए, उसके बाद ही वह सुलगती चिताओं के बीच गया, जिनका धूसर धुआं नारंगी-गुलाबी सूर्यास्त को किसी भयानक अभिशाप की तरह धुंधला कर रहा था।
चिताओं के बीच से रास्ता बनाते हुए शुक्राचार्य अपने गंतव्य की ओर बढ़े – श्मशान घाट के बीचोंबीच खड़ा अकेला बरगद का पेड़। वह लंबा और पत्तों से भरा था, पर उम्र में अभी जवान था। उसकी हवाई जड़ें अभी उसके तने के चारों ओर बन रही थीं, जिनमें से अधिकतर पतली-पतली गुच्छेदार थीं, जो एक वयस्क व्यक्ति की कलाई से भी पतली थीं और हल्की हवा में झूल रही थीं। लेकिन उस पेड़ में एक अलग ही भव्यता थी। भव्यता से भी बढ़कर, उसमें एक शानदार पुराने पेड़ के रूप में विकसित होने की क्षमता थी – एक विशाल, बरगद के दादा के समान।
शुक्राचार्य के लिए, हालांकि, उस वृक्ष में एक अलग तरह की उम्मीद छिपी थी। पिछले चार दिनों में शायद ही कोई ऐसा क्षण रहा हो जब महायाजक के मन में वह वृक्ष सर्वोपरि न रहा हो। वह इस यात्रा के लिए बहुत उत्सुक थे, लेकिन मरुतों के हमले में हुई भारी क्षति के कारण उन्हें उज्जैन में ही रुकना पड़ा था – उनकी सेवाओं की बहुत मांग थी, शहर के हर कोने से घरों और आश्रमों से घायलों की देखभाल के लिए बुलावा और अनुरोध आ रहे थे। अंततः, उपचारक पर बोझ कम करने के लिए, सम्राट ने महल परिसर में एक अस्थायी आश्रम बनवाया, जहाँ घायलों को उपचार के लिए लाया जा सके।
हालांकि, इससे शुक्राचार्य की योजनाओं में और भी बड़ी बाधा उत्पन्न हो गई, और वे महल परिसर में ही बंध गए। लेकिन इस स्तर पर उज्जैन के नागरिकों की उपेक्षा करना उनके इरादों पर सवाल खड़े कर देता, जो एक अनुचित कदम होता।

इसलिए देवता ने विलंब सहन किया, देखभाल करते रहे और उचित समय की प्रतीक्षा करते रहे।
जब घायल लोगों की देखभाल करने के लिए कोई नहीं था, तब भी उन्हें रानी विशाखा की सेहत में हो रही प्रगति पर नजर रखने के लिए महल में ही रुकना पड़ा, जिसे एक शब्द में संक्षेप में कहा जा सकता है - उल्लेखनीय!
मरुतों के आक्रमण के बाद दूसरी सुबह, रानी को निषाद राज्य में बिताए अपने बचपन की यादें ताज़ा होने लगीं। उसी शाम तक, वह उज्जैनी महल में रहने के अपने हाल के अतीत के कुछ अंशों को जोड़कर याद करने लगीं। अगले दिन, उनकी याददाश्त इतनी सुधर गई कि वह क्षपणक और महारानी उपश्रुति को धुंधली यादों में ढले हुए लोगों के रूप में पहचानने लगीं - हालाँकि वह अभी भी उनके आपसी या अपने रिश्ते को स्पष्ट नहीं कर पाई थीं। कुछ घंटों बाद, वह दो साल में पहली बार अपने शयनकक्ष से लंगड़ाते हुए बाहर निकलीं और महल की दीर्घाओं में धीरे-धीरे चलने लगीं, कुछ कमरों को उत्सुकता से देखती रहीं और कुछ यादों को देखकर हल्के उत्साह से इशारा करने लगीं।
शुक्राचार्य विशाखा के तेजी से स्वस्थ होने को देखकर स्तब्ध रह गए थे। इस गति से, वे जानते थे कि जल्द ही रानी की स्थिति पूरी तरह बिगड़ जाएगी, जिससे वे चिंतित हो गए। इसका अर्थ था विक्रमादित्य पर उनका नियंत्रण खोना, और वीषाद के छुरे के मामले में मानव राजा पर उनकी पकड़ कमजोर पड़ जाना। राजा पर नियंत्रण पाने के लिए, विशाखा की स्थिति पर नियंत्रण रखना अत्यंत आवश्यक था।
वह समझ गया था कि रानी की प्रगति उस पुनर्जन्म मंत्र का प्रभाव थी जो उसने हलाहल के लिए मरुतों के आने वाली रात उज्जैनी पर किया था। अनजाने में ही, उस मंत्र ने पुनर्निर्माण का कार्य शुरू कर दिया था, विशाखा के मन के धुंधले हिस्सों को रोशन कर दिया था, उसकी स्मृति के अलग-थलग पड़े टुकड़ों के बीच संबंध स्थापित कर दिया था। इसलिए मुख्य पुरोहित ने इस प्रक्रिया को धीमा करने का प्रयास किया, जैसे पर्दा वापस खींच देना। उसे ठीक करने के बहाने, उसने काले मंत्रों का जाप किया और ऐसे जादू किए जिससे रानी के मन के भीतरी हिस्सों में फिर से अंधेरा छाने लगा। इसमें काफी मेहनत लगी, लेकिन इसके परिणाम दिखने लगे - पिछले दो दिनों में विशाखा की स्मृति में कोई नई बात नहीं जुड़ी थी।

प्रधान पुजारी ने यह भी सुनिश्चित किया था कि रानी अपना अधिकांश समय सोकर बिताए, सक्रिय रूप से सोचने में असमर्थ रहे, और स्पष्ट निर्देश दिए थे कि उसे नींद से परेशान न किया जाए।
यह जानते हुए कि विशाखा सूर्योदय से पहले नहीं जागेगी और महल में उसकी मौजूदगी का किसी को पता भी नहीं चलेगा, शुक्राचार्य ने श्मशान घाट जाने का साहस किया था। सावधानी से कदम बढ़ाते हुए, वह बरगद के वृक्ष की ओर बढ़ा और चारों ओर नज़र घुमाते हुए यह देखने लगा कि कहीं कोई उसे इस काम के लिए आते हुए देख तो नहीं रहा है।
शुक्राचार्य वृक्ष की फैली हुई घनी पत्तियों के नीचे आकर रुक गए, जहाँ बैंगनी आकाश के बीच गहरे रंग के पत्तों का एक समूह बिखरा हुआ था। वे वृक्ष के आधार पर खड़े होकर उसके तने और शाखाओं का बारीकी से निरीक्षण करने लगे, लकड़ी की हर छोटी दरार और विभाजन को ध्यान से देखने लगे। वे वृक्ष के चारों ओर चक्कर लगाते हुए उसकी जड़ों के आसपास की ज़मीन का निरीक्षण करने लगे, यह देखने के लिए कि कहीं हाल ही में खुदाई के कोई संकेत तो नहीं मिले हैं। उन्होंने खुरदरी, सख्त छाल पर हाथ फेरा, छिपी हुई दरारों और छिद्रों को महसूस करने की कोशिश की।
कुछ नहीं।
वह दो कदम पीछे हट गया और निराशा से पेड़ की ओर देखने लगा। उसके मन के किसी कोने में हमेशा से यह आशंका थी कि यह एक मूर्खतापूर्ण प्रयास है। दिल डूबते हुए उसने देखा कि उसकी आशंका सही साबित हो रही है।
लेकिन हड्डियों में कभी कोई गड़बड़ी नहीं थी। कभी भी कोई गड़बड़ी नहीं थी।
बरगद के वृक्ष में ही अंतहीन चिताओं के मैदान को सहारा मिलता है।
जिस रात उसने हड्डियों से खंजर के ठिकाने के बारे में सवाल पूछा था, उसी रात उसे जवाब मिल गया था। और उसके बाद लगातार चार रातों तक, चाहे उसने सवाल को किसी भी तरह से पूछा हो, जवाब वही रहा।
जी हाँ, वीषाद का खंजर उज्जैन में ही था। नहीं, देवताओं ने अभी तक उस पर अधिकार नहीं किया था। लेकिन खंजर महल में नहीं था। वह उस बरगद के वृक्ष में था जो अंतहीन चिताओं के मैदान को थामे हुए है।

हड्डियों में लिखी बातों के खिलाफ जो भी तर्क शुक्राचार्य को परेशान कर रहे थे, वे सब एक साथ उनके दिमाग में घूमने लगे। एक खंजर को पेड़ में इस तरह कैसे और कहाँ छिपाया जा सकता था कि वह गलती से भी न मिले? मानव राजा ने हलाहल को महल की सुरक्षा से मीलों दूर, एक सुनसान श्मशान घाट में बिना पहरे के क्यों छोड़ा? और राजा को क्या भरोसा था कि ऐसी छिपी हुई जगह को देव और असुर कभी नहीं खोज पाएंगे?
लेकिन हड्डियों में कभी कोई गड़बड़ी नहीं थी…
इंद्र और बृहस्पति के देवलोक में बैठकर कटार पर कब्ज़ा करने की साज़िश रचने का ख्याल आते ही शुक्राचार्य के मन में अचानक दृढ़ संकल्प जाग उठा। अश्विनी और मरुत भले ही हार गए हों, पर वे इंद्र को भली-भांति जानते थे और समझते थे कि इस पराजय से देवताओं का क्रोध और भड़क उठेगा। इंद्र पलटवार करना चाहेंगे और जब भी वे ऐसा करेंगे, तो संभवतः अवंती के लिए इसका परिणाम विनाशकारी होगा। वे ऐसा होने नहीं दे सकते थे, कम से कम तब तक तो नहीं जब तक वे कटार और बरगद के वृक्ष की पहेली को हल न कर लें।
अब समय आ गया था कि वह देवताओं का ध्यान खंजर से हटाकर किसी और चीज के बारे में सोचने पर मजबूर कर दे।
नए दृढ़ संकल्प के साथ, प्रधान पुजारी पास के चिता तक बारह कदम चलकर गए। अभी भी सुलग रही जलती हुई लकड़ियों के ढेर के पास झुककर, उन्होंने उसके आधार पर जमी गर्म राख को तब तक छाना जब तक कि उन्हें नीचे परत दर परत जमी हुई काली कालिख दिखाई न देने लगी। उन्होंने हथेली में थोड़ी सी कालिख उठाई और फिर पेड़ के पास लौटकर अपने घुटनों के बल बैठ गए। इसके बाद उन्होंने अपनी तर्जनी उंगली से धीरे-धीरे कालिख को जमीन पर फैलाना शुरू किया। उसने दृढ़ता से तीन पक्षियों की आकृतियाँ खींचीं और उन पर रेखाएँ और धब्बे बनाए, साथ ही वह मंत्रों का जाप करता रहा। फिर, आँखें बंद करके उसने उन अधूरी आकृतियों पर मुट्ठी भर मिट्टी छिड़क दी। पल भर में, पक्षियों के पंख काले हो उठे और वे सजीव हो उठे – तीन कौवे, अँधेरे में कालिख से सने धब्बे, बरगद के पेड़ की तलहटी में अपने पंख फड़फड़ाते हुए।
प्रधान पुरोहित ने हाथ बढ़ाकर कौवों को पुकारा। उनमें से दो कौवे उनके हाथ पर कूद पड़े, उनके पंजे उनकी कलाई और बांह में गड़ गए। उन्होंने उनसे कुछ

शब्द कहे, और वे अपने पंख फैलाकर ऊपर पत्तों में उड़ गए। शुक्राचार्य संतुष्ट मुस्कान के साथ उनके पीछे-पीछे उड़ते रहे। ये दोनों पक्षी उनके रक्षक बनेंगे, बरगद की रखवाली करेंगे। ये उन्हें तब सूचित करेंगे जब राजा
- या कोई और - फिर से उस वृक्ष में अनुचित रुचि दिखाएगा।
उसने अपना ध्यान तीसरे कौवे की ओर मोड़ा। जैसे ही उसने उसके इशारों का जवाब दिया और उसके हाथ पर बैठ गया, उसने उसके कान में फुसफुसाना शुरू कर दिया। ये निर्देश लंबे और विस्तृत थे, और कुछ समय बाद पक्षी हवा में उड़ गया और दक्षिण दिशा की ओर चल पड़ा।
अपने पैरों पर खड़े होकर शुक्राचार्य ने उस काली आकृति को रात के आकाश में विलीन होते देखा और उसके पीछे एक प्रार्थना भेजी। उस पक्षी को एक लंबा सफर तय करना था और वह असुर स्वामी हिरण्याक्ष के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण संदेश लेकर जा रहा था।
देवलोक पर पूर्वव्यापी हमला करने का संदेश।

* * *

आकाश अनिश्चित से भूरे रंग का था, जिसमें बिखरे हुए, आकारहीन बादलों के समूह थे जो हवाओं के कारण आपस में उलझते जा रहे थे। लेकिन धरती के करीब, हवा का नामोनिशान भी नहीं था, और सूरज न होने के बावजूद, सुबह की हवा गर्म और हल्की उमस भरी थी, जिसके कारण विक्रमादित्य, आचार्य और कालिदास उज्जैन की पूर्वी दीवार के ऊपर बने रास्ते पर टहलते हुए पसीने से तर हो गए।
वे शहर भर में चल रहे व्यापक मरम्मत कार्यों का निरीक्षण कर रहे थे। प्रतिदिन, लावा, भोजपुरी और यहाँ तक कि दूर विश्वपुरी शहरों से गाड़ियों का एक निरंतर प्रवाह उज्जैन के पुनर्निर्माण के लिए आवश्यक लकड़ी, पत्थर और रेत से लदा हुआ आ रहा था। बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए शहर के चारों ओर ईंट भट्टे, लोहारखाने और पत्थर तोड़ने के कारखाने खुल गए थे, और राज्य भर से बढ़ई, पत्थर मिस्त्री और ईंट बनाने वालों को बुलाया गया था। फिर भी, काम के लिए अनुभवी कारीगरों की कमी थी, और प्रगति धीमी थी।
शहर की प्राचीरों और चार मुख्य द्वारों की किलेबंदी में ज़रूरत से ज़्यादा जनशक्ति और सामग्री खर्च हो रही थी। एक लिहाज़ से देखा जाए तो यह ज़रूरी था और तर्कसंगत भी। अगर ये सुरक्षा व्यवस्था न होती, तो अश्विनी

घुड़सवार सेना पल भर में उज्जैन को तबाह कर देती; दीवारों और द्वारों ने देवताओं को रोके रखा था, जिससे उनका नुकसान शहर की बाहरी सीमाओं तक ही सीमित रहा। साथ ही, यह समझना भी आसान था कि आकाश से बिजली की तरह बरसने वाले राक्षसों के सामने दीवारें और द्वार टिक नहीं सकते। इसलिए, इनके रखरखाव की बुद्धिमत्ता पर अनकहा सवाल बना हुआ था, खासकर तब जब ये संसाधनों का इतना बड़ा बोझ थे।
“दीवार की अनदेखी करना हमारे लिए घातक सिद्ध होगा,” विक्रमादित्य ने पैदल मार्ग के उत्तर-पूर्वी कोने के पास रुकते हुए कहा। सम्राट का चेहरा उतरा हुआ था, उनकी आँखें क्रोधित थीं, जो उनके शहर और प्रजा की सुरक्षा से संबंधित सौ विचारों में डूबे उनके मन को प्रतिबिंबित कर रही थीं।
“मैं सहमत हूँ, विक्रम,” आचार्य वेताल भट्ट ने कोमल और आश्वस्त स्वर में उत्तर दिया, जब वे उस व्यक्ति को देख रहे थे जो कभी उनका शिष्य था और अब उनका राजा था। उन्होंने गौर किया कि पिछले एक सप्ताह में सम्राट कितने बूढ़े हो गए थे। “दीवारें किसी शहर की सबसे बड़ी रक्षा होती हैं। हम अपनी दीवारों को मजबूत करके सही कर रहे हैं।”
“फिलहाल, चांसलर सुदासन को ताम्रलिप्ति के चारों ओर कुछ मजबूत दीवारों की जरूरत है,” सम्राट ने अपनी मूंछों पर हाथ फेरते हुए विचारशील भाव से कहा। आचार्य को विषय में अचानक हुए इस बदलाव को समझने में कुछ क्षण लगे। सम्राट के विचारों को समझते हुए उन्होंने सिर हिलाया। पिछली रात देर से उनके जासूसों ने खबर दी थी कि सेनापति दैपायन के नेतृत्व में मगध की सेना ने दंडकभुक्ति नामक खनन नगर पर कब्जा कर लिया है। जासूसों ने यह भी बताया था कि राजकुमार शूरसेना ने दंडकभुक्ति का दौरा किया था और दैपायन और कपिल को वंगा गणराज्य में आगे बढ़कर ताम्रलिप्ति बंदरगाह पर नियंत्रण हासिल करने का आदेश दिया था।
“राजगुरु, मगध के विरुद्ध वांगा की जीत की संभावना कितनी है?” विक्रमादित्य ने वेताल भट्ट की ओर देखते हुए भौंहें चढ़ाकर पूछा। “क्या आपको लगता है कि ताम्रलिप्ति का बचाव किया जा सकता है?”
“बहुत ज़्यादा नहीं,” मुख्य सलाहकार ने पहले प्रश्न के उत्तर में कहा। “वांगा के पास एक तरह की सेना है, लेकिन उसमें मुख्य रूप से उसके अठारह

रियासतों से भर्ती किए गए सैनिक शामिल हैं। संख्या में तो यह काफ़ी है, लेकिन अर्ध-प्रशिक्षित है और मगध की कुशल सेनाओं का मुकाबला नहीं कर सकती। इसके अलावा, वांगा का मुख्य शस्त्रागार दंडकभुक्ति में है – जो अब मगध के कब्ज़े में है। इसलिए…”
“ताम्रलिप्ति का पतन अवश्य होगा,” सम्राट ने वाक्य पूरा किया और उनका हाथ अनायास ही कमर पर बंधी तलवार की मूठ पर चला गया। वेताल भट्ट और कालिदास भी इसी प्रकार शस्त्र धारण किए हुए थे; इतने वर्षों बाद उज्जैन में शस्त्र धारण करना एक बार फिर सामान्य बात हो गई थी, आचार्य यह सोचे बिना नहीं रह सके।
कुछ देर तक तीनों व्यक्ति चुप रहे और वांगा के खिलाफ मगध की कार्रवाई के पूरे प्रभाव पर विचार करते रहे।
विक्रमादित्य ने कहा, “दंडकभुक्ति के द्वारा मगध लौह अयस्क की आपूर्ति को नियंत्रित करता है, और ताम्रलिप्ति के द्वारा श्रीभोज और श्रीविजय राज्यों के साथ सभी व्यापार के प्रवेश द्वार पर उसका नियंत्रण है। शूरसेना चाहे तो सिंधुवर्त के सभी राज्यों को बंधक बना सकता है।”
“इससे समझ में आता है कि राजकुमार ने हम बाकी लोगों से संबंध तोड़ने में इतनी जल्दी क्यों की,” वेताला भट्टा ने व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ कहा। “आप दोस्तों और सहयोगियों को बंधक नहीं बना सकते, और अगर आपके आस-पास सिर्फ दोस्त और सहयोगी ही हैं, तो उनमें से कुछ को छोड़ देना ही आपके हित में है।” “कम से कम अब हमें पता चल गया है कि राजा सिद्धसेना की हत्या क्यों हुई। बूढ़े राजा शूरसेना की योजनाओं को कभी मंज़ूरी नहीं देते, और जब उन्हें पता चलता कि उनका बेटा हम सबके खिलाफ़ साज़िश रच रहा है, तो वे उसे ज़रूर बेनकाब कर देते।” सम्राट एक पल रुके। “बस उम्मीद करते हैं कि पार्षद पल्लवन सिद्धसेना के वफ़ादार लोगों को ढूंढ निकालेंगे और उन्हें उनके नेक राजा के साथ हुई घटना के बारे में समझा पाएंगे।”
“सहयोगियों की बात करें तो, राजा चंद्रवर्धन कैसे हैं, इस बारे में कोई ताजा जानकारी मिली है क्या?” आचार्य ने पूछा।
कप्तान अंगमित्र और उनके समसप्तक दल तीन दिन पहले कौशांबी से लौटे थे और अपने साथ चंद्रवर्धन को हुए लकवे की खबर लाए थे। इस खबर ने राजमहल में हलचल

मचा दी थी। राजा महेंद्रादित्य के समय से ही वत्स, अवंती के सबसे निष्ठावान सहयोगियों में से एक थे, और वत्स और अवंती के बीच न केवल रक्त संबंध थे, बल्कि चंद्रवर्धन संकट के समय भरोसेमंद व्यक्ति थे।
“कुछ नहीं।” सम्राट का जवाब विचलित था, उनकी निगाहें दीवार के उस पार दक्षिण की ओर किसी चीज को घूर रही थीं।
पीछे मुड़कर, मुख्य सलाहकार ने राजा की दृष्टि का अनुसरण किया और देखा कि दो बैलगाड़ियाँ शहर के द्वार से निकलकर समतल ग्रामीण इलाके की ओर जा रही हैं। दोनों गाड़ियाँ घरेलू सामानों से लदी हुई थीं, औरतें और छोटे बच्चे जो भी जगह बची थी, उसमें बैठे हुए थे। पुरुष और बड़े बच्चे गाड़ियों के बगल में चल रहे थे। यह स्पष्ट था कि यह अंतिम विदाई थी। हालाँकि, इस दृश्य में कोई नई बात नहीं थी। हमलों से भयभीत और आहत सैकड़ों परिवार पिछले कुछ दिनों से चुपचाप उज्जैन को इसी तरह छोड़ रहे थे, अपने जीवन को अस्त-व्यस्त कर एक अनिश्चितता से निकलकर उस अनिश्चितता की ओर बढ़ रहे थे, जिसकी उन्हें उम्मीद थी कि वह कम भयावह होगी।
पीछे मुड़कर देखते हुए वेताल भट्ट ने सम्राट के चेहरे पर पीड़ा का भाव देखा और राजा के लिए उनका दिल भर आया। वे जानते थे कि उज्जैन से नागरिकों के भागने की खबरें विक्रमादित्य को अंदर ही अंदर खा रही थीं और सम्राट स्वयं को अपनी प्रजा पर आई इस विपत्ति के लिए जिम्मेदार मान रहे थे, क्योंकि वे उनकी रक्षा नहीं कर पाए थे। फिर भी, अपनी प्रजा के दुख को समाप्त करना उनके बस में नहीं था। वे उन्हें रोकने के लिए कुछ नहीं कह सकते थे, उन्हें कोई आश्वासन नहीं दे सकते थे, कोई ऐसा वादा नहीं कर सकते थे जिसे वे पूरा न कर सकें। इसलिए, असहाय और व्याकुल होकर, वे उन्हें जाने दे रहे थे।
विक्रमादित्य ने दृढ़ता से सिर हिलाते हुए बैलगाड़ियों से अपनी नज़रें हटाईं और आचार्य की ओर देखा। उन्होंने फिर कहा, “कुछ नहीं। हम केवल राजा के शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना कर सकते हैं।”
कुछ देर रुकने के बाद उन्होंने कहा, “कम से कम राजकुमार शशिवर्धन शूरसेना की तरह नहीं हैं, जो कि बहुत राहत की बात है। अंगामित्रा के अनुसार, शशिवर्धन और पार्षद यशोभावी ने जरूरत पड़ने पर अवंती को सहायता देने का वादा किया है।”

"यह कालिदास को राजा हरिहर से मिले धन से कहीं अधिक है," आचार्य ने उत्सुकता से उस विशालकाय व्यक्ति की ओर मुड़कर कहा, जो वेताल भट्ट के थोड़ा बाईं ओर पीछे की ओर खड़ा था।
“अरे, क्या?” कालिदास ने मुख्य सलाहकार की ओर उलझन में देखा। “माफ़ कीजिए, राजगुरु, लेकिन मुझे ठीक से समझ नहीं आया।” आचार्य ने कालिदास को ध्यान से देखा। ऐसा लग रहा था कि पिछले कुछ दिनों से कोई बात उन्हें परेशान कर रही है। वैसे तो कालिदास ज़्यादा बोलते नहीं थे, लेकिन जिस रात उन्होंने राक्षस से महल के तालाब में युद्ध किया था, तब से वे असामान्य रूप से चुप थे। सुबह से उन्होंने मुश्किल से एक शब्द भी बोला था, वे चुपचाप एक परछाई की तरह चल रहे थे। और अपने आस-पास की बातों के प्रति उनकी यह बेरुखी – यह कालिदास के स्वभाव के विपरीत था।
“क्या सब ठीक है?” मुख्य पार्षद की आवाज में चिंता झलक रही थी।
“नहीं… मतलब, हाँ। मतलब नहीं… कुछ नहीं है,” कालिदास ने अपने माथे को हल्के से धूनी दी, मानो कहीं मकड़ी का जाला साफ कर रहे हों। फिर उन्होंने आचार्य की ओर देखा। “आप राजा हरिहर के बारे में पूछ रहे थे?”
“हाँ।” वेताल भट्ट ने कालिदास के उत्तर को फिलहाल स्वीकार करने का निर्णय लिया। “मैं कह रहा था कि जब आप हरिहर से मिलने गए थे, तब वह मित्रता का आदर्श उदाहरण नहीं थे।”
“वह बिल्कुल भी ऐसा नहीं था।” उस दैत्य का चेहरा गंभीर हो गया और वह अचानक पुराने कालिदास की तरह एकाग्र और भयावह दिखने लगा। “वह लगातार इस बात का रोना रो रहा था कि कैसे उसके राज्य को पिशाचों के हाथों बिना किसी गलती के इतना कष्ट सहना पड़ा। जिस तरह से वह बार-बार यह कह रहा था कि हेहेया पर अब देवों और असुरों के हमले का खतरा मंडरा रहा है, उसे देखकर ऐसा लगता था मानो हमने हलाहल की रक्षा की पूरी जिम्मेदारी उसी पर लाद दी हो।”
अब जब वह ठीक से क्रोधित हो चुका था, तो कालिदास को रोकना असंभव था। “उसने यह पूछने की हिम्मत की कि अवंती अपने सहयोगियों से क्या चाहती है। यह तब हुआ जब हमने उसके लिए कुलभेद को नष्ट करने और उसे उसका सिंहासन वापस दिलाने का कष्ट उठाया। मेरा मन कर रहा था कि उसे उसके कमरे की खिड़की से

बाहर फेंक दूं और सोने का वह संदूक लेकर उज्जैन लौट जाऊं जो हमने उसे दिया था। राजा हरिहर अवंती के टकसालों से एक भी सिक्का पाने के योग्य नहीं है।” कालिदास की प्रतिक्रिया देखकर विक्रमादित्य और वेताल भट्ट के होठों पर हल्की सी मुस्कान आ गई। विशालकाय कालिदास का अवंती के प्रति अटूट प्रेम और निष्ठा मन को भाने वाली और आश्वस्त करने वाली दोनों ही थी।
“भाई, राजा हरिहर पर इतना कठोर मत बनो,” सम्राट ने मुस्कुराते हुए कहा, ताकि उनके शब्दों में कोई अपमान न रहे। “बूढ़े राजा की मंशा अच्छी है। बात बस इतनी है कि पिशाच महिष्मती के बहुत करीब आ गए थे, और इससे हेहेया ज़रूर घबरा गए होंगे। और हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि पिशाचों ने उन्हें नुकसान पहुँचाया था – जबकि इसमें उनकी कोई गलती नहीं थी।”
“भाई, तुम बहुत ज्यादा भरोसा करते हो,” कालिदास ने जवाब दिया। “मैं राजा को देख रहा था। हाँ, उसकी आँखों में भय था, जिसे मैं समझता हूँ। लेकिन मैंने उसमें कृतघ्नता और स्वार्थ भी देखा। हरिहर अपने और हेहेय के सिवा किसी और के बारे में नहीं सोच रहा था। यह…”
नीचे गलियों से आती घोड़ों की टापों की तेज आवाज ने बातचीत को अचानक रोक दिया। राजा और उनके सलाहकारों ने गर्दन उठाकर नीचे देखा, और उन्हें दो घुड़सवार तेज गति से मोड़ से आते हुए दिखाई दिए। उनमें से एक वरारुचि था, जबकि दूसरा एक साधारण सैनिक प्रतीत हो रहा था।
घोड़े एक सीढ़ी के नीचे आकर रुके, और कुछ ही क्षणों बाद वरारुचि और सिपाही कुएँ से बाहर निकले। पगडंडी पर कदम रखते हुए वे विक्रमादित्य के पास पहुँचे।
“सम्राट विक्रमादित्य को प्रणाम,” सैनिक ने गहरे झुककर कहा।
“आपको मेरा प्रणाम, सिपाही,” राजा ने उत्तर दिया और उस व्यक्ति से अपनी जिज्ञासु दृष्टि वरारुचि की ओर घुमाई।
“सम्राट, यह सिपाही श्रीस्थली के कमान केंद्र से आया हुआ घुड़सवार है। वह पार्षद अमरा सिंह का एक महत्वपूर्ण संदेश लेकर आया है,” राजा के सौतेले भाई ने समझाया।

“अमारा सिंह सृष्टिस्थली में हैं?” विक्रमादित्य ने आश्चर्य से वरारुचि की ओर देखा। “मुझे लगा था कि वे उदयपुरी में हैं और उज्जैन वापस जा रहे हैं।”
“सम्राट, वह वापस यहीं आ रहे हैं,” वररुचि ने कहा। “लेकिन एक सप्ताह पहले वह श्रीस्थली में थे, जब उन्होंने हमारे लिए यह संदेश भेजा था।”
“एक हफ्ता!” वेतला भट्टा की निगाहें घुड़सवार पर गड़ी हुई थीं। “यह संदेश लाने में तुम्हें इतना समय क्यों लग गया?”
“महाराज, मैंने पाँच दिन पहले ही महल में संदेश पहुँचा दिया था,” घुड़सवार ने उत्तर दिया। राजा ने कालिदास और आचार्य के साथ हैरानी भरी निगाहों का आदान-प्रदान किया, तभी सैनिक ने फिर कहा, “मैंने यह संदेश सेनापति सद्गुण को उस रात दिया था जब राक्षसों ने हम पर आक्रमण किया था; आक्रमण शुरू होने से ठीक पहले।”
“वे महल में आए और सम्राट राजगुरु से मिलने की इच्छा जताई,” वरारुचि ने आचार्य की ओर समझदारी से देखते हुए कहा। “परन्तु सम्राट… व्यस्त थे। फिर उन्होंने आपसे मिलने की इच्छा जताई, पर आप भी व्यस्त थे। कालिदास भी व्यस्त थे, और मैं भी वहाँ नहीं था।”
“माननीय महोदय, मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूं,” घुड़सवार ने बीच में टोकते हुए अपनी बात समझाने की कोशिश की। “पार्षद अमारा सिम्हा ने मुझे यह संदेश तुरंत पहुंचाने का निर्देश दिया था, इसलिए मैंने इसे कमांडर सद्गुणा को बता दिया। कमांडर ने मुझे आश्वासन दिया कि वह इसे सम्राट तक पहुंचा देंगे, लेकिन उन्होंने यह भी कहा कि मैं किसी और को इसके बारे में न बताऊं। आज सुबह ही मुझे याद आया कि कमांडर सद्गुणा का उसी रात निधन हो गया था। इसीलिए मैंने यह बात आपके ध्यान में लाने का फैसला किया।” विक्रमादित्य और सलाहकारों ने एक-दूसरे की ओर देखा और सिर हिलाया। यह स्पष्ट था कि महल के रक्षकों के दिवंगत प्रमुख को घुड़सवार का संदेश परिषद में किसी तक पहुंचाने का न तो समय मिला था और न ही अवसर।
“अमरा सिंह का क्या संदेश था?” सम्राट ने घुड़सवार से विनम्रतापूर्वक पूछा। सैनिक ने न केवल स्वयं को निर्दोष साबित किया था, बल्कि उसने यह मानकर कि संदेश राजा तक पहुँच गया होगा, महल लौटने की सूझबूझ भी दिखाई थी।

घुड़सवार ने जल्दी से, लेकिन कोई भी विवरण छोड़े बिना, उन्हें श्रीस्थली के पास हुना जासूसों की गिरफ्तारी, उनमें से एक की सांप के काटने से हुई संदिग्ध मौत और दूसरे द्वारा हुना की समुद्र के रास्ते अनार्ता संघ पर हमला करने की योजना के बारे में किए गए खुलासे के बारे में बताया। “पार्षद घटाकरपारा उसी सुबह द्वारका के लिए रवाना हुए जिस सुबह मैं निकला था, ताकि मुख्य युगंधरा को अनार्तों पर मंडरा रहे खतरे के बारे में चेतावनी दे सकें, महाराज,” सैनिक ने अपनी बात समाप्त करते हुए कहा। “मुझे भी महल को यही सूचना देने का निर्देश दिया गया था।”
“तुमने अच्छा किया, सिपाही,” विक्रमादित्य ने सिर हिलाते हुए कहा। “अब तुम जा सकते हो। लेकिन ये सब बातें अपने तक ही रखना।”
जब उन्हें पैदल मार्ग पर अकेले रहने का मौका मिला, तो राजा ने आचार्य की ओर प्रश्नवाचक दृष्टि से देखी।
“राजगुरु, आपने अभी जो सीखा है, उसके बारे में आपका क्या विचार है?” “यह शायद अजीब लगे, लेकिन ऐसा इसलिए है क्योंकि हूणों और शकों ने इससे पहले कभी नौसैनिक युद्धकला में कोई कौशल नहीं दिखाया है,” वेताला भट्ट ने कंधे उचकाते हुए कहा।
“फिर भी, ऐसे हमले की संभावना को पूरी तरह से नकारा नहीं जा सकता,” विक्रमादित्य ने चेतावनी देते हुए कहा। “हो सकता है कि हूणों ने वर्षों में कुछ तरकीबें सीख ली हों।”
“मैं सहमत हूँ। और जैसा कि अमर सिंह ने सही कहा है, हूणों ने सिंधुवर्त की सेना को सीमा पर सफलतापूर्वक खींच लिया है, जिससे अनार्त असुरक्षित और कमजोर हो गए हैं। यदि यह कोई रणनीति है, तो यह एक चतुर रणनीति है। अमर सिंह ने घटकरपारा को युगंधरा के दरबार में भेजकर अच्छा किया।”
“मदर ओरेकल ने अभी तक इनमें से किसी भी बात का ज़िक्र नहीं किया है,” वरारुची ने अनुमान लगाते हुए कहा। “अगर मुझे सही याद है, तो उन्होंने सिर्फ़ विशाल रेगिस्तान में उठती धूल की दीवार के बारे में बात की थी। क्या इन दोनों का कोई संबंध हो सकता है?”
किसी ने भी प्रश्न का उत्तर देने की पहल नहीं की। कालिदास के उद्गार से यह अनिश्चित चुप्पी टूटी।

"शायद हमें जहाजों के बारे में मदर ओरेकल से पूछना चाहिए। हो सकता है कि वह इस बात की पुष्टि कर सकें कि स्काउट ने अमारा सिम्हा को क्या बताया था।" मुंडेर पर हाथ टिकाए सम्राट ने सिर हिलाया, उनकी निगाहें दूर क्षितिज पर टिकी थीं, वे गहन चिंतन में लीन थे। अंत में वे सीधे बैठे और अपने सलाहकारों की ओर मुड़े।
“हमें इस बारे में मदर ओरेकल से बात करनी चाहिए। अगर अनार्ता खतरे में हैं, तो हमें अतिरिक्त सेना भेजने की तैयारी करनी होगी। हम फेडरेशन को बर्बरों के हाथों गिरने नहीं दे सकते।”
अपने सामने खड़े सभी लोगों का पूरा ध्यान अपनी ओर देखकर विक्रमादित्य ने आगे कहा, “हालांकि मुझे इस पर संदेह है, लेकिन अगर देवी ओरेकल को पता चल जाए कि श्रीस्थली में उस जासूस को उसकी कोठरी में किसने मारा, तो अच्छा होगा। यह किसी अंदरूनी साजिश का नतीजा होना चाहिए। इसका मतलब है कि हूणों का खतरा हमारी अपेक्षा से कहीं अधिक करीब है – यह अवंती की सीमाओं के भीतर तक पहुँच चुका है।”

* * *

संभवतः कुछ ही मिनटों में पाँचवीं बार, राज्यपाल सत्यवेदा ने अपनी मेज पर रखी स्याही की दवात से बाहर निकली कलम को उठाया। उसे निकालकर, उन्होंने उसकी नुकीली नोक को अपने सामने पड़े ताड़ के पत्ते के खाली पन्ने पर रखा, मानो अपने विचारों को शब्दों में पिरोना चाहते हों, लेकिन उनका हाथ बस पत्ते पर ही रुका रहा, उंगलियाँ कलम को यूँ ही घुमाती रहीं, क्योंकि वे एक सुसंगत संदेश लिखने के लिए संघर्ष कर रहे थे।
राज्यपाल की समस्या यह थी कि उन्हें यह नहीं पता था कि क्या लिखना है और क्या छोड़ना है। बल्कि, उन्होंने अनिच्छा से स्वयं स्वीकार किया कि उनके पास लिखने के लिए बहुत कम था, और जो कुछ उनके पास कहना था वह किसी के लिए भी उपयोगी नहीं था।
हालांकि, उसी शाम उनकी मुलाकात व्यापारी आत्रेय से होनी थी – जो उनके और हूण सरदार के बीच मध्यस्थ था – और उन्हें हर बात की जानकारी तैयार रखनी थी। इसी समझौते के तहत उन्हें हर हफ्ते सिक्कों से भरी थैलियां सौंपी जाती

थीं। इसलिए, सत्यवेद ने उदयपुरी की छतों पर नज़र डाली और एक बार फिर अपने सामने मौजूद तथ्यों का जायज़ा लिया।
वह जानता था कि उसके तमाम प्रयासों के बावजूद, श्रीस्थली में हालात बेहद बिगड़ गए थे। दुर्भाग्यवश, कमान केंद्र से उसके प्रस्थान के तुरंत बाद, अमर सिंह ने किसी तरह एक दूसरे हूण जासूस का पता लगा लिया था। सत्यवेद को इसकी जानकारी तब मिली जब अमर सिंह अपने कैदी के साथ उदयपुरी के किले में वापस लौटे, जिसे तुरंत शाही सेना की एक विशिष्ट इकाई की निगरानी में रखा गया।
जब सत्यवेद को पता चला कि कमांडर अतुल्यतेजा और अमर सिंह के अलावा किसी और को जासूस तक पहुँच नहीं थी, तो उसे पूरा यकीन हो गया कि कुछ गड़बड़ है। इसके अलावा, घातकपर की रहस्यमय अनुपस्थिति भी एक रहस्य थी – जब सत्यवेद ने इस मामले की जाँच की, तो अमर सिंह ने टालमटोल करते हुए कहा कि राजकुमार श्रीस्थली में सैनिकों की गतिविधियों के समन्वय का अनुभव प्राप्त करने के लिए रुक गया है। लेकिन उसके चतुर और हमेशा भरोसेमंद सहायक चिरायु की चालाकी भरी छानबीन से एक अलग ही कहानी सामने आई। राजा का भतीजा दस अंगरक्षकों के साथ श्रीस्थली से निकलकर द्वारका की ओर चल पड़ा था!
फिर उज्जैन पर राक्षसों के हमले की खबरें आईं, साथ ही अमर सिंह को राजधानी लौटने का आह्वान भी आया।
अमर सिंह को किले से निकलते देख राज्यपाल को अपार राहत मिली थी। सत्यवेद ने कड़वाहट से खुद को याद दिलाया कि जब वह उज्जैन में महल में दरबारी के रूप में सेवा कर रहा था - आचार्य द्वारा कुटिलतापूर्वक उसे मालवा के जंगल में स्थानांतरित करने की साजिश रचने से पहले - तब भी वह उस कठोर और अभिमानी सलाहकार से बहुत भयभीत था।
लेकिन अमारा सिंह का जासूस को अपने साथ उज्जैन ले जाना चिंताजनक था। और राज्यपाल ने लाख कोशिश की, लेकिन वह अतुल्यातेजा से यह पता नहीं लगा पाए कि जासूस ने पार्षद को क्या जानकारी दी होगी।
तो अब उसके पास यह जानकारी थी कि श्रीस्थली के पास एक हूण जासूस को पकड़ा गया था और उसे उदयपुरी लाया गया था, जहाँ उसे कड़ी सुरक्षा में रखा गया था, और फिर उज्जैन ले जाया गया था। क्या उस जासूस ने अमर सिंह को कोई

महत्वपूर्ण जानकारी दी थी? क्या घटाकरपारा के अनार्तों के पास अचानक जाने का उस जासूस से कोई संबंध था? उसे पता नहीं था, और उसे विश्वास नहीं था कि उसे इन दोनों सवालों का सच पता चल पाएगा।
उन्हें इतना ही पक्का पता था कि उदयपुरी की चौकी अब अमर सिंह के अधीन नहीं थी। और यह भी कि घटकरपारा उसी दिन बाद में उदयपुरी लौट रहे थे। उन्होंने अनुमान लगाया कि राजकुमार अब अतुल्यतेज के साथ चौकी का कार्यभार संभालेंगे…
सत्यवेद अपनी कुर्सी पर सीधे बैठे थे, उसके आर्मरेस्ट को कसकर पकड़े हुए थे, उनकी आंखें चमक रही थीं क्योंकि वे सामने की दीवार पर टंगे मलावा प्रांत के एक बड़े, कढ़ाईदार नक्शे को घूर रहे थे।
उसने क्या सोचा होगा जब उसने खुद से कहा था कि उसके साप्ताहिक रिपोर्ट में साझा करने के लिए कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं है!
उदयपुरी की चौकी संभवतः एक ऐसे मसखरे के अधीन आ रही थी जो अभी तक अपनी किशोरावस्था से बाहर नहीं निकल पाया था और महल के घमंड से मुक्त नहीं हो पाया था। सत्यवेद ने राजकुमार को इतना करीब से देखा था कि वह जानता था कि लड़के के अहंकार को संतुष्ट करना आसान था। वह भोला और आसानी से प्रभावित होने वाला था, और प्रशंसा का भूखा था। घटकरपारा उसके लिए एक आसान शिकार था। सबसे अच्छी बात यह थी कि अब उस पर ध्यान देने के लिए कोई दखलंदाजी करने वाला अमरा सिम्हा नहीं था।
ऊर्जा से भरपूर होकर राज्यपाल ने कलम उठाई।

वादा

अमरावती महल में उदासी छाई हुई थी, उसके चौड़े गलियारे और दीर्घाएँ दरबारी और राजमहल के कर्मचारियों से अजीब तरह से खाली थीं, हॉल और प्रवेश कक्षों में मनमोहक अप्सराओं के गीत और उल्लास की गूंज सुनाई नहीं दे रही थी। हर तरफ सन्नाटा छाया हुआ था, गहरा और मातम भरा, जो कभी-कभार ऊँची चट्टानों से फिसलती और महल को चारों ओर से घेरे हुए खाई में गिरती हवा के भयानक विलाप से टूटता था।
इंद्र के प्रथम पुत्र जयंता, इन सुनसान गलियों में से एक में चुपचाप चलते हुए उर्वशी के शयनकक्ष की ओर बढ़ रहे थे। उनका व्यवहार संभलाहट भरा था, वे बार-बार इधर-उधर देख रहे थे कि कहीं कोई उन्हें देख तो नहीं रहा, साथ ही हवा के झोंकों के बीच उनके कान उर्वशी की आवाज का हल्का सा भी आभास सुनने के लिए तत्पर थे।
बदले में उसे केवल महल को घेरने वाले अंधकार की गूंज ही मिली।
जब से इंद्र को मरुतों की पराजय की खबर मिली थी, तब से वातावरण वैसा ही बना हुआ था। उसके बाद पाँच बार सूर्य उदय हुआ, पर उससे कोई गर्माहट या खुशी नहीं आई; महल आसपास की गहरी खाई के अंधेरे में और भी डूबता हुआ प्रतीत हो रहा था। उसके निवासी इंद्र के मार्ग में आने का जोखिम न उठाकर अपने कमरों में ही दुबके रहे, उनकी आवाज़ें शायद ही कभी धीमी स्वर से ऊपर उठती थीं।

स्वयं देवराज भी अपने शयनकक्ष से शायद ही कभी बाहर निकले, उन्होंने संगति के बजाय एकांत को प्राथमिकता दी।
फिर, उसी दोपहर पहले, एक गरुड़ पूर्व दिशा से प्रकट हुआ और अपने राजा से परामर्श करने के लिए इंद्र की बालकनी पर आकर बैठ गया। गरुड़ के अपने विशाल पंख फैलाकर सुंदर उड़ान भरने के क्षण भर बाद, देवताओं के स्वामी ने अप्सरा मेनका को बुलाया और अपने युद्ध हाथी ऐरावत को तैयार करने का आदेश दिया। सौ से अधिक जिज्ञासु आँखों ने इंद्र और मेनका को ऐरावत पर सवार होकर महल की चारदीवारी से निकलते देखा - ऐरावत एक विशाल, सफ़ेद ऊनी हाथी था, जिसके छह बड़े घुमावदार दांत नुकीले थे। अपने शयनकक्ष के पर्दों के पीछे छिपे जयंत ने उस हाथी का पीछा किया, जो खाई को पार करके पहाड़ियों की उस दरार की ओर मुड़ा, जो पूर्व की ओर जाने वाली सड़क की ओर खुलती थी।
अपने पिता के सुरक्षित रूप से रास्ते से हट जाने का आश्वासन पाकर, जयंता उर्वशी के कक्ष की ओर मुड़ गया, इस प्रबल आशा के साथ कि उसे अप्सरा अपने कमरे में मिल जाएगी। कई दिनों से उसने उर्वशी के सुडौल शरीर की एक झलक भी नहीं देखी थी, और वह उसे देखने, उसकी आवाज़ सुनने, उसकी यौवन की मादक सुगंध को महसूस करने... उसे गले लगाने के लिए व्याकुल था।
और जब वे भावुक प्रेम में डूबे हुए थे, तब उन्होंने उसे चुंबनों से आनंदित किया।
कोमल गद्दियों पर लेटी उर्वशी की मनमोहक छवि, जो मुस्कुराती हुई ऊपर की ओर देख रही थी, बाहें और पैर फैलाकर उसका स्वागत कर रही थी, जयंता की रगों में कामुकता की लहर दौड़ा रही थी। तेज़ कदमों से वह अप्सरा के कमरे की ओर बढ़ा और तुरंत ही उसे उर्वशी की बेकाबू हंसी की मधुर ध्वनि सुनाई दी। पहाड़ की धारा की तरह निर्मल और मधुर, प्रेम से लबालब भरी, जीवन से ओतप्रोत, महल में छाए उदासी के सन्नाटे को दूर भगाती हुई।
उत्सुकता से झूमते हुए, धड़कते दिल के साथ, जयंता अप्सरा के शयनकक्ष के भारी दरवाजे तक पहुँच गया, इससे पहले कि उसे सुनी हुई बात का महत्व समझ में आता। उस हंसी का मतलब था कि उर्वशी अकेली नहीं थी।
जयंता ने धीरे से दरवाजा खोला। अंदर झाँकते हुए उसने उर्वशी को कमरे से सटी छत के दूसरे छोर पर रेशमी तकियों के सहारे आराम करते देखा, उसकी पीठ

दरवाजे की ओर थी। उसने लालची निगाहों से उसके लेटे हुए रूप को निहारा, उसके शरीर की बनावट को निहारा; उसकी कोमल संगमरमर जैसी गर्दन और कंधे; उसकी चिकनी पीठ का सुडौलपन; सोने की बुनी हुई नाजुक कमरबंद से प्यार से घिरी उसकी पतली कमर; और उसके कोमल, गोल कूल्हों का उभार।
अपने पेट में उठ रही बेचैनी और कामुक भावनाओं को महसूस करते हुए, राजकुमार ने अपनी दृष्टि दूसरी अप्सरा पर डाली, जिसे अब उसने उर्वशी की सुंदर दासी यविका के रूप में पहचान लिया था। यविका उर्वशी के सामने बैठी थी, उनके बीच ज़मीन पर चौसर का खेल फैला हुआ था। अप्सराओं के चारों ओर बड़े-बड़े फर्न और तांबे के बड़े-बड़े कलशों में सुगंधित फूल सजे हुए थे, जिनकी पत्तियाँ और लताएँ हवा में लहरा रही थीं।
कम वस्त्रों में लिपटी दो अप्सराओं को देखकर जयंता का हौसला बढ़ गया। अंदर कदम रखते हुए उसने दरवाजा बंद किया और शयनकक्ष के विशाल क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ा, तभी यविका ने दो लकड़ी के पासे उछाले, जो संगमरमर के फर्श पर जोर से गिरे। पासों को देखकर यविका खुशी से चिल्लाई - और साथ ही एक पुरुष की झुंझलाहट भरी हंसी भी सुनाई दी!
पहले ही छत तक आधे रास्ते पहुँच चुके जयंता अचानक रुक गए, उनकी आत्मविश्वास से भरी मुस्कान टुकड़ों में गायब हो गई। निराशा की लहरें उनके सीने से टकरा उठीं।
वह पुरुष की आवाज पहचानी हुई थी।
तभी, फर्न की एक बड़ी पत्ती हवा में हिली और जयंता को जिस चीज की पहले से ही उम्मीद थी, वह प्रकट हो गई – नारद का सुंदर चेहरा। देवलोक के प्रधान दूत चौसर तख्ती की तीसरी भुजा पर विराजमान थे, उनके दाएं और बाएं अप्सराएं विराजमान थीं, और जिस कलश पर वे झुके हुए थे, उसके कारण उनकी स्थिति दिखाई नहीं दे रही थी।
“फिर से नहीं,” नारद ने हंसते हुए सिर हिलाते हुए अफसोस जताया। “आज किस्मत मेरे साथ न्याय नहीं कर रही है और तुम दोनों को इसका फायदा नहीं उठाना चाहिए।”

“चुप रहिए, महाराज,” उर्वशी ने नारद के घुटने पर शरारती अंदाज़ में हाथ रखते हुए जवाब दिया। उसकी आवाज़ में नरमी थी, पर शरारत भी झलक रही थी। “अभी तो शुरुआत भी नहीं हुई है। जल्द ही आप हमसे दया की भीख माँगेंगे, है ना?” उसने याविका को एक शरारती निगाह से देखा, और एक और हंसी और अपने सिर को झटकते हुए, पासे की जोड़ी के लिए अपना हाथ बढ़ाया।
शरमाते हुए मुस्कान के साथ यविका ने उर्वशी की ओर देखा। उसकी निगाहें अपनी स्वामिनी के कंधे के ऊपर से होते हुए शयनकक्ष में और आगे बढ़ीं... और उसने जयंता को अनिर्णय की स्थिति में एक पैर से दूसरे पैर पर हिलते हुए देखा। "ओह, महाराज," उसने एक छोटी सी आह भरी, खुद को सीधा करते हुए, घबराहट में अपने होंठों को चाटते हुए।
जयंता के पैर भारी हो गए थे, मानो सीसे के हों, उसने कुछ बेमन से कदम आगे बढ़ाए। उसने देखा कि उर्वशी मुड़ी और उसने कंधे के ऊपर से उसे एक सरसरी नज़र डाली।
"अरे, आप यहाँ क्यों आए हैं?" उसने पूछा, उसकी बड़ी-बड़ी खूबसूरत आँखें उसे ठंडेपन से देख रही थीं।
राजकुमार के उत्तर देने से पहले ही, नारद ने कलश के पीछे से अपनी गर्दन घुमाकर उसकी ओर देखा।
“आइए, आइए, महाराज,” दरबारी राजनयिक ने अपने सामने खाली सीट की ओर इशारा करते हुए आमंत्रित किया। “क्या आप एक-दो खेल खेलना चाहेंगे?”
उर्वशी और यविका की ओर देखते हुए नारद ने जयंत से कहना जारी रखा, “इन दोनों ने मेरा सारा सोना ले लिया है और अब मेरी संपत्ति भी छीननी शुरू कर दी है। कृपया मेरी मदद करें, जो मेरा हक है उसे वापस दिलाने में?”
“मैं यहाँ मूर्खतापूर्ण खेल खेलने नहीं आया हूँ,” जयंता ने कठोर स्वर में उत्तर दिया और सीधा खड़ा होकर नारद को घूरने लगा, उसके होंठों पर तिरस्कार का भाव था। तीन जोड़ी निगाहों से खुद को परखते हुए, उसने आगे कहा, “जब देवलोक को मनुष्यों ने अपमानित किया है, तो आप यहाँ कैसे मज़ाक कर सकते हैं?”

इसके बाद छाई खामोशी ने जयंता के दिल को सुकून दिया। वह जानता था कि वह नारद को कोने में धकेलने और उसे असहज करने में सफल हो गया है, और उसने दरबारी को उचित जवाब खोजने के लिए छटपटाते हुए देखा।
तो फिर आप यहां किसलिए आए हैं?
यह सवाल बिलकुल अप्रत्याशित जगह से आया – उर्वशी से। जयंत ने अप्सरा की ओर देखा, जो कंधे के ऊपर से उन्हें ऐसे परख रही थी मानो वह कोई मामूली महल का नौकर हो। स्तब्ध होकर उसने नारद की ओर देखा, जो अब चमकती आँखों से उसे देख रहे थे। राजकुमार ने देखा कि उर्वशी के सवाल ने न केवल राजनयिक को सम्मानजनक विदाई दी थी, बल्कि पासा पलट दिया था, पहल उसके हाथों से छीन ली थी और उसे पूरी तरह से रक्षात्मक स्थिति में डाल दिया था।
"मैं आया था... मैं जानना चाहता था कि... क्या मेनका ने इस बारे में कुछ बताया था कि वे कहाँ जा रहे हैं," उसने उर्वशी को मन ही मन कोसते हुए, अपनी इज्जत बचाने के लिए लड़खड़ाती हुई बात कही।
अप्सरा ने कंधे उचकाते हुए कहा, "मैं उससे मिली नहीं थी, इसलिए उसने कुछ नहीं कहा।"
जयंता की निगाह नारद पर पड़ी और राजनयिक ने भी बेबसी में अपना सिर हिला दिया। अप्सराओं के बगल में लेटे उस सुंदर दरबारी को देखकर, उनके स्पर्श करने, उनके साथ क्रीड़ा करने के विचार से राजकुमार अचानक क्रोधित हो उठा। “तुम्हें इस बारे में कुछ कैसे नहीं पता?” उसने नारदा पर आरोप लगाते हुए गुस्से से कहा। “क्या तुम्हें महल में क्या हो रहा है, इसकी जानकारी नहीं होनी चाहिए? क्या यह तुम्हारा कर्तव्य नहीं है?”
“राजकुमार, आप सही कह रहे हैं,” नारद ने शांत भाव से उत्तर दिया। “लेकिन कभी-कभी राजा अपने विचार गुप्त रखना पसंद करते हैं। मेरा कर्तव्य भी यही है कि मैं अपने राजा के विचारों को गोपनीय रखने के निर्णय का सम्मान करूं।”
जयंता अभी इस बात का अच्छा जवाब सोच ही रहा था कि उर्वशी बोल पड़ी।
“अगर तुम्हें यह जानने की इतनी ही उत्सुकता थी कि वे कहाँ जा रहे हैं, तो तुमने खुद राजा से क्यों नहीं पूछा?” उसने तीखे स्वर में पूछा। “क्या एक पिता अपने बेटे को स्पष्टीकरण देकर संतुष्ट नहीं करता?”

एक कोड़े की तरह प्रहार करते हुए, उसे चुभते हुए, उसके आत्मसम्मान को चकनाचूर करते हुए। राजकुमार अपने चारों ओर छाए भ्रम और निराशा के धुंध में सोच रहा था कि वह ऐसा क्यों कर रही है?
इस बार सन्नाटा और भी गहरा गया, क्योंकि राजनयिक और दोनों अप्सराएँ जयंता के जवाब का इंतज़ार बड़े चाव से कर रही थीं। उनका मन कर रहा था कि वे कमरे से भाग जाएँ, पर राजकुमार जानते थे कि यह संभव नहीं है। इसलिए वे वहीं जड़वत खड़े रहे, उदास और निराशा में डूबे हुए, उर्वशी के शब्द उनके कानों में चुभ रहे थे।
“मुझे लगता है महाराज उर्वशी के साथ अकेले रहना चाहेंगे,” नारद ने अंत में जयंत की आँखों में देखते हुए कहा। यविका की ओर मुड़कर उन्होंने मनमोहक मुस्कान के साथ कहा, “आओ प्रिय, चलो कहीं और अपना छोटा सा द्वंद्वयुद्ध फिर से शुरू करें – हालाँकि इस बार मुझे विश्वास है कि भाग्य मेरा साथ देगा।” ज़मीन से अपना शॉल और पगड़ी उठाते हुए नारद उठ खड़े हुए। यविका चौसर बोर्ड, सीपियाँ और लकड़ी के पासे इकट्ठा करने में व्यस्त हो गईं, तभी राजनयिक जयंता के सामने आ गए।
“हमारे खेल में दखल देकर मुझे बर्बादी से बचाने के लिए धन्यवाद, मेरे राजकुमार,” उसने अपनी बांह पर लिपटी शॉल की ओर इशारा करते हुए कहा। दरबारी मुस्कुरा रहा था, लेकिन उसकी आँखों में एक हिसाब-किताब वाली ठंडक थी जिसने जयंता को बेचैन कर दिया। “आपकी अनुमति से…”
नारद ने विदा लेने के इरादे से झुकना शुरू किया, फिर रुक गए और राजकुमार की ओर ऐसे देखने लगे मानो उन्हें कोई विचार आ गया हो।
“मुझे लगता है कि आप यह जानते होंगे, महाराज। मुझे महल में होने वाली हर बात की जानकारी रहती है। मैं देखता हूँ, सुनता हूँ, अवलोकन करता हूँ, अनुमान लगाता हूँ। मैं हमेशा अपनी सारी जानकारी प्रकट नहीं करता।” राजनयिक कुछ देर रुका, उसके शब्दों की सूक्ष्म धमकी कमरे में एक अंतर्धारा की तरह फैल गई। “मेरी चुप्पी को कभी भी अज्ञानता नहीं समझा जाना चाहिए।” नारद और यविका पर दरवाजा बंद होते देख जयंता के शरीर में सिहरन दौड़ गई। कमरे की ओर मुड़कर उसने देखा कि उर्वशी छत की मुंडेर से टेक लगाकर खड़ी चट्टानों की श्रृंखला को निहार रही थी। सूरज पश्चिम की ओर ढल रहा था और हवा

तेज हो गई थी, जिससे उर्वशी के कपड़े उसके सुडौल शरीर पर फड़फड़ा रहे थे। हवा से उड़ते हुए गिरे हुए फूल और पत्ते छत के संगमरमरी फर्श पर सरसराते हुए उड़ रहे थे।
“तुम मेरे साथ ऐसा व्यवहार क्यों करते हो?”
राजकुमार ने छत की ओर कुछ हिचकिचाते हुए कदम बढ़ाए, लेकिन जब उर्वशी ने मुड़कर उसे गौर से देखा, तो वह रुक गया, उसकी आँखों में चमक थी।
“तुम मुझसे और किस तरह का व्यवहार करने की उम्मीद करते हो?” अप्सरा ने क्रोधित होकर जवाब दिया। वह रेलिंग पर पीछे झुक गई और अपनी बाहों को अपनी छाती पर क्रॉस कर लिया, जिससे उसके स्तन और भी आकर्षक लग रहे थे। जयंता ने सोचा कि इस हालत में भी वह बेहद खूबसूरत लग रही थी।
“मैं… मैं चाहता हूँ कि आप मेरे साथ अच्छा व्यवहार करें… मेरे साथ… सम्मान के साथ…” उसने कमजोर स्वर में कहना शुरू किया, लेकिन अप्सरा ने उसे बीच में ही रोक दिया।
“क्यों? तुम्हें सम्मान पाने का हक क्यों है?”
“मैं… क्योंकि…” झिझकते हुए जयंता शब्दों को खोजने की कोशिश करने लगा। “क्योंकि मैं देवलोक के स्वामी इंद्र का पुत्र हूँ।”
“लो, यही तो है!” उर्वशी ने मानो अपनी बात साबित कर दी हो, हाथ ऊपर उठाते हुए मुस्कुराते हुए कहा, “तुमने अभी-अभी अपनी असलियत कबूल कर ली है – तुम कुछ भी नहीं हो। तुम इंद्र के नाम को सहारे की तरह पकड़े हुए हो, क्योंकि उसके बिना तुम्हारा कोई अस्तित्व नहीं।”
“यह सच नहीं है…” जयंता ने विद्रोह करते हुए कहा, लेकिन अप्सरा ने फिर से उसे बीच में ही रोक दिया।
"क्या आपको सच में लगता है कि मुझे नहीं पता कि आज आप मेरे कमरे में किस लिए आए हैं?"
राजकुमार ने अपनी निगाहें झुका लीं, लेकिन उर्वशी अभी चुप नहीं हुई थी। “तुम खुद को मर्द कहते हो, लेकिन तुममें मर्दों जैसा साहस नहीं है। अपने पिता के महल से जाने का इंतज़ार करते हो, फिर चुपके से यहाँ आकर मुझसे अपने प्यार का इज़हार करते हो। राजकुमार की तरह साहस से बोलने की बजाय, तुम

यविका जैसी मामूली दासियों के सामने बेतुके बहाने बनाते खड़े रहते हो। तुम्हारा व्यवहार न तो साहस, न जुनून और न ही प्रेम दर्शाता है।”
“ओह, मैं तुमसे प्यार करता हूँ, उर्वशी। कसम से, मैं तुमसे प्यार करता हूँ।” जयंता लड़खड़ाते हुए कुछ और कदम अप्सरा की ओर बढ़ा, उसकी आवाज़ भावनाओं से भर गई और कांपने लगी। “तुम्हारे लिए मेरा प्यार तुम्हारी सोच से कहीं ज़्यादा गहरा है। मेरे पिता के प्यार से भी कहीं ज़्यादा गहरा…” “सचमुच?” अप्सरा ने राजकुमार के लहजे की नकल करते हुए पूछा। “आपको ऐसा क्यों लगता है?”
“पिछले कुछ दिनों से मैं सिर्फ तुम्हारे बारे में ही सोच रहा हूँ। तुमसे मिलने का इंतज़ार असहनीय हो गया था, हर पल मेरे लिए पीड़ादायक था। लेकिन पिताजी को देखो – उन्होंने तुम्हें अपने कमरे से निकाल दिया है क्योंकि मरुतों ने सिंधुवर्त में मूर्खता कर दी है। क्या तुम इसे जुनून कहते हो? और देखो, वो मेनका के साथ कहीं चले गए हैं। मेनका के साथ, तुम्हारे साथ नहीं।”
प्राचीर से खुद को अलग करते हुए, अप्सरा जयंता की ओर बढ़ी, उसकी कमर मोहक ढंग से हिल रही थी, ढलते सूरज की छाया में उसका चेहरा कोमल होता जा रहा था। एक पल के लिए राजकुमार को लगा कि उसने कुछ हद तक सफलता हासिल कर ली है, अप्सरा का स्नेह पा लिया है। फिर उसने उसकी आँखें देखीं और उसे एहसास हुआ कि वह गलत था।
“हमारे राजा पिछले कुछ दिनों से देवलोक के गौरव के सिवा कुछ नहीं सोच रहे हैं। और तुम? उस दौरान तुमने सिर्फ मेरे बारे में सोचा। तुम अपने पिता से अपनी तुलना कैसे कर सकते हो? ऊपर से, तुमने यह कहने की हिम्मत भी की कि नारद और मैं यहाँ मज़ाक कर रहे थे। ज़रा खुद को सुनो – तुम कितने स्वार्थी और तुच्छ लग रहे हो।”
“वह तो सिर्फ नारद के लिए था, तुम्हारे लिए नहीं…”
इससे पहले कि जयंता अपनी कांपती हुई बचाव की कोशिश कर पाता, उर्वशी ने उसकी नाक के नीचे उंगलियां चटकाकर उसे चुप करा दिया।
“बस करो,” उसने फटकारा। “अगर तुम सम्मान पाना चाहते हो, तो अपने पिता के आधे भी पुरुष बनो। अगर तुम मेरे साथ अपने पिता की जगह लेना चाहते हो, तो

पहले जाकर मानव राजा से हलाहल ले आओ। देवताओं के कुछ काम आओ, अपनी योग्यता साबित करो, फिर मेरे शयनकक्ष में आना। वरना अपनी माँ की गोद में लौट जाओ, अनुभवहीन लड़के।”
जयंता भारी दरवाज़ा पटकते हुए कमरे से बाहर निकल गया, शांत महल में गूंजती गहरी प्रतिध्वनि की उसे ज़रा भी परवाह नहीं थी। वह शोक और क्रोध से अंधा होकर गलियारों के भूलभुलैया में बेतहाशा दौड़ पड़ा। अपने कमरे में पहुँचकर वह बिस्तर पर गिर पड़ा और मखमली तकिए में अपना चेहरा छिपा लिया, तभी उसकी आँखों से पहला बड़ा सा आँसू बह निकला।
उसे नहीं पता था कि वह कितनी देर तक वहां लेटा रहा और जी भर के रोता रहा, लेकिन जब वह आखिरकार लाल आंखों के साथ उठा, तो कमरा लगभग अंधेरा था, उसकी खिड़की के बाहर की चट्टानें दर्जनों चांदी जैसे तारों से भरे गहरे बैंगनी आकाश के सामने एक काली परछाई की तरह दिख रही थीं।
उसने उसे 'नासमझ लड़का' कहकर पुकारा था, ठीक उसी तरह जैसे उसके पिता ने कुछ समय पहले उसे यह कहकर विदा किया था, जब उसने वैषद का खंजर वापस लाने के लिए सिंधुवर्त में सेना का नेतृत्व करने की पेशकश की थी।
सिसकते और अपनी आंखें पोंछते हुए, जयंता अपने बिस्तर पर उठ बैठा।
हाँ, वह अमरावती में कटार लेकर आएगा। वह कटार लेकर अपने पिता, महान इंद्र को अपमानित करेगा। और नारद को, सभी अश्विनों को, सभी मरुतों को, और उन सभी देवताओं और अप्सराओं को भी जिन्होंने उसका उपहास करने का साहस किया था। यदि आवश्यकता पड़ी तो वह मानव साम्राज्य को उसकी नींव से उखाड़ फेंकेगा, लेकिन वह हलाहला को ढूंढकर लाएगा, उसने स्वयं से शपथ ली।

* * *

"तो राजा यह जानना चाहता है कि क्या बर्बर लोग अब जहाजों पर कब्जा कर रहे हैं।"
“हमारे पास यह मानने का कारण है कि हूण अनार्तों के रास्ते सिंधुवर्त पर हमला करने के लिए जहाजों का संग्रह कर रहे होंगे,” शंकु ने स्पष्टीकरण देते हुए कहा।

“अनारतास,” मदर ओरेकल की आवाज़ में आश्चर्य और थोड़ी प्रशंसा का भाव था। “समुद्र के रास्ते… बर्बरों की यह चतुराई है।”
दोनों महिलाएं महल के उत्तर में स्थित एक वन क्षेत्र में ऊँची पहाड़ी पर लोहे की बनी बेंच पर बैठी थीं। बेंच से उज्जैनी झील का एक छोटा सा हिस्सा दिखाई देता था, और झाड़ियों के बीच से महल और झील आंशिक रूप से दिखाई दे रहे थे। पार्क में ऊँचे-ऊँचे घने पेड़ थे जहाँ पक्षी और गिलहरियाँ घोंसला बनाती थीं, और मोर, काले गर्दन वाले खरगोश और चीतल अक्सर आपस में मिलती पगडंडियों पर टहलते रहते थे। यह स्थान शांत और एकांत प्रदान करता था, और देवी माँ का पसंदीदा ठिकाना बन गया था; उन्होंने शंकु से स्पष्ट और दृढ़तापूर्वक कहा था कि उन्हें महल में कहीं भी रहने की तुलना में यहाँ रहना अधिक पसंद है।
शंकु को यह बात स्पष्ट रूप से समझ आ गई थी कि उसकी दादी को उज्जैनी में तालमेल बिठाने में परेशानी हो रही थी।
शुरुआती दो दिन इतने बुरे नहीं थे, जब महल की भव्यता, उसके चारों ओर फैली झील और उज्जैन की चहल-पहल ने देवी ओरेकल का ध्यान आकर्षित किया था। फिर हमले हुए और उन्हें शाही परिवार के बाकी सदस्यों के साथ भूलभुलैया में सुरक्षित स्थान पर ले जाया गया। महल के भीतर गहरे, गर्म और घुटन भरे वातावरण में पूरी रात बिताने के बाद, वह सुबह बेहद गुस्से में निकलीं - और उनका यह गुस्सा तब से पूरी तरह शांत नहीं हुआ है।
और तो और, उसके और महल की कालकोठरियों के बीच शायद ही कोई दूरी थी, जहाँ उसका दामाद ब्रिच्छा, जिससे वह घोर नफरत करती थी, सड़ रहा था।
अपनी दादी का ध्यान महल की चिंताओं से हटाने के लिए शंकु ने पार्क घूमने का सुझाव दिया था। देवी माँ को पार्क के बारे में जानकर बहुत प्रसन्नता हुई, इसलिए वे हर शाम वहाँ आकर बेंच पर बैठकर सूर्यास्त देखते थे। शंकु को उस बूढ़ी औरत की संगति अच्छी लगती थी, वह कबीले के कारनामों की कहानियाँ सुनती थी और अपनी माँ की कहानियाँ भी, जिसे वह अब मुश्किल से ही याद कर पाती थी।
“क्या आप जहाजों के बारे में जानकारी जुटा पाएंगे?” उसने पूछा।

मदर ओरेकल ने कंधे उचकाते हुए कहा, "अगर पक्षी और बादल मुझे कुछ बताते हैं तो।"
“तुम उनसे पूछोगे ना?” शंकु ने पूछा।
“क्या इसीलिए मैं यहाँ नहीं आई हूँ?” माँ ओरेकल ने मुड़कर अपनी पोती को गौर से देखा। “क्या मैं राजा की ओर से ये प्रश्न पूछने आई हूँ?”
शंकु ने सिर हिलाया और मुंह फेर लिया, वह अपनी दादी के भाव को समझने की कोशिश कर रही थी। उसने उनकी बातों में अनिच्छा और शायद शत्रुता भी महसूस की। इससे वह बेचैन हो गई।
उसकी उलझन को भांपते हुए, मदर ओरेकल की आवाज़ नरम पड़ गई। “ज़रूर करूंगी, मेरी बच्ची। घुमंतू जनजाति हमेशा अपना वादा निभाती है।” उसने अपना सूखा हाथ आगे बढ़ाया और लड़की के बालों को धीरे से सहलाया। “क्या अभी भी दर्द हो रहा है?”
शंकु के सिर पर अभी भी पट्टी बंधी हुई थी, जो हमले वाली रात गिरने के कारण लगी थी।
“थोड़ा सा, लेकिन ज्यादा नहीं,” उसने अपनी दादी की तरफ मुस्कुराते हुए कहा। “धनवंतरी का कहना है कि घाव अच्छे से भर रहा है और मैं एक-दो दिन में ठीक हो जाऊंगी।”
“तो तुम उस व्यक्ति के पास नहीं गए जिसे वैद्य कहते हैं?” मातृ भविष्यवक्ता ने शंकु को ध्यान से देखा।
“नहीं। वैद्य ने हमारे इतने सारे गंभीर रूप से घायल लोगों का इलाज किया है कि इतनी छोटी सी बात के लिए उनके पास जाने की मेरी हिम्मत नहीं हुई।” उन्होंने शहर की ओर देखा, जो सुनहरे रंग में बदल रहा था। “उज्जायिनी वैद्य की बहुत ऋणी है।”
“मुझे डर है कि जब समय आएगा, तो वह उज्जैनी से जो कीमत वसूलेगा वह काफी भारी होगी,” देवी ने कहा।
“तुम ऐसा क्यों कह रही हो?” शंकु अचानक घूम गया। जवाब देने के बजाय, बूढ़ी औरत ने नाक सिकोड़ी और बात बदल दी। “तुम्हें याद नहीं कि तुमने यह कैसे किया… मेरा मतलब है, गायब होना?”

लड़की ने अपने हाथों की ओर देखा और अपना सिर हिलाया।
“तुम्हें कुछ याद रखना होगा, बच्चे,” भविष्यवक्ता का स्वर कोमल और मददगार था। “उस समय तुम्हें कैसा महसूस हुआ… तुम क्या सोच रहे थे… कुछ तो।” मैंने देखा कि शैतान का पैर मेरी ओर आ रहा है और मैं बुरी तरह से कहीं और होना चाहता था।
“कहाँ?” मदर ओरेकल ने पूछा।
"कहीं भी। मैं... बस उस जगह से दूर जाना चाहता था जहाँ मैं था।"
"तो फिर तुम्हें इसे दोबारा करने की कोशिश करनी चाहिए, बच्चे।"
शंकु ने अपनी दादी को हैरानी से देखा।
“यह एक अनमोल तोहफ़ा है जो तुम्हें मिला है। जैसे मुझे संकेतों को समझने की क्षमता मिली है। हम सभी में कोई न कोई प्रतिभा होती है, हालांकि दुख की बात है कि हममें से अधिकतर लोग इसे कभी खोज नहीं पाते। यह कोई चुनाव नहीं है, यह बस हमारे पास होती है। लेकिन यह जानना कि तुम्हारे पास एक प्रतिभा है और उसका उपयोग किसी उपयोगी, किसी अच्छे काम में करना – यह एक चुनाव है। इसीलिए तुम्हें अपनी प्रतिभा को निखारना सीखना होगा, बच्चे। इसे निखारो, इसे नियंत्रित करो और बुद्धिमानी से इसका उपयोग करो।”
दादी और पोती कुछ देर चुपचाप बैठी रहीं, शहर के ऊपर से उड़ते हुए बगुले के झुंड को देखती रहीं जो अपने घोंसले में लौट रहे थे। सूरज नारंगी रंग में बदल रहा था, अपना रंग आसमान में बिखेर रहा था, और ऊपर आसमान में चमगादड़ हलचल करने लगे थे।
“राजा एक और बात जानना चाहते हैं,” शंकु ने कहा। “पिछले हफ्ते सीमा के पास हमने जिस हूण जासूस को पकड़ा था, उसकी श्रीस्थली जेल में संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। हमारा मानना है कि उसे हमारे ही किसी गद्दार ने मारा है, जो नहीं चाहता था कि हमें उस जासूस से कुछ पता चले। क्या आपको लगता है…?”
भविष्यवक्ता को सिर हिलाते देख वह रुक गई।
“इसके लिए शायद मुझे सृष्टिस्थली जाना पड़ेगा, और उससे भी शायद कुछ हासिल न हो। और यह घटना तो आपने पिछले हफ्ते ही बताई।” देवी ओरेकल ने और भी

दृढ़ता से सिर हिलाया। “नहीं, मुझे नहीं लगता कि मैं इसमें आपकी मदद कर सकती हूँ।”
वह अपनी सीट से उठने लगी और शंकु ने उसकी मदद के लिए हाथ बढ़ाया। जैसे ही उसने अपनी पोती का हाथ सहारा देने के लिए पकड़ा, भविष्यवक्ता ने फिर से एक ऐसी आवाज़ में बात की, जो शंकु के मन में छिपे अर्थों से परिपूर्ण थी। लेकिन अगर मकसद यह पता लगाना है कि दुश्मन पास है या नहीं, तो हां, दुश्मन पास है। मुझे लगता है कि आपके राजा को पहले से ही इसकी जानकारी है।

* * *

विक्रमादित्य अभी छत पर कदम रखने ही वाले थे कि उन्होंने उसकी हंसी सुनी। यह एक निर्मल, मधुर ध्वनि थी, जो हवा में घुलती और ऊपर उठती जा रही थी। यह पास खिले चमेली के फूलों की सुगंध में घुलमिल गई, और बादलों की दरारों से छनकर आती कोमल चाँदनी की किरणों के साथ गुंथ गई, आनंद और जादू का एक ऐसा मिश्रण जिसने सम्राट की साँसें रोक दीं।
उस मनहूस सुबह के बाद से यह पहली बार था जब उसने विशाखा की हंसी सुनी थी, जब वह अपनी बहन के साथ घुड़सवारी के लिए निकली थी। वह उसे जगाने के लिए उनके बिस्तर पर आई थी, और जब उसने नींद में ही उसे पकड़कर अपनी ओर खींचने की कोशिश की, तो उसने मज़ाक में उसका हाथ झटक दिया और उसकी पहुँच से दूर कूद गई। उसे याद है कि उसने कुछ बुदबुदाया था कि उसे जगाना और चुंबन से वंचित करना अन्याय है, जिस पर उसने हंसते हुए जवाब दिया था कि अगर उसे उससे चुंबन चाहिए, तो उसे उसके पीछे आना होगा।
वह उसके पीछे नहीं गया था। इसके बजाय, वह वापस सो गया था। विशाखा ने इसके लिए उसे दो साल की ठंडी, उदासीन चुप्पी से दंडित किया था।
विक्रमादित्य ने कितनी बार चाहा होगा कि काश वह उस सुबह विशाखा के बहकावे में आकर उसके और क्षपणक के साथ मैदान में चले गए होते। अगर वह उनके साथ होते, तो शायद वह विशाखा को अपनी बहन की चुनौती स्वीकार करने से रोक पाते, जिसमें उसे उसके घोड़े पर सवार होने की कोशिश करनी थी। और अगर उन्होंने विशाखा को क्षपणक के घोड़े पर सवार होने भी दिया होता, तो शायद वह उसके साथ-साथ चलते ताकि यह सुनिश्चित कर सकें कि वह अप्रत्याशित जानवर ठीक से व्यवहार करे। शायद वह घोड़े की अपने नए सवार के प्रति अधीरता को भांप लेते

और उसके उछलने और अपनी पत्नी को पीठ से गिराने से पहले ही हस्तक्षेप कर देते। शायद, गिरने के बाद भी, वह विशाखा को महल में जल्दी वापस ले जा पाते ताकि धनवंतरी उसकी देखभाल जल्दी कर सकें…
विशाखा की हंसी एक बार फिर छत से गूंजी, एक मधुर लय जिसने राजा को गर्माहट और आशा से भर दिया, मानो दिन भर की चिंताएं और परेशानियां जादुई ढंग से उनके कंधों से उतर गई हों। विक्रमादित्य अपनी पत्नी के मुस्कुराते चेहरे की एक झलक पाने के लिए तड़प रहे थे, उनकी आंखों की चमक, उनकी बेफिक्री भरी अदा जब भी उन्हें कोई बात मजेदार लगती थी। फिर भी वे छत के द्वार की छाया में ही रुके रहे, आगे कदम बढ़ाने से हिचकिचाते हुए, इस डर से कि कहीं वे उस पल को भंग न कर दें, जिससे वह भ्रम की तरह बिखर जाए।
“विक्रमा, तुम्हें उसके साथ रहना होगा,” सम्राट को रानी उपश्रुति के शब्द अपने मन में गूंजते सुनाई दिए। “जब वह यहाँ नहीं थी, तब तुम हर समय उसके साथ रहे। अब जब वह वापस आ रही है, तो उसकी इस यात्रा में उसकी मदद करो। मेरे पुत्र, हिम्मत रखो, क्योंकि विशाखा को अब पहले से कहीं अधिक तुम्हारी हिम्मत की ज़रूरत है।”
खुद को हिम्मत देते हुए राजा ने गहरी सांस ली और छत पर चले गए। उनकी मां सही थीं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था कि उनकी पत्नी अब भी उन्हें पहचान नहीं पा रही थीं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था कि इससे उनका दिल टूट गया था और उनका हौसला पस्त हो गया था। मायने सिर्फ इतना रखता था कि वह विशाखा से प्यार करते थे और उनके फिर से प्यार करने का इंतजार करेंगे। विक्रमादित्य को विशाखा को ढूंढने के लिए ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ी। छत के एक कोने में दो बड़े और चौड़े सजावटी झूले लगे थे, जो गुड़हल की झाड़ियों के झुंड से आंशिक रूप से छिपे हुए थे। झाड़ियों की तरफ से धीमी- धीमी आवाज़ें आ रही थीं, और जैसे ही राजा पास पहुंचे, उन्हें पता चल गया कि विशाखा के साथ क्षपणक भी हैं।
शायद किसी के कदमों की आहट से ही उसका भेद खुल गया, लेकिन जब तक सम्राट कोने से मुड़ा, निषाद राज्य की दोनों बहनें चुप हो चुकी थीं और आशा भरी निगाहों से उसकी ओर देख रही थीं। झूलों के चौखटों पर लटके चार सजावटी दीपों की रोशनी में विक्रमादित्य समझ गया कि बहनें बातें करते हुए लाल और गुलाबी गुड़हल के फूलों की माला बना रही थीं। राजा को ईर्ष्या की एक हल्की

सी अनुभूति हुई, जो अकारण थी फिर भी बहुत तीव्र थी। उसे ऐसा लगा जैसे वह कोई घुसपैठिया हो, अवांछित, अवांछित।
“सम्राट, कितना प्यारा सरप्राइज!” विक्रमादित्य को देखकर क्षपणका की आँखें सच्ची खुशी से चमक उठीं और उनका लहजा स्नेहपूर्ण था। “मुझे पता ही नहीं था कि आप महल में वापस आ गए हैं। आइए, हमारे साथ बैठिए।”
“मैं…” अनिश्चितता से घिरकर सम्राट फिर पीछे झुक गए। उन्होंने विशाखा की ओर देखा, जिन्होंने क्षण भर के लिए उनकी निगाहों से नज़रें मिलाईं और फिर क्षपणक की ओर देखने लगीं। रानी ने अपनी नज़रें अपनी गोद में पड़ी माला पर टिका दीं।
“मुझे पता नहीं था कि आप लोग यहाँ हैं,” राजा झिझकते हुए बोला। “मेरा इरादा आप दोनों को परेशान करने का नहीं था।”
“अरे, कुछ नहीं। हम तो बस मालाएँ बना रहे थे।” क्षपनाका ने अपनी बहन की ओर एक पल के लिए देखा, और मंद रोशनी में भी विक्रमादित्य सलाहकार के चेहरे पर स्नेह की चमक देख सकते थे। जब वह उनकी ओर मुड़ी, तो क्षपनाका की आँखों में विचारमग्न भाव था।
अपनी दाहिनी ओर झुकते हुए, पार्षद ने छत के फर्श की ओर देखा। वहाँ, जिस झूले पर वह बैठी थी, उसके बगल में अगरबत्ती जलाने के लिए एक खुला मिट्टी का कटोरा रखा था। सम्राट ने देखा कि कटोरा ठंडी राख से भरा हुआ था।
“अरे नहीं, ये फिर बुझ गई।” झुककर क्षपणक ने कटोरा उठाया। “सम्राट, आप बैठ जाइए। मैं जाकर किसी को बुलाकर इसमें और संब्रानी और कोयला भरवा देती हूँ।”
“तुम्हें जाने की ज़रूरत नहीं है। तुम किसी नौकर को बुलाकर यह काम करवा सकते हो,” राजा ने खोखले और बनावटी शब्दों में सुझाव देते हुए कहा। वह समझ गया था कि क्षपणक क्या कर रहा है, और उसे इस बात का पछतावा हुआ कि उसने कुछ पल के लिए ही सही, ईर्ष्या को अपने ऊपर हावी होने दिया।
“नहीं, मैं करूँगी,” क्षपणका ने झूले से उतरते हुए मुस्कुराते हुए कहा। उनके लहजे और हावभाव में दृढ़ता थी, और वे चतुराई से वहाँ से चली गईं, जिससे विक्रमादित्य और विशाखा दोनों को विरोध करने का कोई मौका नहीं मिला।

पार्षद के कदमों की आहट दूर होती ही, विक्रमादित्य झूले के पास असहज मुद्रा में खड़ा रहा और अपनी उंगलियों को आपस में फंसा लिया। उसने विशाखा की ओर एक नज़र डाली, जो सिर झुकाए बैठी थी और अंगूठे और तर्जनी के बीच गुड़हल का फूल घुमा रही थी।
“क्या मैं बैठ सकता हूँ…?” सम्राट ने अपनी पत्नी के बगल में झूले पर खाली जगह की ओर इशारा किया।
विशाखा ने अपना सिर उठाया, उसकी ओर देखा और सहमति में सिर हिलाया। विक्रमादित्य नीचे झुके और धीरे-धीरे आगे-पीछे झूलने लगे। राजा और रानी के बीच सन्नाटा छा गया, मानो सन्नाटा उन दोनों पर हावी हो गया हो, और पूरे महल और झील पर छा जाने का आभास दे रहा हो। इससे महल के उस रास्ते पर घोड़ों के खुरों की दूर से आती आवाज और भी तेज हो गई, जो चबूतरे से सबसे दूर था। सम्राट को ऐसा लगा मानो महल सांस रोककर सुन रहा हो कि वह विशाखा से क्या कहना चाहते हैं।
"सुंदर चांदनी," विक्रमादित्य ने आकाश की ओर देखा।
विशाखा ने उसकी निगाहों का पीछा किया, फिर से सिर हिलाया और अपनी गोद की ओर देखने लगी।
जब राजा ने देखा कि सामान्य बातचीत से कोई प्रगति नहीं हो रही है, तो उसने एक अलग तरीका अपनाया। "तुम और क्षपणक किस बारे में बात कर रहे थे?"
“हम… वो…” हालाँकि रोशनी कम थी, सम्राट ने देखा कि विशाखा के चेहरे पर शर्म की लाली छा गई। “वो मुझे बता रही थी कि हम राजा से कितना डरते थे, कैसे उससे छिपते थे। लगता है एक बार वो महल की झील में कूद गई थी क्योंकि राजा अचानक पुल पर आ गया था और उसके पास भागने की कोई जगह नहीं थी। मैं… वो कहती है कि मैं उससे कहता था कि अगर हमने ठीक से व्यवहार नहीं किया तो राजा हमें मार डालेगा।”
"यह कौन सा राजा है?" विक्रमादित्य ने यह प्रश्न लापरवाही से पूछा, लेकिन रानी को देखते हुए उनकी निगाहें पैनी थीं।

“King Mahendraditya.”
“क्या तुम्हें वह याद है?” सम्राट ने पूछा।

“वह एक लंबा-चौड़ा आदमी था,” विशाखा ने सिर हिलाते हुए कहा। “उसकी आवाज़ बुलंद थी और उसकी बड़ी, काली दाढ़ी थी। मुझे लगता है कि यही बात हमें डराती थी। लेकिन मुझे वह बहुत दयालु भी लगता है।”
विक्रमादित्य ने सिर हिलाया। राजा महेंद्रादित्य नाम के व्यक्ति में कोई छोटी-मोटी बात नहीं थी। बलवान शरीर वाले उनके पिता अपनी बातों को बढ़ा- चढ़ाकर कहने के लिए जाने जाते थे – उनकी हंसी बहुत बुलंद थी, उनका क्रोध प्रचंड था और उनका हृदय विशाल था, जिसमें मित्रों के लिए हमेशा जगह रहती थी। किंवदंती है कि जब अवंती के सैनिकों ने महेंद्रादित्य को युद्ध के मैदान में बुरी तरह घायल पाया, जिनका पेट शक की तलवार से चीर दिया गया था, तो उनके राजा ने सबसे पहले उनकी कुल्हाड़ी मांगी, ताकि वे उस शक योद्धा को ढूंढ सकें जिसने उन्हें इतनी गंभीर चोट पहुंचाई थी।
सम्राट ने अपने पिता महेंद्रदित्य को राजा वल्लभ के बिल्कुल विपरीत बताया। वल्लभ, विशाखा और क्षपणका के पिता और निषाद वंश के दिवंगत राजा थे। वल्लभ एक सौम्य, मृदुभाषी और शिष्ट व्यक्ति थे, इसलिए बहनों के लिए ऊँचे स्वर में बोलने वाले और कठोर शब्दों का प्रयोग करने वाले महेंद्रदित्य से भयभीत होना स्वाभाविक था। महेंद्रदित्य को इन युवतियों का विश्वास और भरोसा जीतने में एक वर्ष से अधिक समय लगा था – वह भी तब जब उन्होंने क्षपणका को डूबने से बचाने के लिए महल की झील में उनका पीछा किया था। बाद में, जब आक्रमणकारी हूण सेना ने वल्लभ और उनके दरबार को सार्वजनिक रूप से मार डाला, तो महेंद्रदित्य इन युवतियों के लिए एक पिता समान बन गए और उनके साथ एक गहरा, स्नेहपूर्ण बंधन बना लिया जो उस दिन तक कायम रहा जब राजा अंतिम बार महल के द्वार से विदा हुए और चार कंधों पर लादकर क्षिप्रा नदी के पार श्मशान घाट ले जाए गए।
“तुम्हें और कौन याद है?” विक्रमादित्य ने उत्सुकता के बावजूद अपने लहजे को नरम रखने की कोशिश की।
“मेरी माँ और मेरे पिता। और इत्ती ताई।” विशाखा के चेहरे पर उदासी छा गई। “क्षपणक ने मुझे बताया है कि वे सब मर चुके हैं… आक्रमणकारियों ने उन्हें मार डाला।” फिर, जैसे विक्रमादित्य के प्रश्न का भाव समझकर, उसने सीधे उनकी ओर देखा। “और किसके हाथों? आपका मतलब यहाँ?”

राजा ने कंधे उचकाए और अस्पष्ट रूप से अपना सिर झुकाया, वह बातचीत को अपनी इच्छानुसार दिशा में ले जाने के लिए अनिच्छुक था।
“रानी… राजा की पत्नी… मेरा मतलब रानी उपश्रुति से है।”
"किसी और को?"
“ये रहे राजगुरु…” विशाखा थोड़ी देर रुकी। “क्षपनाका ने आज दोपहर मुझे उनकी ओर इशारा किया। ये उस राजगुरु जैसे नहीं दिखते जो महल में क्षपनाका, मुझे और अन्य बच्चों को पढ़ाया करते थे। ये राजगुरु दुबले और उम्रदराज हैं।”
विशाखा ने अपना सिर झुकाया और भौंहें सिकोड़ीं, मानो कोई बात उसे परेशान कर रही हो। उसने कहा, "मुझे अचानक एक और आदमी याद आ रहा है। बहुत बलवान, चौड़े-चौड़े कंधे और बांहें, घनी लाल दाढ़ी और बड़े-बड़े झुमके। बहुत खूंखार दिखता था। मुझे नहीं पता कि वह महल में था या नहीं, हालांकि मुझे लगता है कि वह था।"
सम्राट का दिल एक पल के लिए धड़कना भूल गया।
अमरा सिंह!
“राजगुरु द्वारा महल में पढ़ाए जाने वाले अन्य बच्चों के बारे में क्या?” उन्होंने जोर देकर पूछा। “क्या आपको उनमें से किसी का नाम याद है?” विशाखा ने सिर हिलाया और दूसरी ओर देखने लगीं।
सम्राट को अपने सीने पर भारी बोझ महसूस हुआ। "तुम्हें मैं याद नहीं?" विक्रमादित्य ने यह जानते हुए भी कि उसका जवाब क्या होगा, और यह जानते हुए भी कि वह खुद को निराशा के लिए तैयार कर रहा है, यह प्रश्न पूछा।
विशाखा ने काफी देर तक कोई जवाब नहीं दिया। वह झूले के अपने हिस्से पर बैठी रही, अपने हाथ में पकड़े गुड़हल के फूल को देखती रही और अंगूठे और तर्जनी के बीच उसकी पंखुड़ियों को धीरे से सहलाती रही।
“मुझे बताया गया था… क्षपणक ने मुझे बताया कि आप… हम विवाहित हैं।” विशाखा ने अंततः अपना सिर उठाकर विक्रमादित्य की ओर देखा। उसकी आवाज़ दबी हुई और अनिश्चित थी, उसकी आँखें बड़ी-बड़ी और भय से भरी हुई थीं। “आप… मेरे पति हैं। लेकिन मुझे याद नहीं है… मुझे खेद है।”

सम्राट ने विशाखा की ओर हाथ बढ़ाने के लिए हाथ बढ़ाया, लेकिन फिर अपना इरादा बदल दिया और हाथ को बगल में ही लटकने दिया। इसके बजाय, उन्होंने सिर हिलाया और उसे आश्वस्त करने वाली मुस्कान दी, जिसे वे जानते थे कि वह कहीं खोखली पड़ रही थी। जैसे ही उन्होंने नज़रें हटाईं, रानी ने फिर बात की। क्या आप मुझे याद दिलाने में मदद करेंगे?
विक्रमादित्य ने विशाखा की ओर अचानक रुख किया। इस बार, उसकी आँखों में उन्हें भय से कहीं अधिक कुछ दिखाई दिया। उन्हें आशा और अपेक्षा दिखाई दी। उन्हें एक उम्मीद की तलाश दिखाई दी।
“मैं करूँगा।” राहत की वजह से राजा के आँसू फूट पड़े और वह और कुछ नहीं कह पाए। विशाखा का हाथ थपथपाते हुए उनकी आँखों में आँसू चुभने लगे। रानी ने तुरंत उनका हाथ थाम लिया और स्पर्श से सुकून पाने की कोशिश की।
“अगर मैं ऐसा न कर पाऊं तो क्या होगा? अगर मैं ऐसा न कर पाऊं तो क्या होगा?” उसने कांपते होंठों से फुसफुसाते हुए कहा। “अगर… अंत तक यही स्थिति बनी रहे तो क्या होगा?”
“मैं तुम्हें याद दिलाने में मदद करूँगा।” इस संभावना पर विचार करने को तैयार न होते हुए, विक्रमादित्य ने दृढ़ निश्चय के साथ अपनी आवाज़ में दृढ़ता भर ली। वर्षों में पहली बार विशाखा ने उनसे संपर्क किया था – वह इस पल को यूँ ही बीतने नहीं देंगे। “मैं हर संभव प्रयास करूँगा। ज़रूरत पड़ने पर मैं मृत्यु से भी लड़ूँगा, लेकिन तुम याद रखोगी। यह मेरा वादा है।”
वे दोनों चुपचाप एक मिनट भी हाथ पकड़े नहीं बैठे थे कि उन्हें पास आते कदमों की आहट सुनाई दी। ऊपर देखते हुए उन्हें लगा कि क्षपनाका लौट रहे होंगे, लेकिन उनकी जगह उन्हें वैद्य के दर्शन हुए।
“अरे, तो आप यहाँ हैं!” विशाखा को देखकर वैद्य ने आश्चर्य से कहा। फिर, राजा को उसके बगल में बैठे देखकर वह अचानक रुक गया, मानो भ्रमित हो गया हो। “ओह... ओह, मुझे पता ही नहीं था कि आप भी यहाँ हैं, सम्राट।”
“यह एक अद्भुत चांदनी रात है और हम इसकी सुंदरता की प्रशंसा कर रहे थे,” विक्रमादित्य ने उत्तर दिया।

“हाँ, बिल्कुल।” वैद्य ने उनकी आपस में गुंथी हुई उंगलियों की ओर देखा। “काफी देर हो चुकी है। रानी को आराम करना चाहिए। आओ, बच्चे। चलो अंदर चलते हैं।”
विशाखा ने राजा की ओर देखा, जिन्होंने एक बार सिर हिलाया। अपनी उंगलियां छोड़ते हुए रानी उठ खड़ी हुईं।
“जल्दी करो, देर मत करो,” वैद्य का लहजा कठोर और उत्तेजित सा लग रहा था, उसने हाथ हिलाते हुए जल्दी आने का इशारा किया। “तुम्हें इतनी देर रात यहाँ नहीं रहना चाहिए। तुम्हें सो जाना चाहिए। अभी आओ।”
विक्रमादित्य जैसे ही संभले, विशाखा ने आखिरी बार उनकी ओर देखा और राजा समझ गए कि वह यहीं रहना चाहती है। लेकिन वैद्य पहले ही अपने रोगी को महल के भीतर ले जा रहे थे। वैद्य को जाते हुए देखकर सम्राट के मन में कुछ हलचल मच गई।
यह वह सुबह थी जब विशाखा को निषाद में बिताए अपने बचपन की कुछ-कुछ यादें आने लगी थीं। दो दिन पहले हुए राक्षसी हमले से छाए घोर निराशा के बावजूद, रानी के स्वास्थ्य में सुधार की खबर सुनकर उज्जैन का महल आशा और उत्साह से भर उठा था। महल के रक्षकों को महल परिसर में स्थित आश्रम से वैद्य को लाने के लिए भेजा गया और शाही परिवार के अधिकांश सदस्य विशाखा के शयनकक्ष में जमा होकर वैद्य के आने का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे।
अंततः वैद्य आ गए और उन्होंने विशाखा की स्थिति का जायजा लिया – और तभी विक्रमादित्य ने इस बात पर ध्यान दिया। एक क्षण के लिए वैद्य अपने सामने मौजूद साक्ष्य को देखकर प्रसन्न या उत्साहित होने के बजाय अधिक स्तब्ध दिखाई दिए। वैद्य के चेहरे के भाव पलक झपकते ही बदल गए, लेकिन एक अक्षम सेवक की तरह, वे विक्रमादित्य की स्मृति में अपनी छाप छोड़ गए।
अब, उस दृश्य को अपने मन में उतारते हुए, राजा को यह अहसास हुआ कि वैद्य केवल चौंकने से कहीं अधिक, विशाखा में आए परिवर्तन को देखकर बेहद परेशान और चिंतित – यहाँ तक कि घबराए हुए – प्रतीत हो रहे थे। शायद, प्रकाश और छाया के उस क्षण में जहाँ अनिश्चितता का भाव था, वैद्य की आँखों में भय भी झलक रहा था।
और डर के अलावा, कुछ और - लालच?

[illegible] [illegible] [illegible] [

उपहार

शंकु की पहली प्रवृत्ति छिपने की थी।
दहशत के उन्माद में आकर, उसकी आँखें चारों ओर छिपने की जगह की तलाश में दौड़ रही थीं, लेकिन महल के स्नानघर की खुली सीढ़ियों पर उसे छिपने के लिए कुछ भी नहीं मिला।
सीढ़ियों के बीचोंबीच असुरक्षित रूप से खड़ी, अपनी जगह पर जड़वत जमी हुई शंकु को एहसास हुआ कि चाहे वह कुछ भी करे, उसे या तो रानी उपश्रुति या महारानी माँ की सेवा करने वाली दासियों में से किसी एक द्वारा देख लिया जाएगा।
शर्म से चेहरा लाल करते हुए और यह सोचते हुए कि शाही स्नानघर में अचानक प्रकट होने का वह क्या स्पष्टीकरण दे, लड़की ने देखा कि एक दासी रानी के बालों में तेल लगा रही थी, जबकि दूसरी रानी की बाहों पर चंदन का लेप मल रही थी। तीसरी दासी नए कपड़े निकालने में व्यस्त थी, जबकि महारानी माँ स्वयं स्नानघर के किनारे बैठी थीं, उनके पैर घुटनों तक पानी में डूबे हुए थे। कुंड के पास बैठी कोई भी महिला शंकु की ओर नहीं देख रही थी - लेकिन सिर का हल्का सा झुकाव या आँखों का थोड़ा सा ऊपर उठना भी उनकी उपस्थिति को प्रकट करने के लिए पर्याप्त था।

ऊपर छत की कड़ियों पर बैठे कबूतरों के पंखों की अचानक फड़फड़ाहट से शंकु चौंक गई। और मानो यही काफी था उसके दिमाग को हरकत में लाने के लिए, उसे ठीक-ठीक पता चल गया कि उसे स्नानघर से बिना किसी को पता चले कैसे निकलना है। उसे बस कहीं और होने पर ध्यान केंद्रित करना था।
यह विचार अभी उसके मन में चल ही रहा था कि शंकु को लगा जैसे स्नानघर उसकी आँखों के सामने धुंधला होकर गायब हो रहा हो। इस अनुभूति से उसका सिर हल्का सा घूमने लगा, जिससे उसे दो-तीन बार पलकें झपकानी पड़ीं।
जब शंकु की दृष्टि स्थिर हुई, तो उसने खुद को एक मोटे, सफेद रेशम के कीड़े को दांतेदार किनारों वाले एक चौड़े, चमकीले हरे पत्ते पर रेंगते हुए पाया। कीड़ा और पत्ता उसकी नाक से कुछ ही इंच दूर थे, जिससे शंकु ने घृणा से अपना सिर पीछे खींच लिया। कीड़ा अपनी पीठ को मोड़कर अपने छोटे पिछले पैरों पर खड़ा हो गया और पत्ते के ऊपर लटके हुए काले शहतूतों के गुच्छे को पकड़ने के लिए खिंचाव और लहराने लगा।
"आपको पूरी तरह से अपनी सूंघने और सुनने की इंद्रियों पर निर्भर रहना होगा, क्या यह बात स्पष्ट है?"
शंकु एकदम स्तब्ध रह गई, फिर उसे एहसास हुआ कि ये शब्द काफी दूर से आए थे, और संदर्भ को देखते हुए, ये सीधे तौर पर उससे नहीं कहे जा सकते थे। उसने आवाज पहचान ली, ये अंगामित्रा की आवाज थी।
“हवा की सरसराहट सुनो और पक्षियों के उड़ते समय उसकी ध्वनि में होने वाले सूक्ष्म बदलावों को महसूस करो,” समसप्तकों के सरदार ने अधिकारपूर्ण और स्पष्ट स्वर में बोलना जारी रखा। “अपनी साँसों को स्थिर रखो ताकि तुम ज़मीन पर गिरते पत्ते की सरसराहट भी सुन सको।”
बड़ी फुर्ती से शंकु बाईं ओर मुड़ी और शहतूत की झाड़ी के पत्तों के बीच से झाँका। उसे पहले ही अंदाज़ा हो गया था कि वह कहाँ है – उज्जैन के पश्चिमी भाग में स्थित एक प्रशिक्षण शिविर में, जिसका उपयोग विशेष रूप से युवा संसप्तक रंगरूटों के प्रशिक्षण के लिए किया जाता था। एक शाखा को धीरे से हटाते हुए, उसने अंगमित्र की आवाज़ की दिशा में झाँका और देखा कि कप्तान आँखों पर पट्टी बाँधे सात युवकों की एक पंक्ति के सामने खड़ा है। संसप्तक लगभग पचास गज दूर, एक खुले मैदान के बीच में थे, जहाँ आवाज़ सुनाई नहीं दे

रही थी। शंकु की नज़रें दाएं-बाएं घूमती रहीं, घने जंगलों से घिरे प्रशिक्षण मैदान को देखती रहीं, जिसमें मिट्टी के गड्ढे और रस्सी के जाल बने हुए थे, फिर अंगमित्र और उनके सात आँखों पर पट्टी बाँधे कैडेटों पर लौट आईं।
“घोड़े और घोड़ी की गंध में फर्क करना सीखो,” अंगामित्रा ने नए रंगरूटों को निर्देश दिया। “मनुष्य के पसीने में भय और उत्तेजना की गंध को पहचानना सीखो। सूंघने और सुनने की इंद्रियों पर महारत हासिल करो, क्योंकि ये शिकारी के कौशल हैं। इन पर महारत हासिल कर लो, तो तुम अंधे होने पर भी लड़ सकते हो।”
शाखा को धीरे से वापस अपनी जगह पर गिरने देते हुए शंकु ने राहत की सांस ली। यह महज़ उसकी किस्मत थी कि वह शहतूत की घनी झाड़ियों के पीछे आ गई थी। वह खुले मैदान में कहीं भी, अंगामित्रा के सामने प्रकट हो सकती थी, जिससे उसे बहुत कुछ समझाना पड़ता।
बच्चे, तुम्हें अपनी प्रतिभा को निखारना सीखना होगा। इसे निपुणता से सीखो, इस पर नियंत्रण रखो और बुद्धिमानी से इसका उपयोग करो।
शंकु ने देवी ओरेकल की बातों को याद करके माथे पर शिकन डाली। पिछली रात, अपने शयनकक्ष में टिन के दर्पण के सामने खड़े होकर, उसने अपनी दादी द्वारा बताए गए वरदान का उपयोग करने की कोशिश की थी। वह देखना चाहती थी कि क्या वह जहाँ है वहाँ से गायब होकर अपने बिस्तर पर प्रकट हो सकती है। पहले तो कुछ नहीं हुआ - और फिर अचानक, शंकु ने खुद को महल की सबसे ऊपरी छत पर पाया, जहाँ से वह दीयों से जगमगाते रास्ते और झील के काले पानी को देख रही थी।
उस अनुभव से बुरी तरह घबराकर वह चुपचाप अपने कमरे में लौट आई थी, लेकिन सुबह होते ही उसने फिर से कोशिश करने का निश्चय कर लिया। एक बार फिर, उसने अपने शयनकक्ष के एक कोने से दूसरे कोने तक जाने की कोशिश की – लेकिन अंततः वह महल के स्नानघर की सीढ़ियों पर पहुँच गई, लगभग रानी उपश्रुति की नाक के नीचे। और अब वह यहाँ थी, महल से मीलों दूर, संसप्तक प्रशिक्षण शिविर के एक घने जंगल वाले कोने में।
वह अपनी इस प्रतिभा को नियंत्रित करने के काफ़ी करीब भी नहीं थी, महारत हासिल करना तो दूर की बात थी। और जिस रफ़्तार से वह आगे बढ़ रही थी, उससे वह

अंततः खुद को पूरी तरह से मूर्ख साबित कर देगी, बिना सूचना दिए और बिना बुलाए कहीं पहुँच जाएगी, और खुद के लिए और अपने आस-पास के लोगों के लिए शर्मिंदगी का कारण बनेगी। वह जानती थी कि उसे अपनी इस प्रतिभा के साथ प्रयोग करते समय अधिक सावधानी बरतनी होगी, लेकिन उसे यह नहीं पता था कि कैसे।
“नए रंगरूटों का प्रदर्शन कैसा है? क्या वे कुछ सीख रहे हैं, या वे सिर्फ आपका और अंगामित्रा का समय बर्बाद कर रहे हैं?”
वेतला भट्टा की आवाज सुनकर शंकु उछल पड़ा।
“नए रंगरूट… हाँ, मुझे लगता है कि वे ठीक हैं,” कालिदास की आवाज़ शंकु के कानों में थोड़ी दूर से सुनाई दी, शायद सुबह की हवा के रुख में बदलाव के कारण।
दोनों आवाज़ें पेड़ों के बीच से गुज़रते हुए एक घुमावदार रास्ते की दिशा से आ रही थीं, जो प्रशिक्षण मैदान से दूर जंगली पेड़ों और झाड़ियों के जंगल की ओर जाता था। यह रास्ता उस झाड़ी के किनारे से होकर गुज़रता था जहाँ शंकु छिपा हुआ था, और शहतूत की झाड़ियों के प्राकृतिक घुमाव का अनुसरण करता था। शोर न मचाते हुए, अपने पैरों को ओस से भीगी घास पर धीरे से रखते हुए ताकि उसकी पायल की आवाज़ न हो, लड़की धीरे-धीरे रास्ते से सटी झाड़ियों की ओर बढ़ी।
“मेरा मतलब यह था कि क्या वे अच्छे संसप्तक बनेंगे?” शंकु ने आचार्य के शांत स्वर में अधीरता की एक दबी हुई झलक महसूस की।
पत्तियों के बीच एक छोटे से अंतराल से झाँकने के लिए झुकते हुए, लड़की ने देखा कि कालिदास और मुख्य सलाहकार रास्ते के बीच में खड़े होकर कैडेटों को उनके अभ्यास करते हुए देख रहे थे।
“राजगुरु, हमें तो उनके प्रशिक्षण पूरा होने के बाद ही पता चलेगा,” उस विशालकाय व्यक्ति ने कंधे उचकाते हुए और थोड़ी निराशा भरी आवाज़ में उत्तर दिया। “हम केवल आशा ही कर सकते हैं कि वे प्रशिक्षण पूरा कर लेंगे। असुरों के आक्रमण में हमने लगभग एक दर्जन संसप्तक खो दिए, और अच्छे संसप्तकों की जगह लेना मुश्किल है।”

“कम से कम अब आपके पास चुनने के लिए अधिक विकल्प हैं,” वेताल भट्ट ने जवाब दिया। “जहां तक मुझे पता है, असुरों के आक्रमण के बाद से संसप्तकों में शामिल होने के लिए स्वेच्छा से आगे आने वाले सैनिकों की संख्या दोगुनी हो गई है। कालिदास, आप अवंती के सैनिकों के लिए प्रेरणास्रोत हैं।”
“मैं सहमत हूँ।” शंकु ने धनवंतरी को बोलते सुना, तभी चिकित्सक का विशाल शरीर उसकी दृष्टि के सामने आ गया, जिससे आचार्य का दुबला-पतला शरीर लगभग छिप गया। हालाँकि चिकित्सक की पीठ शंकु की ओर थी, फिर भी शंकु समझ गई कि वह मुस्कुरा रहा है।
“मुझे लगता है कि अवंती के आधे सैनिक महल के तालाब में एक असुर को फेंककर कालिदास बनना चाहते हैं,” धनवंतरी ने हंसते हुए आगे कहा। “जब तक बाकी आधे लोग कविता लिखने का मन न बना लें, तब तक मुझे कोई आपत्ति नहीं है।”
हंसी की एक छोटी सी गूंज रास्ते भर फैल गई, तभी शंकु को अवंती की बैरक की वह छवि याद आ गई जिसमें स्वप्निल आंखों वाले सैनिक कलम से ताड़ के पत्तों पर कुछ लिख रहे थे। रास्ते में खड़े सलाहकार भी धीरे-धीरे चुप हो गए और मैदान में मौजूद कैडेटों को देखने में मग्न हो गए।
“मुझे लगता है कि आप दोनों यहाँ मेरे नए रंगरूटों के हालचाल जानने के लिए नहीं आए हैं,” कालिदास ने मुड़कर अपने साथियों की ओर देखा। “क्या मैं जान सकता हूँ कि आप यहाँ क्यों आए हैं?”
भले ही सवाल बहुत ही नरमी से पूछा गया था, लेकिन उसकी बेबाकी ने आचार्य और धनवंतरी को पूरी तरह से हैरान कर दिया था। दोनों सलाहकारों को एक-दूसरे की ओर देखते हुए देखकर शंकु को एहसास हुआ कि उसे ये बातचीत छुपकर नहीं सुननी चाहिए। फिर भी, इधर-उधर घूमने से उसके पकड़े जाने का खतरा था। उसे यह भी पक्का यकीन था कि वह अपनी शक्ति का दोबारा इस्तेमाल नहीं करना चाहती थी – पता नहीं वो कहाँ पहुँचती और कितनी अजीब स्थिति में फँस जाती। उसने तय किया कि एक ही सुबह में दो बार ऐसी दुर्घटना होते-होते बची।
इसके अलावा, उसकी जिज्ञासा भी बढ़ गई थी।
“कालिदास, हमें आपके बारे में थोड़ी चिंता है,” राजगुरु ने नरमी से कहा।
“किस बात की चिंता है?” उस विशालकाय व्यक्ति ने हैरानी से पूछा।

"तुम आजकल पहले जैसे नहीं दिख रहे हो। तुम विचलित लग रहे हो, मानो तुम्हारे मन पर कोई बोझ है।"
कालिदास गहरी सोच में डूबे हुए खेत की ओर मुड़े। उन्होंने लगभग अनिच्छा से कहा, "मैं ठीक से सो नहीं पा रहा हूँ।"

“Why is that?” asked Dhanavantri.
कालिदास कुछ देर तक खेत की ओर देखते रहे, फिर उन्होंने अपना ध्यान वैद्य की ओर मोड़ा।
“मेरी नींद खराब हो जाती है क्योंकि सोते समय मुझे कुछ दृश्य दिखाई देते हैं। और मुझे आसानी से नींद नहीं आती क्योंकि वे दृश्य मेरे दिमाग में कौंधते रहते हैं।”
“क्या आप सपनों से परेशान हैं?” आचार्य ने पूछा।
“मुझे नहीं पता कि ये सपने हैं या नहीं,” उस दैत्य ने उत्तर दिया। “तुम्हें क्या दिखाई दे रहा है?” धनवंतरी ने पूछा।
कालिदास ने तुरंत कोई जवाब नहीं दिया। इसके बजाय, उन्होंने अपने बालों में उंगलियां फेरते हुए उन्हें पीछे की ओर संवारा और चोटी बना ली। शंकु देख सकता था कि उनकी आंखों में चिंता झलक रही थी।
“जो चीज़ें मैं देखता हूँ, उनका कोई मतलब नहीं होता। कभी-कभी मैं घोड़े पर सवार होकर खुले मैदान में दौड़ रहा होता हूँ। मुझे पता होता है कि मेरे पीछे और भी लोग हैं, सब घोड़े पर सवार हैं, सब सरपट दौड़ रहे हैं, लेकिन मुझे नहीं पता कि वे कौन हैं। सब चिल्ला रहे होते हैं। मुझसे मत पूछो कि मुझे यह कैसे पता चला, लेकिन हवा में खून की प्यास साफ झलक रही होती है। और एक आदमी मेरे ठीक पीछे घोड़े पर सवार है। वह मेरा पीछा कर रहा है, और जब मैं मुड़कर देखता हूँ, तो वह तीर लगा हुआ धनुष उठाता है। वह तीर मेरी तरफ तानता है, कमान खींचता है और मुझ पर चिल्लाता है।”
“क्या आप इस आदमी को नहीं पहचानते?”
“सब कुछ धुंधला सा है,” कालिदास ने सिर हिलाते हुए कहा। “वह किसी तरह जाना- पहचाना सा लग रहा है, लेकिन मुझे लगभग यकीन है कि मैंने उसे पहले कभी नहीं देखा।”

जब वह तुम पर चिल्लाता है तो क्या कहता है?
मुझे उसकी एक भी बात समझ नहीं आती।
"फिर क्या होता है?"
“कुछ नहीं। बात यहीं खत्म हो जाती है। लेकिन यह छवि बार-बार मेरे दिमाग में आती रहती है, कभी सोते समय, कभी जागते समय। मैं यह नहीं कह सकता कि यह कोई सपना है जो जागते समय मेरे सामने आता है, या फिर यह कोई ऐसी कल्पना है जो जागते समय मेरे दिमाग में घूमती रहती है और मुझे सपनों में परेशान करती है।”
“क्या इस जैसे और भी हैं?” आचार्य ने कालिदास की बांह पर धीरे से हाथ रखा। “आग जलाई गई है और लोग उसके चारों ओर बैठे हैं,” उस दैत्य ने सिर हिलाते हुए कहा। “फिर से, मुझे नहीं पता कि ये लोग कौन हैं। सब कुछ धुंधला सा है। मुझे पता है कि मैं वहाँ हूँ, और मुझे पता है कि आग मेरे लिए जलाई गई है। क्यों? मुझे कोई अंदाज़ा नहीं है, लेकिन मुझे पता है कि आग का मुझसे कुछ संबंध है। आग के पास बैठे लोगों में से एक खड़ा होता है और वह – वह एक आदमी जैसा दिखता है – एक खंजर पकड़े हुए है। मुझे सहज रूप से पता है कि खंजर मुझे चोट पहुँचाने के लिए है। मैं उसका चुभने वाला दर्द महसूस कर सकता हूँ, डर मेरे गले तक आ रहा है, मेरी धड़कन तेज़ हो रही है… फिर कुछ नहीं। बस सब खत्म हो जाता है।”

“Are there any more?” Dhanavantri probed.
कालिदास जिस क्षण भर के लिए रुके, शंकु समझ गया कि वे दुविधा में हैं। वह मुड़ा और धीरे-धीरे रास्ते पर चलने लगा।
"और भी हैं, लेकिन... वे इतने लगातार नहीं होते, इसलिए मुझे वे याद नहीं हैं।"
शंकु को लगा कि वह दैत्य पूरी तरह से ईमानदार नहीं था और इससे वह सोचने लगी कि ऐसा क्यों था।
“ये दृश्य तुम कब से देख रहे हो?” वेताला भट्टा उस विशालकाय व्यक्ति के बगल में चलने लगी। चिकित्सक भी कुछ देर बाद उनके साथ आ गया।

“पिछले कुछ दिन। वे अचानक मेरे दिमाग में कौंध जाते हैं, जब मुझे उनकी बिल्कुल उम्मीद नहीं होती। वे आते हैं—” कालिदास ने उंगलियां चटकाते हुए कहा, “…और चले जाते हैं।”
तीनों पार्षद शंकु की नज़र से ओझल हो गए, उनकी आवाज़ें और कदमों की आहट दूर होती चली गई। शंकु ने उन्हें देखने के लिए अपने घुटनों के बल खिसकना शुरू किया, लेकिन झाड़ियों के कारण उसकी दृष्टि बाधित हो रही थी।
“मैं तुम्हें कुछ ऐसा दूँगा जिससे तुम्हारा तनाव कम हो जाएगा और तुम्हें नींद आ जाएगी,” धनवंतरी के आश्वस्त और आश्वस्त करने वाले शब्द उसके कानों में गूंजे। “चलो कुछ दिन इंतजार करते हैं और देखते हैं कि…”
एक तेज हवा बाकी बचे हुए हिस्से को भी उड़ा ले गई।

* * *

"क्या आप वाकई अपने इस फैसले पर कायम हैं?"
राजा हरिहारा, सूती रजाई पर बैठे और लेखन मेज पर झुके हुए, ताड़ के पत्तों के ढेर के बीच कुछ फेर रहे थे, तभी उनके चेहरे पर झुंझलाहट के भाव उभर आए। एक पल के लिए वे चुप हो गए, उनका चेहरा उतरा हुआ था, कंधे झुके हुए थे, कोहनियाँ पसलियों से लगी हुई थीं, हाथ ताड़ के पत्तों को बिल्कुल स्थिर पकड़े हुए थे, और वे मेज पर रखी स्याही की दवात को निहार रहे थे। वे किसी अचानक हुई भारी बारिश में फंसे सारस की तरह लग रहे थे... अकड़े हुए, अजीब से और दुखी।
रानी सुमयंती ने अपने पति को निहारते हुए देखा, उनके कोमल चेहरे पर कोई भाव नहीं था। वह कद में छोटी थीं, उनका चेहरा सादा था और उम्र के साथ-साथ उनमें एक ऐसा आकर्षण और गरिमा आ गई थी जो जवानी ने उनसे छीन ली थी। कुर्सी के किनारे पर सीधी बैठी, पैर मोड़े हुए, हाथ घुटने पर करीने से रखे हुए, वह संयम और आत्मविश्वास की साक्षात मूर्ति थीं।
उसकी स्थिर निगाहों के सामने घबराकर हरिहारा ने नज़रें फेर लीं। “हम इस महल में एक और कुलभेद को अपना घिनौना सिर उठाने नहीं दे सकते,” उसने बुदबुदाते हुए कहा। ताड़ के पत्तों को मेज पर रखते हुए उसने कलम उठाई। “रुक्मा की उम्र बढ़ रही है, और उसका स्थान उसके पति के घर में है।”

“मुझे लगता है कि आपने अपने फैसले की सूचना विक्रमादित्य के दरबार को भी दे दी है?”
हरिहारा का सिर अचानक ऊपर उठा, उसकी आँखें गुस्से से लाल थीं। "मैं ऐसा क्यों करूँ?" उसकी आवाज़ में भले ही एकरसता थी, लेकिन वह इतना समझदार था कि समझ गया कि रानी ने ऐसा कुछ नहीं सोचा होगा। "रुक्मा मेरी बेटी है। इससे किसी को क्या लेना-देना कि मैं उसका हाथ किससे बाँटूँ?"
“तुम सिंधुवर्त में अपने सबसे पुराने सहयोगी के बेटे को भी नहीं बताओगी?” पहली बार सुमयंती की आवाज में एक तीखापन था, जैसे फटकार, रेशमी कपड़े में हल्की सी हलचल।
“मैं ऐसा तब करूंगा… जब सही समय आएगा।” एक बार फिर, राजा ने अपनी पत्नी की आँखों से नज़रें बचाईं।
“विक्रमदित्य ही एकमात्र कारण हैं कि रुक्मा कुलभेद के चंगुल से बच पाई।” रानी के शब्दों में अब आरोप का भाव स्पष्ट हो गया था। “विक्रमदित्य ही एकमात्र कारण हैं कि हम दोनों यहाँ बैठकर ताजी हवा में सांस ले रहे हैं और धूप का आनंद ले रहे हैं, बजाय इसके कि नीचे की घुटन भरी कालकोठरियों में सड़ते रहें। और आप ऐसे व्यवहार कर रहे हैं जैसे आप पर उनका कोई एहसान ही नहीं है।”
हरिहारा ने झुंझलाहट में कलम नीचे फेंक दी।
“देखिए, मुझे काम करना है।” उन्होंने ताड़ के पत्तों से भरी मेज की ओर हाथ बढ़ाते हुए कहा। “पायोशनी की चौकी खंडहर हो चुकी है, और चार गांवों को नए सिरे से बनाना होगा। हमारे राजस्व मंत्री करों और शुल्कों में वृद्धि के लिए मेरी मंजूरी का इंतजार कर रहे हैं, और मुझे उनके इस प्रस्ताव पर भी विचार करना है। इसलिए अब मुझे परेशान करना बंद कीजिए।”
कलम को दोबारा उठाते हुए, उन्होंने बाद में सोचते हुए कहा, “और कहीं हम भूल न जाएँ, अवंती ही एकमात्र कारण है जिसके चलते हेहेया राज्य को उन पिशाचों के प्रकोप का सामना करना पड़ा। देखिए हमें कितना नुकसान हुआ है,” उन्होंने कलम को ताड़ के पत्तों की ओर इशारा करते हुए कहा।
“आप मज़ाक कर रहे हैं क्या?” सुमयंती यह सुनकर स्तब्ध रह गईं। अपने पति को असहज होते देख उन्होंने आगे कहा, “और अगर मैं गलत नहीं हूँ, तो

विक्रमादित्य ने हेह्या को जो कुछ सहना पड़ा, उसके लिए केवल खेद ही नहीं जताया, बल्कि और भी बहुत कुछ किया है। मुझे बताया गया है कि कालिदास हमारे खजाने के लिए सोने का एक संदूक लेकर आए थे।”
“तो? इसके बारे में क्या?” हरिहारा ने रानी को चुनौती भरे अंदाज़ में देखा। “सोने का एक संदूक हमारे नुकसान की भरपाई के लिए काफ़ी नहीं होगा।” “यह सोने के खजाने के बारे में नहीं है। यह इस बारे में है कि सहयोगी एक-दूसरे के लिए क्या करते हैं।”
“मैंने अवंती को हूणों से बचाने के लिए अपने तीन हज़ार पैदल सैनिक और एक हज़ार घुड़सवार सैनिक भेजे हैं,” राजा बड़बड़ाया। “मुझे यह मत सिखाओ कि सहयोगी क्या करते हैं। अब अगर तुम मुझे अकेला छोड़ दोगे, तो मैं अपने काम पर लौट सकता हूँ।”
सुमयंती उठी, लेकिन जाने के बजाय वह कमरे के उस पार पूर्व दिशा की ओर वाली खिड़की तक गई। ऊपर हाथ बढ़ाकर उसने खिड़की पर लगे पर्दों को हटाया, जिससे सुबह की धूप कमरे में भर गई। अचानक तेज रोशनी से हरिहारा चौंक गया।
“तुम क्या कर रहे हो?” उसने पलकें झपकाते हुए और आँखों पर रोशनी पड़ने से रोकने के लिए हाथ उठाते हुए विरोध किया। “कृपया चुप रहो।”
उस विनती को अनसुना करते हुए, सुमयंती खिड़की से बाहर देखती रही, जहाँ से आम, पपीता और नीम के पेड़ों का एक बगीचा दिखाई देता था।
“आपको अचानक ऐसा क्यों लगा कि रुकमा के लिए यह एक अच्छा रिश्ता है?” उसने पूछा।
राजा ने सुमयंती को ध्यान से देखा। सुबह की सुनहरी-सफेद रोशनी में नहाई हुई सुमयंती में एक कोमल पारदर्शिता आ गई थी, जिसने उन्हें अपने चतुरंग बोर्ड पर रखी सीपियों की याद दिला दी। हेहेया राज्याभिषेक के अवसर पर राजा महेंद्रदित्य द्वारा उपहार में दिए गए चतुरंग सेट, जिसमें उत्कृष्ट नक्काशीदार हाथी, रथ, घुड़सवार और पैदल सेना की मूर्तियां थीं, का ख्याल हरिहर को बेचैन कर रहा था।
“यह अच्छा मेल क्यों नहीं है?” उन्होंने पलटवार किया। “एक शक्तिशाली राज्य की रानी के रूप में, हमारी बेटी को सिंधुवर्त के सबसे विशेषाधिकार प्राप्त लोगों के लिए आरक्षित दर्जा और सम्मान प्राप्त होगा।”

"क्या यह सब गिरिव्रज के महल में हुई कथित घटनाओं के बावजूद संभव है?" “अफवाहें,” हरिहारा ने हाथ हिलाकर बात को टाल दिया। “महज अफवाहें। कौन कह सकता है कि असल में क्या हुआ था?”
“वहाँ एक गवाह था—”
“हम्फ!” राजा ने सुमयंती की बात काटते हुए गुस्से से कहा। “हम कब से एक राजा के बजाय एक साधारण संगीतकार की बात पर भरोसा करने लगे?”
दंपति कुछ क्षणों के लिए एक-दूसरे को घूरते रहे, उनके बीच का गतिरोध लंबा खिंचता गया और वातावरण में अशुभ रूप से गूंजता रहा।
“अब, आपकी अनुमति से, क्या मैं इन्हें शुरू कर सकता हूँ?” हरिहारा ने अपने बाएं हाथ में पकड़े दो ताड़ के पत्तों को लहराया, उसकी आवाज़ में व्यंग्य झलक रहा था।
सुमयंती बिना कुछ कहे मुड़ी और कमरे से बाहर चली गई। हरिहर उसके जाने तक उसे देखता रहा, जब तक कि दरवाजा पूरी तरह बंद नहीं हो गया, फिर वह अपने राजस्व की गणना में लग गया। हालांकि, एक मिनट बाद ही, उसका ध्यान संख्याओं पर केंद्रित नहीं हो पा रहा था, और उसने विचलित होकर ऊपर देखा। सुबह का समय बेहद निराशाजनक रहा था, और राजा को अपने भीतर एक अप्रिय मनोदशा पनपती हुई महसूस हो रही थी। यदि उसे बाकी का दिन अपनी शर्तों पर गुजारना था, तो वह जानता था कि उसे सुबह के बचे हुए समय पर अपना अधिकार फिर से स्थापित करना होगा।
हरिहारा ने कलम को उसके स्टैंड में वापस रखते हुए पास ही लटकी हुई एक झालरदार घंटी की रस्सी खींची। कहीं से एक छोटी सी घंटी बजी, और लगभग तुरंत ही, एक सेवक प्रतीक्षालय से प्रकट हुआ और उसने झुककर प्रणाम किया।
“मेरे लिए छाछ लाओ,” उसने आदेश दिया। “ध्यान रखना कि उसमें बहुत ज्यादा करी पत्ते न डाल दें। कल जो परोसा था वो तो अस्तबल के नौकरों के लायक भी नहीं था। और जाने से पहले पर्दे खींच देना। ये तेज़ धूप मेरी आँखों को चौंधिया रही है।”
जैसे ही सेवक परदे खींचने लगा, हरिहारा ने उससे फिर कहा, “मैं चाहता हूँ कि तुम राजमुक्ता और दरबारी सुलेखक को आज दोपहर मेरे विश्राम के बाद यहाँ उपस्थित होने के लिए कह दो। उन्हें निर्देश देना कि वे पूरी तैयारी के साथ

आएँ – उन्हें एक राजा के लिए एक बहुत महत्वपूर्ण पत्र का मसौदा तैयार करना है।”

* * *

वह प्याला बड़ा और भारी था, जो पीतल का बना था और उस पर लोहे की जटिल नक्काशी की गई थी, जिससे उसकी चिकनी, गोल सतह पर एक सुंदर पैटर्न बन गया था। वह इतना बड़ा था कि इंद्र की हथेली के ठीक बीच में समा जाता था, और उनकी मोटी उंगलियों के बीच से बाहर की ओर उभरा हुआ और छलक रहा था।
फिर भी, बहुत धीरे-धीरे, इसका आकार बदल गया।
पहले मुंह संकरा होता गया, फिर धीरे-धीरे गोलाई खोता चला गया, इंद्र द्वारा कठोर धातु पर अधिकाधिक बल लगाने से वह किनारों से चूर-चूर हो गया, और अपनी अटूट पकड़ में उसे कुचल दिया। देव की उंगलियों के जोड़ सफेद पड़ गए और उनकी बांह की नसें तनाव से कांप उठीं, लेकिन प्याले पर उनकी पकड़ और भी कसती गई, जब तक कि प्याला फट नहीं गया, जिससे लाल सोमा का छींटा होंठ से बाहर निकला और इंद्र की उंगलियों पर बह गया।
ठंडी, झनझनाती शराब के स्पर्श ने इंद्र को क्रोध के उस गहरे गड्ढे से बाहर निकाल दिया जिसमें वह डूबते जा रहे थे। उन्होंने सिर झटक कर ऊपर और चारों ओर देखा, उनकी निगाहें धुंध से ढके उस विशाल बगीचे पर मुश्किल से ही टिक पाईं जो उस चौड़े चबूतरे के नीचे से फैला हुआ था जहाँ वह खड़े थे। अंततः, सोमा को अपनी बांह से रिसते और पैर की उंगलियों पर टपकते हुए महसूस करते हुए, देवता ने नीचे टूटे हुए प्याले के टुकड़ों पर नजर डाली।
क्रोध की एक प्रचंड लहर उसके सीने में फिर से भड़क उठी।
इंद्र ने प्याले को मजबूती से पकड़ते हुए, होंठों को गुस्से से सिकोड़ते हुए, अपना हाथ खींचा और प्याला छत पर फेंक दिया। पीला धातु का एक ऊँचा चाप हवा में उड़ता हुआ, घूमता और चमकता हुआ छज्जा छत के ऊपर से गुजरा। वह पास की झील की ओर जाने वाले संगमरमर के रास्ते पर गिरा, पत्थर की सीढ़ियों पर दो बार उछलने के बाद रास्ते के किनारे उगी झाड़ियों में गायब हो गया। जैसे ही पत्थर पर धातु की तीखी, गूंजती हुई आवाज धुंध की कोमल परतों में मंद हुई, इंद्र के पीछे से एक आवाज सुनाई दी।

“आपको धैर्य रखना होगा, मेरे स्वामी। मैं कुबेरा को प्रसन्न करने के लिए हर संभव प्रयास कर रहा हूँ।”
इंद्र मुड़े और उनकी ठंडी नीली आँखें उस खूबसूरत अप्सरा पर टिक गईं जो मेहराबदार द्वार से सटकर खड़ी थी। यह द्वार छत को भव्य झील के घर से जोड़ता था, जिसकी छतें ऊँची टाइलों से बनी थीं, जिसमें जल के पर्दे लगे थे, चीनी मिट्टी की घंटियाँ बज रही थीं और पानी की मधुर ध्वनि गूंज रही थी। अप्सरा का रूप अत्यंत सुंदर था, उसकी दूधिया सफेद त्वचा भोर की लाली से जगमगा रही थी। उसकी गहरी काली आँखें थीं, एक ऐसा चेहरा जो लोहे को भी पिघला सकता था, उसमें एक सूक्ष्म मोहकता झलक रही थी, और उसके होंठ मानो सहलाए जाने और चूमे जाने की विनती कर रहे थे।
“मुझे इसमें कोई शक नहीं, मेनका,” इंद्र की आवाज़ गले में गड़गड़ाहट के साथ गूंजी, क्योंकि वह अप्सरा के प्रति उमड़ती वासना की लहरों को शांत करने का प्रयास कर रहे थे। नज़रें झुकाते हुए उन्होंने कहा, “और इसी वजह से मैं उससे और भी ज़्यादा नफ़रत करता हूँ।”
“महोदया, चुप रहिए,” मेनका ने छत पर कदम रखते हुए नाटकीय अंदाज़ में अपनी उंगली होठों पर रखी। “हम यक्ष के मेहमान हैं और मेहमानों का मेज़बान की बुराई करना उचित नहीं होता।” “उन्होंने मुझसे मिलने या मुझे अपने महल में आमंत्रित करने की शिष्टाचार भी नहीं दिखाई,” देव ने झील की ओर गुस्से से देखते हुए कहा। “उन्होंने यहाँ मेरी उपस्थिति को भी स्वीकार नहीं किया। ऐसा लगता है जैसे मेरा कोई अस्तित्व ही नहीं है। क्या यह उचित है?”
इंद्र और मेनका को अलका झील के धुंध भरे तट पर पहुंचे तीन दिन हो चुके थे। नौका मार्ग पर तैनात कोहरे के प्रेतों ने बिना किसी प्रश्न या चुनौती के उनका स्वागत किया था, और ऐरावत को एक बूढ़े यक्ष हाथीपालक की देखरेख में सौंपे जाने के बाद, देव और अप्सरा को बिना बुलाए ही झील के छोटे से द्वीप पर बने घर तक ले जाया गया था। न तो कुबेर और न ही उनके कोई यक्ष मंत्री या सहायक प्रकट हुए थे, हालांकि इंद्र को अनुमान था कि कुबेर को इस अचानक, अनियोजित यात्रा के बारे में पता था - और शायद इसके पीछे का कारण भी। देवता यह भी जानते थे कि यदि मेनका उनके साथ न होती तो अलका में प्रवेश इतना आसान नहीं होता - या स्वागत इतना सौहार्दपूर्ण नहीं होता, यदि इसे ऐसा कहा जा सकता है।

उनके आगमन के अगले दिन सुबह, आसपास के कोहरे से एक संकरी नाव प्रकट हुई और घर की ओर जाने वाले रास्ते की सीढ़ियों को छूती हुई आगे बढ़ी। जाँच करने पर इंद्र और मेनका ने पाया कि वह नाव खाली थी और उसकी छोटी, ढलानदार छत के नीचे केवल एक व्यक्ति के बैठने की व्यवस्था थी। जैसे ही इंद्र ने नाव पर चढ़ने की कोशिश की, नाव किनारे से दूर बह गई, लेकिन जब मेनका ने चढ़ने का प्रयास किया, तो वह पानी में शांत और सहजता से तैरती रही।
यह स्पष्ट था कि नाव कुबेरा का उपहार लेने आई थी।
उस सुबह से, नाव नियमित रूप से दिन में दो या तीन बार दिखाई देती थी, अप्सरा को कोहरे में ले जाती थी और घंटों बाद उसे वापस लाती थी। दो बार इंद्र ने नाव में जबरदस्ती घुसने की कोशिश की, लेकिन दोनों बार नाव आसानी से उनकी मजबूत पकड़ से छूटकर कोहरे में गायब हो गई और केवल मेनका के लिए ही किनारे पर लौटी।
इसलिए देवता प्रतीक्षा करने के लिए तैयार हो गए, सोमा पीते हुए और देरी से चिढ़ते हुए, कामुक अप्सरा के कुबेर के साथ रहने के दौरान वे क्रोध से उबल रहे थे। उन्हें झील के किनारे बने उस घर का एकांत और अलगाव नापसंद था, जहाँ अजीबोगरीब संगीत बजता था और जहाँ धुंध में रहने वाले मूक प्रेत उनकी हर इच्छा को स्पष्ट रूप से व्यक्त होने से पहले ही पूरा कर देते थे। उनके पास सभी सुख-सुविधाएँ थीं, फिर भी वे एक कैदी की तरह महसूस करते थे, अपने द्वीप में कैद, ठंडे पानी और चिपचिपी धुंध में जकड़े हुए। वे जानते थे कि झील में सैकड़ों द्वीप हैं जिन पर महल, बाजार और यक्षों के जादुई कारखाने हैं, लेकिन फिर भी वे इस अजीब, परदेसी भूमि में खोया हुआ और अकेला महसूस करने से खुद को रोक नहीं पा रहे थे, जिसे कुबेर ने इतने साल पहले अपना बना लिया था। “शायद यक्ष राजा को प्रसन्न करना कठिन है,” मेनका ने स्पष्टीकरण देते हुए कहा। “क्षमा कीजिए, महाराज, लेकिन मैं और भी अधिक प्रयास करूंगी।”
अप्सरा की आवाज में मौजूद सच्चाई ने इंद्र को थोड़ा सा चौंका दिया। “मेनका, यह तुम्हारे बारे में नहीं है। यह तो बस उसकी श्रेष्ठता साबित करने की कोशिश है। वह जानता है कि मैं यहाँ किसी कारण से आई हूँ, और वह इस बात से प्रसन्न होना चाहता है कि वह मुझे अपने दर्शन के लिए इंतज़ार करवा सकता है।” देव ने जो बात नहीं कही, वह यह थी कि दर्शन देने में हुई देरी से

यक्ष का अप्सरा के साथ बिताया गया समय भी बढ़ गया। “कुबेर एक क्रूर व्यक्ति है।”
इंद्र के दाहिने कंधे के ठीक ऊपर से अचानक एक कर्कश आवाज आई, जिससे देवता चौंक गए। ऊपर देखते हुए उन्होंने चेरी के पेड़ की एक शाखा से लटकते हुए एक बेंत के पिंजरे को देखा, जिसके अंदर बैठा तोता अपनी छोटी-छोटी काली आँखों से उन्हें निहार रहा था। जिस सुबह मेनका कुबेर के महल गई थी, उसी सुबह वह इस पक्षी को अपने साथ लेकर लौटी थी, जो यक्ष राजा ने उसे उपहार में दिया था।
“बेवकूफ चिड़िया,” इंद्र ने झुंझलाहट में कहा। “मेरा तो मन कर रहा है कि इस मूर्ख का गला घोंट दूं।”
तोता कुछ कदम पीछे हट गया, अपने पंख फड़फड़ाए और अपना सिर एक तरफ झुकाया, मानो यह देखने के लिए इंतजार कर रहा हो कि क्या देवता को कुछ और शिष्टाचार की बातें कहनी हैं।
“ऐसा मत कहो,” मेनका ने पिंजरे का छोटा दरवाजा खोलते हुए कहा और चिड़िया की ओर दो उंगलियां टेढ़ी करके उसे अपने पास आने का इशारा किया। तोते ने तुरंत प्रतिक्रिया देते हुए अप्सरा के हाथ पर छलांग लगा दी। “यह बहुत सुंदर चिड़िया है। मैंने इससे पहले कभी ऐसी चिड़िया नहीं देखी।”
ईर्ष्या इंद्र के भीतर भड़क उठी और फूट पड़ी, जिससे उसके शब्द गले में अटक गए। “देवलोक के आसपास की पहाड़ियों में ऐसे बहुत से पेड़ हैं। इसमें कुछ खास नहीं है। अगर आपने कहा होता तो मैं आपको ऐसे एक दर्जन पेड़ लाकर दे सकता था।”
सोमा की तीव्र इच्छा से प्रेरित होकर, उसे प्याला फेंकने का पछतावा हुआ। ठीक उसी क्षण, उसकी नज़र के कोने से, उसने द्वार के पास रखी एक छोटी मेज के निकट एक धुंधली आकृति को प्रकट होते देखा। पलक झपकते ही, उस आकृति ने मेज पर एक नया प्याला रखा और गायब हो गई।
देवता मेज की ओर बढ़े। "क्या कुबेरा ने मुझे मिलने के समय के बारे में कोई संकेत नहीं दिया है?" उन्होंने पीछे मुड़कर पूछा।

नए भरे हुए प्याले को उठाकर इंद्र ने उसमें मौजूद तरल पदार्थ का एक बड़ा हिस्सा गटक लिया। जैसे ही मसालेदार तरल उनके गले से नीचे उतरा, देवता ने मेनका की प्रतिक्रिया सुनी।
“उस सवाल के जवाब में उन्होंने बस इतना ही कहा है कि जब समय आएगा, तो आपको सूचित कर दिया जाएगा, महाराज।” थोड़ी देर रुकने के बाद उन्होंने आगे कहा, “उन्होंने मुझे यह भी हिदायत दी है कि मैं उन्हें बार-बार टोककर हमारे प्रेम प्रसंग का आनंद भंग न करूं।”
क्रोध से लाल होकर, देवों के राजा मेनका की ओर मुड़े, अप्सरा और यक्ष को एक साथ बिस्तर पर देखकर उनका घनी दाढ़ी वाला चेहरा लाल हो उठा। वे जानते थे कि ईर्ष्या की ये भावनाएँ विचित्र और अनुचित थीं – यहाँ तक कि मूर्खतापूर्ण भी, मेनका को यहाँ लाने के उनके उद्देश्य को देखते हुए – फिर भी उन्हें लग रहा था कि उनके साथ धोखा हो रहा है। उन्होंने जवाब देने के लिए मुँह खोला, लेकिन अप्सरा को तोते को वापस पिंजरे में रखते देख उनके शब्द गले में ही अटक गए। उनकी पीठ उनकी ओर थी, और जैसे ही उन्होंने हिलते हुए पिंजरे को स्थिर करने के लिए अपने हाथ उठाए, उनकी सुडौल कमर ने मोहक ढंग से उन्हें आकर्षित किया। उनकी आँखें उनके शरीर के वक्रों और सिलवटों पर टिक गईं, और यह दृश्य उनके भीतर वासना की लहर की तरह उमड़ पड़ा।
“क्या बात है, महाराज?”
इंद्र ने पलकें झपकाईं और अप्सरा को घूर कर देखा। तोता अपने पिंजरे में वापस चला गया था, और अप्सरा अब हिरणी जैसी बड़ी-बड़ी आँखों से उन्हें देख रही थी, उसके चारों ओर फैली कोमल धुंध उसे और भी मोहक बना रही थी। देव ने गहरी साँस ली और साँस छोड़ना याद रखा।
“मैं यक्ष को तुम्हें पूरी तरह से अपने लिए लेने नहीं दे सकता।” आधा खाली प्याला मेज पर रखते हुए, इंद्र अप्सरा की ओर दो कदम बढ़ाए, उनकी आँखों में वासना की आग जल रही थी।
“हे महाराज, यक्ष के मन में मेरा कोई स्थान नहीं है,” मेनका ने आगे बढ़ते हुए और देव को गले लगाने के लिए अपनी बाहें फैलाते हुए उत्तर दिया। “मेरे हृदय और मन में सदा आप ही हैं।”

देव और अप्सरा एक-दूसरे से तीव्र, तीव्र आलिंगन में लीन हो गए, हाथ नंगी त्वचा पर टटोलते हुए सहारा तलाश रहे थे, गीले, खुले होंठों से तीव्र साँसें निकल रही थीं, प्रेम और वासना की मादक सुगंध में डूबने के लिए नथुने फूले हुए थे। लेकिन जैसे ही इंद्र ने मेनका के खुले कंधे पर चुंबन करने के लिए अपना सिर झुकाया, पिंजरे से एक कर्कश, तीखी और बेसुध चीख निकली।
“धिक्कार है उस पक्षी पर,” इंद्र ने दांत पीसते हुए कहा। तोता उन्हें बड़ी दिलचस्पी से देख रहा था। उसे घूरते हुए, देवता ने मेनका को कंधों से पकड़कर झील के किनारे बने एकांत घर में ले जाने का इरादा किया। “आओ, प्रिय।” अप्सरा हार मानने ही वाली थी कि वह रुक गई और सतर्क हो गई। "देखो, देव," उसने फुसफुसाते हुए कहा और उसे रोकने के लिए उसकी बांह पर उंगली रख दी। इंद्र ने मेनका की दृष्टि का अनुसरण करते हुए झील की ओर देखा। कोहरे के उफान और बहाव के बीच, उन्होंने नाव को शांत जल में सरकते हुए, सफेद पर्दों को चीरते हुए, सीधे बगीचे के निचले हिस्से में बनी सीढ़ियों की ओर जाते हुए देखा।
देवता के माथे पर क्रोध और निराशा के भाव उभर आए। "उसे इंतज़ार करने दो," वह गुर्राया। उसे इस तरह अपने सुख से वंचित किए जाने का विचार बिल्कुल पसंद नहीं था। "हम उसे इंतज़ार करवाएंगे। उसे दिखाएंगे कि उसकी मनमानी हमेशा नहीं चलती।"
वह अप्सरा को खींचने लगा, उसे अंदर आने के लिए कहने लगा, लेकिन मेनका अपने राजा के पीछे जाने के बजाय विरोध करने लगी। “नहीं, महाराज। मुझे जाना ही होगा।” इंद्र के माथे पर बढ़ती शिकन देखकर उसने कहा, “क्या होगा अगर वह मुझे यह बताना चाहता हो कि वह आपसे मिलने के लिए तैयार है? और हमारे द्वारा उसे देर करने के कारण, वह अपना इरादा बदल ले?”
बड़ी अनिच्छा से इंद्र ने मेनका के कंधे पर अपनी पकड़ ढीली की। उन्होंने उसे छत पार करके बगीचे के रास्ते पर जाते देखा – कस्तूरी और अमृत की उमंग, उनकी पहुँच से ओझल होती जा रही थी। अप्सरा पानी में उतरी, जहाँ पानी का उफान उसकी पतली टांगों को उत्तेजित कर रहा था। उसके वस्त्र उसकी कमर की लचक से लिपटे हुए थे, जबकि कोहरा उसकी नंगी पीठ और कंधों को कोमल, चंचल उंगलियों से सहला रहा था। इंद्र ने कड़वाहट से सोचा कि प्रकृति के तत्व भी

उससे प्रेम करने के लिए बेताब थे, जैसे ही वह नाव पर चढ़ी। उन्होंने उसके जाने तक उसका पीछा किया, जब तक कि वह सफेद धुंध में विलीन नहीं हो गई। सोमा को पीकर इंद्र ने कुबेर को उन अपमानों के लिए खूब कोसा जो यक्ष उन पर कर रहा था। तभी अचानक, उनकी सारी पीड़ाओं और असफलताओं का मूल कारण उनके सामने आ गया, मानो पानी में तैरते हुए फूले हुए शव की तरह धीरे-धीरे सतह पर आ रहा हो।
विक्रमादित्य।
इंद्र को यह आभास हुआ कि मानव राजा के लिए मृत्यु बहुत आसान, बहुत हल्की सजा होगी। उन्हें एक बड़ा, कहीं अधिक संतोषजनक बदला लेना था, ऐसा बदला जिससे वह मनुष्य दया की भीख मांगे, मृत्यु की भीख मांगे, मुक्ति की भीख मांगे।
विक्रमादित्य को इस सारी अपमान की कीमत धीरे-धीरे, दर्द, पीड़ा और निराशा की बूंदों के रूप में चुकानी पड़ेगी।

* * *

खड़ी, घुमावदार सीढ़ियों पर जलती हुई गांजे की गंध हवा में फैली हुई थी, जो ऊपर चढ़ने के साथ-साथ और भी तीव्र और असहनीय होती जा रही थी। जैसे-जैसे जयंता एक सीढ़ी चढ़ता गया, उसकी सांसें तेज होती गईं और गंध उसके फेफड़ों में भरती गई, जिससे उसे क्षण भर के लिए चक्कर आने लगे और खुद को संभालने के लिए उसे घुमावदार पत्थर की दीवार पर हथेली रखनी पड़ी। अगर हवा का झोंका था भी, तो वह सीढ़ियों की ठंडी, नीरस दीवारों से रिस रही बासी और सड़ी हुई गंध को दूर करने में कुछ खास मदद नहीं कर रहा था।
जयंता को लगभग घसीटते हुए आखिरी दर्जन सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ीं, और जब वह आखिरकार लैंडिंग पर पहुँचा, तो लंबी और कठिन चढ़ाई से हाँफते हुए उसने अपनी पीठ एक दीवार से टिका ली। लैंडिंग बड़ी थी लेकिन उसमें रोशनी कम थी, ऊँची खिड़की से केवल एक तिरछी रोशनी आ रही थी। रोशनी में न तो चमक थी और न ही गर्माहट, और वह लैंडिंग के बीचोंबीच एक कमजोर स्पॉटलाइट की तरह चमक रही थी, दीवारों पर धुंधली लहरों की तरह फैलती परछाइयों को मुश्किल से रोक पा रही थी।

इन्हीं दीवारों में से एक के सहारे एक नक्काशीदार लकड़ी का दरवाज़ा था, मानो घने अंधेरे में एक परछाई हो, जो सीलन भरी उदासी में लगभग अदृश्य था। जयंता सांस लेते हुए उस दरवाज़े को मिली-जुली भावनाओं से देख रहा था। उसे उसके पीछे का नज़ारा अच्छा लगता था – यह उस महल में सुकून के कुछ गिने-चुने कोनों में से एक था, जहाँ का माहौल उसके लिए किसी और तरह से शत्रुतापूर्ण था। वह हमेशा उस दरवाज़े पर जा सकता था, यह जानते हुए कि उसका स्वागत होगा, यह जानते हुए कि उसे परखा या उसका मज़ाक नहीं उड़ाया जाएगा। फिर भी, जब भी वह उस दरवाज़े से लौटता, तो अपने साथ एक असहनीय उदासी लेकर आता जो कई दिनों तक उसके साथ चिपकी रहती – गांजे की गंध की तरह। वह अक्सर उस दरवाज़े के पास से सांत्वना की तलाश में जाता था, लेकिन लौटते समय उसकी तड़प और भी बढ़ जाती थी।
लेकिन आज का दिन अलग था। वह यहाँ सांत्वना देने या पाने के लिए नहीं आया था। आज का दिन गुप्तता और चालाकी का था।
राजकुमार दरवाजे तक गया और उसे धक्का दिया, यह जानते हुए कि वह बंद नहीं होगा। जैसे ही दरवाजा अपने कब्जों पर चुपचाप घूमा, उसे गांजे के धुएं का तेज झोंका लगा जिससे उसका सिर चकरा गया और नाक में झनझनाहट होने लगी। अगले ही पल, उसने एक ज़ोरदार छींक मारी।
“क्या तुम मेरे बेटे हो?”
“जी माँ,” उसने सिसकते हुए और अपनी आँखों से आखिरी चमक को मिटाते हुए पलकें झपकाते हुए जवाब दिया।
"दरवाजा बंद कर दो, प्लीज़? यहाँ ठंड हो जाती है।"
राजकुमार ने ऐसा किया और कमरे में और अंदर चले गए। कमरा विशाल और ऊँचा था, पूर्व दिशा की ओर खुलने वाली तीन ऊँची खिड़कियों से पर्याप्त रोशनी आ रही थी। लेकिन बाहर के चबूतरे और सीढ़ियों की तरह ही, अंदर भी ठंड थी, संगमरमर का फर्श बर्फीला था। कम साज-सज्जा वाले इस कमरे की सबसे खास चीज एक विशाल चारपाई वाला पलंग था, जो फीकी चादरों और ऊनी कंबलों से भरा हुआ था और एक दीवार से सटा हुआ था। पलंग और खिड़कियों के बीच की ठंडी जगह में केवल एक ऊँचा लकड़ी का मंच और उसके सामने रखा एक ऊँचा स्टूल था।

चित्र के सामने खड़ी महिला लंबी और शाही अंदाज़ वाली थी, फिर भी उसकी अस्त-व्यस्त शक्ल उसके स्वाभाविक संयम से मेल नहीं खा रही थी। उसके कपड़ों में एक तरह की बेपरवाही झलक रही थी, मानो वह महल के शिष्टाचार की अवहेलना कर रही हो, और उसके सफ़ेद बालों का गुच्छा कमर तक बेतरतीब ढंग से लटका हुआ था। हालाँकि, उससे भी ज़्यादा चौंकाने वाला उसका दुबला-पतला, पीला चेहरा था, जिसमें धँसी हुई गालें और काली, उदास आँखें थीं।
अब वह चेहरा जयंता की ओर मुड़ा हुआ था, और एक पल के लिए ही सही, उन खाली आँखों में खुशी की एक झलक दिखाई दी।
“जयंता, मेरी प्यारी बच्ची,” महिला कमरे के आधे हिस्से तक नाचती हुई आई, फिर मानो कहीं खोई हुई सी रुक गई। “क्या तुमने दरवाजा बंद किया है? अगर खुला छोड़ दिया तो ठंड लग सकती है।”
“हां, मां।”
राजकुमार ने अपने चेहरे के सामने उड़ते धुएं के कुछ बिखरे हुए गुच्छों को हाथ से हटाया और बाईं ओर देखा। वहाँ, दीवार से सटा हुआ, खिड़कियों की छाया में छिपा हुआ, उसे तांबे और लोहे की पट्टियों से बंधे और जड़े हुए चार भारी लोहे के बक्सों की आकृति दिखाई दी। उन बक्सों को देखकर जयंता की धड़कन तेज हो गई - जिस चीज़ के लिए वह इस कक्ष में आया था, वह उनमें से एक में थी। कहीं अनजाने में अपने इरादे ज़ाहिर न हो जाने के डर से राजकुमार ने अपना सिर घुमाया और फिर उस महिला की ओर देखा। हल्का सा शर्माते हुए उसने उसकी आँखों में यह देखने की कोशिश की कि कहीं उसे कुछ शक तो नहीं हो रहा, लेकिन वह महिला बस वहीं खड़ी रही और भावहीन चेहरे से उसे घूरती रही।
राहत महसूस करते हुए राजकुमार ने अपना ध्यान उस स्त्री की हथेलियों और उंगलियों पर केंद्रित किया, जो कालिख से काली और मैली हो गई थीं। उसके दाहिने हाथ में कोयले का एक छोटा टुकड़ा था जिसे वह अपनी उंगलियों के बीच घुमा रही थी। जयंता की दृष्टि का अनुसरण करते हुए, स्त्री ने अपने हाथ की ओर देखा और उसका चेहरा खिल उठा।
“चलिए मैं आपको दिखाती हूँ कि मैं आज क्या बना रही हूँ। आइए, आइए।”

जयंता चाहता था कि वह स्त्री उसे अपनी बाहों में ले ले, गले लगा ले और उसे उसकी दुनिया की सारी बुराइयों से दूर कर दे, लेकिन इसके बजाय उसने उसे अपनी कोहनी पकड़कर ईज़ल तक ले जाने दिया।
“इसे देखो!” उत्साह से चमकती आँखों से उसने ईज़ल पर कसे हुए सफेद सूती कपड़े की ओर इशारा किया। “यह तुम्हें कैसा लगा?”
गले में अटकी गांठ को मुश्किल से निगलते हुए जयंता ने ईज़ल की ओर देखा। चित्र अभी आधा ही बना था, लेकिन उसमें राजमहल के चारों ओर फैली चट्टान के एक हिस्से की प्रतिकृति दिखाई दे रही थी। चट्टान का वह हिस्सा जो महल की तीनों खिड़कियों से दिखाई देता था; दो विशाल चट्टानें जिनके बीचोंबीच एक गहरी दरार थी, बाईं ओर की चट्टान नुकीली और तीखी थी, जबकि दाईं ओर की चट्टान गोल और थोड़ी झुकी हुई थी।
“आप क्या सोचते हैं?” महिला ने दोबारा पूछा।
“यह बहुत प्यारा है, माँ,” राजकुमार ने अपना गला साफ किया।
“है ना? मैंने इसे आज सुबह ही बनाने का फैसला किया।”
जयंता की नज़र कमरे की दीवारों पर पड़ी। हर दीवार पर दर्जनों चित्र और चित्रकारी थीं, कुछ कोयले से बनी थीं, जैसे कि स्टैंड पर रखी हुई, कुछ स्याही से और कुछ वनस्पति रंगों से। कुछ काले और सफेद थे, कुछ भूरे और गुलाबी रंग के हल्के शेड्स में, जबकि बाकी में रंगों की भरमार थी।
लेकिन उन सभी चित्रों में बीच में दरार वाली दो ऊबड़-खाबड़ चट्टानों का एक ही दृश्य दर्शाया गया था – कमरे और तीनों खिड़कियों के एक ही परिप्रेक्ष्य से। रंगों और छायांकन के अलावा, हर चित्र में कुछ भी नहीं बदला।
जब से शाची महल के इस एकांत कोने में आकर एकांतवास में बस गई थी, तब से उसका और उसकी चित्रकारी का यही हाल था। वह कमरे को एक चादर की तरह, एक जेल की तरह अपने चारों ओर लपेटे रहती थी। वह लगभग हर दिन चट्टानों का चित्र बनाती थी - बाहरी दुनिया से उसका आखिरी संपर्क - अपने जुनून को कपड़े और कैनवास पर उतारती थी, अपनी हर पेंटिंग को अद्वितीय मानती थी, इस बात को कभी न समझते हुए कि उसका हर प्रयास केवल दुनिया के प्रति उसके दृष्टिकोण की नीरसता को ही कैद कर रहा था।
“यह अच्छा है,” उसने रेखाचित्र की प्रशंसा करते हुए कहा।

जैसे ही उसने दरार पर हल्के रंग की कुछ लकीरें लगाने के लिए हाथ बढ़ाया, उसने कहा, “मुझे उगते सूरज की रोशनी में चट्टानें बहुत खूबसूरत लग रही थीं, इसलिए मैंने इसे बनाने की कोशिश की। मेरा इरादा यही था।” वह जयंता की ओर देखने के लिए रुकी। “अंदर आने के बाद तुमने दरवाजा बंद किया था क्या?”
“जी माँ,” जयंता के होंठों से सिसकते हुए ये शब्द निकले। आँखों में आँसू रोकने की पूरी कोशिश करते हुए राजकुमार ने अपना सिर माँ के कंधे पर रख दिया, अपना चेहरा उनकी गर्दन में छिपा लिया और उनके उलझे बालों में खो जाने की कोशिश की। यह पहली बार नहीं था जब उसने मन ही मन अपनी माँ की हालत पर अपने पिता को कोसा।
कुछ गड़बड़ महसूस करते हुए, शाची ने अपना बायां हाथ उठाकर अपने बेटे के चेहरे पर धीरे से सहलाया और उसके गाल पर कोयले का लेप लगा दिया। “क्या तुम ठीक हो? क्या तुम कुछ खाना-पीना चाहते हो? कहीं न कहीं पीने के लिए कुछ तो होगा ही।”
उसकी आँखें अनिश्चितता से कमरे में चारों ओर घूमती रहीं, और फिर उसकी रुचि खत्म हो गई, उसका हाथ वापस उसकी बगल में गिर गया।
“नहीं माँ, मुझे प्यास या भूख नहीं है।” अपने आने का कारण याद करके जयंता ने अपने भावों पर काबू पाया। सिर उठाकर उसने अपनी माँ को बिस्तर की ओर ले गया। “आओ, बैठो। मैं तुम्हारे लिए कुछ लाया हूँ।”
जयंता ने मुंह पर डोरी से बंधी एक छोटी रेशमी थैली निकाली। उसने शाची की ओर देखा और उसकी आँखों में उत्सुकता की चमक देखकर सिर हिलाया।
"मां, मुझे अपना चिलम देना।"
शाची ने एक छोटी, शंकु के आकार की मिट्टी की पाइप उठाई जो एक साइड टेबल पर रखी थी, और उसे अपने बेटे को दे दिया। "मुझे उम्मीद है कि तुमने दरवाजा बंद कर दिया होगा—" उसने फिर से कहना शुरू किया, लेकिन जयंता ने उसे बीच में ही रोक दिया।
“मैंने दरवाजा बंद कर दिया है, माँ,” उसने कहा। अपने लहजे में आई कठोरता को महसूस करते हुए, उसने शाची को एक तरफा मुस्कान दी। “चिंता मत करो। बस आराम से बैठो और इसका आनंद लो। देवलोक में मिलने वाली यह सबसे अच्छी गंजी है।”

जैसे ही जयंता ने चिलम में भांग के बीज और पत्तों का मिश्रण भरना शुरू किया, कमरे में एक अलौकिक शांति छा गई। मिश्रण तैयार होते ही राजकुमार ने चिलम अपनी माँ को सौंप दी और कमरे के एक कोने में जल रही एक छोटी सी अंगीठी ले आए। शाची ने चिलम को अपने पतले होठों से लगाकर अंगीठी से भांग को जलाया। गहरी साँस लेते हुए, उसने धुएँ को अपनी नाक से बाहर निकलने दिया और तकिए के सहारे पीछे झुक गई।
“आह,” उसने संतुष्टि भरी आह भरी और मुस्कुराई। “यह गंजीका सचमुच लाजवाब है।”
अपनी माँ के चेहरे पर संतोष का वह दुर्लभ भाव देखकर जयंता को अपना बचपन याद आ गया, जब उसकी माँ आम तौर पर जीवन से संतुष्ट रहती थी। वह समय जब शची राजमहल का एक अभिन्न अंग थी, न कि उसके भूले हुए इतिहास का एक हिस्सा, जो अपने कक्ष में एक अनदेखे पदचिह्न की तरह धीरे-धीरे लुप्त होती जा रही थी। इंद्र से शची का विवाह, देवों और असुरों के बीच हुए एक समझौते का दुखद परिणाम था। यह समझौता कई आक्रमणों और जवाबी हमलों के बाद हुआ था, जिसमें दोनों पक्ष बुरी तरह घायल हो गए थे और राहत के लिए संघर्ष कर रहे थे। देवों और असुरों ने एक संधि पर सहमति जताई जिसके अनुसार न तो कोई दूसरे पर आक्रमण करेगा और न ही दूसरे के क्षेत्र पर कब्जा करने की लालसा रखेगा। सद्भावना के प्रतीक के रूप में, उस समय असुरों के स्वामी पुलोमन ने इंद्र को अपनी पुत्री शची का विवाह प्रस्ताव दिया।
अपने समझौते को कायम रखने के लिए इंद्र को शची को पत्नी के रूप में स्वीकार करना पड़ा, और इस प्रकार वह देवलोक की रानी बनकर आई, जहाँ उसने जल्द ही इंद्र को एक पुत्र - जयंत - को उनके उत्तराधिकारी के रूप में जन्म दिया। हालाँकि, राजा और रानी के बीच कोई वास्तविक प्रेम नहीं था। उनका विवाह एक सुविधा के लिए किया गया था, इस तथ्य को शची ने स्वीकार कर लिया और अपने पति को अपने दरबार की कई अप्सराओं के साथ प्रेम-प्रसंग करने की अनुमति दी। जयंता के जन्म के कुछ ही वर्षों बाद, देवताओं और असुरों के बीच की संधि टूटने लगी। दोनों पक्षों ने एक-दूसरे पर अपने क्षेत्र में अतिक्रमण करने का आरोप लगाया और जल्द ही शब्दों का युद्ध हिंसक झड़पों में बदल गया। इस कलह ने शची को दुविधा में डाल दिया, क्योंकि देवता और असुर दोनों ही उसकी निष्ठा पर सवाल उठा रहे थे; इंद्र ने तो उसे उसके पिता के राज्य में वापस

भेजने का प्रस्ताव भी दिया। लेकिन शची ने देवलोक छोड़ने से साफ इनकार कर दिया और जोर देकर कहा कि उसका स्थान उसके पति के साथ ही है।
देवलोक और पाताल लोक के बीच की संधि अंततः तब टूट गई जब असुरों ने अमरावती पर अचानक हमला कर दिया। देवता बेखबर थे, महल गिरने की कगार पर था, और यद्यपि खतरे को ऐन मौके पर टाल दिया गया, फिर भी लंबे और खूनी युद्ध में देवताओं को भारी नुकसान उठाना पड़ा। महल के प्रांगणों पर बहा खून सूखने से पहले ही, भूतों की तरह फुसफुसाहटें महल के गलियारों में फैलने लगीं, जिससे यह संकेत मिला कि यह हमला किसी गद्दार का काम था, जिसके अदृश्य हाथ ने असुरों को महल तक पहुंचाया था। पहले निजी तौर पर, फिर खुलेआम शची पर उंगलियां उठाई गईं। उस पर और पुलोमन पर इंद्र से शची की शादी की साजिश रचने का आरोप लगाया गया, ताकि वह अमरावती आकर उसके रहस्य अपने पिता को भेज सके। जयंता को आज भी वह दिन याद था जब इंद्र शची के शयनकक्ष में आए थे और सच्चाई जानने की मांग की थी। अपनी मां के पीछे दुबके, डर से उनकी शॉल का किनारा पकड़े हुए, जयंता को याद है कि कैसे इंद्र शरीक करते और उन पर चिल्लाते हुए शची को निर्दोष साबित करने की गुहार लगा रहे थे। अंततः सबूतों के अभाव में इंद्र को अपनी पत्नी की बात माननी पड़ी, लेकिन उन्होंने शची को उसके कमरे में निर्वासित करके और उसे फिर कभी अपने दरबार में कदम रखने से रोककर अपना बदला ले लिया।
यहीं से शाची के एकांतवास का आरंभ हुआ। उसके आसपास कोई विश्वासपात्र या शुभचिंतक नहीं था, वह अपना सारा समय अपने कक्ष में पढ़ने और चित्रकारी करने में व्यतीत करती थी, उसके साथ केवल जयंता और कुछ नौकर ही होते थे। वह मानसिक रूप से स्वस्थ थी, लेकिन यह भी अधिक समय तक नहीं टिक पाया, क्योंकि एक दिन उसे अपने दामाद के हाथों पुलोमन की मृत्यु की खबर मिली। इंद्र ने पुलोमन को एक और संधि पर चर्चा करने के लिए मेरु पर्वत पर आमंत्रित किया था, लेकिन वास्तव में यह एक जाल था - पुलोमन और उसके पूरे दल को देवों की सेना ने निर्मम रूप से मार डाला, स्वयं इंद्र ने तलवार से पुलोमन के हृदय को भेद दिया। अपने पिता की हत्या की खबर ने शाची को व्याकुल कर दिया, जिससे गांजे की लत और चट्टानों पर चित्रकारी करने का सिलसिला शुरू हो गया।
चिलम में बची हुई थोड़ी सी गांजा सुलग रही थी। जयंता ने हाथ बढ़ाकर अपनी माँ की बेजान उंगलियों से चिलम छीन ली।

“क्या यह आपकी उम्मीदों पर खरा उतरा, माँ?” उसने पूछा।
“हम्मह,” शाची ने शब्द भी नहीं बोले। उसकी आँखों में एक खोई हुई, बेसुध सी उदासी छा गई थी। यह सुनिश्चित करने के लिए कि वह सच में कुछ समझ रही है, राजकुमार ने उसके चेहरे के सामने हाथ हिलाया और उंगलियाँ झटक दीं, लेकिन शाची टस से मस नहीं हुई।
जयंता बिस्तर से उठा और संदूकों की ओर गया। अपनी माँ की सामान्य स्थिति को देखते हुए, वह जानता था कि वह उसे दवा दिए बिना भी संदूकों की तलाशी ले सकता था। लेकिन हमेशा यह संभावना थी कि वह इसे स्वीकार नहीं करती और उसे रोकने की कोशिश करती, जिससे नौकरों का ध्यान आकर्षित हो सकता था। और फिर उसे बहुत कुछ समझाना पड़ता...
वह इनमें से किसी भी चीज का खर्च वहन नहीं कर सकता था।
उसने अही के बारे में पहली बार अपनी माँ से सुना था। यह इंद्र के दरबार से निर्वासन के बाद की बात है, जब वह अपने कमरे में एक बहिष्कृत की तरह रह रही थी और अपना सारा समय महल के पुस्तकालय के तहखानों से प्राप्त प्राचीन ग्रंथों को पढ़ने में व्यतीत करती थी। शची बहुत पढ़ती थी, और चूंकि उसके आसपास केवल जयंता ही था, इसलिए वह अक्सर बच्चे को अपनी पढ़ी हुई रोचक बातों के बारे में बताती थी।
“इसका नाम अहि है और यह तीनों लोकों में सबसे भयानक अभिशापों में गिना जाता है।” जयंता को अभी भी अपनी माँ के शब्द याद थे। “यह इतना प्राचीन है कि आज जीवित अधिकांश लोग इसे भूल चुके हैं – जो अच्छी बात है, क्योंकि जब तक यह निष्क्रिय है, हम सुरक्षित हैं।”
“माँ, यह कहाँ सोता है?”
“मेरे बच्चे, एक अज्ञात सागर की गहराई में। इसे केवल एक गुप्त मंत्र से ही जागृत किया जा सकता है, वह भी तब जब इसका उच्चारण कोई ऐसा व्यक्ति करे जिसकी रगों में असुर और देव का रक्त बहता हो।” “आखिर क्यों कोई अहि या उसे जागृत करने वाले मंत्र के बारे में नहीं जानता?”
“क्योंकि अब इन पुराने ग्रंथों को पढ़ने की जहमत ही कोई नहीं उठाता,” शाची ने संदूकों की ओर इशारा करते हुए उत्तर दिया। “ये पुस्तकालय में यूँ ही सड़ रहे हैं। पुरानी चीजों, पुराने ज्ञान की कोई कदर नहीं करता।” जयंता

चारों संदूकों में से पहले के सामने घुटने टेककर बैठ गया और उसे वह बातचीत याद आ गई। पिछली रात जब वह बिस्तर पर लेटा हुआ था, पूरी तरह जागा हुआ था और बदले की आग में जल रहा था, तब उसे वह बात याद आ गई थी।
ढक्कन को पूरी तरह से खोलकर जयंता ने खुले संदूक के अंदर झाँका। वह ताड़ के पत्तों से बने ग्रंथों और चर्मपत्रों से भरा हुआ था, कुछ पीले पड़ चुके सूती धागे से बंधे हुए थे, कुछ बस बिखरे हुए पत्ते थे। अंदर सब कुछ सड़ रहा था और टूट-फूट रहा था; हर चीज़ पर धूल की एक पतली परत जमी हुई थी जो ढेर को दबाने और कुरेदने पर उसकी उंगलियों पर चिपक रही थी।
अपनी उंगलियों से धूल झाड़ते हुए राजकुमार को एहसास हुआ कि अभी बहुत काम बाकी है। अही का ज़िक्र करने वाला ग्रंथ चारों संदूकों में से किसी में भी हो सकता था, जो ताड़ के पत्तों पर लिखी पांडुलिपियों से भरे हुए थे। उसे हर पांडुलिपि को खोलकर हर पन्ने को छानबीन करनी होगी, तब जाकर उसे प्रासंगिक ग्रंथ मिलेगा – अगर वह मिल भी पाया तो। फिर, अगर उसे ग्रंथ मिल भी गया, तो इस बात की कोई गारंटी नहीं थी कि उसमें अही को जागृत करने के लिए आवश्यक मंत्र होगा।
इसमें काफी मेहनत लगी, लेकिन अगर अही वास्तव में तीनों लोकों के सबसे बुरे अभिशापों में से एक थी, तो यह मेहनत सार्थक थी।

बहन की

सफेद घोड़ी ने अनाज की एक और मुट्ठी पाने की उम्मीद में विशाखा के हाथ को अपने मुंह से रगड़ा। हाथ खाली देखकर घोड़ी ने फुफकारा और असंतुष्टि से अपना सिर थोड़ा सा हिलाया, लेकिन उसने रानी को अपनी लंबी, चिकनी गर्दन सहलाने दिया।
“तुम कितने प्यारे प्राणी हो,” विशाखा ने घोड़े से कोमल स्वर में कहा और अपनी उंगलियों के सिरों से उसके गाल को सहलाया। उसकी आवाज़ स्नेह से भरी हुई थी और उस भव्य जानवर को देखकर उसकी आँखें आनंद से चमक रही थीं। क्षपणक कुछ कदम दूर खड़ा उसे स्नेह भरी मुस्कान के साथ देख रहा था।
दोनों बहनें शाही अस्तबल के अंदर थीं। बाहर, चमकीली, धूप से भरी सुबह अस्तबल की आवाज़ों से गूंज रही थी - घोड़ों के हिनहिनाने और चिल्लाने की आवाज़, अस्तबल के कर्मचारियों की सीटी बजाने और गपशप करने की आवाज़, जो घास डाल रहे थे और जानवरों की देखभाल कर रहे थे, घास और अनाज लाने वाली गाड़ियों की भारी गड़गड़ाहट - लेकिन इमारत के अंदर, सब कुछ शांत था। “प्रणाम, महारानी,” एक पुरुष की आवाज़ ने अचानक सन्नाटा तोड़ दिया। “और आपको भी मेरा प्रणाम, पार्षद क्षपनाका।”
दोनों बहनें मुड़कर देखने लगीं तो एक दुबला-पतला आदमी दरवाजे के पास सम्मानपूर्वक खड़ा था। महल के अधिकारी की वर्दी पहने हुए, उसने अपनी बांह

पर शाही अस्तबल के संरक्षक का बैज भी लगा रखा था। संरक्षक की त्वचा कांसे जैसी और बाल चांदी जैसे थे।
“क्या तुम हो, कीरी?” विशाखा ने वार्डन की ओर संदेह भरी नजरों से देखा। “यह मेरे लिए सम्मान की बात है कि रानी न केवल मुझे पहचानती हैं, बल्कि मेरा नाम भी याद रखती हैं,” वार्डन मुस्कुराया और सिर झुकाया, उसका सीना गर्व से फूल गया।
“तुम्हारे बालों को क्या हुआ?” विशाखा ने हैरानी से अपना हाथ मुंह पर रख लिया। उसके शब्दों में पुरानी गर्माहट और अपनापन झलक रहा था। “ये तो बिल्कुल सफेद हो गए हैं।”
“महारानी, उम्र हम सब पर अलग-अलग तरह से अपना प्रभाव डालती है,” कीरी ने एक और मुस्कान के साथ उत्तर दिया। “मेरी जवानी के बदले इसने मुझे चांदी का उपहार दिया है।” कुछ देर रुकने के बाद, वार्डन ने आगे कहा, “मुझे बताया गया है कि आप यहाँ…” वह झिझका, और स्थिति का जायजा लेने के लिए उसकी निगाहें क्षपनाका पर टिक गईं।
“जी हां,” विशाखा का लहजा बिल्कुल सहज था। “मैं यहां घोड़ा देखने आई हूं।” कीरी ने अपने पैर हिलाए और क्षपनाका की ओर संदेह भरी नज़र से देखा। पार्षद ने अपने चेहरे पर कोई भाव नहीं आने दिया, लेकिन वार्डन समझ गया कि वह कहीं और होना चाहती थी।
“क्या आपको इस बात का पूरा यकीन है?” क्षपणक ने अंत में कहा।
“हाँ,” उसकी बहन ने दृढ़ता से सिर हिलाया।
पार्षद को हल्के से कंधे उचकाते देख, वार्डन ने गलियारे की ओर हाथ घुमाते हुए कहा, "कृपया इधर आइए, महोदय।"
वे तीनों उस गलियारे से नीचे उतरे जो समकोण पर दो बार मुड़ता था। गलियारे के दोनों ओर अस्तबल बने हुए थे, जिनमें से लगभग आधे अस्तबलों में घोड़े घास चर रहे थे। अस्तबल के रखवाले इधर-उधर भाग रहे थे, कुछ पानी ला रहे थे तो कुछ घोड़ों को धो रहे थे या अस्तबलों की सफाई कर रहे थे। वार्डन और सिस्टर्स ने एक संकरा गलियारा लिया और कुछ दूर तक चले, दूर छोर पर स्थित अस्तबलों के पास पहुँचते ही उनकी गति धीमी हो गई।

कीरी को घोड़े को दिखाने की ज़रूरत नहीं पड़ी। वह अपने अस्तबल में अकेला था, बगल के अस्तबल खाली पड़े थे। घोड़ा एक बड़ा, धूसर रंग का नर घोड़ा था, जिसका चेहरा लंबा और आँखें काली और उदास थीं। उसकी काली खाल उसके चांदी जैसे रंग के कोट के नीचे से दिखाई दे रही थी, और उसकी अयाल उम्र के साथ पीली पड़ने लगी थी। अपने कान खड़े करके, वह आगंतुकों को रुचि, दुख और द्वेष के मिले-जुले भाव से घूर रहा था।
“कृपया सावधान रहें, महोदय,” वार्डन ने धीमी आवाज़ में कहा। “ज़्यादा नज़दीक मत जाइए…”
कीरी की चेतावनियों को अनसुना करते हुए, विशाखा घोड़े के पास गईं। जैसे ही वार्डन लंगड़ाते हुए रुका, क्षपणका ने अपनी बहन को एक छोटी थैली से मुट्ठी भर अनाज निकालते हुए देखा। विशाखा ने अपना हाथ बढ़ाया, और घोड़े ने तुरंत उस दाने को सूंघ लिया। एक और मुट्ठी भर अनाज देने के बाद, रानी ने धीरे से हाथ बढ़ाकर घोड़े की गर्दन और कंधे को सहलाया। जानवर ने अपनी गर्दन आगे बढ़ाकर प्रतिक्रिया दी, और क्षपणका ने पलकें झपकाईं जब जानवर ने अपनी ठुड्डी विशाखा के सिर पर रख दी।
एक क्षण के लिए, पार्षद ने कल्पना की कि उसने घोड़े की बड़ी, काली आँखों में पछतावा और पश्चाताप देखा।
“तुम यहाँ क्यों नहीं आते?” विशाखा ने क्षपणक को आमंत्रित किया। “आखिरकार, यह तुम्हारा घोड़ा है।”
मुझे नहीं लगता कि मैं ऐसा कर सकता हूँ। इसने मुझसे बहुत कुछ छीन लिया है और बहुत लंबे समय तक ऐसा ही रहा है।
रानी ने तर्क देते हुए कहा, "यह तो बस एक जानवर है। मुझे यकीन है कि इसका कोई बुरा इरादा नहीं था।"
क्षपणका ने सिर हिलाया और अपने आँसू छिपाने के लिए मुँह फेर लिया। हरा मैदान, सुनहरी धूप, विशाखा घोड़े पर सवार - यह भूरा जानवर, उसका सवार - विशाखा की हँसी में उमंग, वह हँसी जो अचानक घबराहट की चीख में बदल गई - उस सुबह उसका जीवन बिखर गया था और यह सब उस घोड़े की वजह से हुआ था।
"इसका अच्छे से ख्याल रखना," विशाखा ने कीरी से कहा और घोड़े की गर्दन पर थपथपाया।

“इन सब के बावजूद, आप उसे भी माफ कर देते हैं, महाराज?” वार्डन ने अविश्वास भरी नजरों से देखा।
“माफ़ करने की क्या ज़रूरत है? उसने मुझे अपनी पीठ पर सवारी करने के लिए नहीं कहा था। यह मेरा फैसला था, तो इस बेचारे जानवर को जो हुआ उसके लिए कैसे दोषी ठहराया जा सकता है?”
“यह सच है कि आप और सम्राट एक ही दिल की धड़कन साझा करते हैं, मेरी रानी,” कीरी ने झुककर कहा। घोड़े की ओर सिर झुकाते हुए उसने आगे कहा, “मैं इसका अच्छे से ख्याल रखूंगा। आपको मेरा वचन है।”
अस्तबल से बाहर निकलकर, बहनें महल की ओर वापस जाने लगीं, उन्होंने पालकी में बैठने के बजाय पैदल चलना चुना।
"कीरी का क्या मतलब था जब उसने कहा कि सम्राट और मैं एक ही धड़कन साझा करते हैं?"
“उसका मतलब घोड़े के संदर्भ में था।” रानी के असमंजस भरे भाव को देखकर क्षपणक ने कहा, “दुर्घटना के बाद महल में हर कोई – शायद पूरे शहर में भी – यही राय रखता था कि घोड़े को मार देना चाहिए।”
“तुम्हारा मतलब है उस बेचारे जानवर को मार डालना?” विशाखा भयभीत होकर बोली।
पार्षद ने सिर हिलाया। “लेकिन विक्रमादित्य इसकी अनुमति नहीं देते। उन्होंने कहा कि घोड़ा निर्दोष था, और उसे मारना प्रतिशोध का सबसे नीच रूप होगा। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि किसी के लिए हमारा प्यार कितना भी गहरा क्यों न हो, वह प्यार कभी भी हमारे न्याय, निष्पक्षता और सही-गलत के निर्णय को प्रभावित नहीं करना चाहिए।”
विशाखा कुछ देर चुप रही। फिर जब उसने बोलना शुरू किया, तो उसकी आवाज़ दबी हुई थी। "वह मुझसे बहुत प्यार करता था, है ना?"
“सबसे बढ़कर, वो आज भी तुम्हें याद करते हैं। ऐसा कोई दिन नहीं जाता जब वो तुम्हारे बिस्तर के पास आकर तुमसे बात न करते हों।” क्षपनाका थोड़ी देर रुकी और अपनी बहन की आँखों में सीधे देखते हुए बोली, “तुम्हें घोड़ा याद है; तुम्हें कीरी याद है… लेकिन विक्रमादित्य के बारे में कुछ नहीं? सम्राट की धुंधली सी याद तो कहीं न कहीं जरूर होगी…”

“मैं अपनी पूरी कोशिश कर रहा हूँ, बहन। मैं कसम खाता हूँ।”
विशाखा की आवाज में संशय और अपराधबोध की कंपकंपी देखकर क्षपणक ने रानी के कंधे पर हाथ रखकर उन्हें अपने करीब खींच लिया। वे इसी तरह पुलिया तक चले और उस पर कदम रखने ही वाले थे कि विशाखा ने उदास स्वर में बोलना शुरू किया। “काश उस सफेद घोड़ी पर किसी का दावा न होता। मैं उसे अपना बनाना चाहता हूँ। शायद तब मैं घास के मैदान में जाकर देख सकूँ…”
“हम घोड़े के बारे में पूछताछ कर सकते हैं, लेकिन आप उस भयानक मैदान में क्यों जाना चाहते हैं?” क्षपणक ने तीखे स्वर में पूछा। “मुझे समझ नहीं आता कि वह भयानक जगह आपको इतना आकर्षित क्यों करती है। यहाँ तक कि मेरा घोड़ा भी। आप उसे देखने पर क्यों अड़े हैं? आपको कौन सा विकृत ख्याल सताने लगा है?”
“मैं…” रानी रुक गई और उसने गहरी साँस ली। “मैं वापस जाकर उस दिन जो कुछ भी हुआ था, सब देखना चाहती हूँ। कौन जाने, इससे कौन सी यादें ताज़ा हो जाएँ? शायद इससे मुझे सम्राट याद आ जाएँ।”
“ओह, मैंने इसे उस तरह से नहीं देखा,” पार्षद ने माफी मांगते हुए सिर झुका लिया। “लेकिन मुझे संदेह है कि वैद्य अभी आपको घोड़े की सवारी करने की अनुमति देंगे, वह भी घास के मैदान तक जाने के लिए।”
वैद्य का नाम सुनते ही विशाखा के चेहरे पर एक पर्दा छा गया। उसने पूछा, "वह वैद्य कहाँ से आया?"
“किसी को ठीक से पता नहीं है। वह कहता है कि उसका घर लौहित्या नदी के किनारे, सुदूर प्राग्ज्योतिषपुरा में है। हम बस खुशकिस्मत हैं कि वह सही समय पर अवंती आया।”
“कभी-कभी मुझे उससे डर लगता है,” रानी ने दबी आवाज़ में कहा। “जिस तरह से वह मुझे देखता है। मुझे लगता है कि वह मुझे ठीक नहीं करना चाहता… मुझे लगता है कि वह कुछ और चाहता है जिसका मुझसे कोई लेना-देना नहीं है… कि जब तक उसे अपनी इच्छा पूरी नहीं हो जाती, तब तक उसे मेरी परवाह नहीं होगी।”
“क्या तुम्हें वैद्य से डर लगता है?” क्षपणक ने विस्मय से विशाखा की ओर देखा और हल्की सी हंसी हंस पड़ी। “बहन, उससे डरने की कोई बात नहीं है। उसके उपचार उज्जैन की आधी आबादी पर कारगर साबित हुए हैं, और उसने तुममें से

बहुतों को अंधकार से बाहर निकाला है। यह तो बस तुम्हारा मन बहला रहा है – मुझ पर भरोसा रखो, उसका हममें से किसी को कोई नुकसान पहुंचाने का इरादा नहीं है।”
"शायद आप सही हैं," रानी ने एक छोटी, टूटी हुई मुस्कान दी जब वे पुल के अंत तक पहुंचे और महल में प्रवेश किया।

* * *

"उनका इलाज कर रहे डॉक्टरों का क्या कहना है?"
पार्षद यशोभावी ने तुरंत कोई जवाब नहीं दिया। इसके बजाय, कुछ क्षण के लिए वे सम्मानपूर्वक हाथ बांधकर खड़े रहे और छज्जे से गिरती बारिश की बूंदों को निहारते रहे जो बालकनी के ठीक बाहर उगे नींबू के पौधे की मोम जैसी हरी पत्तियों पर पड़ रही थीं।
“माननीय न्यायाधीश, उनका कहना है कि हो सकता है कि वह थोड़ा ठीक हो जाएं,” उन्होंने कंधे उचकाते हुए कहा। “लेकिन कभी-कभी उनका यह भी कहना होता है कि लकवा स्थायी भी हो सकता है।”
राजा बाणहस्त ने सिर हिलाकर सलाहकार से मुंह फेर लिया। बालकनी की लकड़ी की रेलिंग पर थके हुए अंदाज़ में कोहनियों को टिकाकर, उन्होंने कौशांबी नदी के विशाल विस्तार को निहारा, जहाँ यमुना नदी उनके दाहिनी ओर दूर तक बहती हुई दिखाई दे रही थी।
“आपका क्या कहना है?” राजा ने सलाहकार की ओर मुड़कर पूछा। “क्या आपने चंद्रवर्धन में कोई सुधार देखा है?”
“माननीय, मुझे लगता है कि मैं कुछ बेहतर बदलाव देख रहा हूँ। लेकिन आपने राजा को स्वयं देखा है। सच कहूँ तो मुझे संदेह है कि कोई सुधार हुआ है।” बाणहस्त ने हल्के से सिर हिलाया। चंद्रवर्धन पर आई विपत्ति की खबर मत्स्य को तीन रात पहले ही मिल गई थी। बाणहस्त अपने मित्र से मिलने के लिए तुरंत कौशांबी के लिए निकल पड़े, लगभग बिना रुके घोड़े पर सवार होकर। मत्स्य और वत्स की मित्रता बहुत पुरानी थी, और वे दोनों चंद्रवर्धन अपने-अपने सिंहासन पर बैठने से बहुत पहले से मित्र थे। हूण-शक आक्रमण के शुरुआती दौर में वत्स ने दृढ़ता से समर्थन दिया था, और राजा महेंद्रादित्य के साथ

चंद्रवर्धन ने ही मगध, कोसल, हेहेय और अनार्त संघ को बर्बरों के विरुद्ध युद्ध में शामिल होने के लिए राजी किया था।
फिर भी, जैसे ही उन्हें महल में प्रवेश कराया गया और चंद्रवर्धन के शयनकक्ष तक ले जाया गया, बाणहस्त को आने पर पछतावा हुआ।
अपने मित्र को टूटा-फूटा और असहाय देखकर – उस व्यक्ति का खोखला शरीर जो कभी जीवन को आलिंगन में लिए रहता था – बाणहस्त न केवल दुखी हुआ, बल्कि उसे अपने बढ़ते वर्षों का भी गहरा अहसास हो गया। महेंद्रदित्य सबसे पहले गुजरे थे। चार वर्ष पूर्व, युगंधरा के पिता, प्रधान जयंधरा, नींद में ही चल बसे थे।
राजा सिद्धसेना भी अब इस दुनिया में नहीं थे, और चंद्रवर्धन यहाँ दयनीय अवस्था में पड़ा था। यह सोचकर दिल टूट जाता था कि कुछ ही समय में यह पीढ़ी सिंधुवर्त के इतिहास में विलीन हो जाएगी।
“शशिवर्धन कहाँ है?” बाणहस्त ने सीधा खड़े होकर चारों ओर देखते हुए पूछा। “जब से मैं आया हूँ, मैंने उसे नहीं देखा है।”
“राजकुमार प्रयागा गए हैं, महोदय। कल सुबह यमुना में एक नाव पलट गई। प्रयागा के आठ नागरिक डूब गए और छह लापता हो गए।” यशोभावी थोड़ी देर रुकीं। “राजकुमार ने स्वयं जाकर संवेदना व्यक्त करके सही काम किया।” “क्या वह बिना निगरानी के गया था?” बानाहस्ता ने भौंहें चढ़ा लीं।
“आपका स्वागत करने के लिए मुझे यहीं रुकना पड़ा।” यदि पार्षद प्रश्न के पीछे छिपे अर्थ को समझ भी गए थे, तो उन्होंने इसका कोई संकेत नहीं दिया। “वह कैसा है…?” बाणहस्त ने अपना हाथ उठाया, उंगलियों को एक काल्पनिक प्याले के चारों ओर लपेटकर, तेज़ी से दो बार अपने होठों की ओर बढ़ाया। इस हावभाव और इसके अर्थ को किसी और चीज़ से भ्रमित नहीं किया जा सकता था। “उसे समय-समय पर प्रोत्साहन की जरूरत होती है,” यशोभावी ने आह भरते हुए सिर हिलाया।
“उसे जिम्मेदारी लेनी होगी,” बानाहस्ता ने दृढ़ता से कहा। “एक दिन वह वत्स का राजा बनेगा।”
“मुझे नहीं पता, माननीय न्यायाधीश…” पार्षद ने वाक्य को अधूरा ही छोड़ दिया।

“इसका क्या मतलब है, पार्षद?” बाणहस्त ने यशोभावी की ओर तीखी नज़र से देखा। “वह वत्स का राजा बनेगा।”
“मुझे लगता है वो करेंगे, महाराज।” फिर एक विराम। बारिश की बूँदों की आवाज़ के अलावा, दोपहर का सन्नाटा पसरा हुआ था। ऐसा लग रहा था मानो महल के सभी लोग दोपहर की नींद ले रहे हों।
यशोभवी अंततः बाणहस्त की ओर मुड़ी, लेकिन उसकी भेंगी आंखों के कारण, ऐसा प्रतीत हुआ कि सलाहकार राजा के कंधे के ऊपर से उसके पीछे किसी चीज को देख रहा है।
“कभी-कभी मुझे वत्सा के लिए डर लगता है, महाराज,” यशोभावी का संयम थोड़ा पिघलता हुआ प्रतीत हुआ। “आने वाला समय कठिन होने वाला है। इसमें लोहे के समान दृढ़ पुरुषों की आवश्यकता होगी। राजकुमार दयालु और नेक इरादों वाले हैं। लेकिन वे सुख-शांति और अच्छे समय के राजा हैं।”
जैसे ही बाणहस्त ने अपना सिर झुकाया, उसके चेहरे पर उदासी छा गई। वह सलाहकार का मतलब भली-भांति समझ गया था। चंद्रवर्धन की बीमारी की खबर मिलने के बाद से यही विचार उसे भी परेशान कर रहा था। मन ही मन वह वत्सा के लिए भी चिंतित था।
और उस डर ने बदले में, उसके मन में मत्स्य के भविष्य के लिए और भी अधिक भय उत्पन्न कर दिया।
उसी क्षण, बाणहस्त ने कुछ दूरी पर एक दरवाजा खुलने की चरमराहट सुनी।
मुड़कर राजा ने उस दिशा में देखा जहाँ से आवाज़ आई थी, पहली मंजिल की बालकनी की ओर। उन्होंने देखा कि एक महिला कमरे से बाहर निकली, दरवाजा बंद किया और उनसे दूर चली गई।
“ये तो… राजकुमारी प्रलूपी हैं, है ना?” बानाहस्ता ने पूछा।
"जी हां, माननीय।"
“वह यहाँ क्या कर रही है? मुझे लगा था कि वह उज्जैन के लिए रवाना हो गई होगी। आप जानते हैं... उसके शहर ने जो कुछ झेला है उसे देखते हुए।”
“जैसे ही हमें यह खबर मिली, राजकुमार शशिवर्धन ने उन्हें अवंती ले जाने की पेशकश की, महाराज। लेकिन उन्होंने यहीं रहना चुना।”

"वास्तव में?"
“उसने कहा कि राजा चंद्रवर्धन की वर्तमान स्थिति को देखते हुए, महल की इकलौती बहू होने के नाते, उसका स्थान कौशांबी में ही है।” यशोभावी के लहजे में कुछ रहस्यमय था जिसे बाणहस्ता पूरी तरह समझ नहीं पाया। “मुझे लगता है, यह उसकी बड़ी मेहरबानी थी।”
पार्षद ने सिर हिलाया, लेकिन उनके चेहरे के भावों को समझना असंभव था। अचानक बाणहस्त के मन में एक विचार कौंधा। उसने चमकती आँखों से यशोभावी की ओर देखा।
“अभी-अभी मेरे मन में एक विचार आया – क्यों न हम विक्रमादित्य से कहें कि वे धनवंतरी को चंद्रवर्धन की जाँच के लिए भेज दें?” उन्होंने उत्साह से उंगलियां चटकाते हुए कहा। “धनवंतरी संभवतः सिंधुवर्त में हमारे सबसे अच्छे चिकित्सक हैं।”
“महामहिम, यह अच्छा विचार है, लेकिन मुझे संदेह है कि सम्राट हमें धनवंतरी की सेवाएं दे पाएंगे। हम उनसे अनुरोध कर सकते हैं, और हो सकता है कि सम्राट अपनी दया से सहमत भी हो जाएं, लेकिन उज्जैनी पर हुए तीन हमलों के बाद, अवंती से यह अनुरोध करना हमारे लिए स्वार्थपूर्ण होगा।”
राजा ने एक बार फिर गीले प्रांगण की ओर देखा और गहरी सोच में डूब गए। कुछ दिन पहले विक्रमादित्य के दरबार से एक दूत विराटपुरी आया था, जो पहले दो हमलों और उनके कारणों - हलाहल और सम्राट के उसकी रक्षा करने के वचन - की खबर लेकर आया था। हलाहल की कहानी ने बाणहस्त को चकित कर दिया था और उसे गर्व से भर दिया था। यद्यपि उसे चिंता थी कि विक्रमादित्य ने देवताओं और असुरों को नाराज़ कर दिया है, फिर भी उसे इस बात का आश्वासन था कि युवा सम्राट को यह कार्य स्वयं सर्वज्ञ ईश्वर ने सौंपा था।
अब उज्जैन पर तीसरा हमला हुआ था, जो इतना भीषण था कि शहर पंगु हो गया था। यह सच था कि हमले को विफल कर दिया गया और राक्षसों को खदेड़ दिया गया। इससे यह भी साबित हुआ कि सम्राट और उनकी नौ सदस्यीय परिषद अब भी अत्यंत शक्तिशाली हैं, और सर्वज्ञ ईश्वर ने अपने योद्धाओं का चुनाव बुद्धिमानी से किया था। लेकिन तीसरे हमले ने उन्हें एक ऐसी बात के प्रति भी सचेत कर दिया जो सिंधुवर्त के अन्य राज्यों के लिए चिंताजनक थी।

बाणहस्त को विक्रमादित्य और उनके सलाहकारों की सिंधुवर्त को आक्रमणकारियों से सुरक्षित रखने की प्रतिबद्धता पर कोई संदेह नहीं था, लेकिन वह समझ गया था कि हलाहल युक्त कटार ने सब कुछ बदल दिया था। अब से, विक्रमादित्य और अवंती का ध्यान हमेशा बँटा रहेगा – और मरुस्थली के बर्बरों को दूर रखने की ज़िम्मेदारी सिंधुवर्त के शेष भाग पर बढ़ती जाएगी।
बाणहस्त ने उदास मन से सोचा कि सिंधुवर्त के शेष भाग को सम्राट द्वारा शिव से किए गए वचन का दंड भुगतना पड़ेगा।

* * *

जब पंद्रह व्यापारिक रथों का काफिला अमरावती के पूर्वी द्वार से निकला, तब तक आकाश क्षितिज से क्षितिज तक बैंगनी रंग से भर चुका था और तारे टिमटिमा रहे थे। व्यापारी देव घोड़ों पर सवार होकर व्यापारिक रथों के साथ चल रहे थे, जिनमें मसाले, रेशम, रंग और गंजीका जैसी विविध वस्तुएँ लदी हुई थीं। वहीं, बालदार, बौने जैसे दिखने वाले किंपुरुष सेवक मशालें लिए आगे-आगे चल रहे थे और मार्ग को रोशन कर रहे थे। तीन पालकी में अप्सराएँ भी काफिले का हिस्सा थीं, जो देवलोक की प्राचीन राजधानी देवप्रस्थ नगर की ओर जा रहा था, जो पूर्व दिशा में कंचनश्रृंग पर्वत की छाया में स्थित था।
पूर्वी द्वार की रक्षा कर रहे देवताओं ने काफिले पर सरसरी नज़र डाली। किसी भी रक्षक ने पीछे से आ रहे घुड़सवार पर ध्यान नहीं दिया, जो एक साधारण सा दिखने वाला व्यक्ति था, जिसने एक सिकुड़ा हुआ लबादा ओढ़ा हुआ था और अपने घोड़े पर झुका हुआ था, सिर नीचे किए और मशाल की रोशनी से चेहरा फेरे हुए था। काफिला द्वार से काफी आगे निकल जाने के बाद ही घुड़सवार ने जोखिम उठाकर चुपके से अपने कंधे के ऊपर से रक्षकों की ओर देखा, जो अपनी बेकार की बातचीत में वापस लौट चुके थे।
घुड़सवार काफिले के साथ ही रुका रहा, रात होने का इंतज़ार करता रहा, क्योंकि वे विरल जंगलों वाले ग्रामीण इलाके की ओर बढ़ रहे थे। वह चुपचाप पीछे-पीछे चलता रहा ताकि किसी का ध्यान आकर्षित न करे; उसे राहत मिली कि उसके साथियों में से किसी ने भी उसमें कोई खास दिलचस्पी नहीं दिखाई। वे कुछ मील तक इसी तरह चलते रहे, जब तक कि सड़क जंगली अशोक वृक्षों के घने

झुरमुट में नहीं मुड़ गई। घुड़सवार ने अपने घोड़े की गति और धीमी कर दी, फिर सड़क के एक तीखे मोड़ पर रुक गया।
कान लगाकर उसने बैलगाड़ियों के पहियों की धीमी होती चरमराहट और गड़गड़ाहट तथा घोड़ों के खुरों की आवाज सुनी। उसने तब तक इंतजार किया जब तक काफिला सुनाई देने की सीमा से बाहर नहीं निकल गया, फिर उसने अपने घोड़े को घुमाया और अमरावती की दिशा में वापस चल पड़ा। हालांकि, सड़क के एक मोड़ पर पहुंचकर, पश्चिम की ओर सीधे जाने के बजाय, सवार ने उत्तर-पश्चिम दिशा की ओर जाने वाला संकरा रास्ता चुना।
सवार ने अपने घोड़े को पूरी ताकत से दौड़ाया, इस बात की परवाह किए बिना कि इतनी तेज़ रफ़्तार से घोड़ा जल्दी थक जाएगा। दो घंटे बाद जब चाँद निकला, तब तक वह अमरावती से कई मील दूर हो चुका था। हालाँकि, घोड़े को आराम की ज़रूरत थी, इसलिए उसे गति धीमी करनी पड़ी। जब वे एक पहाड़ी झरने के पास पहुँचे, तो उसने लगाम कस दी और घोड़े को प्यास बुझाने और साँस लेने देने के लिए नीचे उतर गया।
घुड़सवार उफनती धारा के किनारे घुटनों के बल बैठ गया और मुट्ठी भर पानी निकालकर अपने चेहरे पर छिड़कने लगा। जैसे ही वह सीधा हुआ, चांदनी जयंता के कोमल, मांसल चेहरे और उसकी तीक्ष्ण, संकरी आँखों पर पड़ी।
जयंता को शची के कक्ष में तीन बार जाना पड़ा और तीन बार उसे गंजीका से बेहोश करना पड़ा, तब जाकर उसे आहिष का ज़िक्र करने वाला एक ग्रंथ मिला। उसने उस ग्रंथ को बड़े दुख के साथ पढ़ा, क्योंकि उसमें आहिष की विनाशकारी शक्तियों का तो वर्णन था, पर उस मंत्र का कोई ज़िक्र नहीं था जिससे उस राक्षस को जगाया जा सके। जयंता लगभग हताश हो चुका था, तभी उसे सारे संदूक खंगालने का ख्याल आया। दो बार और जाने और बड़ी सावधानी से खोजने के बाद, उसने आखिरकार चौथे संदूक के तल में दबे ताड़ के पत्तों के एक गट्ठे से धूल झाड़ी। कुछ ही क्षणों बाद, नम आँखों से खुशी से चमकते हुए, उसने अपनी माँ को आलिंगन में कसकर पकड़ लिया और कृतज्ञता व्यक्त की कि उसने उन ग्रंथों को सुरक्षित रखा था जो उसने कभी संदूक से उधार लिए थे।
मंत्र वाले ग्रंथ को ढूंढना तो बस शुरुआत थी। अही को जागृत करने के अनुष्ठान शुरू करने से पहले अभी बहुत काम बाकी था, बहुत कुछ तय करना था। और समय भी कम था – जयंता अपने पिता के अमरावती लौटने से पहले महल में वापस आना

चाहता था। लेकिन, चूंकि यह उन सभी लोगों के लिए एक आश्चर्य – एक जागृति, एक करारा जवाब – होना था जो उसे बहुत कम समझते थे, इसलिए उसे हर कदम पर पूरी गोपनीयता बरतनी पड़ी।
राजकुमार को महल में किसी के भी उसकी अनुपस्थिति पर ध्यान देने की उम्मीद नहीं थी। जब तक वह किसी मुसीबत में नहीं पड़ता था, तब तक वहाँ किसी को भी उसकी परवाह नहीं थी – हालाँकि जब उसने अपने पिता को वीषाद का खंजर भेंट किया, तब यह स्थिति बदल गई। लेकिन उसे गरुड़ों से सावधान रहना था। गरुड़ बहुत कम ही चूकते थे, और अगर उनमें से किसी एक को भी उसकी गतिविधियों का पता चल जाता, तो खबर तुरंत नारद और बृहस्पति तक पहुँच जाती, और वे उसे रोकने के लिए किसी को भेज देते। इसी कारण, देवलोक छोड़ने के किसी भी पारंपरिक तरीके पर भरोसा करना भी असंभव था – कोई न कोई ज़रूर देख लेता और शक करने लगता। इसलिए उसके पास केवल एक ही रास्ता बचा था: यह वैकल्पिक मार्ग।
महल से निकलना काफी आसान था, और जयंता को पूरा यकीन था कि बाजार में घुसकर देवप्रस्थ जाने वाले काफिले में शामिल होते समय किसी ने उसे पहचाना नहीं था। अब उसे बस अंधेरे का फायदा उठाकर उत्तर की ओर स्थित पहाड़ों तक पहुंचना था, जहां किन्नर रहते थे।
वहाँ उनके सामने एक और चुनौती थी - एक किन्नर को ढूँढ़ना और उसे मनाना कि वह उन्हें सिंधुवर्त और विक्रमादित्य के राज्य तक ले जाए।

खाना

पल्लवन घुटनों तक गहरे पानी की खाई से गुज़रते हुए, मोटे शॉल से सिर ढके हुए, यह महसूस कर रहा था कि बारिश और अंधेरा उसके साथी षड्यंत्रकारियों की तरह थे। दो धोखेबाजों की तरह मिलकर, वे उसे गुमराह करने और उसकी यात्रा के अंत की ओर ले जाने वाले मार्ग से दूर रखने के लिए अपनी पूरी कोशिश कर रहे थे।
बारिश, ज़ाहिर है, अंधेरा होने से काफी पहले ही शुरू हो गई थी। दोपहर में हल्की बूंदा-बांदी से शुरू होकर दिन बढ़ने के साथ-साथ तेज़ होती गई। सूर्यास्त के समय या उसके आसपास, बारिश ने अपना कहर बरपा लिया और पूरे गिरिव्रजा को अपनी चपेट में ले लिया, सड़कों पर पानी भर गया और लोगों को अपने घरों में शरण लेने पर मजबूर कर दिया। दरअसल, जिस समय पल्लवन अपने मिशन पर निकले थे, उस समय बाढ़ का पानी कई निचले इलाकों में बने घरों की दहलीज तक पहुँच गया था और उस सराय में भी घुसने का खतरा मंडरा रहा था जहाँ वे ठहरे हुए थे।
पल्लवन ने अब वह दिशा चुनी जिसे वह सही दिशा समझ रहा था और आगे बढ़ा, शॉल को अपने सिर पर अच्छी तरह ओढ़ लिया। शॉल ने बारिश से बचाव करना तो कब का छोड़ दिया था, लेकिन कम से कम अब भी उसके चेहरे को जिज्ञासु निगाहों से बचा रखा था... वैसे तो सड़कों पर काफी समय से किसी ने उसे देखा भी नहीं था। एहतियात

के तौर पर उसने अपने चेहरे को बकरी के बालों से बनी एक बनावटी दाढ़ी से ढक लिया था, लेकिन उसे महसूस हो रहा था कि उसकी बाईं कनपटी पर दाढ़ी उखड़ रही है, बारिश के पानी से उसका गोंद निकल गया था।
गली-गली, संकरी-गली रास्तों से गुज़रते हुए पार्षद उस इलाके की ओर बढ़ रहा था, जहाँ उसे उम्मीद थी कि मगध के महल के अधिकारी और मगध की राजसभा के सदस्य रहते होंगे। वह उफनते पानी में आगे बढ़ता रहा, समय का उसे पता ही नहीं चल रहा था, हर पल उसके अंदर निराशा और भूख बढ़ती जा रही थी। फिर अचानक, संयोगवश, वह एक मोड़ पर मुड़ा और खुद को एक ऐसे चौराहे पर पाया जहाँ उसकी गली एक मुख्य मार्ग को दो भागों में बाँट रही थी।
पल्लवन को बेहद खुशी हुई जब उसने अपने बाईं ओर गिरिव्रज के मुख्य काली मंदिर का बहुस्तरीय गुंबद देखा। राहत की सांस लेते हुए वह दाईं ओर मुड़ा। अगर उसकी गिनती सही थी, तो वह अब आसानी से उत्तमा का घर ढूंढ सकता था।
दस मिनट बाद, पार्षद एक छोटे, मंद रोशनी वाले पिछले कमरे में खड़ा था, तौलिए से खुद को सुखा रहा था, जबकि उत्तमा उसे आश्चर्य और संदेह के मिले- जुले भाव से देख रहा था। उसे उत्तमा ने खुद घर में प्रवेश दिया था, लेकिन इससे पहले उसने अपनी नकली दाढ़ी उतार दी थी और उत्तमा के हाथ में रखे दीपक की रोशनी में अपना चेहरा बारीकी से जांचने के लिए आगे कर दिया था।
कपड़े बदलकर और सूखकर, पल्लवन को अंततः एक अतिथि कक्ष में ले जाया गया। उत्तम ने एक छोटे से दीवान की ओर इशारा करते हुए कहा, "बैठिए।" फिर उत्तम ने एक मेज से सोमा का प्याला भरा। "क्या मैं आपको भी थोड़ा सोमा दूं?" “क्या आप इसके बदले कोई शराब लेंगे?” पल्लवन ने जवाब दिया। “सर्दी से लड़ने के लिए यह कहीं बेहतर रहेगा।”
“बहाने, बहाने… मुझे लगता है कि पिछली बार जब मैंने तुम्हें देखा था, तब से तुम्हारी पसंद बहुत बिगड़ गई है,” उत्तम ने बनावटी तिरस्कार से नाक सिकोड़ी। फिर भी, उसने ताली बजाई, और जब एक नौकरानी आई, तो उसने उसे शराब का एक घड़ा लाने का आदेश दिया।
“मुझे उम्मीद नहीं थी कि तुम इस बारिश में आ जाओगी,” नौकरानी के जाने के बाद उत्तमा ने कहा। “अगर तुम नहीं आतीं तो मैं तुम्हें गला घोंटकर मार

डालता, क्योंकि तुम्हारी वजह से मैं महल में होने वाले भोज में शामिल नहीं हो पाया।”
"क्या आज रात आपको किसी भोज में जाना था?"
“राजा परिषद ने राजा शूरसेना की ओर से व्यक्तिगत निमंत्रण भेजे थे,” उत्तम ने सिर हिलाते हुए कहा और बैठ गया।
“राजा शूरसेना?” पल्लवन ने भौंहें चढ़ाते हुए पूछा। “तो क्या अब यह औपचारिक हो गया है?”
“यह जल्द ही होगा। कल मगध की प्रजा को यह खबर दी जाएगी; राजा के ताम्रलिप्ति से लौटते ही राज्याभिषेक होगा।”
“शूरसेना ताम्रलिप्ति में है?” पल्लवन की भौहें उसके माथे से सटी रहीं। “ताम्रलिप्ति पर तुम्हारी सेना ने कब्जा कर लिया है?”
“कुछ दिन पहले,” उत्तमा ने सिर हिलाया। नौकरानी शराब लेकर लौटी थी। “अभी पूरी जानकारी नहीं मिली है, लेकिन हाँ, मेरे दोस्त, वांगा अब लगभग मगध के नियंत्रण में है। तुम्हें क्या लगता है आज रात का भोज किस बात का जश्न मनाने के लिए था?”
पल्लवन उत्तम को देखता रहा जब उत्तम ने घड़ा स्वीकार किया, नौकरानी को विदा किया और एक प्याला भरने लगा। कद में छोटा और दुबला-पतला उत्तम वर्षों में थोड़ा ही बदला था। केवल उसकी दाढ़ी, जो कभी एकदम काली थी, अब पूरी तरह से भूरी हो गई थी, जिससे उसकी चिकनी भूरी त्वचा और भी अधिक आकर्षक लग रही थी। हमेशा की तरह, दाढ़ी को बड़े करीने से संवारा गया था, जो कनपटी से शुरू होकर जबड़े के साथ-साथ ठुड्डी पर जाकर समाप्त होती थी।
कई ग्रीष्मकाल पहले, युवावस्था में, वे काशी रियासत के प्रयागा में एक ही गुरु के अधीन लेखांकन और कूटनीति का प्रशिक्षण ले रहे थे, तभी उनकी मुलाकात हुई थी। समान स्वभाव और विश्वदृष्टिकोण के कारण उनकी तुरंत ही गहरी मित्रता हो गई थी – यह मित्रता तब भी कायम रही जब उत्तम ने राजा सिद्धसेना के दरबार से गिरिव्रज में सेवा करने का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया था, जबकि पल्लवन भूमिपाल के दरबार में शिष्य के रूप में श्रावस्ती चले गए थे। अब, कोसल के मुख्य दूत और मगध के कर प्रशासक के रूप में, उनके

पास मिलने का समय बहुत कम था, लेकिन पल्लवन का मानना था कि मगध में अगर कोई एक व्यक्ति है जिस पर वह भरोसा कर सकते हैं, तो वह उत्तम ही हैं।
“लेकिन दावत बस करो,” उत्तमा ने पल्लवन के हाथों में शराब का प्याला थमाते हुए कहा और अपनी सीट पर लौट गया। “बताओ तुम यहाँ इस हालत में क्यों आए हो…” कर अधिकारी पल्लवन के चेहरे को ध्यान से देखने के लिए रुका। “यह कैसी भद्दी दाढ़ी है! क्या यह सब गुप्त रखना ज़रूरी था? यह भेष, वह पत्र जो तुमने फलवाले के ज़रिए मुझे भेजा था…” तभी उसके मन में एक नया विचार आया और उसके चेहरे पर चिंता के भाव छा गए। “क्या तुम किसी मुसीबत में हो? क्या तुम कोसल से भाग रहे हो?”
“मैं बिल्कुल ठीक हूँ और राजा भूमिपाला का प्रिय हूँ, मेरे मित्र,” पल्लवन ने अपनी दाढ़ी को, जो थोड़ी ढीली हो रही थी, दबाते हुए उत्तर दिया। “गिरिव्रज में मुझे पहचाने जाने का जोखिम नहीं उठाना चाहिए – दुर्भाग्य से, यहाँ मुझे पहचानने वाले काफ़ी लोग हैं। मैं नहीं चाहता कि कोई भी मेरी उपस्थिति की सूचना आपके राज परिषद को दे।”
पहली बार उत्तमा के चेहरे पर आशंका की झलक दिखाई दी। "ऐसा क्यों है?" पल्लवन ने अपने प्याले से एक लंबा घूंट लिया, जिससे शराब उसके गले से नीचे उतरकर उसके पेट में ठहर गई। फिर, धीमी आवाज़ में बड़बड़ाते हुए, उसने उत्तम को सब कुछ बताया: गिरिव्रज में शूरसेना से मिलने जाना, वह संगीतकार जो उससे शरण मांगने आया था, संगीतकार द्वारा महल की सीढ़ियों पर वास्तव में क्या हुआ था उसका खुलासा, श्रावस्ती के लिए उनका पलायन, और उसके बाद विक्रमादित्य के दरबार में उसकी यात्रा...
उत्तमा बिना रुके सुनता रहा, और जब पल्लवन ने सिद्धसेना की मृत्यु की सुबह संगीतकार द्वारा देखी गई घटना का खुलासा किया, तो उसका चेहरा पीला पड़ गया। जब पल्लवन ने बोलना समाप्त किया, तो प्रशासक ने अपना प्याला एक ही घूंट में खाली कर दिया और व्यथित भाव से अपनी सीट पर पीछे की ओर झुक गया। “हम कैसे यकीन कर सकते हैं कि इस संगीतकार का…” उत्तमा अपने आगंतुक की ओर देखने के लिए रुका। “क्या आपके इस संगीतकार का कोई नाम भी है?”
“गजकेतु,” पल्लवन ने उत्तर दिया।

“ठीक है, तो हमें कैसे पता चलेगा कि यह आदमी सच बोल रहा है? लोग ध्यान आकर्षित करने के लिए अजीबोगरीब बातें कहते हैं... हो सकता है कि वह संगीतकार ही न हो।”
“हम उनकी विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के लिए जांच-पड़ताल कर रहे हैं। सब कुछ सही पाया गया है।”
"लेकिन हो सकता है कि वह अब भी उन सब बातों के बारे में मनगढ़ंत कहानी बना रहा हो... जो कुछ उसने देखा है," उत्तमा ने जोर देकर कहा और अपने गिलास में तेज शराब फिर से भर ली।
पल्लवन ने जवाब देने से पहले अपने दोस्त को थोड़ी सी शराब पीने की इजाजत दी।
वह इस तरह की बात पर झूठ क्यों बोलेगा?
"कौन जाने... शायद उसका कोई निजी स्वार्थ हो।"
"किसके विरुद्ध? शूरसेन? मगध?"
उत्तम चुपचाप अपने प्याले को गोद में लिए बैठ गया।
“मुझे बताइए, क्या आपको सचमुच विश्वास है कि किकाटा लोग वांगा के समर्थन से मगध के विरुद्ध विद्रोह कर रहे थे?” पल्लवन ने अपने मेज़बान को गौर से देखा।
प्रशासक असहज होकर अपनी सीट पर थोड़ा हिल गया, लेकिन फिर भी कुछ नहीं बोला। “मित्र, मैं तुम्हारी बुद्धिमत्ता का सदा प्रशंसक रहा हूँ,” पल्लवन ने घड़ा उठाते हुए और अपना खाली प्याला भरते हुए कहा। “मैं तुमसे आग्रह करता हूँ कि अब इसका उपयोग करो। पुराने राजा को किकटों से कोई द्वेष नहीं था, और वे वांगा पर आक्रमण का कभी समर्थन नहीं करते। लेकिन अब किकट घृणा के अभियान का शिकार हैं, और वांगा के विरुद्ध युद्ध सफलतापूर्वक लड़ा जा चुका है। अपने आप से पूछो कि क्या सिद्धसेना के जीवित होते तो यह सब संभव होता?” उत्तम ने पार्षद को सतर्कता से देखा, उसके चेहरे पर उसके मन में उमड़ रहे संदेह स्पष्ट रूप से झलक रहे थे।
“इस बात की संभावना तो हमेशा रहती है कि गजकेतु झूठ बोल रहा हो, लेकिन हमें समझ नहीं आता कि इससे उसे क्या लाभ होगा,” पल्लवन ने दृढ़ता से कहा। “पर

अगर हम एक पल के लिए भी उसे संदेह का लाभ दें, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि शूरसेना को राजा और वफादार सजय की हत्या करके क्या लाभ होगा।”
“उसे वंगा पर आक्रमण करने और ताम्रलिप्ति को पकड़ने का एक उचित कारण मिल जाता है।” उत्तम ने फुसफुसाते हुए कहा, मानो उनका ध्यान अपने प्याले में रखी सामग्री पर केंद्रित हो।
कुछ देर तक चुपचाप बैठे रहने के बाद उन्होंने पल्लवन को ध्यान से देखा। "तो अब भूमिपाला और सम्राट विक्रमादित्य शूरसेना को न्याय के कटघरे में लाना चाहते हैं, है ना?"
“मेरे राजा और सम्राट क्या चाहते हैं, इससे मुझे कोई खास मतलब नहीं है, मेरे मित्र। मुझे पैंतीस साल पहले प्रयाग का वह दिन याद है, जब आपको गिरिव्रज आने का निमंत्रण मिला था। मुझे वह सब कल की तरह याद है... सिद्धसेना के दरबार में सेवा करने की आपकी आँखों में जो खुशी थी। सिद्धसेना आपके राजा थे। इसलिए अब सिर्फ यही मायने रखता है कि आप क्या चाहते हैं।”
“हमें सावधानीपूर्वक छानबीन करनी होगी, किसी तरह इस मामले की तह तक पहुंचना होगा,” उत्तमा ने उत्तर दिया। “लेकिन हमें सावधान रहना होगा। मुझे ऐसे लोगों को ढूंढना होगा जिन पर मैं भरोसा कर सकूं, जो सच्चाई को उजागर करना चाहते हों, जो…”
“वे लोग जो पुराने राजा से प्यार करते थे,” पल्लवन ने वाक्य पूरा किया। कुछ देर बाद, दोनों दोस्त उत्तमा के घर के दरवाजे पर खड़े थे। बाहर बारिश आखिरकार रुक गई थी, लेकिन ठंडी हवा चल रही थी, जिससे सड़कों पर बाढ़ के पानी में लहरें उठ रही थीं।
“क्या आपको यकीन है कि आप वापस जाने का रास्ता ढूंढ लेंगे?” प्रशासक ने संदेह भरी निगाहों से अंधेरे में देखा। “मैं किसी को आपके साथ भेजने का इंतजाम कर सकता हूँ…”
“नहीं, यह हम दोनों के लिए बहुत जोखिम भरा है। और अब से हमें यहाँ नहीं मिलना चाहिए। कोई बेहतर जगह चुन लो। मैं अपने फल विक्रेता मित्र के माध्यम से संपर्क में रहूँगा।”

पल्लवन जाने ही वाले थे कि अचानक रुक गए, एक हाथ दरवाजे पर रखते हुए। उन्होंने पूछा, “क्या शाही परिषद को भोज में आपकी अनुपस्थिति का पता नहीं चला होगा? अगर कोई पूछे तो आप इसका क्या स्पष्टीकरण देंगे?”
“चिंता मत करो, मेरे दोस्त। जब मुझे तुम्हारा पत्र मिला, तो मैंने बदहजमी का बहाना बनाकर निमंत्रण अस्वीकार कर दिया।” उत्तमा का चेहरा उदास हो गया। “हालांकि, तुमने अभी जो कुछ बताया है, उसके बाद मुझे डर है कि आज रात बदहजमी मेरे लिए सिर्फ एक बहाना नहीं होगी।”

* * *

“राजकुमार, थोड़ा और क्षीरा खा लीजिए।” सत्यवेद ने एक बड़ा कटोरा घटाकरपारा की ओर बढ़ाते हुए मधुर स्वर में कहा, “मुझे याद है पिछली बार जब आप आए थे तो आपको यह बहुत पसंद आया था, इसलिए मैंने अपने रसोइयों से इसे खास आपके लिए तैयार करवाया है।”
“सचमुच, यह बहुत बढ़िया है,” युवा पार्षद ने उत्साह से सिर हिलाते हुए अपनी थाली भरने के लिए चम्मच उठाया। “और महोदय, आपकी याददाश्त बहुत अच्छी है।” “अरे, ये तो कुछ भी नहीं है।” बनावटी मुस्कान के साथ सत्यवेद ने हाथ हिलाकर तारीफ को टाल दिया। “मैं ये सब सिर्फ स्वार्थवश करता हूँ, मेरे राजकुमार। सम्राट के भतीजे की मेजबानी करने की छोटी-छोटी खुशियाँ।”
राज्यपाल के सामने मेज पर बैठे अतुल्यातेज ने इस बातचीत को चिंता भरी निगाहों से देखा। वे सत्यवेद के घर में थे, जो उदयपुरी के मध्य में स्थित एक भव्य और पुराना महल था। हूणों और शकों द्वारा राज्य और उसके अंतिम शासक वंश को नष्ट करने से पहले, यह कभी मालवा के राजाओं का महल हुआ करता था। अब यह इमारत मालवा के राज्यपाल का आधिकारिक निवास थी, फिर भी अतुल्यातेज को यह बात खटक रही थी कि उन्होंने इसे पहले शायद ही कभी अंदर से देखा था।
यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी, क्योंकि सत्यवेद ने उदयपुरी की चौकी के कमांडर के रूप में अपने पूरे कार्यकाल में उन्हें कभी भी आने का निमंत्रण नहीं दिया था। निमंत्रण की बात तो छोड़ ही दीजिए, सत्यवेद ने चौकी के नियमित निरीक्षण के दौरान भी उन्हें और सीमा रक्षक सैनिकों को मुश्किल से ही कोई सम्मान दिया था, बल्कि वे हर सप्ताह अपने कार्यालय में रिपोर्ट

प्रस्तुत करवाना पसंद करते थे। यह स्पष्ट था कि राज्यपाल आम लोगों से मेलजोल रखना पसंद नहीं करते थे।
वह तो उस समय की बात थी। लेकिन अब हालात काफी बदल चुके थे, सत्यवेद का मेलजोल बढ़ाने का रवैया चिंताजनक और अप्रिय दोनों था। कई बार अतुल्यातेज ने सचमुच चाहा कि सत्यवेद अपने पुराने, घमंडी स्वभाव में लौट आए, जो कि अजीब बात है, उससे निपटना आसान था।
बुद्धिमान सेनापति अतुल्यतेज समझ गए थे कि उनकी हालिया तरक्की का एकमात्र कारण घटकरपारा से उनकी मित्रता थी। फिर भी, दोपहर में राज्यपाल के अचानक गैरीसन आकर उन्हें राजकुमार के साथ रात्रिभोज का निमंत्रण देने पर वे आश्चर्यचकित रह गए। अतुल्यतेज को यह नहीं पता था कि क्या होगा, लेकिन शिष्टाचारवश उन्हें जाना ही पड़ा, इसलिए वे एक मध्यम आकार के भोज के सामने बैठे सत्यवेद को अपने मित्र की चापलूसी करते हुए देख रहे थे।
अंततः उसे इस बात का भी कुछ अंदाजा हो गया कि उसे आने के लिए क्यों मजबूर किया गया था।
“महामहिम, मध्यमिका का कमान केंद्र पहले से ही शाही सेना के एक अत्यंत सक्षम सेनापति बृहत्स के नियंत्रण में है,” अतुल्यतेजा ने चर्चा के विषय पर लौटते हुए कहा। “मेरा वहाँ जाना व्यावहारिक रूप से उपयोगी नहीं होगा। मेरे उदयपुरी में रहने से सीमावर्ती क्षेत्र की बेहतर सेवा हो सकेगी।” “यह बृहत्शा चाहे कितना भी सक्षम क्यों न हो, वह तो शाही सेना का मात्र एक कप्तान है। वहीं, आप सीमा रक्षक दल के एक सिपाही कमांडर हैं। इस इलाके और भूभाग को आपसे बेहतर कौन जानता है – आपसे या इस कप्तान से?” राज्यपाल ने चुनौती भरे लहजे में मेज के उस पार घूरते हुए कहा, “सीमा रक्षक दल का एक कमांडर, या उज्जैन का एक सिपाही?”
“महोदय, पार्षद अमरा सिंह बृहत्स का बहुत सम्मान करते हैं,” अतुल्यातेजा ने पद के सूक्ष्म प्रभाव को कम करने के लिए धीमी आवाज़ में कहा। “पार्षद ने मुझसे कहा कि जब तक बृहत्स मध्यमिका के प्रभारी हैं, हम अपनी ऊर्जा अन्यत्र लगाने के लिए स्वतंत्र हैं।”
“ठीक है, शायद आपको मध्यमिका जाने की ज़रूरत नहीं है,” सत्यवेद ने गुस्से में छाछ का एक प्याला उठाया। आधा प्याला पीकर उन्होंने अंगूठे और तर्जनी

से अपने होंठ पोंछे। “लेकिन उत्तर की सीमाओं की निगरानी अभी भी किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा ज़रूरी है जो वहाँ के इलाके से अच्छी तरह वाकिफ हो। आप उन इलाकों को जानते हैं, और आप गोश्रृंग की रक्षा कर रहे सैनिकों से संपर्क कर सकते हैं ताकि दोनों प्रांतों की सीमाएँ सुरक्षित रहें।”
“मैंने अभी-अभी उस सीमा का दौरा किया है…” चौकी के कमांडर ने कहना शुरू किया, लेकिन सत्यवेद ने उन्हें बीच में ही रोक दिया।
“यह महज़ दर्शन मात्र नहीं है,” राज्यपाल ने रुककर घटाकरपारा की ओर देखा, जो अपनी थाली चट कर रहे थे। “मैं क्षीरा की पुरज़ोर सिफ़ारिश करता हूँ, लेकिन कृपया श्रीखंड के लिए भी थोड़ी जगह छोड़ दें, महाराज। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि यह उज्जैन में चखे गए किसी भी श्रीखंड से कहीं बेहतर होगा।”
घटकरपारा लज्जा से मुस्कुराया, वहीं सत्यवेद ने अपनी दृष्टि अतुल्यतेज की ओर मोड़ी। “हम कहाँ थे? हाँ… मैं यही कह रहा था कि सीमा पर जाना पर्याप्त नहीं है। सीमा पर निरंतर निगरानी की आवश्यकता है। सैनिक होने के नाते आप दोनों इस बारे में मुझसे अधिक जानते होंगे, लेकिन क्या आप सहमत नहीं होंगे, मेरे राजकुमार?”
“मुझे लगता है ऐसा ही है… मतलब, हाँ।” बातचीत में अचानक शामिल हो जाने पर, घटाकरपारा जवाब देने में हिचकिचाने लगे। “सीमाओं की निगरानी ज़रूरी है।” “बिल्कुल सही,” राज्यपाल ने संतुष्टि से पीछे झुकते हुए कहा। “मुझे यकीन है कि पार्षद अमारा सिम्हा भी इससे सहमत होंगे।”
अतुल्यातेजा ने आह भरते हुए कहा, “मैं भी सहमत हूँ। लेकिन अगर मैं अपना सारा समय और ऊर्जा उत्तर में ही लगा दूँ, तो यहाँ की चौकी और दक्षिण की सीमाओं का क्या होगा? वे भी मेरी ही ज़िम्मेदारियाँ हैं।”
“अरे, इसके लिए तो राजकुमार यहाँ है!” सत्यवेद ने कंधे झुकाकर हैरानी भरी निगाहों से चौकीदार को घूरा। राज्यपाल के हावभाव से साफ पता चल रहा था कि वह अतुल्यतेज की मूर्खता के बारे में क्या सोच रहा था। “क्या यह स्पष्ट संभावना आपके दिमाग में नहीं आई, कमांडर?”
अतुल्यातेजा ने घटाकरपारा को गौर से देखा, जब राजकुमार ने सुझाव पर आश्चर्य जताते हुए भौंहें उठाकर राज्यपाल की ओर देखा। उन्होंने देखा कि

घटाकरपारा की आँखों से खुशी उनके होठों तक फैल गई और फिर उनके चेहरे पर मुस्कान आ गई। राजकुमार मुस्कुराते हुए उनकी ओर मुड़े, उनके चेहरे पर 'क्यों नहीं' का भाव था। अपने मित्र को बनावटीपन से मुक्त देखकर सेनापति राहत से झुक गए।
“क्या आपको राजकुमार पर भरोसा नहीं है, कमांडर?” गवर्नर ने जोर देकर पूछा। “क्या आपको अपने मित्र की कार्य पूरा करने की क्षमता पर संदेह है?”
“नहीं, मुझे ऐसा नहीं लगता,” अतुल्यातेजा ने कंधे उचकाते हुए कहा। “मुझे पार्षद पर शक करने का कभी कोई कारण नहीं मिला, और मुझे यकीन है कि वह कभी मुझे शक करने का कारण नहीं देंगे। बात सिर्फ इतनी है कि वह इस इलाके में नए हैं और अपरिचित हैं…”
“वह अकेला नहीं होगा। उसके साथ पूरी सीमा रक्षक टुकड़ी और शाही सेना की पलटनें हैं, और स्थानीय मिलिशिया तो है ही। चिंता की क्या बात है?” “राज्यपाल सही कह रहे हैं, भाई,” घटाकरपारा ने अतुल्यातेजा के कंधे पर हाथ रखकर उसे दिलासा देते हुए हल्के से दबाया। “तुम यह भी भूल रहे हो कि मैं श्रीस्थली तक गया हूँ। मुझे सीमा के इस हिस्से की स्थिति का पता है। अगर हम अलग-अलग हो जाएँ, तो सीमा पर निगरानी रखने का काम बेहतर तरीके से कर सकते हैं। तुम उत्तर की ओर, मैं दक्षिण की ओर।”
कमांडर ने अपने मित्र की ओर देखा, जिसके साथ उसने आम के बागों पर छापा मारने, शराब चुराने और तरह-तरह के व्यापारियों को धोखा देकर उनका माल मुफ्त में छीनने में कई दोपहरें बिताई थीं। शाही खानदान का होने के बावजूद, घटाकरपारा ने हमेशा अपने मित्रों के सामान्य, रोजमर्रा के जीवन को जीने की कोशिश की थी, उनके छोटे-छोटे सुख-दुखों में उनका साथ दिया था। अतुल्यातेजा यह देखकर प्रसन्न हुए कि घटकरपारा का यह पहलू अपरिवर्तित था। अब जब वह सीमा पर थे, राजकुमार सीमा रक्षक का जीवन जीने के लिए उत्सुक थे। “यदि आप ऐसा चाहते हैं, मेरे राजकुमार,” उसने घटाकरपारा की ओर मुस्कुराते हुए कहा।
“बहुत बढ़िया निर्णय,” सत्यवेद मुस्कुराया और खुशी का नाटकीय प्रदर्शन करते हुए अपनी उंगलियों को हल्के से ताली बजाई। “आपने बहुत ही बुद्धिमानी दिखाई है, कमांडर। बहुत ही बुद्धिमानी।”

* * *

वह चीख भयावह और रोंगटे खड़े कर देने वाली थी, एक कर्कश, फटी हुई सी चीख, जैसे किसी मुर्गे की दबी हुई बांग, लेकिन उससे कई गुना ज़्यादा तेज़ और भयावह। उसने सर्द रात की हवा में कंपन पैदा कर दिया। उसने रास्ते को रोशन करने वाली धुंधली मशालों को बुरी तरह से हिला दिया, और मशालों की रोशनी में धीरे-धीरे गिरती बर्फ़ को घबराहट से घुमा दिया। उसने दोनों महिषाओं को भी घबराकर अपने विशाल, सींग वाले सिर हिलाने पर मजबूर कर दिया।
“हुर्र… छी, छी, छी,” रथ चला रहे असुर सेवक ने महिषाओं की मोटी गर्दनों पर लगी लगाम को काबू में करने की कोशिश करते हुए, हल्के से चाबुक से उनके शरीर पर वार किया। बेचैनी से उसकी आँखें अनायास ही बाईं ओर घूम गईं।
वह सेवक ही अकेला नहीं था जो उस पुकार की ओर आकर्षित हुआ। रथ के पिछले हिस्से में, एक चौड़ी, ऊँची पीठ वाली कुर्सी पर बैठे असुर स्वामी हिरण्याक्ष भी अंधेरे में झाँक रहे थे, मशाल की रोशनी में उनकी स्वाभाविक रूप से सुनहरी आँखें नारंगी रंग की चमक रही थीं। वह पीछे अकेले नहीं थे; उनके दोनों ओर दो आकृतियाँ थीं, जिनके सिर और चेहरों पर भारी हेलमेट और विज़र से प्रकाश परावर्तित हो रहा था। उनके भारी-भरकम शरीर, चौड़े कंधों और गर्दन की बनावट को देखकर लगता था कि वे विशालकाय थे और युद्ध में उनसे भिड़ना ठीक नहीं होगा।
रात के सन्नाटे में एक बार फिर चीख गूंज उठी, आदिम क्रोध से कांपती हुई। ऐसा लगा मानो धरती भी कांप रही हो, जिससे महिषा भयभीत होकर पीछे हट गए और गाड़ी बर्फीले रास्ते पर लड़खड़ाकर फिसलने लगी। तीनों यात्रियों ने जो भी सहारा मिला, उसे पकड़ लिया, क्योंकि वह सेवक लगाम को खींचता और जूझता रहा।
सौभाग्य से गाड़ी में बैठे लोगों के लिए, चीख अचानक रुक गई, उसकी गूंज किसी दूर, अदृश्य पहाड़ी से टकराकर वापस लौट आई।
बाइसन अंततः शांत हो गए और अपनी स्थिर चाल से चलने लगे। हिरण्यक्ष और उसके साथी उस दिशा में घूरते रहे जहाँ से चीख सुनाई दी थी।
“हम इतनी धीमी गति से क्यों चल रहे हैं?” असुर स्वामी ने गिरती बर्फ के बीच से धुंधली रात में आँखें झपकाते हुए पूछा। “हम आखिर कहाँ हैं?”

“हम लगभग व्याला गड्ढे के पास पहुँच गए हैं, महाराज,” सेवक ने उत्तर दिया। “क्षमा कीजिए, महाराज, लेकिन ज़मीन पर बर्फ़ बहुत भारी और फिसलन भरी है। मैं इससे तेज़ जाने का जोखिम नहीं उठा सकता।”
जैसे ही सेवक बोला, रोशन रास्ता बाईं ओर मुड़ गया, और बहते पानी की धीमी गर्जना ने रात के सन्नाटे को तोड़ दिया। कुछ ही क्षणों में, गाड़ी एक संकरे पुल पर थी, और पानी की तेज़ आवाज़ घोड़ों के खुरों की आवाज़ और लकड़ी के तख्तों पर पहियों की भारी गड़गड़ाहट में समा गई। महिषाओं, गाड़ी और उसमें सवार लोगों के संयुक्त भार से पुल चरमराया और डगमगाया, और हिरण्याक्ष को इस बात का पूरा एहसास था कि किसी भी बैल की एक छोटी सी गलती उन सभी को नीचे उफनती पाताल गंगा में गिरा सकती है। फिर भी, इस अस्थिर डगमगाहट के बावजूद, वह जानता था कि पुल स्वयं टिका रहेगा, क्योंकि यह पाताल पर शासन करने वाले वनवासी दानवों के प्राचीन ताबीज़ द्वारा संरक्षित था।
हिमपात, अंधेरा और पुल के तेज़ी से हिलने-डुलने के बावजूद, यात्रा बिना किसी घटना के पूरी हुई और रथ एक मजबूत द्वार के सामने आकर रुक गया, जहाँ असुर सेनापतियों का एक दल अपने राजा का स्वागत करने के लिए इकट्ठा था। जैसे ही हिरण्याक्ष और उसके साथी रथ से उतरे, प्रतीक्षा कर रहे असुरों में से एक आगे बढ़ा।
“प्रणाम, महाराज,” उन्होंने हिरण्याक्ष को प्रणाम किया और फिर असुर स्वामी के बगल में खड़े दो विशालकाय व्यक्तियों की ओर सिर हिलाकर अभिवादन किया। “और वीर चंदासुर और अमरका को मेरा प्रणाम।”
दोनों दैत्यों ने मौन रहकर अभिवादन का जवाब दिया और हिरण्याक्ष के बोलने की प्रतीक्षा करने लगे। असुर राजा अब भी अपने सेनापतियों से एक हाथ की ऊँचाई पर खड़ा था, उसके सिर पर लगे विशाल मेढ़े के सींग ऊपर और पीछे की ओर फैले हुए थे।
“व्याला…” हिरण्याक्ष का अंगूठा रात के अंधेरे में ऊपर की ओर उठा, उसकी आवाज़ कर्कश थी। “इसे चीखने की इजाज़त क्यों दी गई?” असुर असहज होकर हिल गए। “हमें नहीं पता, महाराज। हम तो इतने समय से यहीं नीचे हैं।”
कोई बात नहीं, चलिए शुरू करते हैं।

असुर हिरण्याक्ष के लिए अलग हो गए, लेकिन द्वार की ओर जाने के बजाय, उनके स्वामी एक चौड़े, खुले चबूतरे की ओर बढ़े जो एक तरफ थोड़ा ऊपर उठा हुआ था। चबूतरा मोटी रस्सियों और पुलियों से बंधा हुआ था, जिनमें से दो रस्सियाँ ऊपर अँधेरे में जा रही थीं। हिरण्याक्ष चबूतरे पर चढ़े, उनके पीछे चंदासुर, अमर्क और दो असुर सेनापति भी थे। एक आदेश पर, एक विशाल चरखी से जुड़े चार महिषाओं ने रस्सियों को खींचना शुरू कर दिया। चरखी चरमराई और घूमी, और एक झटके और कंपन के साथ, चबूतरा ऊपर उठा, पहले अनिश्चित झटकों में, और फिर सुचारू रूप से, जैसे ही बाइसनों ने अपनी गति पकड़ी।
एक के बाद एक गज ऊपर, चबूतरा पहाड़ी की खड़ी ढलान पर चढ़ाया गया। धीरे- धीरे, असुरों के सिर के ऊपर नारंगी रंग की एक हल्की सी चमक दिखाई देने लगी, और हर गज ऊपर चढ़ने के साथ-साथ उसकी चमक और भी गहरी होती गई।
“तुम्हें पता है कि देवलोक पहुँचकर क्या करना है,” हिरण्याक्ष ने अपने एक-एक सेनापति की ओर देखते हुए कहा।
“कौवे द्वारा तुम्हारे पिता का संदेश स्पष्ट था। हमें अमरावती पर बलपूर्वक आक्रमण करना है,” उसने अपना दाहिना मुक्का बाएं हाथ की हथेली पर जोर से मारा, “और जितना हो सके उतना नुकसान पहुंचाना है। हालांकि, हमें किसी भी देव क्षेत्र पर दावा या कब्जा नहीं करना है। हमारा उद्देश्य केवल देवताओं को परेशान करना और उनका ध्यान वैषद के खंजर से हटाना है, बस इतना ही।”
“हम वही करेंगे जो हमारे पिता ने हमें आज्ञा दी है, प्रभु,” हेलमेट पहने हुए दैत्यों में से एक ने उत्तर दिया।
जैसे ही चबूतरा पहाड़ी की चोटी के पास पहुँचा, हवा ने असुरों को चीर डाला, बर्फ उनके चेहरों पर चुभती हुई ठंडी पड़ रही थी। फिर भी, जैसे-जैसे वे नारंगी चमक के करीब पहुँचते गए, एक अजीब सी गर्माहट उन्हें घेर लेती थी, धुंधली, घुटन भरी और गंधक से भरी हुई।
चबूतरा लड़खड़ाकर पहाड़ी की चोटी से कुछ ही दूरी पर एक चट्टानी जगह पर आकर रुक गया। असुर नीचे उतरे और हिरण्याक्ष के नेतृत्व में वे ढलान पर चढ़ते हुए एक विशाल, कटोरे के आकार के गड्ढे के किनारे तक पहुँच गए, जो पहाड़ी की

चोटी के एक बड़े हिस्से में फैला हुआ था। गड्ढे के भीतर से प्रकाश निकल रहा था, जिससे असुरों के चेहरे चमकीले नारंगी रंग से जगमगा उठे।
अमरका और चंदासुर ने अपने राजा के साथ ज्वालामुखी के किनारे पहुँचते ही अपने हेलमेट उतार दिए। उनके नंगे चेहरे एक ऐसा अंतर दिखा रहे थे जो खून के रिश्तों में अक्सर देखने को नहीं मिलता। अमरका सांवला, घनी दाढ़ी वाला और माथे पर काले घने बाल लिए हुए था, जबकि चंदासुर का रंग पीला था, वह पूरी तरह गंजा था और उसका चेहरा गोल और चिकना था। अमरका की आँखें घनी भौंहों के नीचे बड़ी और विद्रोही लग रही थीं, जबकि चंदासुर की आँखें छोटी और तिरछी थीं, जो माथे और गालों के आसपास की चिकनी त्वचा की परतों के बीच थीं। दोनों भाइयों में उनकी भयंकर मांसपेशियों और आँखों की गहराई में छिपी दुर्भावना की ठंडी चमक के अलावा और कुछ भी समान नहीं था।
उनकी आंखों में उत्सुकता और उत्साह भी झलक रहा था क्योंकि वे अपने सामने मौजूद गड्ढे को घूर रहे थे।
यह गड्ढा बहुत गहरा नहीं था, इसकी सतह काली, आग्नेय चट्टानों से बनी थी। चट्टानें कई जगहों से टूटी हुई थीं, और पिघला हुआ लावा छोटी-छोटी धाराओं में चट्टानों के बीच से रिस रहा था, जिससे उबलते हुए लावा के घूमते हुए पोखर बन रहे थे। इन पोखरों से गंधक की दुर्गंध उठ रही थी, और जगह-जगह नीली- हरी लपटों की छोटी-छोटी लपटें हवा को चाट रही थीं, मानो गिरती बर्फ की पिघलती बूंदों का स्वाद ले रही हों।
धधकते गर्म झरनों और तालाबों के बीच व्याल खड़े थे। दर्जनों की संख्या में।
शुतुरमुर्ग से मिलते-जुलते, लेकिन आकार में कई गुना बड़े और भारी, व्यालों का शरीर गोल और शक्तिशाली था, जो काले, तैलीय शल्कों के कवच से ढका हुआ था और लावा की रोशनी में चमक रहा था। प्रत्येक व्याल के पास पक्षी जैसे लंबे और मजबूत पैर थे, जिनमें से प्रत्येक पैर के अंत में छोटे हंसिया के आकार के तीन नुकीले पंजे थे। उनके शरीर के पिछले हिस्से में कुछ भी विशिष्ट नहीं था, जो पूंछ के स्थान पर छोटे और बेमेल ठूंठों में अचानक समाप्त हो जाता था।

इसके विपरीत, व्यालों की सबसे आकर्षक विशेषता उनके शरीर के दूसरे छोर पर थी; उनकी लंबी गर्दनें - प्रत्येक व्याल की पांच गर्दनें, सभी हल्के भूरे रंग की, नंगी और झुर्रीदार - उनके कंधों से मुड़कर ऊपर उठती हुई और हवा में लहराती हुई।
प्रत्येक व्याला की पाँच गर्दनें होती हैं, जो सभी दिशाओं में भयावह रूप से फैली होती हैं, और प्रत्येक गर्दन एक बड़े, शल्कदार सिर पर समाप्त होती है, जो दो छोटी-छोटी आँखों और एक विशाल, मुड़ी हुई चोंच से सुशोभित होता है।
व्यालों की चोंचें रस्सियों से जकड़ी हुई थीं, और उन गांठों को जादुई मंत्रों से बांधा गया था जिन्हें केवल विशेष आदेशों से ही खोला जा सकता था। रस्सियां इतनी कसकर बंधी थीं कि मुंह बंद किए हुए इन प्राणियों से निकलने वाली एकमात्र ध्वनि कभी-कभार निकलने वाली, कर्कश चीख थी - क्रोध से भरी और घृणा से लथपथ।
असुर कुछ क्षण तक पाँच सिर वाले उन भयानक जीवों को देखते रहे जो क्रोधित होकर छटपटा रहे थे और अपनी गर्दनें मरोड़ रहे थे। व्याल न केवल एक-दूसरे पर चोंच मार रहे थे, बल्कि कभी-कभी एक ही व्याल के दो सिर आपस में झगड़ने लगते थे, क्रोध में एक-दूसरे को थप्पड़ मारते थे और अपनी नुकीली चोंचों से वार करते हुए संघर्ष को तेजी से बढ़ाते थे।
"ये देवलोक में एक अप्रिय आश्चर्य साबित होने वाले हैं," अमरका ने एक चिड़चिड़ी मुस्कान बिखेरी।
“हाँ,” हिरण्यक्ष ने चौड़ी मुस्कान के साथ जवाब दिया। “अफसोस की बात है कि मैं तुम्हारे साथ नहीं रहूँगा ताकि देवताओं के चेहरों पर दिख रहे सदमे का आनंद ले सकूँ।”
ऊपर मौजूद मंडली को देखकर, एक व्याल ने अपनी एक गर्दन, फिर दूसरी गर्दन असुरों की ओर बढ़ाई। जब दोनों सिर गड्ढे से ऊपर उठे, तो उनमें से एक अधिक साहसी था और हिरण्याक्ष, चंदासुर और अमर्क के करीब रेंगता हुआ उन्हें उत्सुकता से देखने लगा। अचानक, बिना किसी चेतावनी के, वह सिर चंदासुर पर झपटा और अपनी चोंच से उसके चेहरे पर वार किया। लेकिन असुर ने अपने एक बड़े हाथ से हमलावर सिर को पकड़ लिया और उसका गला कसकर दबा दिया। जकड़ा हुआ सिर

बुरी तरह छटपटाया और कर्कश आवाज निकाली, और तुरंत ही व्याल के अन्य चार सिर उसके कंधों से उठ खड़े हुए, युद्ध के लिए तैयार।
हालांकि, चंदासुर ने अपने खाली हाथ से अपनी कमरबंद से एक कटार निकाली और एक ही झटके में अपने दूसरे हाथ में पकड़े हुए सिर को धड़ से अलग कर दिया। “लड़ना चाहते हो?” चंदासुर ने चुनौती दी। “मेरे साथ आओ, मैं तुम्हें लड़ाई दूंगा। मेरी बात मानो, जी भर के लड़ो।” उसने कटे हुए सिर को गड्ढे में उछाला, जो एक चट्टान से टकराकर लावा के कुंड में जा गिरा और मांस के टुकड़े की तरह चटकने की आवाज़ आई।
व्यालों को असुर की बात समझ आ गई और उनके अनेक सिर एक-दूसरे को उत्साह से देखने लगे, और खिलखिलाते हुए हंसने लगे। चंदासुर पर हमला करने वाले व्याल के चारों सिर पीछे हट गए, जबकि उसके क्षत-विक्षत पांचवें सिर से एक नया सिर निकलने लगा, जो कोमल, गुलाबी और मांसल था। जब तक चंदासुर ने अपनी कटार साफ करके म्यान में रखी, तब तक व्याल का नया सिर परिपक्व होने लगा था, कठोर और पपड़ीदार हो गया था, और जैसे-जैसे वह बढ़ता गया, उसकी चोंच फूलती और मुड़ती गई।
अनियंत्रित चोंच तुरंत चौड़ी खुल गई, कंठ से एक चीख उठ रही थी, जहाँ से लाल-गरम आग की एक छोटी, छुरी जैसी जीभ निकली हुई थी, जो हर पल लंबी होती जा रही थी। इससे पहले कि चीख या आग पूरी तरह से व्याला के गले से बाहर निकल पाती, एक असुर आगे बढ़ा। उसने एक तीखे आदेश से एक नया बंधन प्रकट किया, जो फिसलकर चोंच के चारों ओर कसकर लिपट गया, उसे झटके से बंद कर दिया, जिससे जानवर की घातक जीभ अंदर ही फंस गई और भयानक चीख दब गई।
“तुम्हें अब जाना चाहिए,” हिरण्यक्ष ने कहा। हंसते हुए उसने आगे कहा, “तुमने व्यालों से कुछ वादा किया है, और वे धैर्यवान प्राणी नहीं हैं। उनके तुम्हारे बारे में विचार बदलने से पहले ही चले जाओ।”
अमरका और चंदासुर ने पहाड़ी पर उनके साथ आए दो असुर सेनापतियों की ओर हाथ बढ़ाए। एक सेनापति ने अमरका को एक कुल्हाड़ी दी, जबकि दूसरे ने चंदासुर को एक भारी, नुकीली गदा दी। इसके बाद दोनों भाई हिरण्यक्ष के सामने घुटने टेककर सिर झुकाए।
“हे प्रभु, हमें आशीर्वाद दें।”

“तुम्हें मुझसे भी अधिक महागुरु का आशीर्वाद प्राप्त है,” असुर राजा ने उत्तर दिया। “अच्छी तरह से लड़ो, और व्यालों को देवलोक पर आतंक मचाने दो।” शुक्राचार्य और जादूगरनी ऊर्जास्वती के पुत्रों को ज्वालामुखी के गड्ढे में उतरते देख हिरण्याक्ष अमरावती पर होने वाले आक्रमण के विचार से सिहर उठा। दोनों भाइयों की रगों में देव और असुर दोनों का रक्त था, जो उन्हें अद्वितीय रूप से शक्तिशाली बनाता था; असुर रक्त उन्हें साहसी और निर्भीक बनाता था, जबकि देव रक्त उन्हें देवताओं द्वारा अपनाए जाने वाले अधिकांश छल-कपटों से अप्रभावित रखता था। चंदासुर और अमर्का किसी भी युद्ध में एक भयंकर चुनौती थे। व्यालों की सेना के नेतृत्व में वे साक्षात आतंक का रूप धारण कर लेते।
असुर स्वामी को देवताओं के लिए लगभग दुख हुआ।
चंदासुर और अमरका, ज्वालामुखीय गड्ढे की तलहटी में प्रतीक्षा कर रही असुरों की सेना में शामिल हो गए। दोनों ने एक-एक व्याल पर सवार होकर अपने पैर रकाब में गहराई तक गाड़ दिए और लगाम को मजबूती से पकड़ लिया। अमरका के आदेश पर, उन जंजीरों को खोल दिया गया जिनसे जानवरों को ज्वालामुखीय गड्ढे की तलहटी से जकड़ा गया था। एक और आदेश पर, पहले व्याल ने अपने चौड़े, खुरदुरे पंख फैलाए और आकाश में छलांग लगा दी। उनका अनुसरण करते हुए, अन्य व्यालों ने भी ऐसा ही किया, अपने भारी पंख फड़फड़ाते हुए ज्वालामुखीय गड्ढे के ऊपर लगातार चौड़े होते हुए सर्पिलाकार घेरे में उठते चले गए।

[redacted]

[redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted], [redacted] [redacted] [redacted]

शंकु नींद में करवट बदली और फिर झटके से जाग उठी। उसने पलकें झपकाईं और उलझन में इधर-उधर देखा - और फिर, जैसे ही उसे कुछ समझ आया, उसकी निगाहें चिंता से अपनी दादी पर टिक गईं।
“दादी, आप कैसी हैं?” शंकु आगे झुककर भविष्यवक्ता के माथे पर अपनी हथेली रखते हुए बोला, “बुखार नहीं है। क्या अब भी मतली हो रही है?”
"बस कमजोर," बूढ़ी औरत ने सिर हिलाते हुए रूखे स्वर में कहा।
शंकु घुटनों के बल बैठ गई। “मैं पार्षद धनवंतरी को बुला लाती हूँ। उन्होंने मुझे सूचित करने को कहा था।”
देवी ओरेकल ने लड़की की कलाई पकड़कर उसे रोक दिया। "मैं ठीक महसूस कर रही हूँ," उसने फिर धीमी आवाज़ में कहा। "बस बहुत प्यास लगी है। मुझे थोड़ा पानी ला दो, बच्ची।"
शंकु जल्दी से खिड़की के पास गई, जहाँ खिड़की की चौखट पर मिट्टी का एक घड़ा रखा था, जो रात की हल्की हवा से ठंडा हो रहा था। एक प्याला भरकर वह अपनी दादी के पास लौट आई। घुटनों के बल बैठकर उसने एक हाथ से देवी को सहारा दिया; दूसरे हाथ से उसने बूढ़ी औरत को प्याले से एक घूंट पीने में मदद की। “माफ़ कीजिए दादी, मैं सो गई थी। क्या आप बहुत देर तक जागती रहीं? आपको मुझे पहले जगा देना चाहिए था।”
“मैं ठीक हूँ, बच्ची,” मदर ओरेकल ने रजाई पर लेटते हुए आह भरी। “मैं अभी-अभी जागी हूँ। मैं कितनी देर सोई रही?”
“शाम से ही।” शंकु ने प्याला ज़मीन पर रखा, फिर झुककर एक छोटे पीतल के कमंडल से दीपक में थोड़ा तेल डाला। उसने बाती को ठीक किया, और दीपक फिर से तेज़ जलने लगा, जिससे परछाइयाँ दीवारों पर वापस भागने लगीं। “सब लोग चिंतित थे। सम्राट दो बार आए। पार्षद धनवंतरी आधी रात के बाद यहाँ आपकी हालत देखने आए थे।”
“यह उनकी और राजा की बहुत बड़ी मेहरबानी है।”
उज्जैन में सूरज डूब ही रहा था कि देवी ने अपनी एक दासी से सीने में जलन की शिकायत की। पहले तो उन्होंने शहद में भीगे पान के पत्ते खाकर आराम किया और कहा कि दर्द कम हो जाएगा। लेकिन आधे घंटे के भीतर ही उन्हें उल्टी होने लगी

और हल्का बुखार भी आ गया। इससे भी बुरी बात यह थी कि उनके पेट में तेज दर्द होने लगा और ऐंठन भी होने लगी। शंकु को इसकी सूचना दी गई और उन्होंने धनवंतरी को सूचित किया। धनवंतरी और उनके सहायकों ने पूरी शाम देवी की देखभाल की और उन्हें काषायम और लेप लगाए, जब तक कि उनकी हालत धनवंतरी की संतुष्टि के अनुसार स्थिर नहीं हो गई।
पार्षद धनवंतरी का कहना है कि यह अपच के कारण होने वाली एसिडिटी थी। “मुझे लगता है महल का खाना ही इसका कारण है। कबीले के लोगों के स्वाद के हिसाब से बहुत ज़्यादा रिच है।” बूढ़ी औरत ने आरामदेह स्थिति पाने के लिए अपना सिर हिलाया। फिर, एक नया विचार मन में आया, “मैं कबीले के लोगों से मिलना चाहती हूँ। मुझे उनकी बहुत याद आती है।”
शंकु देवी के पास घुटनों के बल बैठ गया और उन्हें नीचे देखने लगा। “दादी, आप यहाँ से नहीं जा सकतीं। आपको आराम करना चाहिए। लेकिन हाँ, मैं अपने चचेरे भाइयों को संदेश भेज दूँगा। कुल के लोग आपसे मिलने उज्जैन आ सकते हैं।”
"क्या तुम ऐसा कर सकते हो, बच्चे?"
“कल सुबह तड़के,” लड़की ने सिर हिलाया। “अब मुझे पार्षद धनवंतरी को बताना ही होगा कि आप जाग गए हैं। अगर मैंने बताया तो उन्हें अच्छा नहीं लगेगा।” “थोड़ी देर में, मेरे बच्चे,” मदर ओरेकल ने कमजोर आवाज में अपना विरोध जताया। बगल की ज़मीन पर थपथपाते हुए उन्होंने आगे कहा, “थोड़ी देर मेरे साथ यहीं बैठो।”
असमंजस में पड़ी शंकु ने एक पल के लिए अपनी दादी को देखा। फिर उसने भविष्यवाणी के अनुसार चलने का फैसला किया। उसने हाथ बढ़ाकर पंखा उठाया और अपनी दादी के सिर के ऊपर हवा को हिलाने लगी।
“मैंने वही करने की कोशिश की जिसके बारे में तुमने मुझे बताया था… पार्क में, याद है?” शंकु हिचकिचाते हुए बोला। “मतलब… वो गायब होने वाली बात। मैंने तुम्हें पहले ही बताने का सोचा था…”
“कैसा रहा?” मदर ओरेकल ने उत्सुकता से रजाई से अपना सिर उठाया, उसकी आँखें चौड़ी हो गईं और फिर लड़की को देखते हुए सिकुड़ गईं।

शंकु ने सिर हिलाया। "मैं कहाँ जाऊँगी, इस पर मेरा कोई नियंत्रण नहीं है।" “तुम्हें इसकी आदत पड़ जाएगी। यह एक अद्भुत उपहार है, मेरे बच्चे।”
"मुझे लगता है ऐसा ही है, हालांकि जब तक मुझे इसे नियंत्रित करना नहीं आता, यह एक बेकार सा उपहार है।"
“तुम सीख जाओगी,” भविष्यवक्ता ने लड़की के हाथ पर धीरे से थपथपाते हुए कहा। “एकाग्र होना सीखो…”
“मैं ध्यान केंद्रित करता हूँ,” शंकु ने जोर देकर कहा। “मैं अपने लक्ष्य पर बहुत मेहनत करता हूँ, लेकिन हर बार बुरी तरह असफल हो जाता हूँ।”
“लेकिन यही तो तुम्हारी असफलता का कारण है,” भविष्यवक्ता ने रहस्यमय ढंग से कहा। “असली बात यह है कि तुम्हें जहाँ होना चाहिए, उस पर ध्यान केंद्रित करना है, न कि जहाँ तुम होना चाहते हो। तुम्हारा हृदय जानता है कि तुम्हें कहाँ होना चाहिए। अपने मन की बातों को अनसुना करो और अपने हृदय की सुनो। ऐसा करने से तुम्हें अपनी प्रतिभा का असली मूल्य पता चलेगा।”
शंकु गहरी चुप्पी में डूब गई, दादी की कही बातों पर विचार कर रही थी। बाहर बहने वाली हवा तेज हो गई और पेड़ों से सरसराती हुई बहने लगी। एक छोटा सा पतंगा, शायद हवा के झोंके से उड़कर, कमरे में आया और अनियमित अंडाकार आकृतियों में तेजी से दीपक के चारों ओर चक्कर लगाने लगा।
“मैं बहुत आभारी हूँ कि शाही चिकित्सक महल में मौजूद थे। मुझे बहुत बुरा लगता अगर दूसरा चिकित्सक मुझे अपनी घिनौनी दवाइयाँ देता।”
अपने ही विचारों में डूबी हुई और पतंगे की बेचैन उड़ान से घिरी हुई शंकु, भविष्यवक्ता के कथन की अचानकता - और इससे उनकी बातचीत की दिशा में आए अचानक बदलाव - से स्तब्ध रह गई।
“जिसे तुम वैद्य कहती हो,” बूढ़ी औरत ने स्पष्ट किया। “उसकी आत्मा पर लानत हो।”
शंकु ने अपनी दादी का हाथ तसल्ली भरे अंदाज़ में हल्के से दबाया। दर्द से कराहते, उल्टी करते और तड़पते हुए भी, बुढ़िया इस बात पर अड़ी हुई थी - बल्कि ज़ोर देकर कह रही थी - कि वह वैद्य से इलाज नहीं करवाना चाहती। दर्द से कराहते और खांसते हुए उसने अपनी पोती को साफ-साफ कह दिया था कि चाहे कुछ

भी हो जाए, वैद्य को उसके इलाज के लिए नहीं बुलाया जाना चाहिए। उसने दांत पीसते हुए कहा था कि वह धनवंतरी के सबसे कम अनुभवी शिष्य की देखभाल में रहना ज़्यादा पसंद करेगी।
कुछ क्षण बीतने के बाद लड़की ने धीरे से पूछा, "आप वैद्य को अपनी जांच क्यों नहीं करने दे रहे हैं?"
“मुझे उस पर भरोसा नहीं है, बस इतना ही।” भविष्यवक्ता ने अपनी ज़िद में ही ताकत पाते हुए माथे पर शिकन डाली। “उस आदमी में कुछ बुराई है। मैं नहीं चाहती कि उसकी परछाई मुझ पर पड़े।”
दोनों महिलाओं के बीच एक बार फिर सन्नाटा छा गया। यह देखकर कि देवी की आँखें थकान से भारी हो रही हैं, शंकु ने पंखा नीचे रख दिया। “दादी, मुझे पार्षद धनवंतरी को संदेश भेजना होगा। वह आपसे मिलना चाहेंगे।”
देवी ओरेकल ने सिर हिलाया और लड़की का हाथ छोड़ दिया। हालाँकि, जैसे ही शंकु खड़ी हुई, उसने बोलना शुरू किया।
“मुझे नहीं पता कि इस दुनिया में मेरे पास कितना समय बचा है, बच्चे। इसलिए जाने से पहले, सुनो जो मैंने आज शाम बादलों से सीखा है – इससे पहले कि सीने में जलन शुरू हो। पश्चिम से बहने वाले बादल हजारों काली तितलियों की बात करते हैं जो उस काली नदी का अनुसरण कर रही हैं जो विशाल रेगिस्तान को बहा ले जाती है। जाओ और यह बात अपने राजा को बताओ। हजारों काली तितलियाँ काली नदी का अनुसरण कर रही हैं, सभी दक्षिण की ओर जा रही हैं।”
शंकु ने कुछ पल उस बूढ़ी औरत को देखा और फिर सिर हिलाकर कहा, "धन्यवाद, मैं ऐसा ही करूंगी।" लेकिन जैसे ही वह मुड़ी, तभी भविष्यवक्ता ने उससे बात की। “मेरे पास तुम्हारे लिए भी एक संदेश है, बच्चे। मैंने इसे भूलभुलैया में फैले मकड़ी के जालों के पैटर्न में बुना हुआ पाया। मैं… मैं इस पर विश्वास नहीं करना चाहती थी… शायद मैं अब भी नहीं करती। फिर भी, तुम्हें इसके बारे में पता होना चाहिए।”
शंकु बीच रास्ते में रुक गई और मुड़ गई। उसे महसूस हुआ कि मदर ओरेकल उस दौरान जो कुछ भी सीख चुकी थी, उसे साझा करने में उसे कठिनाई हो रही थी, जब महल के लोग भूलभुलैया में शरण लिए हुए थे।

“कालकोठरियों में मकड़ी के जाले पश्चाताप की कहानी कहते हैं। वे प्रायश्चित की कहानी कहते हैं। इसलिए, जब समय आएगा, तो तुम्हें सज़ा और क्षमा में से एक चुनना होगा। यह तुम्हारा फैसला है, मेरा नहीं। तुम जो भी चुनो, मुझे हमेशा तुम्हारे लिए दुख होगा कि तुम्हें यह कठिन चुनाव करना पड़ रहा है, मेरे बच्चे।”

* * *

पूर्व दिशा में अभी-अभी दिन का उजाला हुआ ही था कि शुक्राचार्य का सिर ठंडे, अंधेरे पानी की गहराई से बाहर निकला।
हालांकि, कई मिनटों तक, उनके गालों की हड्डियों से नीचे का पूरा शरीर पानी में डूबा रहा क्योंकि उन्होंने अपनी सांस रोक रखी थी और दशा-महाविद्याओं पर ध्यान लगा रहे थे।
धीरे-धीरे, प्रधान पुजारी पानी की सतह से बाहर निकले, उनकी आँखें अभी भी बंद थीं और उनके हाथ प्रणाम की मुद्रा में जुड़े हुए थे। जब पानी कमर तक आ गया, तो उन्होंने उगते सूरज को प्रणाम किया - जो उस समय एक हल्की सी लालिमा मात्र था - और फिर कुंड से बाहर निकलकर स्नानघर की पुरानी पत्थर की सीढ़ियों पर कदम रखा।
महल के उत्तर-पूर्वी कोने में स्थित यह स्नानागार, महल के पुरुष सदस्यों के लिए आरक्षित तीन स्नानागारों में से एक था। यह विशाल और आयताकार था, तीन तरफ से दीवारों से घिरा हुआ और खुला हुआ था। चट्टान को काटकर बनाई गई और काई व लाइकेन से ढकी हुई सीढ़ियाँ, खुले सिरे से पानी के किनारे तक जाती थीं। पास में उगने वाला एक विशाल पीपल का पेड़ स्नानागार पर अपनी दो भारी शाखाएँ फैलाए रहता था, जिससे स्नान करने वालों को छाया और आश्रय मिलता था। थोड़ा एकांत में होने के कारण, स्नानागार में ज्यादा भीड़ नहीं होती थी, जो शुक्राचार्य को बहुत भाता था - खासकर ऐसी सुबहों में, जब उनका मन उलझे हुए विचारों से भरा होता था, जो एक-दूसरे से टकराते हुए प्राथमिकता पाने के लिए होड़ करते थे। स्नानागार का एकांत बीते हुए रात की थकान का सटीक इलाज था।

प्रधान पुरोहित को ज़रा भी नींद नहीं आई थी, और जब आई भी तो उसके सपने ऐसे थे जिन्हें वह अब याद नहीं कर पा रहा था। रात का अधिकांश समय करवटें बदलते हुए, इंद्र, विशाखा, वीषाद के खंजर आदि के बारे में सोचते हुए बीता था। शुक्राचार्य वीषाद के खंजर के बारे में हड्डियों के रहस्यमय लेकिन अटल जवाब से और भी ज़्यादा परेशान हो रहे थे। श्मशान घाट पर छोड़े गए कौवों ने अब तक कुछ भी नहीं बताया था; ज़ाहिर है, किसी ने भी उस विशाल बरगद में ज़रा भी दिलचस्पी नहीं दिखाई थी। शुक्राचार्य को यह विश्वास करना मुश्किल लग रहा था कि मानव राजा हलाहल को इतने लंबे समय तक लावारिस छोड़ देगा... फिर भी हड्डियाँ अपने जवाब पर अडिग थीं।
बरगद के वृक्ष में ही अंतहीन चिताओं के मैदान को सहारा मिलता है।
फिर अलका में इंद्र थे, अधीरता से भरे हुए, कुबेर के द्वार पर भिखारी की तरह प्रतीक्षा कर रहे थे। क्या वे मानव राज्य पर आक्रमण करने के लिए यक्षों को अपने साथ मिलाने की योजना बना रहे थे? या उनका इरादा हलाहल का पता लगाने के लिए यक्षों की शक्तिशाली जादूई शक्ति का उपयोग करना था? प्रधान पुरोहित को पता था कि देवता कुछ तो कर रहे हैं, यहाँ तक कि कुबेर को लुभाने के लिए मेनका को भी लाए थे, लेकिन इंद्र यक्ष राजा से जो चाहते थे, वह उनकी समझ से परे था।
इस अनिश्चितता के बीच, देवलोक पर नियोजित आक्रमण ही महायाजक के लिए एकमात्र राहत की बात थी। हिरण्याक्ष को दिए गए उनके निर्देश पहुंचा दिए गए थे, और अब किसी भी क्षण असुरों की सेना हतोत्साहित और नेतृत्वहीन देवताओं पर टूट पड़ने वाली थी। स्नानघर की सीढ़ियों पर तौलिये से खुद को सुखाते हुए, शुक्राचार्य के होंठ प्रतिशोध की भावना से भर उठे, यह सोचकर कि उनके भोले-भाले सगे-संबंधियों - उनके अपने सगे भाइयों, जिन्होंने एक कमतर व्यक्ति को अपना गुरु चुनकर उन्हें धोखा दिया था - पर क्या कहर बरपा होगा। देवलोक पर किया गया उसका हर प्रहार, युगों पहले देवताओं द्वारा किए गए अपमान का बदला था।
अपने विचारों में डूबे हुए, सिर झुकाए हुए, प्रत्येक खड़ी सीढ़ी चढ़ते हुए, प्रधान पुजारी अपने कक्ष की ओर वापस जा रहे थे, तभी सीढ़ियों के आधे रास्ते में, एक आवाज ने उन्हें पुकारा, जिससे वे चौंक गए।

"नमस्कार, चिकित्सक!"
ऊपर देखते हुए, शुक्राचार्य ने सीढ़ियों के शीर्ष पर एक लंबी, दुबली-पतली आकृति को खड़े देखा, जो गुलाबी रंग की सुबह की रोशनी में एक परछाई की तरह दिख रही थी।
“मुझे लगता है कि आपने आज का दिन जल्दी शुरू करने का इरादा किया है,” उस व्यक्ति ने हल्के व्यंग्य भरे लहजे में कहा। वह एक सीढ़ी नीचे उतरा और रुक गया।
“राजगुरु जी, इस संसार में बहुत कुछ ठीक करना बाकी है,” मुख्य पुजारी ने शांत स्वर में कहा। “जितनी जल्दी हम शुरू करेंगे, उतना ही अच्छा होगा।” “जी हां,” वेतला भट्ट ने सहमति जताते हुए सिर झुकाया। “और इलाज का काम कैसा चल रहा है?”
शुक्राचार्य ने तब तक कोई उत्तर नहीं दिया जब तक कि वह अंतिम से पहले वाली सीढ़ी पर चढ़कर मुख्य सलाहकार के बराबर नहीं आ गए।
“मेरी उम्मीद से कहीं बेहतर,” उसने अंत में कहा, अपनी बाईं आँख पर पट्टी खींचते हुए और उसे सावधानी से अपने सिर के पीछे बाँधते हुए। आचार्य की आँखों में देखते हुए उसने आगे कहा, “आप खुद ही देख लीजिए। शायद ही कोई चोट बची हो जिसका इलाज करना हो, शायद ही कोई हड्डी बची हो जिसे ठीक करना हो।” “इस बात पर आपसे कोई असहमति नहीं जता सकता,” वेताला भट्ट ने सिर झुकाते हुए हल्की सी मुस्कान बिखेरी। “आपको वैद्य कहना व्यर्थ नहीं है। उज्जैन के लोग मानते हैं कि आपके स्पर्श में जादू है।”
शुक्राचार्य ने जब लापरवाही से कंधे उचकाए, तो आचार्य ने अपनी भूरी भौहों के नीचे से महायाजक को तीखी निगाहों से देखा। "लेकिन उस व्यक्ति का क्या जिसने आपको इस महल में प्रवेश दिलाया... जिसने आपको यहाँ स्वागत दिलाया?" शुक्राचार्य ने सलाहकार को चुनौती भरी नज़र से देखा। “यदि आप रानी की बात कर रहे हैं, तो आपको यह जानकर खुशी होगी कि अब वह आपको पहचानती हैं, राजगुरु। मुझे लगता है कि आप इसे एक सुधार मानेंगे?”

“जी हां, बिलकुल,” आचार्य का लहजा अतिशयोक्तिपूर्ण उदारता से भरा था, लेकिन उनका लहजा अभी भी चुभने वाला था। “लेकिन मेरा सवाल यह था कि वह पूरी तरह से कब ठीक होंगी।”
“कुछ सप्ताह पहले, वह हिल-डुल नहीं सकती थी, बोल नहीं सकती थी और खुद खाना भी नहीं खा सकती थी। आज…” प्रधान पुजारी ने नाटकीय अंदाज़ में कंधे उचकाते हुए अपने हाथ ऊपर उठा दिए।
"लेकिन आप यह नहीं बता सकते कि वह कब तक ठीक हो जाएगी?" मुख्य पार्षद ने जोर देकर पूछा।
“वे चाहे जो भी कहें या मानें, मैं एक वैद्य हूँ, जादूगर नहीं,” शुक्राचार्य सीधे खड़े हुए और वेताल भट्ट की ओर देखते हुए बोले। “मैं इतना ही निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि जब रानी ठीक हो जाएँगी, तो सबसे पहले उन्हें ही पता चलेगा, और आपको भी उन्हीं से पता चलेगा। अब, यदि आप अनुमति दें, तो मैं चलता हूँ। मुझे थोड़ी देर में रानी से मिलना है।” शुक्राचार्य के भीतर हताशा परत दर परत बढ़ती जा रही थी। यह उन्हें घुटन दे रही थी, उनके सारे विचारों को क्रोध की एक गांठ में जकड़ रही थी जिसे वे अपने पेट में बड़ी मुश्किल से संभाल पा रहे थे। वे जानते थे कि आचार्य उन्हें नापसंद करते थे और उन पर भरोसा नहीं करते थे - उस पहले दिन से ही जब वे विक्रमादित्य के दरबार में आए थे और रानी को पुनर्जीवित करने की पेशकश की थी। मुख्य पुरोहित को इस बात से चिढ़ थी कि यह जानते हुए भी, वे राजगुरु के छल-कपट के खेल में फंस गए थे और चापलूसी में फंसकर अपमानजनक तरीके से पीछे हटने से पहले खुद को उनकी बातों में आने दिया था।
फिर भी, वेताल भट्ट से कहीं अधिक, शुक्राचार्य के भीतर बढ़ती हुई निराशा का कारण विशाखा थी। शुक्राचार्य उसकी रिकवरी को धीमा करने के लिए हर संभव प्रयास कर रहे थे, इसके बावजूद रानी धीरे-धीरे अपने भूले हुए अतीत के धागे जोड़ रही थी और चौंकाने वाली तेजी से कड़ियों को जोड़ रही थी। उसे वेताल भट्ट, अमर सिंह और धनवंतरी याद आ चुके थे, और पिछली दोपहर उसने शाही परिवार को यह बताकर चौंका दिया था कि शंकु शाही अस्तबल के अपमानित वार्डन ब्रिच्छा की बेटी है।

जब भी मौका मिलता, मुख्य पुरोहित विशाखा पर काले जादू के मंत्रों का प्रयोग करता, लेकिन उसके द्वारा किए गए पुनर्जन्म मंत्र का प्रभाव इतना प्रबल था कि हर बार वह आत्म-खोज की अपनी यात्रा में और भी अधिक सशक्त और स्पष्ट बुद्धि वाली बनकर उभरती। पिछली रात, शुक्राचार्य राजा और विशाखा को झूले पर हाथ पकड़े बैठे देखकर लगभग स्तब्ध रह गए थे। उन्हें बड़ी राहत मिली जब उन्हें पता चला कि रानी को अभी भी विक्रमादित्य याद नहीं हैं – लेकिन वे जानते थे कि यह केवल समय की बात है। यह विचार उन्हें परेशान कर रहा था, डरा रहा था। अपनी योजना को सफल बनाने के लिए, उन्हें उस एक कड़ी को टूटने से रोकना था, लेकिन वे पुनर्जन्म मंत्र से कैसे लड़ सकते थे और रानी की स्मृति से जुड़े इतने सारे पहलुओं को कैसे नियंत्रित कर सकते थे? प्रधान पुजारी सोच में डूब गया।
अपनी योजना को सफल बनाने के लिए, उसे उस एक कड़ी को सही जगह पर आने से रोकना था।
वह कड़ी! वही एकमात्र कड़ी थी, रानी की स्मृति का एकमात्र महत्वपूर्ण पहलू। बाकी किसी का कोई महत्व नहीं था। न उसके लिए और न ही हलाहला प्राप्त करने के उसके कार्य के लिए।
शुक्राचार्य अपनी मूर्खता पर मुस्कुराए। कई दिनों में पहली बार, वे इस तरह मुस्कुराए जिससे उनके भीतर का प्रकाश चमक उठा। कई दिनों में पहली बार, शुक्राचार्य को लगा कि सब कुछ उनके नियंत्रण में है।

* * *

जब अमारा सिम्हा भारी भरकम काउंसिल रूम के दरवाजे से अंदर घुसे, तब तक काउंसिल की कार्यवाही शुरू हो चुकी थी।
“…अनारता समुदाय को जिस खतरे का सामना करना पड़ रहा है वह गंभीर है और इसका समाधान करना आवश्यक है।”
सभा की मेज के शीर्ष पर द्वार की ओर मुख करके बैठे सम्राट, यह देखने के लिए बीच वाक्य में ही रुक गए कि कौन अंदर आ रहा है। सबकी निगाहें तुरंत द्वार की ओर घूम गईं, और जैसे ही अमरा सिंह अंदर आए, उनकी आँखें आनंद से चमक उठीं। “अरे, देखो कौन आया है!” वेतला भट्टा अपनी सीट से उठे और अपने पुराने दोस्त को देखकर प्यार से मुस्कुराए। “वापस आने में इतनी देर क्यों लग गई?”

“लंबी कहानी है,” अमरा सिंह ने राजगुरु को गले लगाते हुए सिर हिलाया। “वह कमीना जासूस जिसे हमने श्रीस्थली के पास पकड़ा था – वही जिसने अनर्तों पर हमला करने की हूणों की योजना का खुलासा किया था…?” वह यह देखने के लिए रुका कि क्या बाकी लोग उसकी बात समझ पा रहे हैं। सबने ज़ोर से सिर हिलाया। “खैर, उस आदमी ने लावा के पास भागने की कोशिश की। लगभग कामयाब हो ही गया था, छोटा शैतान।”
अमारा सिम्हा ने मेज के चारों ओर बैठे सभी लोगों का ध्यान अपनी ओर खींच लिया। कुर्सी पर बैठते हुए उन्होंने बताया, “शौचालय जाने के बहाने वह अपने पहरेदारों को चकमा देकर भाग गया। रात में ऐसा हुआ था, इसलिए हमें पता ही नहीं चला कि वह किस तरफ गया। वह भी घने जंगल के बीचोंबीच।”
“तो फिर?” विक्रमादित्य के दाहिनी ओर बैठे वरारुचि ने पूछा।
“तो फिर क्या!” अमारा सिम्हा ने अपने हाथ फैलाते हुए कहा, मानो वह कोई स्पष्ट बात कह रहा हो। “हमने उसकी तलाश शुरू कर दी।”
"और तुमने उसे ढूंढ लिया," वराहमिहिर ने अपने शब्दों को प्रश्न के रूप में नहीं कहा, लेकिन इसका निहितार्थ स्पष्ट था।
“बिल्कुल हमने किया।” तगड़े पार्षद ने कंधे के ऊपर अंगूठा हिलाते हुए कहा, “वह शहर की पुलिस चौकी में ताला लगाकर रखा गया है।”
“वह कहाँ छिपा हुआ था?” सम्राट ने पूछा।
“लावा के उत्तर में पहाड़ियों में,” अमारा सिम्हा मुस्कुराए और अपनी सीट पर पीछे झुक गए। “चालाक लोमड़ी ने उत्तर की ओर भागकर हमें चकमा देने की कोशिश की। उसे लगा कि हम उसकी तलाश में पश्चिम की ओर उदयपुरी और सीमा की तरफ लौटेंगे।”
"तुम्हें कैसे पता चला कि वह उत्तर की ओर गया था?" क्षपनाका की आवाज में जिज्ञासा और प्रशंसा दोनों भाव थे।
“हमने ऐसा नहीं किया।”
“तो फिर आपने उसे कैसे ढूंढा?” आचार्य ने अपनी भौंहें चढ़ाते हुए पूछा। “आपके साथ कितने सैनिक थे – लगभग एक दर्जन?”

“ठीक दस,” अमारा सिम्हा ने उत्तर दिया। “मैंने उन आदमियों से कहा था कि अगर हम उसे ढूंढ लेते हैं, तो उन्हें आपस में बांटने के लिए सोने के सिक्कों से भरी थैली मिलेगी। मैंने उन दो पहरेदारों को भी साफ-साफ कह दिया था जिन्होंने उसे खोया था कि अगर हम उसे नहीं ढूंढ पाए, तो उन्हें अपनी बाकी जिंदगी निर्वासितों के जंगल में बितानी पड़ेगी। लालच और डर हर तरह के जादू को संभव बना सकते हैं।”
“अद्भुत!” विक्रमादित्य ने आश्चर्य से अपना सिर हिलाया।
“हां,” अमारा सिम्हा ने सहमति जताते हुए कहा। “गर्मी और धूल में इधर-उधर भागते हुए हमें तीन दिन अतिरिक्त लग गए, लेकिन यह इसके लायक था।”
"जब तक वो यहाँ है, किसी को उसे बेहतर तरीके से छिपना सिखा देना चाहिए," धनवंतरी ने बेकाबू मुस्कान के साथ कहा। "अगर उसकी नासमझी न होती, तो तुम अब भी उसका पीछा कर रहे होते, और हमें कुछ और दिनों तक तुम्हारा चिड़चिड़ा चेहरा देखने से छुटकारा मिल जाता। तुम्हें देखो - तुम किसी बुरे सपने से निकले हुए लगते हो।"
“शायद तुम्हें ही उसका पीछा करना चाहिए था, मेरे दोस्त,” अमारा सिम्हा ने पलटवार किया, और पार्षदों को उसकी जानी-पहचानी हंसी सुनकर ठहाके लग गए। “इससे तुम्हारा कुछ वज़न कम हो जाता। तुम्हें देखो – अगर तुम और मोटे हो गए, तो हम तुम्हें हमलावर हूणों पर लुढ़काकर उन्हें तितर-बितर कर सकते हैं।”
"शांति, भाई, शांति," चिकित्सक हँसते हुए बोला, उसके गाल और कंधे खुशी से कांप रहे थे।
“और अगर मेरी शक्ल-सूरत आपके उत्तम स्वाद को ठेस पहुँचाती है तो मुझे खेद है, लेकिन मैं कल रात बहुत देर से उज्जैन पहुँचा और मुझे मुश्किल से कुछ घंटे ही आराम मिला… जबकि आप अपनी नींद का आनंद ले रहे थे,” अमरा सिंह अपनी हाजिरजवाबी में मग्न थे, उनकी आँखें धनवंतरी की ओर चमक रही थीं।
होश में आकर उन्होंने राजगुरु से विक्रमादित्य की ओर देखा। “दरअसल, मुझे सुबह जल्दी एक संदेश मिला था जिसमें लिखा था कि हमें यहाँ एक अत्यंत महत्वपूर्ण मामले पर चर्चा करने के लिए बुलाया गया है।”

वह खुशनुमा माहौल पल भर में गायब हो गया। सम्राट ने एक गहरी सांस ली और कुर्सी पर सीधे बैठ गए।
“अच्छा…” राजा रुका और शंकु की ओर एक नज़र डाली, जो परिषद की मेज के निचले हिस्से के पास अपनी सामान्य जगह पर बैठी थी। “जब हमें श्रीस्थली से आपका संदेश मिला जिसमें हूणों द्वारा समुद्र के रास्ते अनार्ता संघ पर आक्रमण की संभावना बताई गई थी, तो हमने मातृ भविष्यवक्ता से परामर्श करना उचित समझा। भविष्यवक्ता ने कल शाम बादलों में एक संकेत देखा।”
“बोर्ड पर क्या लिखा था?” अमारा सिम्हा ने पूछा।
सम्राट ने शंकु की ओर देखा और सिर हिलाया।
“पश्चिम से आ रहे बादलों ने भविष्यवक्ता को बताया कि एक हजार काली तितलियाँ काली नदी का अनुसरण कर रही हैं,” लड़की ने धीरे से कहा। “और सभी तितलियाँ दक्षिण की ओर जा रही हैं।”
“तितलियाँ?” अमारा सिम्हा ने हैरानी से मेज के चारों ओर देखा।
आचार्य ने कहा, “कल्पना कीजिए कि आप आसमान में ऊँचाई पर तैरता हुआ एक बादल हैं, और आप नीचे एक नदी को देखते हैं, जो काली तितलियों से भरी हुई प्रतीत होती है। आपको क्या लगता है कि आप क्या देख रहे हैं?”
मुझे नहीं पता – शायद काली तितलियाँ होंगी।
“तुम्हें कैसे पता चलेगा कि वे तितलियाँ हैं?” वराहमिहिर ने पूछा।
“उनके पंखों से, बिल्कुल। वरना कैसे पता चलेगा…” अमारा सिम्हा रुका, जैसे ही उसे सच्चाई का एहसास हुआ, उसका आत्मविश्वास भरा स्वर फीका पड़ गया। “पाल। काले जहाज के पाल!”
“बिल्कुल सही,” राजगुरु ने कहा। “हजारों काले जहाज काली नदी के प्रवाह के साथ दक्षिण की ओर चल रहे हैं। और आपको क्या लगता है कि वे जहाज कहाँ जा रहे हैं?”
“अनार्त। द्वारका।” अमर सिंह ने थके हुए हाथों से अपना चेहरा ढँक लिया। विक्रमादित्य ने कहा, “बिल्कुल वैसे ही जैसे हमारे उस दोस्त ने आपको बताया था जो शहर की चौकी में कैद है। इसीलिए मैंने परिषद की यह आपातकालीन बैठक बुलाई है। हमें जल्द से जल्द कार्रवाई का फैसला करना होगा।”

“हम मिलने के लिए पूरी एक रात इंतजार करते रहे?” अमारा सिम्हा अविश्वास से बोली। “हमें इसके बारे में कल शाम ही पता चला था…”
“देवी ओरेकल को कल शाम ही इस बात का पता चल गया था,” कालिदास ने बीच में ही टोकते हुए पहली बार बोलना शुरू किया। “दुर्भाग्यवश, वह हममें से किसी को भी यह बात बताने से पहले ही बीमार पड़ गईं। कल देर रात उन्होंने शंकु को इसके बारे में बताया, जिसने आज सुबह सम्राट को सूचित किया।”
“ओह, मैं समझ गया।” व्याकरणविद् ने अपनी मजबूत बांहें दिखाते हुए परिषद की मेज पर बने सूर्य-शिखर के चारों ओर मूंगा और नीलमणि से बनी आकृतियों को देखकर भौंहें चढ़ाईं। “हमने क्या निर्णय लिया है?”
“प्रधान युगंधरा के दरबार को संदेश भेजा जा रहा है, जिसमें उन्हें देवी ओरेकल से प्राप्त जानकारी दी गई है,” सम्राट ने कहा। “मेरा मानना है कि घटाकरपारा ने पहले ही उस जानकारी को सरदार के साथ साझा कर दिया है जो आपने खोजी संदेशवाहक से प्राप्त की थी।”
“उसे ऐसा करना चाहिए था,” अमारा सिम्हा ने सिर हिलाया।
“लेकिन हमारी ज़िम्मेदारी यहीं खत्म नहीं होती,” विक्रमादित्य ने अपने साथियों की ओर देखते हुए कहा। “अनर्ता संघ ने सीमा की रक्षा के लिए अवंती और मत्स्य में अपने पंद्रह हज़ार सैनिक भेजे हैं। इसलिए द्वारका और अनर्ता तटरेखा की रक्षा के लिए उनके पास पंद्रह हज़ार सैनिकों की कमी है। हमें उन्हें कम से कम उतनी ही संख्या में, या उससे भी अधिक संख्या में सैनिक उपलब्ध कराने होंगे।”
“और भी ज्यादा, मैं कहूंगा,” वेताला भट्टा ने कहा। चारों ओर मौजूद लोगों ने सिर हिलाकर उनकी बात का समर्थन किया।
“एक हजार जहाजों में कितने लोग समा सकते हैं?” अमरा सिंह ने आश्चर्य से पूछा।
“यह जहाजों के आकार पर निर्भर करता है,” वराहमिहिर ने उत्तर दिया। “वे नदी में चल रहे हैं, इसलिए वे बहुत बड़े नहीं हो सकते। साथ ही, हमने जो सुना है, उसके अनुसार अँधेरी नदी बहुत चौड़ी है – पवित्र क्षिप्रा नदी से कई गुना चौड़ी, यहाँ तक कि शक्तिशाली यमुना से भी चौड़ी। तो… शायद एक जहाज में सौ लोग हों, या इससे भी अधिक।”

जैसे ही मानसिक गणना के त्वरित अभ्यास के माध्यम से संख्या का अनुमान लगाया गया, मेज के चारों ओर बैठे लोगों ने हैरानी से सांस ली।
क्षपणक ने कहा, “हमें यह समझना होगा कि हजार जहाजों की संख्या महज़ एक मुहावरा हो सकती है। वास्तविक संख्या इससे कहीं कम हो सकती है।”
"या, उस तर्क से, कहीं अधिक," धनवंतरी ने क्षपनाका को तिरछी नज़र से देखा, जिससे क्षपनाका ने मुँह बना लिया।
वररुची ने कहा, "हमें अनार्ता जनजाति के जितने संभव हो उतने सैनिकों को वापस भेजना चाहिए। संघ के सैनिकों को अपने क्षेत्र की अच्छी जानकारी है, जो युद्ध में हमेशा फायदेमंद साबित होती है।"
सम्राट ने सिर हिलाया। "हम अनार्तस से कितने सैनिकों को जल्दी से जुटा सकते हैं?"
“दुर्भाग्यवश, मैंने उनमें से अधिकांश को मत्स्य भेज दिया है,” वरारुची ने उत्तर दिया। “अवंती में बचे हुए कुछ सैनिकों में से अधिकांश को सीमावर्ती क्षेत्रों में तैनात किया गया है, कुछ को तो गोश्रृंगा तक उत्तर में भेजा गया है। मुझे नहीं लगता कि हम कम समय में दो या तीन हजार से अधिक सैनिकों को जुटा सकते हैं।”
विक्रमादित्य ने आदेश दिया, “उन तीन हज़ार सैनिकों को तुरंत अनर्तों को वापस भेज दें। साथ ही, लावा की चौकी को संदेश भेजें कि वे हमारे पाँच हज़ार सैनिकों को तुरंत द्वारका भेजें। शर्मिष्ट और श्रीस्थली से हमारे सैनिकों को अनर्तों में भेजें और अतुल्यतेज को आदेश दें कि वे उदयपुरी से उन सैनिकों के स्थान पर और सैनिक भेजें। नगर चौकी को भी आज शाम तक पाँच हज़ार सैनिकों को पश्चिम की ओर भेजने की तैयारी करनी होगी। मैं चाहता हूँ कि नगर चौकी के सैनिक तेज़ी से आगे बढ़ें और यह सुनिश्चित करें कि उनमें पैदल सेना, घुड़सवार सेना और तीरंदाजों की टुकड़ियाँ सही अनुपात में हों।”
“हेहेया और वत्सा से आए सैनिकों का क्या होगा?” क्षपणक ने बीच में टोकते हुए कहा। “उनमें से कुछ भी जा सकते हैं, है ना?”

“वे निश्चित रूप से कर सकते हैं,” सम्राट ने दृढ़ता से कहा। “जो भी तुरंत उपलब्ध हो, उसे शामिल किया जा सकता है और किया जाना चाहिए। हर अतिरिक्त तलवार और भाला, हर अतिरिक्त योद्धा साथी फर्क लाएगा।”
जब राजा ने विराम लिया, तो वरारुचि उठने लगे, लेकिन विक्रमादित्य का बोलना अभी समाप्त नहीं हुआ था।
“अनर्त सरदारों ने हर संकट में हमारा साथ दिया, यहाँ तक कि जब अनर्त आक्रमणकारियों से अपेक्षाकृत सुरक्षित थे तब भी। हमें उनका ऋण चुकाना है, और अब समय आ गया है। मैं चाहता हूँ कि हममें से कोई एक युगंधरा के दरबार में जाए और द्वारका की रक्षा के लिए उनके सैनिकों के साथ मिलकर लड़े।” “मैं चलता हूँ,” अमारा सिम्हा अपनी सीट से उछलकर आगे बढ़ा। “चलिए, मैं सीमा पर कुछ लड़ाइयाँ लड़ने गया था, लेकिन मुझे अपनी कुल्हाड़ी चलाने का मौका केवल एक मृत शरीर का सिर काटने के लिए मिला। आप लोगों का मुझ पर एहसान है।” “लेकिन पार्षद जी, सीमा से लौटे हुए आपको अभी कुछ ही घंटे हुए हैं,” विक्रमादित्य ने अमरा सिंह पर चिंता भरी नज़र डाली। “आप पहले ही एक लंबी और थका देने वाली यात्रा कर चुके हैं, और द्वारका तो पश्चिम में और भी दूर है। जो भी जाए उसे अभी निकलना होगा – जबकि आप… मुझे लगता है आपको आराम की ज़रूरत है।”
“मैं ठीक हूँ,” अमारा सिम्हा ने जोर देकर कहा। “मैं आराम तो कभी भी कर ही सकता हूँ…”
कुर्सी के पीछे खिसकने की तेज़ आवाज़ ने अमरा सिंह के विरोध को दबा दिया। राजा और सलाहकारों ने मुड़कर देखा तो वरारुचि उठ खड़ा हुआ था।
“नहीं, मैं जाऊंगा,” सम्राट के सौतेले भाई ने ऐसे स्वर में कहा जिससे अन्य सभी संभावनाएँ खारिज हो गईं।
अमर सिंह के चेहरे पर झुंझलाहट के भाव देखकर वरारुचि ने हाथ उठाया। “मेरे मित्र, धैर्य रखिए। मैंने पहले भी कहा था कि युद्ध में भूभाग का ज्ञान अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। मुझे पूरा विश्वास है कि आप शेर की तरह लड़ेंगे, लेकिन सच्चाई यह है कि आप अनार्तस और द्वारका के बारे में बहुत कम जानते हैं। आप कभी वहां नहीं गए, जबकि मैं गया हूँ। दक्षिणी राज्यों की

यात्रा के दौरान मैंने द्वारका और उसके आसपास एक महीने से अधिक समय बिताया था। वह अनुभव इस युद्ध में आपके काम आएगा।”
“वरारुचि सही कह रहे हैं,” आचार्य ने सिर हिलाते हुए अमरा सिंह की बांह पर प्यार से थपथपाया।
“तो फिर हम दोनों को जाने दो,” अमारा सिम्हा ने तर्क दिया। “दो लोग हूणों से एक से बेहतर लड़ सकते हैं।”
“मैं आपकी निराशा समझ सकता हूँ, सलाहकार,” राजा ने कहा। “लेकिन हमने आपको सीमा से वापस बुलाने का एक कारण है। अगली बार जब भी देवता या असुर हमला करें, उज्जैन की रक्षा के लिए हमें अधिक से अधिक सैनिकों की आवश्यकता होगी।”
“ठीक है, कोई बात नहीं।” अमारा सिम्हा अपनी कुर्सी पर पीछे की ओर झुक गया। “बस वे आ जाएं।”
“मुझे लगता है कि पार्षद की बात सही है जब वह कहते हैं कि दो लोग एक से बेहतर लड़ सकते हैं,” कालिदास ने अपनी कोहनियों को मेज पर टिकाया और वरारुचि की ओर देखा। “मैं आपको अनार्तों के विस्तृत ज्ञान से भरपूर एक अच्छा संसप्तक दे सकता हूँ।”
“यह कौन है?” वररुचि ने पूछा।

“Udayasanga.”
“क्या वह अनार्ता समुदाय को जानता है?”
“बहुत खूब। उदयसांग ने अपने प्रारंभिक जीवन का अधिकांश समय द्वारका और भृगुकाक्ष के दर्शन करते हुए बिताया। उनके पिता, जो हाथीदांत के व्यापारी थे, चाहते थे कि उनका बेटा भी इस व्यापार को सीखे।” विशालकाय व्यक्ति हँसते हुए रुका। “बेटे ने बस यही सीखा कि अपने पिता के प्रतिद्वंद्वी अन्य हाथीदांत व्यापारियों से झगड़ा करना चाहिए।”
“मुझे बहुत खुशी होगी अगर उदयसांगा मेरे साथ आएं,” वरारुचि मुस्कुराईं। “उन्हें आपके साथ यात्रा करने में गर्व होगा। मैं आपके साथ यात्रा करने के लिए एक दर्जन अन्य संसप्तक भी चुन लूंगा। मैं सुनिश्चित कर लूंगा कि वे कुछ ही घंटों में प्रस्थान के लिए तैयार हों।”

परिषद के भंग होने के बाद, आचार्य अमर सिंह के साथ कक्ष से बाहर निकले, जो थके हुए और निराश दिख रहे थे। जब दोनों एक गलियारे से नीचे जा रहे थे, तो राजगुरु ने अपने साथी के कंधे पर स्नेहपूर्वक हाथ रखा।
“हिम्मत रखो, मेरे दोस्त,” वेतला भट्टा ने कहा। “सब कुछ खत्म नहीं हुआ है।” “जिस तरह से हालात चल रहे हैं, मुझे खेतों में जाकर रिटायर होना पड़ेगा और अपनी कुल्हाड़ी को मिट्टी जोतने के लिए बचाकर रखना पड़ेगा,” अमारा सिम्हा ने अपनी झुंझलाहट को छुपाने की जहमत भी नहीं उठाई।
आचार्य ने एक गहरी आह भरी और उस मजबूत कंधे को कसकर पकड़ लिया। “तुमने देखा है कि इस शहर ने क्या-क्या झेला है, है ना? खैर, मैं तुम्हें बता दूं, उज्जैन अभी इसका अंत नहीं है। तुम्हें अपनी कुल्हाड़ी चलाने के भरपूर अवसर मिलेंगे। इस बात की मैं गारंटी दे सकता हूँ।”

* * *

काले वर्षा बादलों के किनारे से सबसे पहले निकलने वाला व्याला अमरका का वाहन था।
अपने शल्कों पर चिपकी बारिश की बूंदों को झाड़ते हुए, वह विशालकाय जीव देवलोक से बहुत ऊपर बर्फीली ऊंचाइयों में उड़ गया, तेजी से ऊपर उठता गया जब तक कि उसके पंखों पर नमी की बूंदें जम कर बर्फ की एक पतली परत में तब्दील नहीं हो गईं। फिर भी वह चढ़ता रहा, उसके पांचों नुकीले सिर ऊपर की ओर फैले हुए थे, पांचों चोंचें सीधे आकाश की ओर इशारा कर रही थीं जिसका रंग तेजी से नीले से गहरे बैंगनी और फिर काले में बदल रहा था। जैसे-जैसे वह ऊपर जाता गया, ठंड बढ़ती गई, और अमरका को अपनी युद्ध कुल्हाड़ी की ठंडी धातु पर अपनी उंगलियां सुन्न होती महसूस होने लगीं।
चढ़ाई जारी रही और अमरका को अपने दांत किटकिटाने से रोकने के लिए अपने जबड़े भींचने पड़े। पीछे मुड़कर देखते हुए उसने देखा कि शेष असुर सेना नीचे बादलों को चीरती हुई आ रही है, उनके व्याल भयंकर प्रतिस्पर्धा का प्रदर्शन करते हुए उसके पीछे दौड़ रहे हैं। अपनी पलकों पर जम रही बर्फ को झपकाते हुए उसने देखा कि चंदासुर सबसे आगे है, उसका व्याल अमरका के वाहन को पकड़ने की कोशिश में सबसे आगे निकल रहा है।

जल्द ही, सांस लेने में कठिनाई होने लगी और सिर हिलाने पर अमरका की दृष्टि धुंधली हो जाती थी। उसने देखा कि उसका व्याला भी सुस्त होता जा रहा है, उसके पंख फड़फड़ाने में लड़खड़ा रहे थे और वह बीच-बीच में कुछ कदम पीछे हट रहा था। लगाम खींचते हुए अमरका यह देखकर आश्चर्यचकित रह गया कि व्याला स्वेच्छा से धीमा हो रहा है और अपनी सामान्य आक्रामकता नहीं दिखा रहा है। जानवर के अचानक इस लचीलेपन का कारण समझते हुए - व्याला भीषण गर्मी में सबसे अच्छा काम करते हैं - उसने निष्कर्ष निकाला कि वे अपनी आकाश यात्रा की सीमा तक पहुँच चुके हैं।
चंदासुर और बाकी असुरों को वहाँ पहुँचने में कुछ समय लगा, पतले वातावरण में भारी शरीर को हवा में बनाए रखने के लिए उनके व्याल (पहाड़) ज़ोर लगा रहे थे। जब चंदासुर उनके बराबर पहुँचा, तो अमरका ने देखा कि ठंड से उसके भाई के होंठ नीले पड़ गए थे, और उसने अनुमान लगाया कि उसके भी होंठ नीले पड़ गए थे। दोनों कुछ देर तक साथ-साथ चलते रहे, ताकि उनके थके हुए वाहन थोड़ा आराम कर सकें।
“मुझे नहीं पता कि हम इससे ऊपर जाने का जोखिम उठा सकते हैं या नहीं, भाई।” जब उसने ये कहा, तो अमरका के मुँह से ठंडी हवा में भाप के बादल निकले, जो एक पल के लिए उसकी अनिर्णयता के दृश्य प्रतीक की तरह हवा में लटके रहे, फिर गायब हो गए और उड़ गए।
“मुझे भी नहीं,” चंदासुर ने उत्तर दिया। बैंगनी-काले रंग के गुंबद को देखते हुए उसकी चौड़ी छाती फूल गई, फिर उसने नीचे धीरे-धीरे सरकते हुए व्यालों और उनके वाहनों पर नज़र डाली। जानवर असामान्य रूप से शांत प्रतीत हो रहे थे।
“सवाल यह है कि क्या हम गरुड़ों की पहुँच में हैं?” अमरका ने सोचा। “या वे अभी भी हमसे बहुत ऊपर हैं?”
चंदासुर ने बस कंधे उचका दिए। उसकी साँसें तेज़ चल रही थीं और वह यथासंभव ऊर्जा बचाने की कोशिश कर रहा था। अंत में उसने बड़ी मुश्किल से कहा, "पता लगाने का एक ही तरीका है।"
“क्या हमने गांठें ढीली होने दीं?” अमरका ने अपनी काली मूंछों के सिरों पर जमी कुछ बर्फ को झाड़ दिया।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

अमरावती

आचार्य ने एक बार फिर पांडुलिपि को ध्यान से पढ़ा, फिर उसे सावधानीपूर्वक लपेटकर डोरी से बांध दिया। बंधी हुई पांडुलिपि को अपनी कोहनी के पास संगमरमर की मेज पर रखते हुए, राजगुरु ने कालिदास, क्षपणक और अमर सिंह की ओर देखा, जो उनकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा में ध्यान से उन्हें देख रहे थे। सम्राट एक बड़ी खिड़की के पास खड़े होकर महल की झील को निहार रहे थे। “क्या रानी सुमयंती ने इसे किसी आधिकारिक दूत के माध्यम से भेजा था?” वेतला भट्टा की घनी भौहें जिज्ञासा से ऊपर उठ गईं।
“अपनी निजी दूत के ज़रिए,” राजा ने खिड़की से बाहर देखते हुए सिर हिलाया।
“अच्छी रानी हेहेया के आधिकारिक घुड़सवारों में से किसी एक का इस्तेमाल करने का जोखिम नहीं उठा सकती थीं।”
"यह जानकर काफी राहत मिली कि हेहेया में कम से कम कोई तो समझदार है," अमारा सिम्हा ने गुस्से से कहा।
राजा और चारों सलाहकार परिषद कक्ष से सटे एक छोटे से कमरे में थे, जिसका उपयोग अक्सर अनौपचारिक बैठकों और परामर्शों के लिए किया जाता था। वरारुचि द्वारका के लिए रवाना हो चुके थे, वराहमिहिर शहर के दूसरे छोर पर अपनी कार्यशाला में थे, धनवंतरी भविष्यवाणी कर रहे थे, जबकि शंकु घुमंतू जनजाति

से आए अपने बीमार कुलमाता से मिलने आए पहले रिश्तेदार का स्वागत करने में व्यस्त थीं।
“राजगुरु, आप इसके बारे में क्या सोचते हैं?” विक्रमादित्य ने अपनी भुजाएँ मोड़ते हुए और अपना सिर एक तरफ झुकाते हुए पूछा।
“यह तो बिल्कुल स्पष्ट है कि हरिहारा का मानसिक संतुलन बिगड़ गया है,” आचार्य की जगह अमर सिंह ने हाथ हिलाते हुए और कनपटी पर उंगलियां थपथपाते हुए उत्तर दिया। “यह तो… सरासर पागलपन है!”
“कुलभेद के घिनौने चंगुल से राजकुमारी रुक्मा को बचाने के बदले में वह हमें इस तरह से चुका रहा है – वह उसे तुरंत ही एक और घिनौने हाथों के हवाले कर रहा है।” कालिदास ने झुककर विक्रमादित्य की ओर देखा। “अब समझ में आया मेरा मतलब क्या था जब मैंने कहा था कि हरिहर हमारी मित्रता के लायक नहीं है?”
सम्राट एक नीची सोफे की ओर चले और बैठ गए।
उन्होंने कहा, "मुझे इसमें थोड़ी दुर्भावना भी नजर आती है।"
“द्वेष?” मुख्य पार्षद का सिर आश्चर्य से ऊपर उठा। “यह कैसे?”
राजा ने सिर हिलाया और विचार करते हुए अपने होंठ चबाने लगे। "जब राजा हरिहर राजसूय यज्ञ के लिए यहाँ आए थे, तब उन्होंने महारानी के समक्ष एक प्रस्ताव रखा था।"
“किस तरह का प्रस्ताव?” कालिदास ने पूछा।
उन्होंने सुझाव दिया कि रुकमा दुल्हन बनकर इस महल में आए।
“किसकी दुल्हन?”
विक्रमादित्य ने अपने सामने मौजूद चेहरों को देखा। "मैं।"
जब आचार्य, कालिदास और अमर सिंह ने आश्चर्य भरी निगाहों का आदान-प्रदान किया, तो क्षपणक का चेहरा क्रोध से लाल हो गया।
“कितनी बेशर्मी है!” वह भड़क उठी। “उसने… मुझसे पूछा कि विशाखा कैसी है, कैसी चल रही है… उसकी बातें कितनी अच्छी और स्नेहपूर्ण लग रही थीं।” वह रुकी और कड़वाहट से अपने हाथों को घूरने लगी। “यह सब दिखावा था… जबकि उसके दिल में हमेशा से रुक्मा को विशाखा की जगह बिठाने की योजनाएँ चल रही थीं।”

अमर सिंह ने सहज ही क्षपणका के कंधे पर हाथ रखकर उसे सांत्वना दी और थपथपाया। वेताल भट्ट ने राजा की ओर देखा।
"मेरा मानना है कि आपने हरिहारा का प्रस्ताव ठुकरा दिया, और इसी को आप द्वेष कहते हैं?"
सम्राट ने सिर हिलाया। आगे झुककर, कोहनियों को घुटनों पर टिकाकर, उन्होंने पार्षदों को संबोधित किया।
“मैं राजा हरिहर की दुविधा समझता हूँ,” उन्होंने शांत स्वर में कहा। “रुक्मा विवाह योग्य आयु की है, और पुत्री पिता का उत्तरदायित्व होती है। राजा जानते हैं कि वे हमेशा जीवित नहीं रहेंगे, इसलिए राजकुमारी का विवाह कराना उनका स्वाभाविक कर्तव्य है।”
“लेकिन शूरसेना को?” क्षपणका ने हैरानी से सिर हिलाया, उसकी आवाज़ में हरिहर के प्रति नवजात आक्रोश अभी भी गूंज रहा था। “राजकुमार द्वारा अपने ही पिता की हत्या करने की बात जानने के बाद?”
“सिद्धसेना उसका मित्र था,” अमर सिंह उत्तेजित होकर अपनी सीट से उठे और कमरे में इधर-उधर घूमने लगे। “हरिहर भला अपने मित्र के हत्यारे को अपनी पुत्री सौंपने के बारे में सोच भी कैसे सकता है?”
वेताल भट्ट ने राजा की निगाहों से आँखें मिलाईं। “हम ऐसा होने नहीं दे सकते, विक्रम।”
“मैं आप सभी से सहमत हूँ,” सम्राट ने उत्तर दिया। “यह गठबंधन संभव नहीं है।”
कालिदास ने कहा, “किसी को हरिहर को अक्ल सिखाने की ज़रूरत है। उसे मित्रता, वफादारी और बुनियादी शिष्टाचार जैसी बातों की याद दिलाने की ज़रूरत है।” “कालिदास सही कह रहे हैं,” अमर सिंह ने मुट्ठी से अपनी हथेली पर प्रहार किया। “मैं उसे ऐसा सबक सिखाना चाहता हूँ जिसे वह आसानी से न भूले।”
“रानी सुमयंती के संदेश के पीछे एक कारण है,” विक्रमादित्य ने ध्यान आकर्षित करने के लिए हाथ उठाया। “वह स्पष्ट रूप से राजा हरिहर के विचारों से सहमत नहीं हैं। उन्होंने अपने जीवन में बड़ा जोखिम उठाकर हमसे संपर्क किया है – इसलिए नहीं कि उन्हें लगता है कि हम राजा को सबक सिखा सकते हैं,

बल्कि इसलिए कि उन्हें विश्वास है कि हम उन्हें सही राह दिखा सकते हैं। हमारा कर्तव्य है कि हम इस समस्या का सौहार्दपूर्ण ढंग से समाधान करें। हम रानी सुमयंती और अपने उस सहयोगी के प्रति ऋणी हैं जो गुमराह हो गया है।” “विक्रमा, तुम्हारा क्या प्रस्ताव है?” राजगुरु ने पूछा। चारों निगाहें अपने ऊपर टिकी होने के कारण सम्राट कुछ देर रुककर सोचने लगे।
“राजा हरिहर की सबसे बड़ी चिंता राजकुमारी रुक्मा का विवाह है। यदि इस चिंता का उचित समाधान हो जाए, तो हमारे पास एक हल है।” विक्रमादित्य की दृष्टि वेताल भट्ट पर टिकी। “राजगुरु जी, आप राजा हरिहर को उनके पिता के समय से जानते हैं, इसलिए यदि आप कृपा करके महिष्मती की यात्रा करें, तो मैं आपसे निवेदन करता हूँ। आप जितनी जल्दी निकलें, उतना अच्छा होगा।”
“मैं कल सुबह तड़के रवाना हो जाऊंगा। लेकिन हरिहारा के सामने आप क्या प्रस्ताव रखना चाहते हैं?”
जब सम्राट ने अपने मन की बात समझाई तो पार्षद आगे की ओर झुक गए।

* * *

महल के दक्षिणी पुल की ओर देखने वाली बालकनियों और छतों पर अप्सराएं और देवियां कतार में खड़ी थीं, जगह के लिए धक्का-मुक्की कर रही थीं, एक-दूसरे पर झुक रही थीं और पुल पर गिरे गरुड़ की एक झलक पाने के लिए अपनी गर्दनें ऊपर उठा रही थीं।
गरुड़ लाल, भूरे और सफेद पंखों और गेरूए रंग के फर के एक अव्यवस्थित ढेर में पड़ा था, उसकी हड्डियाँ असामान्य कोणों पर मुड़ी हुई थीं, उसका विशाल चील जैसा सिर लटका हुआ था, सफेद चोंच मृत्यु में आधी खुली हुई थी। उसका एक टूटा हुआ पंख पुल के किनारे से लटका हुआ था, खाई के ऊपर किसी भयानक राक्षस के लिए चारा जैसा लग रहा था, उसके पंख हवा में लहरा रहे थे।
यह दृश्य देवताओं और अप्सराओं के मन में भय भर गया, फिर भी वे उस क्षुद्र शरीर से अपनी दृष्टि नहीं हटा सके। हालांकि सुबह से ही अमरावती के चारों ओर से आकाश से गरुड़ों के गिरने की खबरें आ रही थीं – एक दर्जन गरुड़ महल की खिड़कियों और बालकनियों से होते हुए नीचे खाई में गिर चुके थे – लेकिन महल में मौजूद कई लोगों के लिए पुल पर पड़ा वह निर्जीव शरीर पहला मृत गरुड़ था जिसे उन्होंने कभी देखा था।

हर संभव स्थान से वे स्तब्ध और विस्मय से देखते रहे, जब चार देव शव को लेने और उसे वापस महल के विशाल प्रांगण में ले जाने के लिए पुल पर दौड़े। प्रांगण विभिन्न देव विभागों के सेनापतियों और अधिकारियों से खचाखच भरा हुआ था, जिनमें से कई पहले से ही हथियारबंद थे। भीड़ इतनी घनी थी कि देव प्रांगण के शीर्ष पर बने ऊंचे चबूतरे तक जाने वाली लगभग बीस सीढ़ियों पर भी फैल गए। बड़ी मुश्किल से मृत जासूस को इस भीड़ के बीच से निकाला गया, और चारों देवों के लिए सीढ़ियों के नीचे थोड़ी सी जगह बनाई गई ताकि वे अपना बोझ उतार सकें।
“क्या यह मर गया?” एक भयभीत आवाज फुसफुसाई, जिससे नारदा ने पास की बालकनी की ओर देखा। बोलने वाली एक अप्सरा थी, जिसकी आँखों में अविश्वास स्पष्ट झलक रहा था।
“यह कैसे संभव है? यह तो गरुड़ है – एक अमर प्राणी,” अप्सरा के पास खड़े एक देव ने आश्चर्य व्यक्त किया। “गरुड़ को कोई नहीं मार सकता।”
“यह तो मर चुका है,” तीसरे देव ने जोर देकर कहा। “बाकी सभी गिरे हुए देवों की तरह।”
“यह तो भ्रम ही होगा,” अप्सरा बहस करने लगी, लेकिन नारद का ध्यान बृहस्पति की आवाज पर गया जो उनके कंधे के पास खड़ी थी। “इस स्थिति के बारे में आपकी क्या राय है?”
“मुझे तो असुरों का सीधे अमरावती पर हमला करने का कदम देखकर आश्चर्य होता है – बहुत ही साहसी कदम,” नारद ने पर्दे वाली खिड़की के पीछे से आकाश की ओर देखते हुए उत्तर दिया, जहाँ वे और उनका दरबारी खड़े थे। “और किसी और पर हमला करने से पहले गरुड़ों को मार गिराना – बहुत ही चतुराई भरा कदम है।” “मैं वहाँ के माहौल की बात कर रहा था,” बृहस्पति ने आँगन की ओर इशारा करते हुए कहा। “वहाँ डर और अनिश्चितता का माहौल है – और आपके शब्द आत्मविश्वास जगाने वाले नहीं हैं।”
नारद ने अपना ध्यान नीचे आंगन की ओर मोड़ा, जो बेचैन देवताओं से भरा हुआ था, और उस चबूतरे की ओर जहाँ सुनहरे बालों वाले, नींद से भरी आँखों वाले अश्विनी जुड़वाँ भाई एक बलवान, दाढ़ी वाले देवता के साथ खड़े थे। वे समझ गए कि दरबारी किस ओर इशारा कर रहा था – मंडराता संकट अभूतपूर्व था, और देवता

इंद्र के आश्वस्त करने वाले नेतृत्व को बहुत याद कर रहे थे। यह उनकी धुंधली आँखों, उनके लड़खड़ाते कदमों और उनके कंधों के शिथिल झुकाव में स्पष्ट था। अश्विनी और मरुत उस कमी को पूरा कर सकते थे, लेकिन सिंधुवर्त में उन्हें जो हार झेलनी पड़ी थी, वह अभी भी हर देवता की स्मृति में ताज़ा थी।
“गुरुदेव, मैं तो बस तथ्य बता रहा हूँ,” राजनयिक ने कंधे उचकाते हुए कहा। “अगर इसके पीछे असुरों का हाथ है, तो अमरावती और महल की रक्षा करनी होगी, नारद। किसी को तो उस भीड़ को इकट्ठा करके लड़ने के लिए प्रेरित करना होगा,” बृहस्पति की आवाज में घबराहट साफ झलक रही थी। उनके चिकने माथे पर पसीना चमक रहा था और उनके गोल-मटोल, उम्रहीन गालों से बह रहा था।
“तो चलिए देखते हैं हम क्या कर सकते हैं, गुरुदेव,” राजनयिक ने अपने तीखे नाक से काफी छोटे कद के चैंबरलेन को तिरछी नजरों से देखा।
नारद कमरे की निजता छोड़कर जाने के लिए मुड़े, लेकिन बृहस्पति वहीं रुक गए। खिड़की से बाहर देखते हुए उन्होंने कहा, “मुझे जयंता दिखाई नहीं दे रहे। क्या उन्हें भी बुलावा नहीं भेजा गया था?”
“अमरावती की रक्षा का नेतृत्व करने के लिए?” राजनयिक की भौहें हल्के आश्चर्य से ऊपर उठ गईं।
“लड़का अभी युद्ध में नेतृत्व करने के लिए छोटा हो सकता है, लेकिन लड़ाई शुरू होने पर उसे बाकी सभी के साथ खड़ा होना चाहिए। देवलोक पर एक दिन शासन करने वाले से यही न्यूनतम अपेक्षा की जाती है।”
नारद ने जवाब देने से पहले कुछ पल अपनी उंगलियों को देखा। “गुरुदेव, अगर मुझे पता होता कि वह कहाँ है, तो मैं उसे बुला लेता। दुर्भाग्य से, मैंने उसे लगभग दो दिनों से नहीं देखा है। इसके अलावा, उसके पिता भी उसे तलवार चलाने में विश्वास नहीं करते – तो हम क्यों करें? उसके आसपास रहने से शायद फायदे से ज्यादा नुकसान ही होगा।”
आंगन में फैली हल्की फुसफुसाहट नारद और बृहस्पति के चबूतरे पर कदम रखते ही थम गई। अश्विनों और उस विशालकाय को पीछे धकेलते हुए, नारद गरुड़ की ओर दो कदम बढ़े, मानो उसे करीब से देखना चाहते हों, लेकिन ठंडे पत्थरों पर फैले उस विशालकाय को, जो शरीर और आत्मा से टूट चुका था और जिसके ठीक होने की कोई

उम्मीद नहीं थी, देखकर उन्होंने अपना इरादा बदल दिया। इसके बजाय, उन्होंने आंगन में मौजूद लोगों के चेहरों पर अपनी दृष्टि डाली।
गरुड़ की ओर इशारा करते हुए उन्होंने कहा, “इससे सभी संदेह दूर हो जाने चाहिए। हमें यह मान लेना चाहिए कि हम पर हमला हो रहा है।”
“हमें इस हमले के बारे में अब तक क्या जानकारी मिली है?” एक देव ने पूछा। “बिल्कुल कुछ नहीं, सिवाय इसके कि जो भी चीज गरुड़ों की इस तरह मृत्यु का कारण बन रही है, वह कहीं हमारे ऊपर ही है,” नारद ने उत्तर दिया।
राजनयिक के शब्दों ने सहज रूप से देवताओं को आशंका से ऊपर की ओर देखने के लिए प्रेरित किया।
"क्या हमने महल के किसी गरुड़ को यह पता लगाने के लिए भेजा था कि क्या हो रहा है?"
“उन दसों को भेजा गया था, लेकिन उनमें से कोई भी वापस नहीं लौटा।” व्यंग्यात्मक भाव से नारद ने स्पष्ट किया, “या यूँ कहें कि उनमें से कोई भी जीवित नहीं लौटा।”
“ऊपर स्वर्ग में मौजूद गरुड़ों का क्या हुआ?” एक और आवाज आई। “क्या हमने उनमें से किसी को वापस बुलाने की कोशिश की है?” नारद ने बृहस्पति से नजरें मिलाईं, जो टेढ़े पैरों पर लड़खड़ाते हुए आगे बढ़े।
“हमने कोशिश तो की, लेकिन किसी भी गरुड़ ने हमारी पुकार नहीं सुनी। शायद अमरावती में अब कोई गरुड़ बचा ही नहीं है जो हमारी पुकार सुन सके।” दरबारी ने अपने होंठ चाटे और अपने नम माथे पर हाथ फेरा। सीढ़ियों के नीचे लेटे हुए गरुड़ को देखते हुए उसने कहा, “शायद वे सब मर चुके हैं। शायद यह उनमें से आखिरी था।”
“गरुड़ कभी नहीं मरते, गुरुदेव।” सभी की निगाहें वक्ता की ओर मुड़ गईं, जो किनारे पर खड़े एक बूढ़े, झुर्रियों वाले देव थे। “हमारे आह्वान के अलावा, कोई भी चीज़ गरुड़ों की उड़ान की ऊँचाई तक नहीं पहुँच सकती। कोई भी भाला या बाण ऐसा नहीं बना है जो गरुड़ जितनी ऊँचाई तक जा सके। कोई भी मंत्र आकाश की उन सीमाओं तक नहीं पहुँच सकता; कोई भी श्राप वहाँ तक नहीं पहुँच सकता जहाँ गरुड़ परिक्रमा करते हैं।”

"फिर भी वे पके हुए जामुनों की तुलना में तेजी से गिर रहे हैं," नारदा ने कहा।
"क्या उन्हें कोई महामारी हो गई है?" इस बार, यह आंगन के दूसरे छोर से आया एक युवा देव था।
“महामारी हो या विपत्ति, हम असुरों की संलिप्तता से इनकार नहीं कर सकते,” राजनयिक ने उत्तर दिया। “न ही हम उनके इरादे से इनकार कर सकते हैं।”
आंगन में भय से भरी एक उदास खामोशी छा गई। चबूतरे पर विराजमान विशालकाय देवता आगे बढ़े। बैल की तरह गठीले शरीर वाले वे पेड़ की तरह ऊंचे उठे हुए थे, उनकी मांसपेशियां गठीली, विशाल और ठोस थीं। उनकी हल्की भूरी दाढ़ी धड़ के आधे हिस्से तक फैली हुई थी, और भूरे बाल कमर तक दो भारी चोटियों में बंधे हुए थे। उनके हाथ में एक बड़ी लोहे की ढाल और एक मोटी लोहे की गदा थी, जिसका भारी, गोल सिर सींग वाले राक्षस की खोपड़ी जैसा दिखता था।
ढाल को अपनी छाती से लगाए हुए, देव ने अपने सिर के ऊपर गदा घुमाई और उसे ढाल पर ज़ोर से प्रहार किया। प्रहार के प्रभाव से वह अपने पैरों पर पीछे की ओर लड़खड़ा गया, धातु पर धातु की गड़गड़ाहट इतनी तेज़ थी कि उसकी गूंज आसपास की चट्टानों से टकराकर गूंज उठी, और ऐसा लगा मानो वह खाई की गहराइयों से निकली हो।
“भाइयों, मेरी बात सुनो,” वह दहाड़ा, उसकी आवाज़ गूंजती हुई आखिरी आवाज़ को भी दबा रही थी। “गरुड़ कैसे मर रहे हैं या उन्हें क्या मार रहा है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। जो भी हो, वह अवश्य प्रकट होगा और हमें अपना असली रूप दिखाएगा। जब वह प्रकट होगा, तो हमें उसे मृत्यु देने के लिए तैयार रहना होगा। मैं, मान्यु, महल का रक्षक, शत्रुओं का संहारक, इसके लिए तैयार हूँ। क्या तुम तैयार हो?”
आंगन में हल्की फुसफुसाहट फैल गई। उस दैत्य ने फिर से अपना गदा घुमाया और उसे अपनी ढाल पर जोर से मारा।
“मैं इसे मौत देने के लिए तैयार हूँ, भाइयों,” वह चिल्लाया। “क्या तुम तैयार हो?”
धीरे-धीरे फुसफुसाहट गर्जना में बदल गई, आवाजों का सैलाब उमड़ पड़ा, तलवारें और मुट्ठियाँ उठ खड़ी हुईं, हर कोई देवलोक पर मंडरा रहे छिपे खतरे

का सामना करने की तत्परता को ज़ोर-ज़ोर से व्यक्त कर रहा था। नारदा का मनोबल बढ़ा और उसने देखा कि दरबारी के चेहरे पर भी राहत के भाव थे। राजनयिक ने उन्माद के शांत होने का इंतजार किया। ऊँची आवाज़ में उन्होंने कहा, “अपनी टुकड़ियों में लौट जाओ और उन्हें युद्ध के लिए तैयार करो। सूर्यास्त तक, मैं चाहता हूँ कि अमरावती के चारों ओर और महल के आसपास की चट्टानों पर आग जला दी जाए। मैं चाहता हूँ कि सभी की निगाहें आसमान पर टिकी रहें, खतरे की पहली झलक मिलते ही हमला शुरू हो जाएगा। मुझे सूचना भी चाहिए…”
सभा में उत्साह की लहर दौड़ गई, जिससे नारद थम गए। देवता उनके पीछे, महल के प्रवेश द्वार की ओर देख रहे थे, और उन्होंने विस्मय भरी फुसफुसाहट में 'अग्निजनित' शब्द सुना। उन्होंने मुड़कर देखा तो नारंगी रंग के ढीले वस्त्रों में लिपटी एक सुंदर, अनोखी आकृति द्वार से बाहर आ रही थी। उस आकृति के सिर पर बाल नहीं थे, लेकिन चेहरे की कोमलता और कोणीयता - काले रंग का चेहरा, एक नथुने में सादी चांदी की नथनी - से स्पष्ट था कि वह एक अप्सरा थी। छोटी-छोटी लपटें उसके वस्त्रों के किनारे को छू रही थीं, और जैसे ही वह चबूतरे पर चली, उसने अपने पीछे राख के सफेद पैरों के निशान छोड़े जो हवा में जल्दी से उड़ गए।
“अग्नेयी, नमस्कार,” राजनयिक की आँखों में राहत और खुशी की चमक थी, उन्होंने झुककर अभिवादन किया। “मेरे निमंत्रण का उत्तर देने और हमारे साथ जुड़ने के लिए धन्यवाद।”
“मैं भाई का अनुरोध अस्वीकार नहीं कर सकती,” अप्सरा ने प्रणाम करते हुए उत्तर दिया। दरबारी, जुड़वा बच्चों और मन्यु की ओर देखते हुए उसने आगे कहा, “गुरु बृहस्पति, अश्विनों और महल के रक्षक को मेरा प्रणाम। क्या मैं जान सकती हूँ कि मुझसे क्या अपेक्षा की जाती है?”
“अमरावती पर किसी तरह का हमला हो रहा है। हमें अभी यह नहीं पता कि क्या होने वाला है, लेकिन हम जानते हैं कि यह हमला हमारी ओर आ रहा है। ऊपर से।” “भाई, क्या तुम चाहते हो कि मैं अमरावती पर आग का जाल बुनूँ?” अग्नेयी ने पुष्टि के लिए नारद की ओर देखा। “ऐसा ही किया जाएगा।”
“धन्यवाद। देवलोक इस ऋण को चुकाना याद रखेगा।”

अग्नेयी पीछे हट गए और राजनयिक ने एक बार फिर सभा को संबोधित किया। “अग्नि जनित की कृपा से, हमारे सिर के ऊपर आकाश में प्रकाश और अग्नि दोनों होंगे। लेकिन मैं अब भी चट्टानों पर आग चाहता हूँ और सभी की निगाहें आकाश पर टिकी हों। साथ ही, मारुतों से युद्ध में आने का आह्वान करो। अब जल्दी करो – सूर्य पश्चिम में डूब रहा है।”
आंगन तेजी से खाली हो गया। जैसे ही महल के कर्मचारी मृत गरुड़ को आंगन से हटाने के लिए बाहर आए, नारद चबूतरे पर खड़े लोगों की ओर मुड़े।
"मुझे विश्वास है कि तुम महल और पुलों की रक्षा का ध्यान रखोगे, मान्यु," उसने रक्षक की विशालकाय आकृति की ओर देखते हुए कहा।
उस दैत्य ने सिर हिलाया और कंधे पर गदा उठाए हुए लड़खड़ाते हुए चला गया। राजनयिक ने नासत्या और दासरा को संबोधित करते हुए कहा, “अश्विन बंधु चट्टानों की रक्षा का जिम्मा संभालेंगे। आपके तीर आकाश से आने वाली हर चीज को नष्ट कर देंगे। किसी भी चीज को अपने से आगे बढ़कर महल पर गिरने न दें।” दोनों भाई जाने के लिए मुड़े, लेकिन नारद ने नासत्य के कंधे पर हाथ रखकर उसे रोकते हुए कहा, “और चाहे कुछ भी हो जाए, सिंधुवर्त की तरह डर को अपने ऊपर हावी मत होने देना।”
“हम ऐसा नहीं करेंगे,” दासरा ने उत्तर दिया। राजनयिक को चतुराई से परखते हुए उन्होंने कहा, “आपने अग्नि-जनित शक्तियों को बुला लिया है और हर जगह आग तैयार करने का आदेश दिया है। अगर ऊपर जो शक्ति है वह सूर्यास्त तक इंतजार करने को तैयार न हो तो क्या होगा?”
“उसके पास पूरा दिन था; अगर वह चाहता तो अब तक प्रकट हो चुका होता।” नारद ने आकाश की ओर देखा, उनका चेहरा गंभीर था। “ऊपर जो भी है, वह सही समय पर हमें चौंकाने की प्रतीक्षा कर रहा है – जब अंधेरा घना और अंधा कर देने वाला होगा।”

* * *

एक समान, भव्य नीले प्रकाश में नहाई हुई, अमरावती आसपास के अंधेरे से निकलकर चंदासुर से मिलने के लिए दौड़ी।

इतनी ऊंचाई से भी यह दृश्य उसे विस्मित कर गया। शहर उसके नीचे मीलों तक हर दिशा में फैला हुआ था, और हर कोने में एक उत्कृष्ट रूप से तराशे गए रत्न की तरह जगमगा रहा था। अनगिनत सुडौल मीनारें ज़मीन से एक मील ऊंची उठ रही थीं, और ज्यामितीय आकार की सड़कें शहर को पार करती हुई आंखों को भ्रमित करने वाले, मायावी पैटर्न बना रही थीं। इमारतें, मूर्तियां, पार्क, पुल - जिधर भी वह मुड़ता, चंदासुर को कला और वास्तुकला के उत्कृष्ट उदाहरण दिखाई देते। यद्यपि स्वर्ण त्रिमूर्ति के दरबार वाला काला क्रिस्टल महल भी उतना ही उत्कृष्ट था, चंदासुर ने अनुमान लगाया कि पाताल में अमरावती की भव्यता और सुंदरता की कोई बराबरी नहीं कर सकता। रात के समय स्थित देवलोक की राजधानी उसे काले साटन पर जड़े फ़िरोज़ी मुकुट की याद दिला रही थी।
चीखते हुए अपने व्याला की पीठ पर भाला मारते हुए उसने सोचा, यह उनके पिता का शहर था। फिर, खुद को सुधारते हुए उसने सोचा, यह वही शहर था जहाँ उनके पिता का जन्म और पालन-पोषण हुआ था।
यह अब उनके पिता का शहर नहीं रहा था।
वह और अमरका शुक्राचार्य से अमरावती की रचना की कहानियाँ सुनते हुए बड़े हुए थे। अमरावती की स्थापना की योजना और निर्माण कार्य कई वर्षों की मेहनत से, महान वास्तुकार विश्वकर्मा की देखरेख में किया गया था, जब प्राचीन देवप्रस्थ नगर बढ़ती जनसंख्या के लिए छोटा पड़ गया था। वे सद्भाव के दिन थे, जब देवता और असुर एक बड़े परिवार की तरह साथ रहते थे। उनके पिता, महान ऋषि कश्यप ने अमरावती की कल्पना एक ऐसे स्थान के रूप में की थी जहाँ देवता, असुर, किन्नर, यक्ष, अप्सराएँ, किंपुरुष, नाग और सभी अन्य प्राणी सद्भाव से रह सकें, इसीलिए इस नगर का निर्माण इतने बड़े पैमाने पर किया गया था। लेकिन हमेशा की तरह, भाग्य को कुछ और ही मंजूर था। अमरावती के पूरी तरह से बनने से पहले ही चचेरे भाइयों के बीच प्रतिद्वंद्विता भड़क उठी और जल्द ही देव और असुर दोनों ही शहर और देवलोक पर शासन करने के लिए एक भयंकर संघर्ष में उलझ गए। इसके बाद जो कुछ हुआ, उसका विवरण अलग-अलग पक्षों के अनुसार अलग-अलग था - देवों ने असुरों की माता और कश्यप की दूसरी पत्नी, जादूगरनी दिति पर विद्रोह भड़काने का आरोप लगाया; असुरों ने उसकी बहन और ऋषि की पहली पत्नी अदिति पर अपने बच्चों, देवों की ओर से तख्तापलट की साजिश रचने का आरोप लगाया।

इस भयंकर झगड़े को सुलझाने के प्रयास में, दुखी कश्यप ने अमरावती और देवलोक को अपनी झगड़ने वाली पत्नियों और बच्चों के बीच बाँटने का प्रस्ताव रखा, लेकिन सौभाग्य से अमरावती के लिए, नगर के विभाजन का विचार न तो देवताओं को और न ही असुरों को पसंद आया। इसलिए ऋषि ने शांति का एक नया उपाय सुझाया: एक पक्ष को अमरावती और देवलोक विरासत में मिलेंगे, जबकि दूसरे पक्ष को वहाँ से निकलकर नई भूमि खोजनी होगी जिस पर वे अपना अधिकार जता सकें – शर्त यह थी कि कश्यप स्वयं देवलोक छोड़ने वाले पक्ष में शामिल होंगे। देवताओं ने बिना किसी संकोच के अमरावती को चुना, जबकि असुरों ने अपने पिता के मार्गदर्शन और सलाह को महत्व देते हुए वहाँ से जाने का विकल्प चुना। इस प्रकार कश्यप, दिति और उनके वंशज अमरावती के द्वार से निकलकर अंततः पाताल लोक पर शासन करने चले गए।
फिर भी, अमरावती का आकर्षण समय के साथ न तो कम हुआ था और न ही फीका पड़ा था, और जब चंदासुर उस जादुई नगरी के ऊपर घने अंधेरे में उतर रहा था, तो उसे समझ में आया कि असुर अब भी उस पर मोहित क्यों थे। लेकिन अमरावती के प्रति आकर्षण केवल असुरों तक ही सीमित नहीं था, शुक्राचार्य ने उसे और अमरका को अक्सर यह याद दिलाया था।
“अमरावती देवताओं के लिए सर्वोपरि है,” उसे अपने पिता की कही बातें याद आईं। “उन्होंने अपने पिता को असुरों के साथ चले जाने दिया ताकि वे अमरावती को अपने पास रख सकें। कश्यप अमरावती को सबके लिए चाहते थे, लेकिन देवता इसे पूरी तरह से अपने लिए चाहते थे। देखो – असुर अब पाताल में हैं, यक्षों को अलका में निर्वासित कर दिया गया है, और किन्नरों और नागों को धीरे-धीरे देवलोक की सीमाओं के पास पहाड़ों में धकेल दिया गया है। अमरावती में केवल किंपुरुष ही बचे हैं, लेकिन उनकी स्थिति दासों से बेहतर नहीं है। देवताओं ने यह सुनिश्चित किया है कि अमरावती के सुखों का आनंद लेने वाले केवल वही बचे रहें। इस नगर को नष्ट करोगे तो देवताओं की सारी प्रियता नष्ट हो जाएगी।”
चंदासुर को इस बात का कोई संदेह नहीं था कि शुक्राचार्य अमरावती से घृणा करते थे। इस नगर ने उनके पिता को ठुकरा दिया था, उन्हें बहिष्कृत कर दिया था और उन्हें पाताल लोक में बसने के लिए विवश कर दिया था। शुक्राचार्य के

मन में अमरावती देव अहंकार और घमंड का प्रतीक थी, और इसी कारण उनके पिता इसका विनाश चाहते थे।
अपने पिता की नज़रों से अमरावती को नए सिरे से देखते हुए चंदासुर को वह नगर पहले से कहीं कम आकर्षक लगा। नगर की भव्य इमारतें अचानक भद्दी और अपमानजनक लगने लगीं, और वहाँ मिलने वाली सुख-सुविधाएँ घटिया और अनाड़ीपन से भरी हुई थीं। यह वह स्थान था जिस पर उसकी माँ के पूर्वजों का अधिकार था, लेकिन इसके बजाय उन्हें पाताल में बसने से पहले जंगल में भटकना पड़ा था। इस विचार से वह क्रोधित हो उठा और उसने नए जोश के साथ व्याल की लगाम झटक दी।
चंदासुर समझ गया था कि शहर के ऊपर फैली नीली रोशनी एक जादू है, और जैसे ही वह करीब पहुंचा, उसने अपने रास्ते में एक महीन, झिलमिलाता जाला देखा, जो पूरे शहर में एक सुरक्षात्मक गुंबद की तरह फैला हुआ था। इसे अग्नि-प्रेत की कारीगरी समझते हुए, उसने गौर किया कि इस जाले का उद्देश्य केवल प्रकाश फैलाना ही नहीं था, बल्कि घुसपैठियों के खिलाफ एक अग्नि-ढाल के रूप में काम करना भी था।
चंदासुर मन ही मन मुस्कुराया। अगर देवता आग के जाल से रक्षा करने की सोच रहे थे, तो उन्हें बहुत बड़ा झटका लगने वाला था।
उसके चारों ओर व्याल पत्थर की तरह गिर रहे थे, और सबसे पहले जाले से टकराने वाला व्याल चंदासुर के थोड़ा दाहिनी ओर था। उसने उत्सुकता से देखा कि जाले में जहाँ व्याल टकराया था, वहाँ चिंगारी उठी और कुछ पल के लिए आग की लपटें उठीं, मानो व्याल के पंख जाल में उलझते ही आग पकड़ गए हों। लेकिन अगले ही पल, वह जीव जाले के कसने वाले रेशों को चीरता हुआ नीचे गिर गया, और अपने पीछे एक जला हुआ, फटा हुआ छेद छोड़ गया।
कुछ ही समय में, शेष व्याल भी अग्नि-प्रेत के जाल को चीरते हुए निकल आए और बिना किसी क्षति के, अधिक शक्तिशाली और कर्कश स्वर में अमरावती की ओर बढ़ते हुए प्रकट हुए। जाल से बाहर निकलते ही, चंदासुर के व्याल के पंख जाल की ज्वालाओं को सोखते हुए उसमें समा गए। उसने उस नगर पर एक नज़र डाली जिस पर वे आक्रमण करने वाले थे - और अपने सामने के दृश्य को देखकर अविश्वास से स्तब्ध रह गया।
फिर वह उनकी खुशकिस्मती पर आश्चर्य जताते हुए जोर से हंस पड़ा।

ऊपर से, नीले प्रकाश में, शहर को देखने पर ऐसा लग रहा था मानो वह असंख्य रोशनी से जगमगा रहा हो - अमरावती जैसे विशाल शहर के लिए भी इतनी रोशनी बहुत अधिक थी। चंदासुर ने सोचा कि शायद अंधेरे में उसकी आँखों को धोखा हो रहा है
- या फिर शहर के उन अनेक मनमोहक भ्रमों में से एक है जिनके बारे में उसने सुना था - लेकिन अब उसने देखा कि रोशनी असली थी, और अमरावती भर में जलाई गई सैकड़ों आग से आ रही थी।
देवताओं का यह अनुमान सही था कि हमला अंधेरे की आड़ में होगा। दुश्मन को बेहतर ढंग से देखने के लिए, उन्होंने न केवल अग्नि-प्राणी से जाला डलवाया था, बल्कि हर जगह आग भी लगा दी थी। चंदासुर ने स्वीकार किया कि इस रणनीति में कोई खामी नहीं थी। यह देवताओं के पक्ष में भी काम कर सकती थी, सिवाय एक छोटी सी बात के जिसे शहर के रक्षकों ने ध्यान में नहीं रखा था - व्याल। पाताल के लावा गड्ढों में अत्यंत गुप्त रूप से पाले-पोसे गए व्याल जीव अपनी ऊर्जा, अपनी आक्रामकता – अपना मूल स्वभाव – गर्मी और आग से प्राप्त करते थे। आग और गर्मी उनका सार थी, और अमरावती ने उस रात उन्हें यही भरपूर मात्रा में परोसा था, जो उन भयानक जीवों के लिए एक दावत के समान था। अमरावती और अमरका ने इस हमले की इससे बेहतर योजना नहीं बनाई होगी।
गोता लगाते व्यालों का स्वागत करने के लिए बाणों की बौछार हवा में उड़ गई। लंबे बाण असुरों और उनके वाहनों के पास से तेज़ी से गुज़रे। कई बाण निशाने पर लगे – चंदासुर ने अपनी आँखों के कोने से देखा कि एक कमज़ोर असुर अपने आसन से गिर पड़ा और उसके अंग हवा में लहराते हुए आँखों से ओझल हो गए। लेकिन व्यालों को लगे बाण उनके कठोर, खुरदुरे शरीरों को छूकर निकल गए।
ज़ाहिर है, उन राक्षसों को तीरों से कोई आपत्ति नहीं हुई। उन्होंने चोंचें खोलकर और भी ज़ोर से चीखते-चिल्लाते हुए जवाबी हमला किया। हर व्याल दूसरे को उकसा रहा था, जिससे इतना शोर मच रहा था कि देव धनुर्धारियों के दिलों में डर बैठ गया और वे घबराकर अपने हथियार गिराकर कान ढँकने लगे। फिर, किसी अदृश्य संकेत के जवाब में, व्यालों ने अपनी जीभें फैलाईं और डर से काँपते हुए धनुर्धारियों पर आग के गोले फेंके। आग के गोले सीधी रेखा में तेज़ी से आगे बढ़े और सीधे देवों को जा लगे, हर गोले ने देवों के समूहों को आग लगा दी। पीड़ित दर्द से चीखते हुए गिर पड़े, जबकि उनके साथी इधर-उधर भागने लगे और छिपने की कोशिश में अपनी जगह छोड़कर इधर-उधर भागने लगे। लेकिन व्यालों

के सिरों ने भागते हुए लोगों को ढूँढ़ लिया और आग के गोलों की अगली बौछार से उन्हें भी जला दिया।
वे अब शहर के ऊपर से नीची उड़ान भर रहे थे, और चंदासुर ने देखा कि शहर के रक्षक भाले और तलवारें लिए कतार में खड़े हैं, मानो असुरों के उतरने का इंतज़ार कर रहे हों। लेकिन व्याल भालों की पहुँच से थोड़ा दूर हवा में ही रहे, चीखते हुए इमारतों पर आग बरसा रहे थे। चारों ओर इतनी आग लगी थी कि चंदासुर को ठीक से पता नहीं था कि किन इमारतों में आग व्यालों ने लगाई थी, लेकिन उसने एक हवेली और तीन मीनारों को आग की लपटों में जलते देखा।
"उनके सिर, उनके सिर," उसने अफरा-तफरी के बीच एक आवाज सुनी। "उन प्राणियों के सिर पर गोली मारो।"
चंदासुर ने मुड़कर देखा तो एक चौड़े चबूतरे पर देव धनुर्धारियों का एक समूह इकट्ठा था। समूह दूसरी ओर चार व्यालों की ओर देख रहा था, जिनके बीच में एक वक्ता था, जो इशारे करते हुए निर्देश दे रहा था। चंदासुर ने तुरंत अपना व्याला घुमाया और चबूतरे की ओर चल पड़ा। वक्ता की बातें तर्कसंगत थीं, वह सही निर्देश दे रहा था। उसे चुप कराना आवश्यक था।
नीची उड़ान भरते हुए, वह धनुर्धारियों के पीछे से आया, जब वे अपने लक्ष्यों पर निशाना साध रहे थे। सावधानीपूर्वक संतुलन बनाते हुए और अपने गदा पर मज़बूत पकड़ बनाते हुए, उसने भारी हथियार को देव पर चलाया, जबकि व्याला उसके सिर के ऊपर से तेज़ी से गुज़रा। गदा के नुकीले किनारे देव के हेलमेट के पिछले हिस्से से टकराए और धातु में धंस गए, जिससे उसकी खोपड़ी चकनाचूर हो गई। देव आगे की ओर गिर पड़ा, छत की नीची पत्थर की रेलिंग से टकराया और नीचे लुढ़क गया, कई मंजिल नीचे ज़मीन पर गिरने से पहले ही उसकी मृत्यु हो गई। इसी बीच, व्याला के तेज़ धार वाले पंजों ने एक धनुर्धारी को पीछे से पकड़ लिया, उसके कंधों के नीचे जकड़ लिया, उसे शिकंजे में जकड़ लिया और हवा में उठा लिया।
अचानक हुए हमले से चौंककर और घबराकर, छज्जे पर खड़े धनुर्धारियों ने चंदासुर पर बाण चला दिए। बाण जल्दबाजी में और गलत निशाने पर चलाए गए थे, इसलिए चंदासुर के उड़ते ही बाण उसे नहीं लगे। केवल एक बाण किसी को लगा - उनके साथी धनुर्धारी को, जिसे व्याल ने छज्जे से खींच लिया था। देव, जो पहले से ही अपनी पीठ और कंधों पर चुभते पंजों के दर्द से कराह रहे थे, बाण

के उनकी मांसल जांघ में धंसते ही और भी जोर से चीखे। व्याल के पंजों ने देव के कवच को भेदते हुए उनके हृदय को छेद दिया, जिससे उनकी चीख अचानक रुक गई।
फिर उस जानवर ने उन्हें हवा में ही छोड़ दिया, और वे बिना किसी आवाज के नीचे गिर पड़े।
शुरुआती हमला अपनी तीव्रता और प्रभाव में ज़बरदस्त था, लेकिन चंदासुर देख सकता था कि आश्चर्य का प्रभाव कम हो गया था और देवता एकजुट होने लगे थे। व्यालों के सिरों पर लगातार बाण चलाए जा रहे थे, और यद्यपि उन पर निशाना लगाना कठिन था, फिर भी यह प्रयास कुछ हद तक सफल हो रहा था। एक बाण उसके एक वाहन की गर्दन में जा लगा, जिससे गर्दन फट गई और सिर लटकने लगा। हालांकि, पास से गुजर रहे एक असुर ने तुरंत हस्तक्षेप किया और सिर को काटकर उसमें फंसा बाण निकाल दिया, जिससे पुराने सिर की जगह नया सिर लग गया।
चंदासुर ने सिर हिलाकर असुर की सहायता को स्वीकार किया। "अमरका कहाँ है?" उसने अपने मुखौटे से चिल्लाकर पूछा। अब अगला कदम उठाने का समय आ गया था। असुर ने इशारा किया। चंदासुर ने पीछे मुड़कर देखा तो उसका भाई अपना व्याल एक वन क्षेत्र की ओर चला रहा था जहाँ देव धनुर्धर वृक्षों में छिपे बैठे थे। अमरका के व्याल से अग्नि की एक धारा निकली, जिससे वन और उद्यान में आग लग गई और छिपे हुए धनुर्धर भस्म हो गए।
चंदासुर ने अपने वाहन को कुशलता से संभाला और अमरका के आक्रमण पूरा करने और ऊपर की ओर चढ़ाई शुरू करने के ठीक बाद उसके पास पहुंचा। अपने भाई को देखकर अमरका ने अपने व्याल को लगाम से बांध लिया और सहजता से उड़ने लगा। "हमें महल की ओर बढ़ना चाहिए," चंदासुर चिल्लाया और दूर से दिखाई देने वाली विशाल चोटियों की ओर अपना हाथ झटका।
अमरका ने सिर हिलाया और अपने व्याल को मोड़कर, कुशलता से अपना मार्ग बदलकर शिखरों की ओर बढ़ गया। चंदासुर ने चारों ओर एक नज़र डाली और अमरावती पर आग उगलते हुए चक्कर लगाते व्यालों को देखा। लगाम को संतुष्टि से झटकते हुए, वह एक बड़े चाप में घूमा और अपने भाई के मार्ग का अनुसरण करते हुए, और अधिक असुरों को अपने साथ शामिल होने के लिए बुलाते हुए, सीधे देव शक्ति के केंद्र, इंद्र के महल की ओर चल पड़ा।

* * *

पल्लवन ने गौर किया कि दीपों की रोशनी में उसे निहार रही तीनों आँखों में एक बात बिल्कुल एक जैसी थी – उनका रंग धूसर था, जो सिंधुवर्त में आमतौर पर बहुत कम देखने को मिलता है। समानता यहीं समाप्त हो जाती है।
कानूनी सलाहकार अस्माबिंदु एक लंबा आदमी था, जिसकी घनी, सफ़ेद-काली दाढ़ी चारों ओर फैली हुई थी और मानो उसके सिर को नीचे झुका रही हो, जिससे वह हमेशा झुका हुआ लगता था। व्यापारिक संबंधों के विशेषज्ञ दिगंता भी लंबे थे, लेकिन उनके दुबले-पतले चेहरे पर बस एक पतली सी मूंछ थी। भास्कर - जिन्हें उत्तमा ने 'हाल ही में महल से सेवानिवृत्त' बताया था - एक सांवले, हट्टे-कट्टे व्यक्ति थे, जिनकी चौकोर, करीने से संवारी हुई बर्फ़ के रंग की दाढ़ी थी।
“यह गजकेतु…” अस्माबिंदु खांसा और माफी मांगते हुए गला साफ किया। “वह अभी कहाँ है?”
पल्लवन ने कहा, "श्रावस्ती में, हमारी हिरासत में सुरक्षित।"
“ठीक है, ठीक है,” अस्माबिंदु ने फिर धीरे से खांसा। “और हमें कैसे पता चलेगा कि वह यह सब मनगढ़ंत कहानी नहीं बना रहा है?”
जैसा कि मैंने अभी समझाया, ऐसी मनगढ़ंत कहानी बनाने से उसे ज़रा भी फ़ायदा नहीं होगा। इसके अलावा, उसने जो देखा उसे कई बार, कई अलग-अलग मौकों पर दोहराया है। उसके बयान में एक बार भी बदलाव नहीं आया, छोटी-छोटी बातों में भी नहीं। अगर वह मनगढ़ंत कहानी बना रहा होता, तो हर बार सुनाते समय उसमें थोड़ा-बहुत बढ़ा-चढ़ाकर ज़रूर लिखा होता – झूठ बोलते समय हम इंसान ऐसे ही होते हैं।
भास्कर ने कर्कश और खुरदरी आवाज़ में बीच में टोकते हुए कहा, “चलिए, मान लेते हैं कि वह सच कह रहा है। सवाल यह है कि लोग किसकी बात पर ज़्यादा विश्वास करेंगे – एक घुमंतू संगीतकार की या मगध के राजा की?”
कोसला के राजनयिक ने एक तरफ बैठे उत्तमा की ओर एक नज़र डालते हुए कहा, “आपकी बात सही है। लेकिन असल बात यह है कि आप तीनों ने आधी रात को इतनी दूर आकर मुझे सुनने का फैसला किया है, जबकि आप इसे एक संगीतकार की बकवास समझकर खारिज कर सकते थे। क्या इससे यह साबित नहीं होता कि गजकेतु की बातों में इतनी सच्चाई है कि लोग उन्हें धैर्यपूर्वक सुनना चाहते हैं?”

भास्कर ने रूखे स्वर में कहा, “हम यहाँ इसलिए आए हैं क्योंकि यह वृत्तांत हमें उत्तम से मिला, जिसने इसे आप जैसे एक सम्मानित राजनयिक से सुना था। मैं समझता हूँ कि आप क्या कहना चाहते हैं, लेकिन आपके द्वारा कही गई बात और किसी मामूली संगीतकार द्वारा कही गई वही बात सुनने में अंतर है। और मुझे नहीं लगता कि आप या उत्तम गिरिव्रज में घूम-घूमकर वह सब कुछ कह पाएँगे जो आपने हमें बताया है, बिना राजद्रोह के आरोप के।”
पल्लवन ने सिर झुकाया। वह जानता था कि सेवानिवृत्त राजमहल अधिकारी का स्थिति का आकलन सही था। उस सुबह सिद्धसेना, शूरसेना और किकाटा अंगरक्षक के बीच वास्तव में क्या हुआ था, यह बात मगध की प्रजा को बताना आसान काम नहीं था।
“और, इस तरह का आरोप लगाना एक बात है,” अस्माबिंदु ने अपनी दाढ़ी में मुंह दबाकर कहा। “संगीतकार के दावे का समर्थन करने के लिए कोई अन्य गवाह न होने पर, हम यह कैसे साबित करना शुरू करें कि वास्तव में क्या हुआ था, जब तक कि शूरासेना खुद बूढ़े राजा की हत्या करने की बात स्वीकार न कर ले?”
पल्लवन ने सुझाव दिया, "हम लोगों के मन में संदेह और अविश्वास पैदा करके शुरुआत कर सकते हैं।"
मगध के अधिकारी अपनी सीटों पर बेचैनी से हिलने-डुलने लगे और एक-दूसरे को संदेह भरी निगाहों से देखने लगे। भास्कर उठे और खिड़की के पास जाकर घोर अंधेरे में देखने लगे। अगर बाहर उजाला होता, तो उन्हें गिरिव्रजा से कुछ मील उत्तर में पहाड़ियों के बीच बसा एक रमणीय और एकांत विश्राम स्थल, उत्तम को उनके पूर्वजों से विरासत में मिले छोटे से महल के चारों ओर आधा मील तक फैला एक घना बाग दिखाई देता।
“आप क्या करने का सुझाव देते हैं?” कम बोलने वाले दिगांता ने राजनयिक से नज़रें मिलाईं और अपनी मूंछों पर उंगली फेरते हुए कहा, “आपके मन में कोई योजना तो होगी ही।”
कड़ी निगरानी को भांपते हुए पल्लवन ने भास्कर की ओर इशारा किया। “मैं अपने मित्र से सहमत हूँ कि संगीतकार के आरोपों को सार्वजनिक रूप से उजागर करने से निंदा का सामना करना पड़ेगा। इसलिए, हमारे पास एकमात्र विकल्प यही है कि अफवाहों के माध्यम से ही जनता तक बात पहुंचाई जाए।”

“मतलब?” भास्कर ने हैरानी से अपनी आँखें सिकोड़ लीं।
मतलब… हम कोसल के कुछ चुनिंदा लोगों को बता सकते हैं कि गिरिव्रज में जो कुछ हुआ उसे देखकर एक संगीतकार ने श्रावस्ती में शरण ली है। और गजकेतु के बारे में किसे बताया जाएगा? व्यापारियों, सौदागरों और कारीगरों को – वे व्यापारी जो मगध के साथ नियमित रूप से व्यापार करते हैं, जो नाव चलाने वालों और कारवां मालिकों के संपर्क में रहते हैं। अगर यह खबर सही लोगों तक पहुँचती है, तो यह अवश्य ही फैलेगी और देखते ही देखते गिरिव्रज के नागरिकों को इसकी खबर लग जाएगी। कल्पना कीजिए कि गिरिव्रज के किसी सराय में बैठा एक गाड़ीवाला यह कहानी सुना रहा है; अब कल्पना कीजिए कि दस गाड़ीवाले वही कहानी सुना रहे हैं।
“इससे क्या फायदा होगा?” असमबिंदु ने पूछा।
“मगध में लोग गजकेतु की कहानी पर चर्चा करेंगे और यह कहानी महल तक पहुँचने में बस कुछ ही समय लगेगा। हमने तो जैसे बवाल खड़ा कर दिया है। यह देखना दिलचस्प होगा कि शूरसेना इस खबर पर कैसी प्रतिक्रिया देते हैं।”
“राजा तुरंत इस सिद्धांत को खारिज कर देंगे और संभवतः इस आशय का फरमान जारी करेंगे कि इस तरह की अफवाहें फैलाने में लिप्त पाए जाने वालों को दंडित किया जा सकता है,” दिगंता ने टिप्पणी की।
“यहीं पर आप चारों की भूमिका होगी,” पल्लवन ने विजय की चमकती आँखों से कहा। “इस तरह की अफवाहों को दबाया नहीं जा सकता, और आप चारों इसे महल में फैलने दे सकते हैं। आप आकलन कर सकते हैं कि यह कहानी आपके सम्मानित सहयोगियों और राज परिषद के सदस्यों को कैसे प्रभावित करती है, कौन इसे बकवास मानता है और कौन इसके सच होने की संभावना पर विचार करता है। आप में से प्रत्येक जनमत का आकलन कर सकता है और उसे सूक्ष्म तरीकों से प्रभावित कर सकता है। क्यों न, आप यह भी पता लगा सकें कि क्या महल में किसी और को राजा सिद्धसेना की हत्या की योजना की जानकारी थी – शायद यही हमारे लिए पर्याप्त सबूत हो।”
“और फिर?” असमबिंदु ने अपनी सीट से उठकर छोटे-छोटे, सधे हुए कदमों से कमरे में टहलते हुए पूछा।
सच कहूँ तो, मुझे नहीं पता। अगर हम काफी लोगों के मन में शक पैदा कर सकें और जनता की भावनाओं को प्रभावित कर सकें, तो शूरसेना किसी न किसी तरह से

कार्रवाई करने को मजबूर हो जाएगा। इस समस्या को नज़रअंदाज़ करने से यह अपने आप खत्म नहीं हो जाएगी। फिर कौन जाने... शायद वह कोसल से स्पष्टीकरण मांगे। हो सकता है वह यहाँ तक ज़िद करे कि मेरे राजा यह स्पष्ट करें कि श्रावस्ती में ऐसा कोई संगीतकार नहीं है। हमारा काम उसे मजबूर करना है। शूरसेना जो भी करेगा, उससे हमारी आगे की कार्रवाई तय होगी, लेकिन हम तब तक चैन से नहीं बैठेंगे जब तक बूढ़े राजा को न्याय नहीं मिल जाता। अस्माबिंदु ने सिर हिलाया। अपने साथियों की ओर बारी-बारी से देखते हुए, उसने प्रश्नवाचक स्वर में अपनी घनी भौहें उठाईं। "आप क्या कहते हैं?" भास्कर ने कहा, “यह सबसे अच्छी योजना तो नहीं है, लेकिन इससे बेहतर कोई योजना न होने के कारण मैं इसी के साथ आगे बढ़ूंगा। कम से कम हमारे प्रिय राजा सिद्धसेना के लिए तो ऐसा ही है – वे शांतिप्रिय व्यक्ति थे और उन्हें जो मृत्यु मिली, वे उसके पात्र नहीं थे।”
"मैं सहमत हूँ," दिगांता ने उत्तमा की ओर देखते हुए कहा, जो समर्थन में सिर हिला रहा था।
“तो फिर बात पक्की हो गई,” असमबिंदु ने टहलना शुरू किया और भास्कर के पास पहुँच गया। अपनी दाढ़ी को ज़ोर से खुजाते हुए, उसने कुछ पल खिड़की से बाहर देखा और फिर पल्लवन की ओर देखा। “अगर सब कुछ आपकी योजना के अनुसार हुआ, और ज़रूरत पड़ी, तो क्या आप और राजा भूमिपाला कम समय में गजकेतु को ला सकते हैं?”
“बिल्कुल,” पल्लवन ने आश्वस्त करते हुए कहा। “अगर आप एक न्यायाधिकरण गठित करके शूरसेना और पुराने राजा की हत्या में शामिल किसी भी अन्य व्यक्ति पर आरोप लगा सकते हैं, तो हम संगीतकार को गिरिव्रज ले जा सकते हैं ताकि मगध के नागरिक उसे देख और सुन सकें।” “बहुत अच्छा। और आप कोसल के व्यापारी समुदाय में उसकी कहानी कब से फैलाना शुरू कर सकते हैं?”
“जैसे ही मैं श्रावस्ती वापस आऊंगा, मुझे तुरंत सामान चुनना होगा…”
बाहर कहीं अचानक हुई हलचल ने राजनयिक के भाषण को बाधित कर दिया; पैरों की आवाज, एक चीख, और फिर दरवाजे के जोर से बंद होने की आवाज।
“क्या हो रहा है, उत्तम?” भास्कर ने थोड़ी घबराहट के साथ पूछा।

“मुझे नहीं पता,” कर अधिकारी ने अपनी कुर्सी से उठते हुए उत्तर दिया। “हमारे बाग में चोर आम चुरा रहे हैं… शायद उनमें से कुछ को देखा गया हो या पकड़ा गया हो। मुझे जाँच करने दीजिए।”
उत्तमा अभी बंद दरवाजे तक आधी दूरी भी तय नहीं कर पाया था कि बाहर कदमों की आहट सुनाई दी। दरवाजा अंदर की ओर खुल गया, और पल्लवन और मगध के चार अधिकारियों ने देखा कि मगध सेना का एक सेनापति दहलीज पार करके कमरे में दाखिल हुआ और एक लंबी तलवार लहरा रहा था। उसके तुरंत पीछे पांच सैनिकों का एक दल आया, सभी तलवार और भाले लिए हुए थे।
“सेनापति, इस तरह के व्यवहार का क्या मतलब है?” भास्कर ने क्रोधित होकर पूछा, हालांकि पल्लवन समझ गया था कि यह महज़ शेखी बघारने जैसा है। “क्या महल के सदस्यों के प्रति सम्मान दिखाने का यही तरीका है?”
“महल सैनिकों से घिरा हुआ है; भागने या विरोध करने की कोशिश न करें,” कप्तान ने निर्मम स्वर में कहा, भास्कर के आक्रोश को अनदेखा करते हुए। “मुझे आपको जिंदा पकड़ने का आदेश है, लेकिन अगर मैंने आपको पर्याप्त उकसाया तो मैं आपको जान से भी मार सकता हूँ।”
“यह सब क्या है?” दिगांता ने पूछा।
पल्लवन के मन में यह सवाल बेमानी था। उसके मन में यह ख्याल आया कि उसने अपने शरीर पर खंजर छिपा रखा है, लेकिन स्थिति की निरर्थकता को देखते हुए उसने इस विचार को त्याग दिया। खून-खराबा तो होगा, लेकिन बचने का कोई रास्ता नहीं, यह बात स्पष्ट थी।
“मैं तुम सबको सिंहासन के विरुद्ध षड्यंत्र रचने के आरोप में गिरफ्तार करने आया हूँ,” कप्तान की एकरस आवाज में भयावहता आ गई। “तुम पर राजा शूरसेना और मगध राज्य के विरुद्ध राजद्रोह का आरोप है।”

भाई बंधु।

असुर लोग हमेशा से व्यालों को प्रशिक्षित करते आ रहे हैं।
बृहस्पति की आवाज धीमी थी, आश्चर्य और बेचैनी से भरी हुई। "मैंने सोचा था कि व्यालों की आखिरी प्रजाति एक हजार साल पहले विलुप्त हो गई थी।"
“वे बिल्कुल भी जीवित नहीं थे,” नारद ने गंभीर आँखों से एक राक्षस के नीचे की ओर झपट्टा मारते हुए कहा। “कुछ तो किसी तरह वहीं रह गए होंगे, और असुरों ने अपने अस्तित्व को गुप्त रखने का बड़ा अच्छा काम किया है।”
राजनयिक और चैंबरलेन कुछ अन्य देवों के साथ थे, जो सभी उत्तरी पुल के सामने बने एक बड़े, ढके हुए बरामदे की सुरक्षा में खड़े थे और युद्ध की स्थिति पर कड़ी नजर रख रहे थे।
वैसे तो यह कोई बहुत बड़ी लड़ाई नहीं थी; असुर शहर की असहाय रक्षा व्यवस्था के साथ खिलवाड़ कर रहे थे, जो भी चीज उनके मन में आती उसे आग लगा देते थे, जबकि देवता जहां भी संभव हो शरण लेते थे और झुलसने से बचने की पूरी कोशिश करते थे।
व्याल आक्रमणकारियों की सबसे बड़ी ताकत साबित हुए थे, जिन्होंने देवताओं को पूरी तरह से चौंका दिया था। देवता न केवल इस पैमाने के हमले से निपटने के लिए बुरी तरह से अप्रस्तुत थे, बल्कि नारद ने यह भी महसूस किया कि अमरावती के चारों ओर इतनी आग लगाकर उन्होंने असुरों की स्थिति को और मजबूत

कर दिया था। मानो इतना ही काफी नहीं था, जब व्याल महल के ऊपर पहुँचे, तो अश्विनी घुड़सवार सेना ने उन पर अपने ज्वलंत बाणों से और मरुतों ने अपने गर्म ऊर्जा के तीरों से हमला कर दिया।
अश्विनों और मरुतों को आग और गर्मी से हमला करने से रोकना, अग्नि-प्रभु को शांत करना और उनके द्वारा लगाई गई आग को बुझाना – इनमें से कोई भी उपाय कारगर नहीं हुआ क्योंकि शहर में बहुत सी आग जल रही थी, जिनमें से कई खुद व्यालों द्वारा ही लगाई गई थीं। ऊर्जा के इतने सारे स्रोतों से ऊर्जा प्राप्त करने के कारण, ये भयानक जीव लगभग अजेय थे।
स्थिति और भी बदतर हो गई क्योंकि असुर हवा में ही रहे – मरुतों की रीढ़ की तलवारों, मन्यु के लोहे के गदा और अश्विनों के भालों की पहुँच से बाहर – और व्यालों का उपयोग करके देव पैदल सेना और घुड़सवार सेना को आग लगा दी। नारद जानते थे कि देवों के लिए स्थिति को बराबर करने का एकमात्र तरीका असुरों से आमने-सामने की लड़ाई करना था, लेकिन यह तब तक संभव नहीं था जब तक कि असुर अपने वाहनों से उतरकर अमरावती के रक्षकों का सामना ज़मीन पर न करें।
“यह वाकई एक बहुत ही गुप्त रहस्य था, अगर सबसे सतर्क गरुड़ को भी व्यालों के अस्तित्व के बारे में कुछ पता नहीं था,” बृहस्पति ने सहमति जताते हुए कहा। जासूसों के प्रति अचानक आक्रोश दिखाते हुए उन्होंने आगे कहा, “गरुड़ों के साथ यही होना चाहिए था कि इन दरिंदों के हाथों सबसे पहले उन्हीं को भुगतना पड़ा।”
“क्या व्यालों ने गरुड़ों को मारा था, गुरुदेव?” देवताओं में से एक ने पूछा।
"वह था।"
“लेकिन क्या व्याल इतनी ऊँचाई तक उड़ सकते हैं, गुरुदेव?” एक अन्य युवा, अविश्वासी देव ने पूछा।
“वे ऐसा नहीं कर सकते,” बृहस्पति ने उत्तर दिया।
“तो फिर वे हत्या करने में सफल कैसे हुए…”
“गरुड़ों की मृत्यु इसलिए हुई क्योंकि व्यालों की चीखें ठंडी ऊंचाइयों तक सुनाई दीं,” नारद ने बीच में ही टोकते हुए, ठीक सामने की चट्टान की दीवार का सावधानीपूर्वक अवलोकन किया।

देवताओं की असमंजस भरी स्थिति देखकर बृहस्पति ने स्पष्टीकरण दिया। “पहला गरुड़ और पहला व्याल, अमर माता पक्षी अयानेमी के जुड़वां बच्चे थे। अयानेमी ने पहले व्याल को जन्म दिया और प्रसव पीड़ा से वह चीख पड़ी। उसकी चीख व्याल के शरीर में समा गई, जिससे वह विकृत और बदसूरत हो गया। लेकिन जब गरुड़ का जन्म हुआ, तो उसे कोई पीड़ा नहीं हुई और उसकी खुशी ने गरुड़ को सुंदर बना दिया। अयानेमी को व्याल का रूप बिल्कुल पसंद नहीं था और वह गरुड़ के प्रति अधिक आकर्षित हो गई, इसलिए जब अमरता का वरदान देने का समय आया, तो उसने सारा वरदान गरुड़ को दे दिया और व्याल को पूरी तरह से अनदेखा कर दिया। फिर, इस डर से कि व्याल गरुड़ से उसका वरदान छीन लेगा, उसने गरुड़ को आकाश में भेज दिया और व्याल को नरक की आग में झोंक दिया। क्रोध और घृणा से भरा हुआ, शापित व्याल ने कसम खाई कि जब भी उसकी माता की चीख किसी गरुड़ के कानों में पड़ेगी, वह अपने भाई से बदला लेगा। यही कारण है कि... व्याल हमेशा चीखते रहते हैं, और इसी वजह से गरुड़, जिन्होंने पहले कभी ऐसी भयानक आवाज नहीं सुनी थी, भय से मर गए।
“तो व्यालों की चीखें ही एकमात्र ऐसी चीज थीं जो गरुड़ों को नुकसान पहुंचा सकती थीं,” एक देव ने विस्मय से फुसफुसाते हुए कहा। “और असुरों ने इस ज्ञान का लाभ उठाया।”
ठीक उसी क्षण एक व्याल ने महल पर झपट्टा मारा, उसके फेफड़ों से एक भयानक चीख निकली। देवताओं ने अपने कान ढक लिए और सहम गए, तभी उस जानवर के मुंह से आग का एक गोला निकला और तीन अश्विनों को आग लग गई जो मूर्खतापूर्वक आश्रय से बाहर आ गए थे। दो घुड़सवार आंगन के पत्थरों पर गिर पड़े, आग उन्हें जकड़ रही थी और वे दर्द से तड़प रहे थे। इसी बीच, तीसरे अश्विन का घोड़ा अपने पिछले पैरों पर खड़ा हुआ और अंधाधुंध आग उगलते हुए आंगन को पार कर खाई के किनारे से नीचे गिर गया, सवार और घोड़ा दोनों खाई में जा गिरे और पलक झपकते ही ओझल हो गए।
जैसे ही व्याला आकाश में वापस उठा, दो अश्विनी घोड़े पर सवार होकर प्रांगण में आए और अपने गिरे हुए भाइयों के सिर पर दो-दो तीर चलाए। दोनों शरीर तड़पना बंद कर दिए और मृत्यु के साये में गिर पड़े, लपटों ने उनके शरीरों को काला कर दिया।

“अब सबसे ज़रूरी यह है कि हम असुरों को आमने-सामने लाने का कोई तरीका ढूंढें,” नारद ने आग्रह किया। कुछ देर सोचने के बाद उन्होंने एक कनिष्ठ देव से कहा, “मरुतों को जितनी जल्दी हो सके बुलाओ।”
उस युवा देवता की प्रतिभा की प्रशंसा करनी होगी कि उसने दिति के सात राक्षस पुत्रों को पल भर में पकड़ लिया। राजनयिक ने शहर के रक्षकों के सामने मौजूद समस्या का संक्षिप्त विवरण दिया, और मारुत चुपचाप उसकी बात सुनते रहे, उसके बोलने की समाप्ति का इंतजार करते रहे।
"जब असुर हवा में हों तो मुझे नहीं लगता कि हम उनसे आमने-सामने की लड़ाई में निपट पाएंगे," एक विशालकाय राक्षस ने अपनी ठंडी, चांदनी जैसी सफेद आंखों से नारद का आकलन किया।
"हम आपकी बात तभी मान सकते हैं जब वे जमीन पर उतरें," दूसरे मारुत ने भी इस बात का समर्थन किया।
“जैसा कि हम देख सकते हैं, फिलहाल उनका ऐसा कोई इरादा नहीं है,” नारद ने अपना चेहरा ऊपर उठाते हुए, देवताओं के समूह के ऊपर खड़े चार सींग वाले राक्षसों की ओर देखते हुए उत्तर दिया। “इसलिए, अगर वे यहाँ आकर हमसे नहीं लड़ेंगे, तो हमारे पास उनके पास जाने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचता।” “नारद, आप इसे कैसे करने का सुझाव देते हैं?” बृहस्पति ने पूछा।
“उन चट्टानों के रास्ते,” राजनयिक ने खाई के पार उंगली से इशारा किया। उन्होंने मरुतों की ओर देखा। “अगर आप चट्टानों पर आधी चढ़ाई तक पहुँच जाएँ, तो क्या आपको लगता है कि आप खाई के ऊपर से गुजर रहे किसी भी व्याला की पीठ पर छलांग लगा सकते हैं?”
ठीक सामने खड़े मारुत ने अपने हाथ कमर पर रखे और नारदा को घूरते हुए, अपनी गर्दन की मजबूत मांसपेशियों को अगल-बगल हिलाकर दिखाया। नीचे की ओर झुके हुए सींग नारदा के बेहद करीब आ गए, लेकिन राजनयिक ने न तो पलक झपकाई और न ही पीछे हटे। अंत में, मारुत ने अपने भाइयों की ओर देखा, जिन्होंने भावहीनता से सिर हिलाया।
कुछ ही देर बाद, अश्विनों का एक समूह खुले में प्रकट हुआ और आकाश में जलते हुए बाणों की बौछार कर दी। ये बाण व्यालों के पास तक नहीं पहुँचे – इनका

एकमात्र उद्देश्य असुरों का ध्यान भटकाना था ताकि मरुत बिना किसी को पता चले उत्तरी पुल पार कर सकें।
नारद ने बाणों को ऊपर उठते देखा, फिर अपनी दृष्टि पुल के दूर छोर पर केंद्रित की, जो चट्टानी पहाड़ी से जुड़ा हुआ था और उस सड़क पर जो शहर की ओर जाती थी। उन्होंने राहत की सांस ली जब मुश्किल से दिखाई देने वाले राक्षस पुल के पास से गुजरे और पहाड़ी की छाया में विलीन हो गए।

* * *

अमारका अंधेरे से उसकी ओर आती हुई धुंधली सी हलचल को लगभग देख ही नहीं पाया।
कुछ क्षण पहले तक उसकी दृष्टि में इंद्र के महल, उसके चारों ओर फैली खाई और एक तरफ की चट्टानी पहाड़ी के अलावा कुछ भी नहीं था। अगले ही पल, उसकी नज़र के कोने से, उसने महसूस किया कि काली चट्टान से कुछ बड़ा और भारी, लेकिन आश्चर्यजनक रूप से फुर्तीला, प्रकट हुआ और उसकी ओर तेज़ी से बढ़ रहा था, जबकि उसका व्याला खाई के ऊपर से नीचे की ओर झपट्टा मारते हुए आग लगाने के लिए लक्ष्य तलाश रहा था।
अमरका ने जैसे ही समय मिला, अपना सिर घुमाया और देखा कि एक विशालकाय आकृति सीधे उसकी ओर छलांग लगा रही है। वहाँ इतनी ही रोशनी थी कि उस आकृति के हाथ में पकड़ी हुई विशाल, नुकीली तलवार और उसके सिर पर लगे चार सींग दिखाई दे रहे थे। छलांग लगाते हुए ही, उसके हमलावर ने तलवार से व्याला के पाँच सिरों में से एक पर वार किया और एक ही झटके में उसे काट डाला। बिना रुके, उस आकृति ने अपनी छलांग पूरी की और इतनी ज़ोर से व्याला से टकराई कि वह जानवर बुरी तरह लड़खड़ा गया, फिर संभल गया।
उस आकृति ने व्याला की गर्दन में से एक पर अपना हाथ लपेटा और जानवर की पीठ पर चढ़ने लगी। यह थोड़ा मुश्किल भरा काम था, और इस मौके का फायदा उठाते हुए, अमरका ने अपनी कुल्हाड़ी व्याला की गर्दन पर लिपटी भारी भुजा पर ज़ोर से चलाई। उसे आश्चर्य हुआ कि कुल्हाड़ी का सिरा ऐसे उछला और कांप उठा जैसे किसी पत्थर से टकराया हो, और इस प्रहार से उसकी बांह में तेज़ दर्द की लहर दौड़ गई। आकृति किसी तरह आधी ऊपर चढ़ने में कामयाब हो गई, इसलिए अमरका ने अपना अगला वार उसके कंधे पर किया, लेकिन कुल्हाड़ी फिर से दूर जा गिरी।

आकृति मुड़ी, और जब अमरका ने आश्चर्य से उसके चेहरे की ओर देखा, तो उसने देखा कि चांदनी जैसी सफेद आंखें उसे ही देख रही थीं।
यह मरुतों में से एक था! जैसे ही अमरका को इस बात का अहसास हुआ, उसने अपनी दृष्टि के किनारे से देखा कि दिति की सात विकृतियों में से दो और चट्टान के किनारे से अलग होकर गुजरते हुए व्यालों पर गिर पड़ीं।
अमरका ने तीसरी बार अपनी कुल्हाड़ी उठाई, इस बार उसका निशाना सिर पर था, जो कवच जैसे बाहरी आवरण से सुरक्षित नहीं था। लेकिन इससे पहले कि वह वार कर पाता, मारुत ने अपनी तलवार से उसकी छाती पर ज़ोरदार प्रहार किया। वार इतनी तेज़ी से और इतनी ताकत से हुआ कि उसका कवच दबाव में झुक गया, और अमरका को ऐसा लगा जैसे उसके धड़ में गर्म लोहा चला दिया गया हो। उसकी साँसें थम सी गईं, और संतुलन बिगड़ने के कारण वह व्याला की पीठ से गिर पड़ा।
अगले ही पल, अमरका हवा में चक्कर लगाते और लुढ़कते हुए नज़र आने लगी।
वह नीचे, नीचे की ओर गिरता चला गया, गुरुत्वाकर्षण उसे निर्दयतापूर्वक खाई की अथाह गहराई में खींच रहा था। व्यालों की चीखें धीमी होती गईं, यहाँ तक कि उसके कानों में हवा की सरसराहट के अलावा कुछ भी सुनाई नहीं दे रहा था, और आग की रोशनी मंद पड़ती जा रही थी क्योंकि खाई का भूखा अंधेरा उसे निगलने के लिए उमड़ रहा था। भय ने उसके मन से सारे विचार मिटा दिए, और उनकी जगह केवल एक ही विचार ने ले लिया - यह ज्ञान कि यह गिरावट हमेशा के लिए जारी रह सकती है। तीनों लोकों में कोई नहीं जानता था कि इस खाई का कोई तल है या नहीं, और यदि है, तो वह वास्तव में कितना नीचे है। आज तक किसी ने भी इस खाई की तलहटी तक पहुँचकर इस उपलब्धि के बारे में बताने के लिए वापस नहीं आया था।
अचानक ही, किसी चीज ने अमरका की कलाई को कसकर पकड़ लिया, जिससे उसका गिरना रुक गया।
गति में अचानक आए बदलाव से उसका हाथ ज़ोर से हिल गया, और जैसे ही वह शून्य के ऊपर लटका, उसके कंधे में असहनीय दर्द होने लगा। अंधा और भ्रमित, उसे अभी यह डर सताने ही लगा था कि कहीं उसकी बांह जोड़ से टूट न जाए, तभी उसने हवा के प्रवाह में बदलाव महसूस किया और उसे एहसास हुआ कि वह ऊपर की ओर खींचा जा रहा है।

"मेरा हाथ पकड़ो और खुद को ऊपर खींचो, भाई।"
चंदासुर की आवाज उसे दूर से आती हुई सुनाई दी, लेकिन ऊपर देखते ही अमरका ने देखा कि उसका भाई अपने व्याल के कंधे पर झुका हुआ उसे नीचे देख रहा है। उसने चंदासुर की मजबूत बांह को पकड़ लिया, जिस पर उसका सारा भार था।
"क्या तुम्हे चोट लगी?"
"नहीं।"
अपने खाली हाथ से आगे बढ़ते हुए, अमरका ने दर्द से कराहते हुए धीरे-धीरे खुद को ऊपर खींचा, और अंत में एक ज़ोरदार झटके से चंदासुर ने उसे ऊपर खींच लिया ताकि वह व्याल की पीठ पर चढ़ सके। वह जानवर प्रकाश की ओर वापस उड़ गया, और अमरका ने कांपते हाथों से अपने भाई के कंधों को थाम लिया। “बाल-बाल बच गए,” उसने चंदासुर के कान में फुसफुसाया। “मेरे पीछे आने के लिए धन्यवाद, भाई।”
“मुझे करना ही पड़ा,” चंदासुर ने पीछे मुड़कर देखा। मुखौटे से चंदासुर की आवाज़ दबी हुई थी, लेकिन अमरका समझ गया कि वह मुस्कुरा रहा है। “मैं तुम्हारे बिना पिता के पास कभी नहीं लौटता।”
“ये मरुत हैं,” अमारका ने कहा, जैसे ही महल फिर से नज़र आया, जो खाई से उभरती चट्टान की चोटी पर एक चमकती हुई परत की तरह दिखाई दे रहा था। महल के ऊपर, चार व्याल आपस में भयंकर युद्ध कर रहे थे। “वे व्यालों पर कब्ज़ा कर रहे हैं।”
“मुझे पता है,” चंदासुर ने गुर्राते हुए अपने वाहन को ऊपर लड़ रहे चार व्यालों की ओर बढ़ाया। “उस जादूगरनी को तो जन्म के समय ही उन सातों का गला घोंट देना चाहिए था, बजाय इसके कि उन्हें ठंड में इंद्र के लिए छोड़ दे, ताकि वह उन्हें ढूंढकर गोद ले ले। लेकिन वे तो सिर्फ सात हैं – हम आसानी से उनसे निपट सकते हैं।”
चार व्यालों में से दो पर मरुतों का कब्ज़ा हो चुका था, जो अब बाकी दो पर सवार असुरों से लड़ रहे थे। शुक्राचार्य के पुत्र जब समूह के पास पहुँचे, तभी एक असुर अपने व्याल से गिर पड़ा और एक मरुत की तलवार से उसके शरीर के दो टुकड़े हो गए। क्रोधित होकर शपथ लेते हुए चंदासुर ने मरुत के व्याल पर झपट्टा मारा और चार सींगों वाले सिर पर अपनी गदा से प्रहार किया। मरुत ने

समय रहते ही हथियार को आते देख लिया और बच गया, लेकिन गदा फिर भी उसके गाल पर लगी और उसके शरीर से चाँदी जैसा खून बहने लगा। राक्षस ने तुरंत जवाबी हमला किया और अपनी तलवार चंदासुर के सिर की ओर बढ़ाई, लेकिन असुर ने हमले को रोक दिया।
आक्रमण का जवाब आक्रमण से दिया गया। यह मुठभेड़ भयंकर, रक्तपातपूर्ण और बेहद कठिन थी। संख्या में कम होने के बावजूद, मरुतों ने अपनी पूरी राक्षसी शक्ति से युद्ध किया, एक व्याल से दूसरे व्याल पर छलांग लगाते हुए असुर सवारों को एक के बाद एक जमीन पर गिराते गए। अपने उत्पीड़कों पर अंततः पलटवार होने की आशंका ने अमरावती के रक्षकों में एक कर्कश जयकार पैदा कर दी। उत्साहित देवता गिरे हुए असुरों की ओर दौड़े और जो दुर्भाग्यवश गिरने से बच गए थे, उन पर प्रहार करने लगे। चंदासुर ने अनुमान लगाया कि उन्होंने एक दर्जन असुर खो दिए थे, और हर पल और भी असुर मारे जा रहे थे।
मरुतों को रोकना अत्यावश्यक समझते हुए, उसने अधिकाधिक असुरों को युद्ध में उतारा, और जैसे-जैसे दिति के अवांछित सात असुर थकने लगे, आक्रमणकारियों का पलड़ा भारी होता गया। इसके अलावा, अपनी निडरता के बावजूद, राक्षस उग्र स्वभाव वाले व्यालों से निपटने में अकुशल थे। एक-एक करके, निराश मरुत इस उम्मीद में जमीन पर गिर पड़े कि आक्रमणकारी उनका पीछा करेंगे ताकि देव सेना युद्ध में शामिल हो सके। लेकिन असुर और उनके व्याल वाहन मजबूती से उनकी पहुँच से बाहर रहे।
पूर्व की ओर आकाश धीरे-धीरे धूसर हो गया, और कुछ ही समय में, नए दिन की पहली किरण व्यालों के पंखों के सिरों को छूने लगी।
“हमने पिता के आदेशानुसार खूब तबाही मचाई है,” चंदासुर ने अमरका से कहा और अपने व्याल को घुमाते हुए कहा, “चलिए चलते हैं।”
महल के ऊपर एक विस्तृत घेरे में चक्कर लगाते हुए, भाइयों ने असुर सेना को संकेत दिया। धीरे-धीरे, व्याल हवा में ऊपर उठते गए, और अधिक से अधिक ऊँचाई पर पहुँचते गए, अभी भी कर्कश और चीखते हुए वे दक्षिण की ओर बढ़ने लगे। मेरु पर्वत की चोटी पर पहुँचते ही चंदासुर ने अमरावती की ओर अंतिम बार पीछे मुड़कर देखा, लेकिन उसे मीलों तक फैला हुआ धुएँ का एक गुबार ही दिखाई

दिया, जिसमें से इंद्र के महल की चोटियाँ धुंधली धूसर परतों के बीच से झाँक रही थीं।
उसने संतोष के साथ सोचा कि यह दृश्य उसके पिता को अत्यंत प्रसन्न करता।

क्योंकि

घटाकरपारा ने दरवाजे पर लगी ऊंची जाली से कैदी को देखा। वह आदमी छोटी सी कोठरी के एक कोने में झुका बैठा था, उसकी पीठ दीवार से लगी थी और हाथ घुटनों के बीच लटके हुए थे। आंखें बंद और सिर एक तरफ झुका हुआ, वह सोता हुआ प्रतीत हो रहा था, लेकिन घटाकरपारा को उसकी धीमी आवाज़ में गुनगुनाने की आवाज़ सुनाई दे रही थी। वह कभी-कभी आगे की ओर झुकता, फिर अपनी गंदी, फटी एड़ियों पर वापस आ जाता।
"मेरे जाने के बाद से उसने कुछ कहा है क्या?" राजकुमार ने दरवाजे पर पहरा दे रहे सीमा रक्षक दल के तीन सैनिकों में से एक से पूछा।
“जी नहीं, महाराज,” सैनिक ने उत्तर दिया। “ऐसा एक भी शब्द नहीं है जिसे कोई मनुष्य समझ सके।”
“हम्म,” घटाकरपारा ने अपने होंठ सिकोड़े और कैदी की ओर मुड़ गए, जिसे अभी- अभी एहसास हुआ था कि दरवाजे के दूसरी तरफ लोग हैं। वह व्यक्ति डर और विनती भरी निगाहों से घटाकरपारा को घूर रहा था और सहज ही उसने एक हाथ से अपना गाल ढक लिया, मानो थप्पड़ से खुद को बचा रहा हो। दूसरे हाथ से अपने घुटनों को पकड़कर, वह सिकुड़कर गेंद की तरह हो गया, मानो कोठरी के अंधेरे में गायब होने की कोशिश कर रहा हो।

वह व्यक्ति सुबह के समय बलिपुरा चौकी के पास भटकता हुआ मिला, ठीक उसी समय जब घटाकरपारा पास की सीमा चौकियों का जायजा लेने के लिए चौकी छोड़ने की तैयारी कर रहे थे। जब उनसे पूछताछ की गई, तो वह यह बताने में असमर्थ रहे कि वह कौन हैं और उस इलाके में क्या कर रहे हैं, इसलिए सैनिकों ने उन्हें आगे की पूछताछ के लिए हिरासत में ले लिया। घटाकरपारा ने भी थोड़ी देर के लिए पूछताछ में हिस्सा लिया, लेकिन वह व्यक्ति न केवल उनकी बातों को समझ नहीं पा रहा था, बल्कि उसकी पूरी शब्दावली में केवल एक-एक शब्द के शब्द थे जैसे 'आई', 'आउ' और 'उह'। जब कुछ थप्पड़ मारने के बाद भी उसकी जुबान नहीं खुली, तो उसे कैद में डाल दिया गया और सीमा निरीक्षण से लौटने के बाद उसके भाग्य का फैसला किया जाना था।
“महाराज, हमें इसके साथ क्या करना चाहिए?” सैनिकों में से एक ने पूछा।
“हम उसे यूं ही जाने नहीं दे सकते,” राजकुमार ने चौकी के आंगन में पड़ रही तेज धूप में आंखें सिकोड़ते हुए जवाब दिया। “हमें क्या पता, वह हूण जासूस भी हो सकता है।”
“माननीय, वह किसी स्काउट जैसा नहीं दिखता,” तीसरे सैनिक ने टिप्पणी की, जो एक अनुभवी सैनिक था और जिसकी बड़ी-बड़ी भूरी मूंछें थीं। “वह मुझे थोड़ा मंदबुद्धि सा लगता है।”
“यह महज़ एक नाटक हो सकता है। यहाँ तक कि उसकी बोलने की अक्षमता भी बनावटी हो सकती है।” घटाकरपारा ने अस्पष्ट रूप से सोचा कि क्या चौकी के आसपास कोई लाश मिल जाएगी जिस पर वह कैदी पर अमारा सिम्हा की चाल आज़मा सके। उसने तुरंत इस विचार को त्याग दिया, क्योंकि उसे यकीन नहीं था कि वह सुबह का नाश्ता खोए बिना यह कर पाएगा। “क्या हमें यकीन है कि वह इस इलाके का अजनबी है?”
“हमने जाँच की, माननीय न्यायाधीश। किसी भी सैनिक ने उसे पहले यहाँ आसपास नहीं देखा था। उसे पकड़ने वाले लोगों ने कुछ स्थानीय बकरी चराने वालों से भी पूछा कि क्या वे उसे पहचानते हैं। उनमें से किसी ने भी उसे नहीं पहचाना।”
“तो फिर वह एक जासूस ही होगा,” राजकुमार ने कहा। “दरवाजा खोलो।”

कोठरी में प्रवेश करते ही, घटाकरपारा ने तीन कदम बढ़ाए और कैदी के सामने खड़े हो गए। राजकुमार ने अनुमान लगाया कि वह व्यक्ति लगभग पच्चीस वर्ष का होगा।
“ठीक है, बहुत हो गया ये सब बकवास। तुम कौन हो और यहाँ क्या कर रहे हो? चलो, बोलो।”
जैसे ही घटाकरपारा ने आखिरी शब्द चिल्लाते हुए कहे, उस आदमी ने अपना सिर झटके से पीछे की ओर खींच लिया। “आआआउ… उउउह।”
“इससे तुम्हें कुछ हासिल नहीं होने वाला,” राजकुमार ने झल्लाकर कहा। “आआआ… उह… आआआआ…”
"शायद उसे बस एक अच्छी पिटाई की जरूरत है," युवा सैनिकों में से एक ने सुझाव दिया।
“तुमने सुना उसे,” घटाकरपारा ने सिपाही की ओर इशारा करते हुए, झुककर अपना चेहरा कैदी के चेहरे के करीब लाकर कहा। “तुम्हें पीटा जाएगा, भूखा रखा जाएगा, तुम्हें तब तक यातना दी जाएगी जब तक हम तुमसे सच न उगलवा लें। क्या तुम ये सब अपने साथ करवाना चाहते हो?”
वह आदमी चौंक गया। “आउ… आआआआ…”
राजकुमार सीधा खड़ा हो गया। उसके सैन्य प्रशिक्षण ने उसे सिखाया था कि अपनी बातों को गंभीरता से लेने के लिए उसे अपनी कुछ धमकियों को अंजाम देना होगा। फिर भी, कैदी की आँखों में छल का अभाव देखकर वह दो बार सोचने पर मजबूर हो गया। शायद वह आदमी हानिरहित था। या फिर, शायद वह एक असाधारण अभिनेता था। यह सब बहुत निराशाजनक था। उसके किसी भी प्रशिक्षण ने उसे ऐसी परिस्थितियों से निपटने के लिए तैयार नहीं किया था।
"क्या मैं उसे बाहर ले जाकर कोड़े मारने के लिए खंभे से बांध दूं, महाराज?" उस आदमी के बारे में अभी भी निर्णय लेने में असमर्थ, और इस बात से भलीभांति अवगत कि सैनिक उसे परख रहे हैं और उसके निर्णय के आधार पर उसका आकलन करेंगे, घटाकरपारा को बजरी पर भारी पहियों की चरमराहट ने अधूरा जवाब देने से बचा लिया। खुले दरवाजे से गर्दन घुमाकर उसने देखा कि एक घोड़े वाली गाड़ी चौकी की परिधि पर बने बाड़े के बाहर आकर रुक गई। पीछे की ओर एक चमकीली, रंगीन चंदवा यात्रियों को धूप से बचा रही थी, और राजकुमार के देखते

ही देखते पर्दे हटे और दो महिलाएं जल्दी से गाड़ी से उतर गईं। उसी समय, तीन आदमी - देखने में स्थानीय ग्रामीण लग रहे थे - चौकी के द्वार तक दौड़ते हुए आए।
सैनिकों ने उत्सुकता से आने वालों को देखा, तभी तीन पहरेदार सावधानी से गाड़ी की ओर बढ़े, उनके भाले झुके हुए थे और वे किसी भी स्थिति के लिए तैयार थे। घटाकरपारा ने गौर किया कि उन दो महिलाओं में से एक, जो छोटी थी, आगे बढ़ते सैनिकों की दिशा में कुछ कदम बढ़ी।
द्वार के ठीक अंदर रुककर, एक हाथ कमर पर रखकर, उसने पूछा, "यहाँ का मुखिया कौन है?" उसकी आवाज़ तीखी और आक्रोश से भरी हुई थी।
जब राजकुमार उस इमारत के बरामदे में कदम रखा जिसमें कोठरी थी, तब भी सैनिक एक-दूसरे को अनिश्चित निगाहों से देख रहे थे।
“मैं हूँ,” उसने अधिकारपूर्ण लहजे में कहा। “तुम क्या चाहते हो?”
वह स्त्री परिसर में दाखिल हुई और घटाकरपारा को ठंडी और आक्रामक निगाहों से घूरने लगी। पास से देखने पर राजकुमार को एहसास हुआ कि वह युवती है, शायद अभी-अभी किशोरावस्था से निकली है। वह कद में छोटी और थोड़ी मोटी थी। उसका चेहरा गोल और मोटा था, रंग हल्का भूरा था। उसकी नाक में एक छोटी सोने की अंगूठी थी और उसके होंठ गुस्से में घटाकरपारा की ओर तड़े हुए थे।
“सैनिक, तुम्हारे आदमियों ने आज सुबह एक आदमी को पकड़कर जबरदस्ती यहाँ लाया है,” उसने कहा। “क्या यह सच है?”
"शायद," घटाकरपारा ने कंधे उचकाते हुए अपनी आंखों से कुछ बाल हटाए। "इसमें क्या है?"
मैं चाहता हूं कि आप उसे तुरंत रिहा कर दें।
“तुम कौन हो? और यह आदमी तुम्हारे लिए क्या मायने रखता है?”
“मैं अपारूपा हूँ, और यह आदमी मेरी दासी का बेटा है,” लड़की ने रथ के पास खड़ी उस बुजुर्ग महिला की ओर इशारा करते हुए कहा। लगभग पैंतालीस वर्ष की उस महिला ने घटाकरपारा की ओर सिर झुकाया और हाथ जोड़कर प्रणाम किया।

राजकुमार ने आंगन के चारों ओर खड़े सैनिकों के घेरे पर नज़र डाली। “क्या यहाँ कोई इस दासी को पहचानता है? या उसे?” उसने अपने सामने खड़ी लड़की की ओर इशारा किया।
सैनिकों ने अभी सिर हिलाना शुरू ही किया था कि लड़की ने घटाकरपारा पर झल्लाते हुए कहा, “ज़ाहिर है, उनमें से कोई भी नहीं मानेगा। हम यहाँ के नहीं हैं। हम उदयपुरी से हैं। मैं यहाँ अपने दादा-दादी से मिलने आई हूँ, जिनका घर बलिपुरा गाँव में है।” उसने मुड़कर उन तीन आदमियों पर हाथ फेंका जो गाड़ी के पीछे-पीछे पैदल आ रहे थे। “अगर आपको मेरी बात पर यकीन नहीं है, तो उनसे पूछ लीजिए।”
गांव वालों में से एक आगे आया। “मैं यहां का मोची हूं, साहब। मैंने अक्सर आपके आदमियों की चप्पलें, बेल्ट और कवच ठीक किए हैं।” घटाकरपारा ने देखा कि कुछ सैनिकों ने सहमति में सिर हिलाया।
“महोदय, महिला जो कह रही है वह सच है,” मोची ने आगे कहा। “उसके दादा-दादी कई पीढ़ियों से बलिपुरा में रह रहे हैं, और उसके दादा इस क्षेत्र में अगरबत्ती बनाने के जाने-माने कारीगर हैं। महिला और उसकी नौकरानी साल में कम से कम एक बार गाँव आती हैं, और मैं उन दोनों को अच्छी तरह जानता हूँ, महाराज। मैंने तो उस लड़के को भी पिछले कुछ सालों में कई बार देखा है।” "संतुष्ट?" अपरूपा ने चुनौती में घटकपारा पर अपनी ठुड्डी झुका दी। राजकुमार को यह सोचकर आश्चर्य हुआ कि उसकी ओर चमकती हुई बड़ी-बड़ी काली आँखें बेहद आकर्षक थीं। उसने एक सैनिक से कहा, "उसे बाहर लाओ।"
डर से कांपता और सहमा हुआ वह आदमी अपनी कोठरी से बाहर लाया गया। तेज रोशनी में उसकी पलकें झपकते ही बूढ़ी नौकरानी के होंठों से एक खोखली सी आह निकली।
“मेरा बेटा,” उसने कांपती हुई आवाज में कहा और कुछ कदम आगे बढ़ी।
जैसे ही उसकी आँखें रोशनी से अभ्यस्त हुईं और उसने अपनी माँ को देखा, वह बाहें फैलाकर आंगन में दौड़ पड़ा। “आआआ… आआआ… आआआउ,” वह निराशा में कराहते हुए स्त्री के आलिंगन में जा गिरा। बिछड़ने का दुःख और पुनर्मिलन की राहत का एक अनूठा संगीत घटकरपारा के कानों में गूंज उठा। माँ और पुत्र को रोते देख अपारूपा राजकुमार की ओर मुड़ गई।

"आप किसी को इस तरह से बंदी कैसे बना सकते हैं?"
"वह चौकी के आसपास संदिग्ध रूप से घूम रहा था, और जब जवानों ने उससे पूछताछ की, तो वह कोई संतोषजनक जवाब नहीं दे सका," घटाकरपारा ने उत्तर दिया। “क्या आपको नहीं दिख रहा कि वह बोल नहीं सकता और मानसिक रूप से पिछड़ा हुआ है?” लड़की ने पलटकर जवाब दिया। “और आपने यह पता लगाने की जहमत भी नहीं उठाई कि वह कौन है?”
“हमने कुछ बकरी चराने वालों से पूछा, लेकिन वे उसे पहचान नहीं पाए,” राजकुमार को अचानक बचाव की मुद्रा में धकेले जाने पर गुस्सा आया।
“बकरी चराने वाले!” अपारूपा ने गुस्से में अपना पैर पटका। एक हाथ फैलाकर चिल्लाते हुए उसने कहा, “गाँव तो दो मील से भी कम दूरी पर है। तुम लोग वहाँ पूछ सकते थे।”
“ठीक है। अब से सीमा रक्षक और शाही सेना हर बार गिरफ्तारी करते समय यही करेंगे – संदिग्धों को पहचान के लिए गाँव-गाँव घुमाएँगे। राज्य में अपराधियों का तमाशा चलेगा!” घटाकरपारा ने उपहासपूर्वक कहा। “क्या शानदार विचार है – किसी को राजा को यह सुझाव देना चाहिए!”
लड़की के गालों पर लालिमा के धब्बे उभर आए और फैल गए। “मैंने गांव-गांव नहीं कहा। बलिपुरा तो यहीं है।”
और अगर वह दो-तीन गाँव और दूर से आया होता तो क्या होता? तब तो उसे गिरफ्तार करना, पीटना और यहाँ तक कि जान से मार देना भी जायज़ होता, मुझे लगता है? लड़की के कुछ सटीक जवाब देने से पहले ही, घटाकरपारा ने अपनी स्थिति का फायदा उठाते हुए कहा, “तुम यहाँ खड़ी होकर क्या बड़बड़ा रही हो? तुम्हें पता है कि वह बोल नहीं सकता और मानसिक रूप से पिछड़ा हुआ है। जब तुममें से किसी को उस पर नज़र रखनी चाहिए थी, तो तुमने उसे जहाँ चाहे घूमने क्यों दिया? वह तुम्हारी ज़िम्मेदारी है, मेरी नहीं। अगर तुम्हें उसकी इतनी चिंता है, तो उसे उदयपुरी में ताला लगाकर रखना चाहिए।”
“तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई! क्या तुम अपने ही परिवार के पिछड़े सदस्य के साथ ऐसा बर्ताव करोगे?” अपारूपा ने मुट्ठी भींच ली, उसकी आँखों में क्रोध और निराशा साफ झलक रही थी। “बस बहुत हो गया!” उसने घातकपारा के चेहरे पर उंगली लहराते हुए गुस्से से कहा। “तुम्हें अंदाज़ा भी नहीं है कि मैं क्या

कर सकती हूँ। मेरे पिता एक प्रभावशाली व्यक्ति और सिपाही हैं। तुम्हें इस दिन का बहुत पछतावा होगा। मैं तुम्हें अपने सामने खड़ा कर तुम्हारे कहे और किए हर काम के लिए माफी मंगवाऊँगी।”
लड़की तेज़ी से घूमी – उसकी लंबी चोटी भी घूम गई – और गुस्से में आंगन से बाहर निकल गई। उसे, उसकी नौकरानी और हाल ही में पकड़े गए बेटे को गाड़ी में वापस चढ़ते देख राजकुमार सोचने लगा कि वह उसे बार-बार 'सैनिक' क्यों कह रही थी। तभी उसे समझ आया। उसने सीमा रक्षक की आम वर्दी पहनी हुई थी, न कि वे औपचारिक कपड़े और पदक जो वह उदयपुरी की चौकी में हमेशा पहनता था। “महाराज, आपको धमकी देना उसकी कितनी बड़ी मूर्खता है,” बड़ी-बड़ी भूरी मूंछों वाले बूढ़े सिपाही ने टूटे दांतों वाली चौड़ी मुस्कान के साथ कहा। “आपको उसे बता देना चाहिए था कि आप कौन हैं। लेकिन मुझे लगता है कि आपने फिर भी उसे अच्छी तरह चुप करा दिया।”
आस-पास सिर हिलाते लोगों को देखकर हल्की सी मुस्कान के साथ, घटाकरपारा ने मन ही मन आह भरते हुए, जाते हुए रथ के पीछे-पीछे चलना शुरू किया। वह अजीब तरह से खाली और उदास महसूस कर रहा था। उसने कामना की कि उदयपुरी लौटने पर वह लड़की अपनी धमकी को पूरा करे। शायद यही एक तरीका था जिससे वह उसे दोबारा देख पाता।

* * *

"क्या मैं आपको चावल की एक और सर्विंग दे सकता हूँ?"
“नहीं, मेरा पेट भर गया है,” विक्रमादित्य ने उत्तर दिया। “मैं एक औंस भी और नहीं खा सकता।”
“लेकिन मेरे पास है…” विशाखा ने अनिश्चितता से सम्राट की ओर देखा।
“आपके पास…?” विक्रमादित्य ने रानी को प्रोत्साहन देते हुए सिर हिलाया। वे राजा के शयनकक्ष के पास एक छोटे से आले में बैठे थे, जो गमलों में लगे फर्न और फूलों वाली लताओं से घिरा हुआ था। पास ही एक छोटा सा फव्वारा बह रहा था, जिसके कुंड में बने चमकदार पानी में तीन शांत सफेद मछलियाँ तैर रही थीं।
मैंने तुम्हारे लिए कुछ बनाया है।

सम्राट ने देखा कि विशाखा ने मेज के नीचे हाथ डालकर एक छोटी प्लेट निकाली, जो हल्के मलमल के एक चौकोर टुकड़े से ढकी हुई थी। प्लेट को उनके सामने रखते हुए, विशाखा ने कपड़ा हटाया तो उसमें चावल के आटे से बनी छह शंकु के आकार की पकौड़ियाँ दिखाई दीं।
“आहा, मोदक!” विक्रमादित्य का चेहरा चमक उठा। “ये तो मेरे पसंदीदा हैं।” “मुझे पता है,” विशाखा ने शर्माते हुए मुस्कुराते हुए जवाब दिया।
राजा ने एक मोदक उठाया और उसे खाने ही वाला था कि विशाखा की बातें सुनकर वह रुक गया।
“तुम्हें याद है कि मुझे ये पसंद हैं?” उसकी आवाज उम्मीद से कांप रही थी। रानी ने अपनी निगाहें झुका लीं। "महारानी माँ ने मुझे बताया कि आपको वे पसंद आए," उन्होंने धीमी आवाज़ में उत्तर दिया।
"अच्छा ऐसा है।"
अपनी निराशा को छुपाने की पूरी कोशिश करते हुए, विक्रमादित्य ने गरमागरम पकौड़ी का एक टुकड़ा खाया और उसमें भरी हुई कद्दूकस की हुई नारियल और गुड़ का स्वाद लिया। इसका स्वाद बिलकुल वैसा ही था जैसा कि विशाखा के बनाए हुए पकवानों का होता था।
"स्वादिष्ट," उसने कहा और दूसरा लेने के लिए हाथ बढ़ाया।
"मैंने किसी को कहते सुना कि वह एक औंस भी ज्यादा नहीं खा सकता," विशाखा ने राजा को शरारती निगाहों से देखा।
“मैंने ऐसा कहने से पहले किसी को मोदक कहते नहीं सुना,” सम्राट ने मज़ाकिया अंदाज़ में जवाब दिया। “यह तो बहुत अच्छा है।”
“फिर भी ये उतने अच्छे नहीं बनते जितने बड़ी माँ बनाती हैं,” विशाखा ने कहा। राजा को आश्चर्य से उसकी ओर देखते देख उसने आगे कहा, “इन्हें बनाना तो उन्होंने ही सिखाया है। वो हमेशा इतनी दयालु, उदार और मददगार होती हैं।” विक्रमादित्य ने अपनी थाली एक तरफ धकेल दी और मेज से उठ गए। उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था कि रानी को बड़ी माँ तक याद थीं – वरारुचि की माँ कभी महल में नहीं रहीं थीं, और विशाखा उज्जैन में बिताए अपने पूरे समय में

उनसे पाँच बार से ज़्यादा मिलने नहीं गई होंगी। फिर भी उन्हें बड़ी माँ याद थीं… पर उन्हें नहीं।
“क्या आप एक और नहीं लेंगे?” विशाखा ने संदेह से आँखें चौड़ी करते हुए उसकी ओर देखा। “क्या ये स्वादिष्ट नहीं हैं?”
“बिल्कुल हैं,” सम्राट ने उसे आश्वस्त करने वाली मुस्कान दी। “मैंने इन्हें बाद के लिए बचाकर रखा है। अब आओ… अब मेरी बारी है तुम्हें कुछ देने की।”
विक्रमादित्य अपने शयनकक्ष में दाखिल हुए और एक कोने में रखी लकड़ी की पेटी के पास गए। उसे खोलकर उन्होंने अंदर तलाशी ली और अंत में लोहे की लकड़ी से बनी एक छोटी सी पेटी निकाली।
“यह तुम्हारे लिए है,” उसने विशाखा का हाथ पकड़ते हुए कहा और डिब्बा उसकी खुली हथेली पर रख दिया।
रानी ने सावधानी से ढक्कन खोला और अंदर झाँका।
“यह…” उसने फुसफुसाते हुए कहा, उसकी आँखें विस्मय से चमक रही थीं, “…यह मेरी माँ का मेरे लिए उपहार है।”
कोमल उंगलियों से उसने पॉलिश किए हुए हरे रंग के, सफेद धब्बों वाले जेड पत्थर से बनी एक अंगूठी निकाली। अंगूठी की बाहरी सतह पर चारों ओर विशाखा का नाम एक कुशल कारीगर द्वारा उकेरा गया था।
“मुझे लगता है कि यह तब बना था जब तुम तीन साल के थे,” सम्राट ने कहा।
“हाँ, माँ ने मुझे यह अंगूठी तब दी थी जब क्षपणक और मैं निषाद छोड़कर जा रहे थे… यह उनकी विदाई का उपहार था। मुझे इसे चौदहवें जन्मदिन पर पहनना था।” उनकी भौंहें दुख से तन गईं। “मुझे… मुझे याद है कि एक बार यह अंगूठी मुझसे खो गई थी। हाँ, यह महल के स्नानघर में थी, उत्तर-पूर्व दिशा वाले स्नानघर में जिसके बगल में एक बड़ा पीपल का पेड़ था। मुझे याद है, उस दिन मेरा दिल टूट गया था। मैंने कभी नहीं सोचा था कि मुझे यह अंगूठी वापस मिलेगी। लेकिन किसी चमत्कार से यह मिल गई। मैंने कसम खाई थी कि मैं इसे फिर कभी अपनी उंगली में नहीं पहनूँगी, बल्कि इसे कहीं सुरक्षित रखूँगी।”

आँखों में उमड़ आए आँसुओं को पोंछते हुए रानी ने कृतज्ञता से विक्रमादित्य की ओर देखा। "मुझे यह देने के लिए धन्यवाद।"
मैंने इसे तुम्हारे लिए सुरक्षित रखा था—उस दिन के लिए जब तुम वापस आओगे। विशाखा चुपचाप अंगूठी को देखती रही और उसे अंगूठे और तर्जनी के बीच घुमाती रही। अंत में, उसने उसे अपने दाहिने हाथ की एक उंगली में पहन लिया। "तो फिर, मैं इसे तुम्हारे लिए दोबारा पहनूंगी," उसने कहा।
कुछ देर रुकने के बाद उसने राजा की ओर सिर उठाया और कहा, “क्षपनाका ने मुझे बताया है कि आप एक बहुत अच्छे पति थे। मुझे अब लगने लगा है कि वह सही कह रही है।”
वे एक पल के लिए वहीं खड़े रहे, आशा और निराशा से एक-दूसरे को देखते रहे। फिर विशाखा ने आगे बढ़कर विक्रमादित्य को गले लगा लिया। सम्राट ने भी अपनी पत्नी के कंधे पर हाथ रखकर जवाब दिया, लेकिन उनका आलिंगन बेजान और अटपटा था
– उनके बीच एक अजनबी था जिसे वे दोनों अनदेखा नहीं कर सकते थे।
“मुझे जाना चाहिए,” विशाखा ने धीरे से पीछे हटते हुए कहा। “आपने कहा था कि आपकी परिषद और दरबारियों के साथ बैठक है। मैं किसी को भेजकर मेज साफ करवा दूंगी।”
नौकरानियों के सफाई करके चले जाने के बाद, विक्रमादित्य पलंग पर लेट गए और अपनी आंखों को एक हाथ से ढक लिया, पीड़ा से चीखने की इच्छा को दबाते हुए। विशाखा को अंगूठी याद थी। उसे महल के स्नानघर में अंगूठी खो जाने की बात याद थी। उसे बाद में अंगूठी मिल जाने की बात भी याद थी। लेकिन उसे वह व्यक्ति याद नहीं था जिसने आधी रात तक स्नानघर के अंधेरे में खोई हुई अंगूठी की तलाश की थी। उसे यह भी याद नहीं था कि उस शाम खाने के समय वह उसके बगल में बैठा था और चुपके से अंगूठी उसकी हथेली में पहना दी थी।
उसे सब कुछ याद था, सिवाय उसके। शायद यही हमेशा ऐसा ही रहेगा।
इस तरह की संभावना का ख्याल ही उसे अंदर से तोड़ रहा था, उसे भीतर से तबाह कर रहा था।

* * *

यह देवता के लिए आया है।

वह आवाज इतनी अचानक और अप्रत्याशित थी, जिसने झील के किनारे बने घर की शांति को भंग कर दिया, कि इंद्र चौंक गया।
देवताओं के स्वामी ने चारों ओर और पीछे देखा, फिर अपनी दृष्टि उस रास्ते पर वापस टिका दी जो जल के किनारे की ओर जाता था। उन्होंने देखा कि मेनका भी रास्ते के बीच में रुक गई थी और झील के किनारे बने घर की ओर पीछे मुड़कर देख रही थी, आवाज के स्रोत का पता लगाने की कोशिश कर रही थी। अंततः उसकी नज़रें इंद्र से मिलीं और इंद्र को एहसास हुआ कि अप्सरा भी उतनी ही हैरान थी जितने कि वे स्वयं थे।
“तुम नहीं, अप्सरा,” तीखी और चिड़चिड़ी आवाज फिर से गूंजी। “देवों के लिए नाव आ गई है।”
इस बार इंद्र को पूरा यकीन था कि आवाज ठीक उसके पीछे से आई थी।
“तोता। यह तोता है!” मेनका ने आश्चर्य से कहा।
“क्या? ये बोल भी सकता है?” इंद्र ने मन ही मन बुदबुदाते हुए पिंजरे के पास जाकर, पक्षी को बेहतर ढंग से देखने के लिए उसके बेंत के बीच से झाँका। वह पिंजरे से एक फुट दूर रुक गया और तोते को घूरने लगा। “मैंने तुम्हें पहले कभी बोलते नहीं सुना – बड़े-बड़े करतब दिखाते हो, है ना? कैसा रहेगा अगर मैं तुम्हें एक करतब दिखाऊँ? तुम्हारा सिर अपने हाथ में कुचल दो?” इंद्र ने पिंजरे पर मुट्ठी भींची, जिससे उसकी उंगलियों के जोड़ ज़ोर से चटकने की आवाज़ आई।
“हे स्वामी, पक्षी को रहने दीजिए,” मेनका ने छत पर कदम रखते हुए कहा। “यक्ष राजा का संदेश पहुँच गया है। नाव आपका इंतज़ार कर रही है। जाइए!”
झील में उतरते हुए, इंद्र धीरे-धीरे नाव के पास पहुँचे, उन्हें डर था कि कहीं नाव आखिरी क्षण में फिसल न जाए और यह खुलासा हो जाए कि यह कुबेर का एक और खेल है। लेकिन जब तक इंद्र नाव पर नहीं बैठ गए, नाव टस से मस नहीं हुई। जैसे ही इंद्र उस पर सवार हुए, वह अदृश्य शक्तियों के बल पर किनारे से दूर चली गई। जैसे ही नाव धुंध के हल्के आवरण में आगे बढ़ी, इंद्र ने पीछे मुड़कर देखा तो मेनका चबूतरे की मुंडेर से टेक लगाकर सिसक रही थी, उसके गाल राहत के आँसुओं से भीगे हुए थे।

उनके प्रस्थान के कुछ ही क्षणों बाद, देवों के राजा इंद्र समय और स्थान का बोध खोने लगे। कुछ क्षण ऐसे भी आए जब कोहरा छंट गया और उसके टुकड़ों के बीच से उन्हें ऊपर रात का आकाश दिखाई दिया, जो तारों से सजी दुल्हन की तरह लग रहा था, और आधा चाँद किसी सुंदर दुल्हन के हार की तरह नीचे लटका हुआ था। कोहरा फिर से घना हो गया, और अगली बार जब वह छटा, तो इंद्र को एक भयानक सूर्यास्त दिखाई दिया, सूर्य लाल रंग से लथपथ होकर बैंगनी रंग के आकाश में समा रहा था। कभी-कभी नाव के नीचे का पानी इतना साफ दिखाई देता था कि वे झील की गहराई में देख सकते थे, जहाँ उन्हें चारों ओर खाई वाले महल और चारों ओर फैले खेत दिखाई देते थे। लेकिन कभी-कभी नीचे का पानी गहरा, तैलीय और अभेद्य होता था, फिर भी वे खोखली आँखों और मांसल तंतुओं वाले भयानक रूपों को प्राचीन भूख में लहराते, मंथन करते और प्रतीक्षा करते हुए महसूस कर सकते थे… फिर, अचानक, नाव के नीचे पानी गायब हो गया। बस खाली हवा और नीचे ठंडे पहाड़।
कुबेर से घृणा करने के बावजूद, इंद्र उस शहर को देखकर अचंभित रह गए जिसे यक्ष और उसके अनुयायियों ने अलका झील के उस उजाड़, दुर्गम हिमखंड पर बनाया था। कोहरे को चीरते हुए सूर्य की रोशनी में चमकते सुनहरे शिखर; चट्टानों पर फैली विशाल जलपरी की मूर्तियाँ, जिनके होंठ कामुकता से खुले हुए थे; काले ग्रेनाइट से तराशे गए विशालकाय शेर और हाथी के सिरों के मुखों से गिरते झरने... हर दृश्य ने देवता को विस्मय से भर दिया।
अंततः, नाव की निरंतर गति, ठंडी सुगंधित हवा और तैरती धुंध ने इंद्र को नींद में डुबो दिया। उन्हें पता नहीं था कि वे कितनी देर सोए, लेकिन जब देवता ने अचानक अपनी आँखें खोलीं, तो उन्होंने देखा कि नाव एक संकरे लकड़ी के घाट पर रुकी हुई थी। सफेद धुंध ने घाट के दूसरे छोर को छिपा रखा था, लेकिन इंद्र को यकीन था कि उसकी परतों के भीतर पीली रोशनी की हल्की चमक नाच रही थी।
नाव से उतरकर इंद्र घाट पर चलने लगे, उनके भार से गीले, सड़े हुए तख्ते चरमरा रहे थे। वे कोहरे में प्रवेश कर गए, यह उम्मीद करते हुए कि यह स्वाभाविक रूप से छंट जाएगा, लेकिन इसके बजाय यह धुएं की तरह उनके चारों ओर उमड़ पड़ा और चक्कर लगाने लगा, जो घना, सफेद और अधिक अपारदर्शी होता जा रहा

था। इस दम घोंटने वाले कोहरे में क्या छिपा हो सकता है, इस आशंका से चिंतित होकर देव रुक गए।
“क्या यहाँ कोई है?” उसने पुकारा, उसे पता था कि कोहरे के कारण उसकी आवाज़ अस्पष्ट हो रही है। “मैं इंद्र हूँ, देवताओं का स्वामी, कुबेर से मिलने आया हूँ।”
“अलका में आपका स्वागत है, मित्र, आपका स्वागत है,” एक धूर्त आवाज ने फुसफुसाते हुए कहा, जिसने इंद्र के मन में एक सरीसृप की छवि को उभार दिया। पल भर में, कोहरा छंट गया, मानो किसी अचानक चुंबकीय बल ने उसे धकेल दिया हो। वह घाट पर लुढ़कता हुआ पीछे हटता चला गया, यहाँ तक कि घाट के दूसरे छोर को, जिसके सिरे पर नाव खड़ी थी, पूरी तरह से ढक लिया। कोहरे को पीछे हटते हुए देखकर इंद्र घाट में हुए परिवर्तन को देखकर दंग रह गए – पानी से भीगी पुरानी लकड़ी कठोर, सफेद संगमरमर में बदल गई, जिस पर सुनहरे धब्बे थे। अपनी एड़ी पर घूमते हुए, देवता ने चारों ओर देखा और उस दृश्य को देखकर उनका मुंह खुला रह गया। वे एक विशाल गलियारे में खड़े थे, जिसकी दीवारें, खंभे और बालकनियाँ सोने से मढ़ी हुई थीं। फिर भी, गलियारे की चौड़ाई से ज़्यादा उसकी ऊँचाई प्रभावशाली थी। छत मेहराबों और गुंबदों की एक श्रृंखला में ऊपर की ओर उठती थी, और इनसे, विभिन्न ऊँचाइयों पर, बारीकी से तराशे गए क्रिस्टल के झूमर और चमकते सोने की प्लेटें लटकी हुई थीं। संरचना के बिल्कुल शिखर पर एक अकेला दीपक जल रहा था, और इंद्र ने महसूस किया कि उस अकेले दीपक का प्रकाश, सोने की प्लेटों से परावर्तित होकर और तराशे गए क्रिस्टल से अपवर्तित होकर, पूरे गलियारे को रोशन कर रहा था।
फिर उसने कुबेरा को एक ऊंची बालकनी पर खड़े होकर हाथ हिलाकर उसे इशारा करते हुए देखा।
“आओ। कोहरा तुम्हारा मार्गदर्शन करे,” यक्ष की आवाज उसके कान में फुसफुसाई।
एक बार फिर, कुछ क्षणों के लिए, कोहरे का एक बवंडर इंद्र को चारों ओर से घेर लिया, और उन्हें अपने भंवर में फंसाकर अगल-बगल और ऊपर की ओर घूमने लगा। पलक झपकते ही कोहरा गायब हो गया – और अपने सामने के दृश्य को देखकर देवता ने गहरी सांस ली।

वह एक छोटे संगमरमर के मंडप में बैठा था, जो खिले हुए कमल और जलमुर्गियों से भरे एक शांत तालाब के बीचोंबीच बना था। तालाब के चारों ओर एक टीला था, और उस टीले के किनारे से एक झरना चारों दिशाओं से तालाब में गिर रहा था, जिससे मंडप के चारों ओर तेज़ बहते पानी का एक सफेद पर्दा बन गया था। फिर भी, पानी गिरने की कोई आवाज़ नहीं थी, और झरने से तालाब में एक भी लहर नहीं उठी थी।
"क्या आप यह स्वीकार करेंगे कि हमने अमरावती से भी अधिक सुंदर शहर बनाया है?"
इंद्र ने दीवान पर लेटे कुबेर को ध्यान से देखा। यक्ष हद से ज़्यादा मोटा और बालों से लथपथ था, मानो चर्बी और बालों का एक घिनौना ढेर हो। धोती के अलावा वह नग्न था, लेकिन घने, उलझे हुए बालों ने उसकी अधिकांश खुली त्वचा को ढक रखा था। सोने के आभूषणों से सजे कुबेर की आवाज़ उसके हिलने-डुलने पर खनकती थी। उसकी घनी काली दाढ़ी उसके मांसल चेहरे को ढके हुए थी, लेकिन उसके मोटे, फूले हुए होंठों को छिपा नहीं पा रही थी। उसकी आँखें कोयले के रंग की थीं और छल से भरी हुई थीं।
“मैं मानता हूँ कि तुमने अपने लिए अच्छा किया है, कुबेर,” इंद्र ने लापरवाही से जवाब दिया और यक्ष के सामने रखे एक खाली दीवान पर बैठ गया। “क्या मुझे इसमें हल्की-सी प्रशंसा सुनाई दे रही है?” कुबेर ने कान पर हाथ रखते हुए कहा। इंद्र की ओर से और कुछ न सुनकर उसने ताली बजाई। “अच्छा, मैं आपको क्या भेंट कर सकता हूँ? देवों के स्वामी के लिए सोमा से कम और क्या हो सकता है, है ना?” इंद्र को अपने कंधे के पास कुछ हलचल महसूस हुई, लेकिन इससे पहले कि उनकी आँखें ठीक से देख पातीं, धुंध का प्रेत गायब हो गया। बगल में रखी मेज पर नज़र डालते हुए उसने देखा कि सोमा से भरा एक प्याला उसका इंतज़ार कर रहा है। कुबेर ने इंद्र को उस ताज़गी भरे पेय का एक लंबा घूंट लेते हुए देखा।
“तो आखिर किस बात ने देवताओं के स्वामी को यक्षों के इस साधारण से निवास में ला खड़ा किया है?” इंद्र ने कुबेर की आवाज़ में व्यंग्य का भाव पहचाना। “ज़रूर कोई बहुत ही महत्वपूर्ण बात होगी, तभी तो वे इतने दिनों तक धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा कर रहे हैं।”

इंद्र ने गहरी सांस ली। "मुझे एक मानव राजा को नियुक्त करने के लिए आपकी सहायता की आवश्यकता है।"
“एक मानव राजा?” यक्ष ने अविश्वास से इंद्र की ओर देखा और फिर खिलखिलाकर हंस पड़ा। “देवताओं के स्वामी को एक मानव राजा से निपटने में मेरी मदद की क्या आवश्यकता होगी?”
“इस राजा ने बहुत पीड़ा का कारण बना है,” इंद्र का उत्तर ठंडे स्वर में था। “अगर वह इतना कष्टदायी रहा है, तो क्यों न तुम अपने वज्रायुध का प्रयोग करके…” कुबेर रुक गया, उसकी आँखों में एक दुष्ट चमक आ गई। “मैं समझ गया। तुम वज्रायुध का प्रयोग नहीं कर सकते क्योंकि जिस राजा की तुम बात कर रहे हो उसने तुम्हें और देवलोक को कोई हानि नहीं पहुँचाई है। उस पर वज्र का प्रयोग करोगे तो हमेशा के लिए वज्र धारण करने का अधिकार खो दोगे। कितना रोचक है!”
इंद्र ने यक्ष की निगाहों से बचने के लिए अपना ध्यान प्याले पर केंद्रित कर लिया।
“राजा तुम्हें किस तरह की पीड़ा दे रहा है?” “इससे क्या फर्क पड़ता है?” “मैं जानना चाहता हूँ,” कुबेर ने दृढ़ता से कंधे उचकाते हुए कहा। इंद्र को हिचकिचाते देख उसने आगे कहा, “अगर तुम्हें डर है कि मैं तुम्हें गलत समझूंगा, तो मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूँ कि मैंने तुम्हें तुम्हारे असली रूप में परख लिया है। तुम्हें याद होगा, हमारे बीच कुछ ही राज़ हैं, और मुझे नहीं लगता कि तुम मेरी नज़र में इससे ज़्यादा गिर सकते हो।”
कुबेर की धृष्टता पर देवता का चेहरा क्रोध से लाल हो गया, लेकिन यक्ष ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया।
“और यदि आपको चिंता है कि आप जो मुझे बताएंगे उससे मेरा लालच बढ़ेगा और मैं उसे पाने की चाहत रखूंगा…” यक्ष ने हाथ फैलाकर चारों ओर इशारा किया, उसकी उंगलियों पर पहनी अंगूठियां सूर्य की रोशनी में चमक रही थीं। “अलका में मेरे पास वह सब कुछ है जो मैं चाहता हूं। मुझे कोई कुछ नहीं दे सकता जो मेरे पास पहले से न हो।” “अलका में वे अप्सराएं नहीं हैं जिनकी आपको लालसा है, यक्ष स्वामी,” इंद्र की मुस्कान द्वेष से भरी थी। वह जानता था कि अंततः उसे कुबेर की कमजोर नस मिल गई है और वह उसके बराबर आ गया है।

देवलोक से निकाले जाने से पहले भी यक्षों और देवताओं के बीच संबंध तनावपूर्ण थे। यक्ष हमेशा से खुद को देवताओं के बराबर समझते थे, और यह कोई रहस्य नहीं था कि कुबेर अमरावती के सिंहासन पर बैठने की महत्वाकांक्षा रखते थे। हालांकि, देवताओं के बराबर होने की उनकी तमाम बातों के बावजूद, अप्सराओं को आकर्षित करने में यक्ष बुरी तरह पिछड़ जाते थे – देवलोक की अप्सराएं यक्षों के साथ संगति करने से हमेशा कतराती थीं। और यद्यपि यक्ष उभयलिंगी थे, अप्सराओं में एक विशेष आकर्षण था, जिसके कारण यक्ष उन्हें और भी अधिक पाने की लालसा रखते थे।
मामला तब और गंभीर हो गया जब तीन यक्षों पर एक अप्सरा का अपहरण करने और उसके साथ बलात्कार करने का आरोप लगा। तीनों आरोपियों ने मुकदमे में खुद को निर्दोष बताया, लेकिन सबूत अपर्याप्त होने के बावजूद, न्यायाधिकरण ने उन्हें दोषी ठहराया।
कुबेर ने इस पूरे मामले को अपने वंश को बदनाम करने की साजिश बताते हुए यक्षों को बरी करने की मांग की। जब इंद्र ने न्यायाधिकरण के फैसले को पलटने से इनकार कर दिया, तो कुबेर ने स्वयं इंद्र पर पक्षपात का आरोप लगाया और यह संकेत दिया कि यदि इंद्र उचित न्याय नहीं कर सकते तो वे सिंहासन के योग्य नहीं हैं। यह आरोप इतना गंभीर था कि इसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता था। इंद्र ने तुरंत आदेश दिया कि यक्षों को वनवास भेज दिया जाए और उन्हें अमरावती की सुंदरता पर कलंक बताया। कुबेर और उनके अनुयायियों ने देवलोक छोड़ते समय यह शपथ ली थी कि वे अमरावती से भी अधिक सुंदर अपना नगर बनाएंगे। वर्षों बाद, अमरावती को टक्कर देने के लिए अलका का निर्माण हुआ और यक्षों ने धीरे-धीरे काले जादू में महारत हासिल कर ली। फिर भी, अपनी तमाम जादुई शक्तियों के बावजूद, कुबेर ने देवलोक के विरुद्ध कोई कदम उठाने का साहस नहीं किया - वे अब भी उस वज्रायुध से भयभीत थे जिसका प्रयोग इंद्र अपने राज्य की रक्षा के लिए करते थे।
यक्षों के लिए एक और पहलू जो नहीं बदला, वह अप्सराओं के प्रति उनका अटूट प्रेम था, जो अब उनके लिए पूरी तरह से वर्जित थीं।
“इंद्र, तुम मुझसे क्या चाहते हो?” कुबेर ने पूछा, देव के शब्दों से उसका चेहरा गुस्से से लाल हो गया था।
मैंने तुमसे कहा था। मैं चाहता हूँ कि तुम उस मानव राजा पर विपत्ति लाओ।

और मैं तुम्हारे लिए ऐसा क्यों करूंगा?
मैं तुम्हारे लिए अप्सरा को लाया हूँ।
अपने दीवान पर पीछे झुकते हुए यक्ष स्वामी ने तिरस्कारपूर्ण हंसी हंसते हुए कहा, “तुम्हें क्या लगता है कि तुम अपनी उस खिलौने को लेकर यहाँ आ सकते हो, उससे कुछ दिनों तक मेरा मनोरंजन करवा सकते हो, और मुझसे अपनी हर इच्छा पूरी करने की उम्मीद कर सकते हो? यह पहले शायद काम करता था, लेकिन नहीं, अब नहीं।”
"अगर तुम मेरी बात मानोगे, तो मेनका हमेशा के लिए अलाका में तुम्हारी हो जाएगी।"
अपनी उंगलियों में पहनी एक अंगूठी से खेलते हुए, कुबेर ने अपनी भौंहें चढ़ाकर इंद्र को गौर से देखा। सन्नाटा इतना गहरा था कि देवता को लगा मानो उन्हें तालाब में पानी गिरने की हल्की सी गड़गड़ाहट सुनाई दे रही हो। “मैं तुम्हारे अनुयायियों के लिए अलका के पास दो दर्जन अप्सराएँ भी भेज सकता हूँ,” इंद्र ने प्रलोभन देते हुए कहा।
“क्या तुम ऐसा करोगे?” अंततः यक्ष के चेहरे पर लालच के भाव दिखाई दिए। इंद्र ने प्याले की सामग्री को वापस पी लिया और संतुष्टि से अपनी सुनहरी दाढ़ी सहलाते हुए सिर हिलाया।
कुबेरा ने अपने पैर दीवान से नीचे लटकाए और सीट के किनारे पर बैठ गया। उसने कहा, “बताओ तुम उस मानव राजा के साथ क्या करवाना चाहते हो? बताओ तुम उसे कितना नुकसान पहुँचाना चाहते हो।”

[redacted]

[redacted] [redacted] [redacted] [

कि वह एक व्यापारी था। “मैं विश्वास दिलाता हूँ कि इन आठों में से कोई भी अवंती की घुड़सवार सेना को कभी कोई परेशानी नहीं देगा।”
“तुम्हारी क्या राय है?” उस दैत्य ने अपने माथे से पसीना पोंछा और शंकु की ओर देखा।
“मैं वार्डन की बात से सहमत हूँ, खासकर छोटी पूंछ वाली घोड़ी के बारे में,” लड़की ने कीरी को प्रशंसा भरी मुस्कान देते हुए कहा। “हो सकता है कि वह सबसे तेज़ न हो, लेकिन वह बहुत साहसी है। लेकिन पहले आइए देखें कि दूसरे व्यापारी हमारे लिए क्या लाए हैं।”
बाड़ा खुल गया और निरीक्षण के लिए घोड़ों का एक और समूह मैदान में सरपट दौड़ने लगा।
कालिदास और शंकु को आखिरकार तीन घंटे बाद ही फासला पार करके उज्जैन लौटने का समय मिला। दोपहर लंबी और थका देने वाली रही थी; घोड़ों की सूची तैयार करने और चयन से पहले प्रत्येक घोड़े का सावधानीपूर्वक निरीक्षण करने की प्रक्रिया में काफी समय लग गया था। अवंती को घोड़ों की सख्त जरूरत थी। त्रेही में पिशाच सेना के विरुद्ध युद्ध में सत्तर से अधिक घोड़े मारे गए थे, और राक्षसों के हमले में आधे घोड़े मारे गए थे। उनकी जगह नए घोड़े लाने की आवश्यकता थी। इसके अलावा, हूण-शक आक्रमण के खतरे के कारण सभी अश्वशालाओं और छावनियों में घोड़ों की मांग में भारी वृद्धि हुई थी। उस दिन बिक्री के लिए आए लगभग साठ जानवरों में से केवल एक तिहाई ही शाही अस्तबलों के योग्य समझे गए, जो कमी को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं थे। “फिर भी बुरा आंकड़ा नहीं है,” कालिदास ने पश्चिम क्षितिज की ओर आधे रास्ते पर पहुँच चुके सूर्य की ओर देखते हुए कहा। एक घंटे पहले ही हल्की हवा चलने लगी थी, जिससे दिन थोड़ा ठंडा हो गया था।
“बिल्कुल नहीं,” शंकु ने सहमति जताते हुए पीछे मुड़कर खेत की ओर देखा, जहाँ वार्डन और उनके कर्मचारी अभी भी व्यापारियों के साथ कीमतों पर बातचीत कर रहे थे। “दरअसल, उनमें से सात-आठ तो बहुत ही बढ़िया सौदे हैं।”
"क्या उनमें से एक छोटी पूंछ वाली घोड़ी भी है?" कालिदास ने लड़की की ओर धीरे से मुस्कुराते हुए कहा।
“मुझे वो पसंद है,” शंकु ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया।

वे कुछ देर तक चुपचाप, दोनों घोड़ों पर धीमी चाल से सवार होते रहे।
अंत में कालिदास ने कहा, "मैं आपसे कुछ पूछना चाहता था।"
"यह क्या है?"
“मुझे नहीं पता कि… यह बात तुम्हें समझ आएगी या नहीं…” विशालकाय व्यक्ति हकलाते हुए बोला, आंतरिक उथल-पुथल से उसका भारी-भरकम जबड़ा कस गया। “यह… मूर्खतापूर्ण लग सकता है…”
“क्या बात है?” शंकु ने फिर पूछा, इस बार अधिक विनम्रता और उत्साह के साथ। एक गहरी सांस लेते हुए और अपनी काठी पर बैठते हुए, कालिदास ने पलकें झपकाईं और सीधे उस रास्ते पर देखा जिस पर वे चल रहे थे।
“मैं… मुझे कुछ समय से अपने दिमाग में कुछ चीजें दिखाई दे रही हैं। छवियां… दृश्य। मैं उन्हें हर समय देखता हूं।”
शंकु समझ गया था कि वह दैत्य किस बात का जिक्र कर रहा है।
“ऐसा लगता है जैसे… ये सपने हैं, लेकिन मैं इन्हें जागते हुए भी अपने दिमाग में देखता हूँ,” उसने आगे कहा। “अभी भी…” वह रुक गया और शंकु की तरफ देखा। “मुझे पता है यह बेतुका लग रहा है। मैं मूर्ख लग रहा हूँ। मुझे… माफ़ करना कि मैंने यह बात उठाई।”
कुछ क्षणों के लिए शंकु का मन हुआ कि वह उस दैत्य को बता दे कि वह उसकी कही हर बात समझ गई है, लेकिन ऐसा करने का मतलब होता कि उसे यह समझाना पड़ता कि वह उस सुबह संसप्तक प्रशिक्षण मैदान में कैसे पहुँची थी। यह एक ऐसा रहस्य था जिसे वह अभी किसी के साथ साझा करने को तैयार नहीं थी।
“नहीं, ठीक है,” लड़की ने अपने घोड़े की लगाम खींचकर उसे धीरे-धीरे चलने को कहा। “बताओ तुम्हें क्या दिख रहा है।”
आश्वस्त महसूस करते हुए, कालिदास ने वह सब कुछ बताया जो लड़की शहतूत के घने जंगल में छिपते हुए पहले ही सुन चुकी थी।
“मैं उम्मीद करता रहता हूँ कि ये दृश्य चले जाएँगे, लेकिन हर दिन ये और भी ज़्यादा भयानक होते जा रहे हैं,” उस दैत्य ने घबराहट में अपने होंठ दबा लिए। “धनवंतरी ने मुझे अच्छी नींद के लिए एक औषधि दी थी, लेकिन उससे कोई फ़ायदा नहीं हो रहा। मुझे डर लग रहा है… मैं पागल हो रहा हूँ।”

कालिदास की आँखों में बेबसी देखकर शंकु व्याकुल हो उठी। उसने हमेशा उस विशालकाय को शक्ति और आत्मसंयम का प्रतीक माना था। वह बचपन से यही मानती आई थी कि कोई भी चीज़ उनके धैर्य को भंग नहीं कर सकती, इसलिए उन्हें कंधे झुकाए, उदास और चिंतित देखना उसके लिए विचलित करने वाला था। अचानक ही उसके मन में उन्हें कसकर गले लगाने और यह विश्वास दिलाने की तीव्र इच्छा हुई कि वे बिल्कुल ठीक हैं।
“नहीं, आप नहीं हैं,” उसने कहा। “जब हम वहाँ पहुँचेंगे तो धनवंतरी से बात कर लेंगे…”
मुझे नहीं लगता कि धनवंतरी मदद कर सकता है। लेकिन शायद आप कर सकें।
"मैं कैसे?"
“शायद हम देवी ओरेकल से पूछ सकते हैं कि क्या वह पता लगा सकती हैं कि मेरे साथ क्या हो रहा है।” कालिदास ने शंकु की ओर आशा भरी निगाहों से देखा। “मुझे नहीं पता। शायद वह पता न लगा सकें…”
"यह जानने का केवल एक ही तरीका है कि वह ऐसा कर सकती है या नहीं।"
लगाम को झटके से घुमाते हुए शंकु ने अपने घोड़े को फुदकाया और कालिदास से आगे बढ़ने लगी। आगे, उज्जैन के बुर्ज वृक्षों के बीच से हवा में ऊँचे दिखाई दे रहे थे। घोड़े पर सवार होते हुए उसने एक नज़र पीछे मुड़कर उस विशालकाय कालिदास पर डाली।
“आप किस बात का इंतजार कर रहे हैं, पार्षद?” उसने उज्जैनी की ओर सिर हिलाते हुए कहा। “चलिए, हम ज्योतिषी से पूछते हैं।”

* * *

शुक्राचार्य यह तय नहीं कर पा रहे थे कि उन्हें खुद से ज्यादा परेशानी हो रही है या मंडल से।
यह सिर्फ झुंझलाहट ही नहीं थी। चिंता भी थी।
जब से हड्डियों से यह पता चला था कि कुबेर ने अंततः इंद्र को दर्शन दिए हैं, तब से वह बार-बार हड्डियों का अध्ययन कर रहा था। लेकिन हर बार जब वह अलका में हुई बैठक का परिणाम जानना चाहता था, तो हड्डियाँ अपने रहस्यमय रूप में ही रहती थीं।

जिस चीज की रक्षा करने का वादा मानव राजा ने किया है, उसे वापस लेने के लिए एक यक्ष को भेजा जा रहा है।
हड्डियों का मतलब केवल वीषाद का खंजर ही हो सकता था, लेकिन प्रधान पुरोहित को यह बात समझ नहीं आ रही थी। वह समझ गया था कि कुबेर अप्सराओं के प्रलोभन में आ गया था, जो मूर्ख यक्षों के मामले में हमेशा से ही सुरक्षित विकल्प रहा है। लेकिन इंद्र यक्षों पर भरोसा क्यों करेंगे – जिनके इरादों पर देवताओं को हमेशा से ही संदेह रहा है – कि वे उनके लिए हलाहल का दावा करें? और उज्जैन में एक यक्ष को भेजने का क्या उद्देश्य था? वे शक्तिशाली और धूर्त प्राणी थे, जो काले जादू में पारंगत थे, इस बात में शुक्राचार्य को कोई संदेह नहीं था। फिर भी, एक अकेला यक्ष क्या कर सकता था जहाँ अश्विनी घुड़सवार सेना और मरुत असफल रहे थे?
इसलिए, वह बार-बार जवाबों की तलाश में मंडल के पास लौटता रहा, लेकिन हड्डियों से उसे वही जानकारी मिली जो उन्हें पहले ही मिल चुकी थी।
एक यक्ष उज्जैन आ रहा था, जो विक्रमादित्य द्वारा श्मशान घाट के वृक्ष में किसी प्रकार छिपाए गए हलाहल को चुराकर ले जाना चाहता था। यह बात चाहे कितनी भी अकल्पनीय क्यों न लगे, शुक्राचार्य को इस खुलासे से चिंता होने लगी और विशाखा की स्मृति धीरे-धीरे वापस आने से मिलने वाला आनंद छिन गया – और सम्राट को निराशा में डूबते देखना भी उनके लिए कष्टदायी साबित हुआ। अमरावती के विनाश का आनंद भी उस अज्ञात यक्ष के खतरे के आगे फीका पड़ने लगा था।
उसे इस यक्ष को विफल करने के लिए कुछ करना ही था।
झुंझलाहट से आह भरते हुए, प्रधान पुजारी अपनी चटाई पर लेट गया और छत को घूरने लगा, शाम होने तक मिनट गिनता रहा, जब वह श्मशान घाट की यात्रा कर सकेगा और अंधेरे की आड़ में जो भी आवश्यक काम करना था उसे पूरा कर सकेगा।

* * *

“तुम्हें पता है सबसे ज्यादा दर्द किस बात से होता है, हरिहारा?”
वेताल भट्टा का संबोधन जानबूझकर चुना गया था – ‘राजा’ की उपाधि छोड़कर हरिहरा को नाम से पुकारना यह दर्शाता था कि वे इस वार्तालाप में शिष्टाचार और मर्यादाओं का पालन करने के मूड में नहीं थे। यह एक सोची-समझी चाल थी। वे

न केवल हेहेया के राजा से उम्र में बड़े थे, बल्कि अवंती के राजदूत के रूप में उन्होंने युवा हरिहरा और अधिक शक्तिशाली राजा महेंद्रदित्य के बीच गठबंधन कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। आचार्य अब अपनी उम्र और साझा इतिहास का लाभ उठा रहे थे।
“जानते हो सबसे ज़्यादा दुख किस बात का है?” उसने फिर पूछा। “यह सारा मामला तुमने जिस छल से अंजाम दिया है, वह मुझे बहुत बुरा लगा। अगर तुम्हें याद हो, तो पुराने राजा महेंद्रादित्य कहा करते थे कि वे दिन दहाड़े सीने में तलवार से मरना पसंद करेंगे, बजाय इसके कि अंधेरे में तीर से मरें। तुमने हमारी पीठ पीछे यह सब किया, यह देखकर मुझे बहुत दुख हुआ।”
झुके हुए कंधों और बेचैनी से पैर घसीटते हुए, प्रधान सलाहकार के सामने बैठे राजा हरिहारा को देखकर ऐसा लग रहा था मानो उनका जीवन बिखर रहा हो। दोनों व्यक्तियों के बीच मेज पर रखा एकमात्र दीपक उनकी छाया को पीछे की दीवार पर इस प्रकार डाल रहा था मानो कोई अतीत का पाप उन पर मंडरा रहा हो, मानो अपने पंजे गाड़कर उन्हें निगलने को तैयार हो।
"मैंने वही किया जो मुझे अपनी बेटी के लिए सही लगा," उसने अपने हाथों को बार-बार गांठते और खोलते हुए बुदबुदाया।
“हर पिता की तरह,” आचार्य ने कहा। “फिर भी, आपमें मेरी आँखों में आँखें डालकर देखने का साहस नहीं है। क्या इसका कारण यह है कि आप अपने मन में जानते हैं कि यह आपकी बेटी के हित में नहीं है? या फिर आपको अवंती और उसके राजा को विश्वास में न लेने का पछतावा है?”
“मैं तुम्हें बता देता,” हरिहर ने विरोध करते हुए कहा। “मैं सिंधुवर्त के प्रत्येक राज्य को उचित समय आने पर बता देता।”
राजगुरु ने शांत भाव से कहा, "जब बहुत देर हो चुकी होती, तब तुम हमें बता देते। तुम्हें रोकने के लिए बहुत देर हो चुकी होती।"
“इस सब से किसी को क्या फर्क पड़ता है?” हरिहारा ने गुस्से से हाथ ऊपर उठाते हुए सीधे-सीधे चुनौती दी। “विक्रमादित्य को मेरी बेटी का हाथ स्वीकार करने या न करने की पूरी आजादी है। लेकिन उसे यह तय करने का कोई अधिकार नहीं है कि मैं उसकी शादी किससे कराऊं।”

वेताल भट्ट ने राजा का बारीकी से निरीक्षण किया। विक्रमादित्य सही थे। सिंधुवर्त के सम्राट के भावी ससुर के रूप में उपेक्षित किए जाने के कारण यहाँ असंतोष था।
“सम्राट की आपत्ति केवल शूरसेना तक सीमित है।” आचार्य एक क्षण के लिए रुके, उनका लहजा बदल गया और तीखा हो गया। “राजा सिद्धसेना को हमें छोड़े हुए अभी कुछ ही महीने हुए हैं, उनकी हत्या उसी ने की थी जिसे आप अपना दामाद बनाना चाहते हैं। मृत राजा को आप पर अपनी मित्रता पर बहुत गर्व रहा होगा।” हरिहारा पार्षद की तीखी निगाहों के नीचे बेचैन हो गया। तभी पास ही कहीं से लगातार छी-छी-छी की आवाज़ सुनाई दी। ऊपर देखते ही राजगुरु ने दो घरेलू छिपकलियों को दीवार पर चढ़ते हुए देखा, जिनमें से एक दूसरे का पीछा कर रही थी।
“ठीक है, सिद्धसेना तो वैसे भी मर चुकी है, और शायद मरे हुए लोगों का कोई महत्व नहीं होता,” वेताला भट्टा ने हाथ हिलाकर बात को टाल दिया। “राजकुमारी रुक्मा का क्या? क्या वह इस रिश्ते से खुश है?”
“वह खुश क्यों नहीं होगी? मेरी बेटी को बचपन से ही दूसरों की खुशी में खुशी ढूंढना सिखाया गया है।”
“क्या ऐसा है? मैं यह बात उनसे सुनना चाहूंगा। अगर वह कहती हैं कि उन्हें शूरासेना से शादी करने में कोई आपत्ति नहीं है, तो यह विषय यहीं समाप्त होता है और मैं आपसे विदा लेता हूं। जाइए, उन्हें बुलाइए।”
हरिहारा अपनी कुर्सी पर उदास बैठा रहा। वेताल भट्ट ने मन ही मन राहत की सांस ली। वह जानता था कि उसने एक जोखिम उठाया था, और उसका झांसा पकड़ा जा सकता था।
“अब सुनो, हरिहर।” आचार्य थोड़ा झुके और अपनी आवाज़ धीमी करते हुए बोले, “सम्राट को तुम्हारी पुत्री की खुशी की बहुत चिंता है – इसीलिए वे इस प्रस्तावित विवाह के विरुद्ध हैं। सिंधुवर्त के राज्य – कम से कम अवंती, कोसल, वत्स और मत्स्य – ने तय कर लिया है कि शूरसेना को अपने किए का हिसाब देना होगा। उसे किसी न किसी तरह से दंड मिलेगा। अब, अगर राजकुमारी रुक्मा उससे विवाह करती है, तो उसे भी उसके पापों का फल भुगतना पड़ेगा। विक्रमादित्य ऐसा नहीं चाहते। सवाल यह है, क्या तुम चाहते हो?”

हरिहारा ने राजगुरु को चिंता और अनिर्णय से गोल-गोल आंखों से घूरकर देखा। "आप जानबूझकर अपनी बेटी को मुसीबत और अनिश्चितता में नहीं भेजेंगे, है ना?"
राजा ने धीरे से अपना सिर हिलाया, जो आत्मसमर्पण का पहला स्पष्ट संकेत था। “अब सम्राट एक पिता की चिंताओं को समझते हैं,” वेतला भट्टा की आवाज़ कोमल और शांत करने वाली थी। “वे जानते हैं कि आपने एक पिता की तरह ही व्यवहार किया है, और उन्हें आपसे कोई शिकायत नहीं है। वास्तव में, उन्होंने आपके विचारार्थ एक प्रस्ताव भी भेजा है।”
“वह क्या है?” हरिहारा के चेहरे पर आशा की किरण जगी।
“राजकुमारी रुकमा के लिए आपको एक उपयुक्त वर की आवश्यकता है। राजकुमार शशिवर्धन के बारे में क्यों न विचार करें?”
राजा कुछ देर तक चुप रहे और इस संभावना पर विचार करते रहे।
“शशिवर्धन अभी राजा नहीं बना है,” उसने धीरे से कहा।
आचार्य एक पल के लिए स्तब्ध रह गए। फिर उन्हें बात समझ आ गई।
“लेकिन वो ठीक हो जाएँगे। राजा चंद्रवर्धन…” सलाहकार ने रुककर सोच-समझकर बोलना शुरू किया। “मुझे नहीं पता कि आपको सारी खबरें पता हैं या नहीं, लेकिन राजा चंद्रवर्धन की तबीयत ठीक नहीं है। संभावना है कि वो कभी इतने स्वस्थ न हो पाएँ कि राजा के कर्तव्यों का निर्वहन कर सकें। और शशिवर्धन पहले से ही उन जिम्मेदारियों को संभाल रहे हैं।”
लेकिन… क्या वह वत्सा का राजा बनेगा?
“बिल्कुल,” आचार्य ने आश्चर्य से कहा। “हम ऐसा क्यों मानें कि ऐसा नहीं है?”
“मुझे नहीं पता,” हरिहारा ने कंधे उचकाते हुए कहा। “राजकुमार को शराब पीने और जुआ खेलने की बुरी आदत है। अक्सर कहा जाता है कि वह एक पक्का शराबी है।” “यह सरासर अतिशयोक्ति है। खैर, शादी से पुरुषों का स्वभाव नरम हो जाता है। राजकुमारी जैसी पत्नी शायद उनके लिए काफी सहारा है। आप यकीन मानिए, शशिवर्धन का दिल बिल्कुल सही जगह पर है।”

हरिहारा अब भी नाखुश दिख रहा था।
और अगर दो विकल्पों में से एक चुनना हो - एक ऐसा शराबी जिसे सुधारा जा सकता है और एक ऐसा हत्यारा जिसे निश्चित रूप से सजा मिलेगी - तो आप किसे चुनेंगे?
बुजुर्ग पार्षद की आवाज शांत और तर्कसंगत थी। उनके चेहरे पर एक मोहक मुस्कान भी थी। लेकिन दीपक की रोशनी में हरिहारा की ओर चमकती उनकी आंखें कठोर और निर्मम थीं, मानो उन्हें चिमटे की तरह जकड़ रही हों।
"अवंती क्या आश्वासन दे सकती है कि शशिवर्धन वत्स का राजा बनेगा?"
मेज के उस पार बैठे दोनों व्यक्ति एक-दूसरे का आकलन ऐसे कर रहे थे मानो वे युद्ध में भाग लेने वाले योद्धा हों।
“अभी राज्याभिषेक संभव नहीं है, लेकिन अगर आप चाहें तो हम औपचारिक रूप से यह घोषणा करवा सकते हैं कि शशिवर्धन, चंद्रवर्धन के बाद वत्सा के सिंहासन पर विराजमान होंगे,” सलाहकार ने कहा। “इससे आपके बचे-खुचे संदेह दूर हो जाएंगे। अगर आप चाहें तो हम आपकी ओर से यह प्रस्ताव कौशांबी के समक्ष भी रख देंगे। अब आप क्या कहते हैं?”
राजा ने धीरे से सिर हिलाया, लेकिन वह अभी भी अपनी कुर्सी पर झुके हुए बैठे थे।
“आचार्य, बस एक ही समस्या है,” हरिहर ने आह भरते हुए कहा। “शूरसेना को मेरा प्रस्ताव लेकर आए दूत गिरिव्रज के लिए रवाना हो चुके हैं। उन्हें वापस बुलाने का कोई उपाय नहीं है, जिसका मतलब है कि शूरसेना को मेरा पत्र अवश्य ही मिल जाएगा।”
वह रुका और गहरी सांस ली। "अगर वह रुकमा का हाथ स्वीकार कर ले तो क्या होगा?"
"तो मुझे खेद है कि आपको उन्हें बताना होगा कि राजकुमारी का हाथ पहले ही तय हो चुका है।"

* * *

जैसे ही शंकु नाव से उतरकर घाट की सीढ़ियों पर कदम रखा, नदी किनारे के ढाबे दिन भर के आखिरी ग्राहकों को छोड़कर जा रहे थे। जश्न मनाने वाले एक-दूसरे

किरण आती हुई आकृति पर पड़ी। किरण ने आकृति के चेहरे को पल भर के लिए ही रोशन किया, फिर भी शंकु ने दाढ़ी और बाईं आंख पर पट्टी देखी!
सहज प्रवृत्ति के चलते लड़की पास के एक शराबखाने की दीवार के पीछे चली गई। उसने सावधानी से एक आँख बाहर निकाली और घाट की ओर देखा। वैद्य सिर झुकाए, सीढ़ियों पर नज़र रखते हुए चढ़ता रहा।
छाया में छिपकर शंकु ने वैद्य को अपने पास आते और फिर नगरद्वार की ओर बढ़ते देखा। छिपने की जगह से निकलकर शंकु तेजी से पंजों के बल सीढ़ियों से नीचे भागी, इस उम्मीद में कि उसके पायल की झंकार सुनाई न दे। वह बीच-बीच में पीछे मुड़कर देखती रही कि कहीं वैद्य ने उसे देख तो नहीं लिया, लेकिन वह द्वार से होते हुए उज्जैन में ओझल हो चुका था।
“अय, अय,” उसने नाविक का ध्यान आकर्षित करने के लिए हाथ हिलाते हुए चिल्लाया। “वहीं रुक जाओ!”
नाविक क्षिप्रा नदी में कुछ मीटर आगे बढ़ चुका था, लेकिन उसने अपनी गति धीमी कर दी और घाट की ओर देखा, जहाँ सबसे निचला हिस्सा एक आकृति की तरह दिख रहा था। उसने कहा, "मैं घर जा रहा हूँ। बहुत देर हो चुकी है।"
“इधर आओ,” शंकु ने घबराकर हाथ से इशारा किया।
“मुझे घर जाना है,” नाविक पानी में अपनी जगह पर खड़े-खड़े बुदबुदाया। “कृपया दूसरी नाव का इंतजाम कीजिए।”
पार्षद ने विनती करते हुए कहा, "मैं सीमा पार नहीं करना चाहता। मैं बस आपसे बात करना चाहता हूं, बस इतना ही।"
“किस बारे में, लड़की?”
इसमें तुम्हारा भी कुछ पैसा है।
यह कारगर साबित हुआ। नाविक ने नाव को किनारे पर खींच लिया। जैसे ही नाव घाट से टकराई, उसने पूछा, "आप क्या जानना चाहते हैं?"
“जिस आदमी को तुमने अभी-अभी छोड़ा है…” शंकु ने शहर के द्वार की ओर अंगूठा दिखाते हुए इशारा किया।
“जी हां, वो वैद्य…” नाविक रुका। “उसके बारे में क्या?”

“वह वैद्य। जी हाँ।” उसे अचानक याद आया कि वैद्य आजकल उज्जैन के सबसे जाने- माने चेहरों में से एक है। “आप उसे कहाँ से लाए हैं?”
“दूसरा किनारा,” नाविक ने सहज भाव से कहा।
"क्या आपको पता है कि वह कहाँ से आ रहा था?"
"तुम यह क्यों जानना चाहती हो, लड़की?"
शंकु ने अपना चेहरा इस तरह घुमाया कि एक सराय से आती रोशनी उसके चेहरे पर पड़ी।
“पार्षद जी… आप हैं,” नाविक की आवाज़ डर और शर्मिंदगी से गूंज उठी जब उसने अपने सामने वाले व्यक्ति को पहचाना। “मैं… बेवकूफ हूँ मैं… मुझे पता नहीं था…”
"क्या आपको पता है कि वह वैद्य कहाँ से आ रहा था?"
“मैं… नहीं, महाराज। मैं… मैं एक गरीब नाविक हूँ, महाराज। मैं अपने यात्रियों से यह पूछने की हिम्मत नहीं करता कि वे कहाँ से आए हैं और कहाँ जा रहे हैं, महाराज। मुझे क्षमा करें…”
"क्या आप ही उसे उस पार ले गए थे?"
“जी हां, माननीय न्यायाधीश।”
“यह कब हुआ था? मतलब कितने समय पहले?”
"सूर्यास्त के बाद, महोदय। हमेशा की तरह सब कुछ सामान्य रहेगा।"
सामान्य की तरह।
"क्या आप कह रहे हैं कि आपने पहले भी वैद्य को नाव से ले जाया है?"
“कुछ बार, महोदय। वह हमेशा अंधेरा होने के बाद ही निकलता है और शराबखानों के बंद होने के समय के आसपास लौटता है। केवल एक बार मैंने उसे दोपहर बाद नदी पार कराया था। अगर मुझे सही याद है तो वह पहली बार था।”
और वह आपसे उसका इंतजार करने को कहता है?
नाविक ने सिर हिलाया। "वह अच्छा भुगतान करता है।"
“क्या आप उसे पवित्र क्षिप्रा नदी के उस पार ले जाकर वापस लाएंगे?” नाविक ने सिर हिलाया।

"तुम्हें नहीं पता कि वह कहाँ जाता है?"
नाविक ने अपना सिर हिलाया।
"लेकिन वह यह यात्रा अक्सर करता है, और लगभग हमेशा सूर्यास्त के बाद ही करता है।"
नाविक ने सिर हिलाया।
“ये रहा वो सिक्का जिसका मैंने वादा किया था।” शंकु ने तांबे की एक अंगूठी उस आदमी के हाथ में रख दी। “लेकिन याद रखना, इस बातचीत के बारे में वैद्य को कुछ मत बताना, ठीक है?”
"जी हां, माननीय।"
लड़की सीढ़ियाँ चढ़ने के लिए मुड़ी ही थी कि नाविक ने फिर कहा, “एक बात मैं आपको बता सकता हूँ, परामर्शदाता। जब भी वैद्य लौटता है, उसके कपड़े और पैर बारीक राख की कई परतों से ढके होते हैं।”

सपने

तलवारों के आपस में टकराने से धातु की खनक; धूप से तपती कठोर धरती पर घोड़ों के खुरों की भारी गड़गड़ाहट; आसमान की ओर तीखे युद्धघोष करते हुए चीखते-चिल्लाते कुत्तों की गर्जना। ये सब मिलकर एक कान फाड़ देने वाला शोर बन गया जब वह मैदान में दौड़ पड़ा।
अपने घुटनों से घोड़े को कसकर पकड़े हुए, अपनी बाहों को घोड़े की मोटी, पसीने से तर गर्दन के चारों ओर कसकर लपेटे हुए, वह काठी में नीचे झुक गया, ताकि हवा का कम से कम प्रतिरोध कर सके। घोड़े की अयाल उसके चेहरे पर लहरा रही थी, खुरदुरे बाल उसकी त्वचा में चुभ रहे थे और उसकी आँखों में जा रहे थे, जिससे उसे पलकें झपकानी पड़ रही थीं, लेकिन उसने अपना सिर नीचे रखा और मैदान के किनारे को चिह्नित करने वाले पेड़ों की कतार को देखता रहा। जैसे ही उसके पीछे से चीखों और चिल्लाहट की एक और लहर उठी, वह घबराकर मुड़ा और अपने कंधे के ऊपर से एक नजर डाली।
वह आदमी अब भी उसके पीछे था, अपने घोड़े को तेजी से दौड़ा रहा था, जिससे दोनों घोड़ों के बीच की दूरी तेजी से कम होती जा रही थी।
उसने तेज़ी से पास आती पेड़ों की कतार को देखने के लिए अपना सिर बेतहाशा घुमाया, जिसके आगे घना और हरा जंगल फैला हुआ था। फिर उसने पीछा कर रहे आदमी की ओर देखा।

वह व्यक्ति अब अपने घोड़े के रकाबों पर खड़ा था, धनुष और बाण संभालते हुए कुशलतापूर्वक अपने घोड़े पर संतुलन बनाए हुए था। बाण को कमान में लगाकर, उसने धनुष उठाया और डोरी को पीछे खींचा।
भय और आकर्षण के बीच फंसा हुआ, वह देखता रहा कि जैसे ही उस आदमी ने निशाना साधा, धनुष तनाव से झुकने और कांपने लगा, तीर का नोक सीधे उसकी ओर इशारा कर रहा था... उसने धनुष के पीछे उस आदमी का धूप से झुलसा हुआ चेहरा देखा, उसकी घुंघराली काली दाढ़ी कनपटी पर भूरी हो रही थी।
उसने देखा कि वह आदमी अपना मुंह खोलकर उस पर चिल्लाने लगा…
“कमांडर, रुकिए। कृपया रुकिए।”
कालिदास ने पलकें झपकाईं और मुड़कर देखा तो अंगमित्र कीचड़ के गड्ढे को पार करते हुए उनकी ओर दौड़ते आ रहे थे। संसप्तकों के सेनापति ने अपनी तलवार निकाल रखी थी, बाएं हाथ में ढाल इस तरह रखी थी मानो युद्ध के लिए तैयार हों, और उनकी सतर्कता और आंखों में दिख रही चिंता से ऐसा लग रहा था कि वे कुछ तनाव में हैं।
“क्या बात है, कप्तान?” कालिदास ने पूछा, अचानक उन्हें एहसास हुआ कि उनके चारों ओर तलवारों की खड़खड़ाहट की आवाज थम गई है। चारों ओर सन्नाटा छा गया था।
अंगामित्र के अनिश्चित रूप से रुकने पर, विशालकाय कालिदास ने मुड़कर उस कीचड़ के गड्ढे का जायजा लिया जिसका उपयोग संसप्तक अपने प्रशिक्षण के लिए करते थे। चारों ओर, कालिदास ने संसप्तकों को खड़े होकर उन्हें घूरते हुए देखा, उनके हाथों में तलवारें लटकी हुई थीं। उनके चेहरों पर उन्होंने विस्मय, आश्चर्य और भय देखा - भय तब सबसे अधिक स्पष्ट हुआ जब उन्होंने अपनी निगाहें कालिदास के पैरों की ओर घुमाईं।
उनकी दृष्टि का अनुसरण करते हुए, कालिदास ने नीचे देखा तो पाया कि जिस संसप्तक के साथ वे प्रशिक्षण ले रहे थे, वह रेत पर पीठ के बल लेटा हुआ था। अपेक्षाकृत नया रंगरूट, संसप्तक एक ईमानदार और उत्साही शिष्य था, जिससे अंगमित्र को बहुत उम्मीदें थीं। युवा योद्धा अब शांत लेटा हुआ था, उसका बायां हाथ उसकी आंखों पर था। उसकी तलवार उसके फैले हुए दाहिने हाथ से कुछ

ही फीट दूर कीचड़ में पड़ी थी - और उसकी दाहिनी कॉलरबोन के नीचे से लेकर दाहिने कंधे तक एक गहरा, लाल घाव था।
घाव से खून रिस रहा था, जिससे उसकी छाती के बाल आपस में चिपक गए और खून उसकी बगल से नीचे रेत में फैल गया।
फिर भी, जब कालिदास ने अपनी तलवार की नोक पर खून का धब्बा देखा, तब जाकर उन्हें पूरी तरह से सच्चाई का एहसास हुआ। भय से उनकी आँखें चौड़ी हो गईं और वे गिरे हुए शरीर को देखने के लिए झुकने ही वाले थे कि लड़का हिल उठा। अपनी आँखों से हाथ हटाकर, योद्धा ने बड़ी मुश्किल से कोहनियों के बल खुद को ऊपर उठाया और सुबह की तेज धूप में अपने सेनापति को तिरछी निगाहों से देखा। “तुम ठीक हो?” कालिदास ने उसकी आवाज में कंपन महसूस किया।
संसप्तक ने सिर हिलाया और मुस्कुराया, लेकिन जैसे ही एक मांसपेशी में खिंचाव आया और घाव पर दर्द हुआ, उसकी मुस्कान दर्द में बदल गई। "हाँ, कमांडर," उसने कमजोर स्वर में उत्तर दिया।
“युद्ध में तलवार खो जाने पर यही होता है,” कालिदास ने एक घुटने पर बैठकर लड़के के कंधे पर हाथ रखते हुए उसे उठाने की कोशिश की। “दुश्मन तुम्हें काट डालेगा। इसलिए कभी भी अपनी तलवार पर से पकड़ न छोड़ें। यही तो तुम्हें जीवित रखती है।”
“मैं समझ गया, कमांडर।”
तीन अन्य संसप्तक तुरंत सहायता के लिए दौड़े और कुछ ही क्षणों में योद्धा अपने साथियों के सहारे लड़खड़ाते पैरों पर खड़ा हो गया। समूह के पास आकर अंगामित्र ने घाव का निरीक्षण किया।
“चोट गहरी है, लेकिन गंभीर नहीं,” उन्होंने राहत भरी सांस लेते हुए कहा। “बस कुछ टांके लगाने और शायद पट्टी बांधने की जरूरत है। उसे डॉक्टर के पास ले जाओ।”
जब सैनिक को गड्ढे से बाहर ले जाया जा रहा था, तो कालिदास ने शेष संसप्तकों की ओर देखा, जो अभी भी स्तब्ध खड़े थे।

“यह तुम सबके लिए भी एक सबक है,” उस दैत्य ने कहा। “अपनी तलवारें थामे रहो।” उसने सहमति में सिर हिलाते हुए लोगों को देखकर मुस्कुराया, लेकिन भीतर ही भीतर वह जो कुछ हुआ था उससे भयभीत और कांप रहा था।
“सेमददगार की बात सुनो,” अंगामित्र ने संसप्तकों पर गरजते हुए कहा। “अब अपनी तलवारें थाम लो और अपने प्रशिक्षण पर वापस लग जाओ। चलो, जल्दी करो!” तलवारों के आपस में टकराने की धातुई ध्वनि चारों ओर गूंज रही थी, तभी कालिदास और अंगामित्र संसप्तकों के हथियारों और अन्य उपकरणों के भंडारण के लिए बने एक बाहरी कक्ष की ओर बढ़े। जब वे ध्वनि की गूंज से काफी दूर चले गए, तो सेनापति ने कालिदास की ओर प्रश्नवाचक स्वर में भौं उठाई।
"क्या सब ठीक है, कमांडर?"
“जी हां, बिल्कुल,” उस विशालकाय व्यक्ति ने अपने सहायक के चेहरे की ओर देखा और उस पर स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही चिंता को गौर से देखा। “तुम क्यों पूछ रहे हो?”
अंगामित्रा ने कंधे के ऊपर अंगूठा हिलाते हुए कहा, "वहाँ जो कुछ हुआ, एक पल के लिए तो मुझे लगा कि तुम उस लड़के को मार डालोगे।"
“बिल्कुल नहीं,” कालिदास ने सिर पीछे करके हँसते हुए कहा, उनकी आवाज़ उन्हें खुद भी कर्कश और बनावटी लगी। ठंडे पसीने से तरबतर होकर, वे हल्के से काँप उठे और चुपके से अपनी हथेली अपनी जांघ पर फेर ली। “यह तो बस अभ्यास था। मैं… लड़के को थोड़ा चुनौती देना चाहता था।”
“सेनापति, उसे मृत्यु शपथ लिए हुए अभी एक साल से थोड़ा अधिक समय हुआ है। वह अभी भी अनुभवहीन है।” अंगमित्र ने अपनी बात जारी रखने से पहले यह देखने के लिए कुछ देर रुका कि उसके शब्द कैसे समझे जा रहे हैं। “अनुभवी संसप्तक भी आपके द्वारा उस पर किए गए हमलों और प्रहारों का सामना करने में संघर्ष करते। अगर वह अपने आधे कौशल का योद्धा न होता, तो वह यहाँ से ज़िंदा नहीं निकल पाता।”
“मुझे एहसास नहीं था कि मैं उस बच्चे को इतनी जोर से दौड़ा रहा था,” उस विशालकाय व्यक्ति ने लंबे विराम के बाद कहा। “मुझे लगता है कि मुझे उसे उस चोट के लिए माफी मांगनी चाहिए।”

“अरे, चिंता मत करो, वह इसे जीवन भर गर्व से पहनेगा,” अंगामित्रा ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया। “कितने संसप्तक कालिदास द्वारा दिए गए इस निशान पर गर्व कर सकते हैं?”
थोड़ी देर रुकने के बाद उन्होंने कहा, “मुझे उसकी चिंता नहीं है। वह ठीक हो जाएगा। मुझे आपकी ज्यादा चिंता है, कमांडर।”
“मैं? मैं ठीक हूँ।” अपने सहपाठी की आँखों में भाईचारा देखकर कालिदास मुस्कुराए और उनके कंधे पर थपथपाया। “सचमुच, मैं ठीक हूँ।”
हालांकि, कुछ देर बाद जब पार्षद प्रशिक्षण मैदान से निकलकर अपने घोड़े को ढूंढने के लिए अस्तबल की ओर बढ़ा, तो उसे इस बात का कोई भ्रम नहीं था कि सब कुछ ठीक है। उसका चेहरा तनावग्रस्त था, मुट्ठियाँ कसकर बंद थीं, और वह अपने भीतर भय और निराशा को बढ़ता हुआ महसूस कर रहा था।
अपने विचारों को आने दें और उन्हें स्वीकार करें। जो आपका है उसे वापस अपने पास आने दें, ताकि आप फिर से पूर्ण हो सकें।
समस्या यह थी कि वह पूर्ण नहीं हो रहा था, बल्कि बिखर रहा था। और कुछ क्षण पहले ही उसने एक निर्दोष संसप्तक की जान लेने की कोशिश की थी।
अपने घोड़े की ओर बढ़ते हुए, कालिदास को पिछली शाम देवी ओरेकल द्वारा कही गई बातें याद आने लगीं।
उस भविष्यवक्ता ने स्पष्ट रूप से कहा था कि वह उसके सपनों का अर्थ समझाने में मदद नहीं कर पाएगी। उसने समझाया था, "मैं संकेतों को पढ़कर भविष्य बताने वाली हूं, सपनों की व्याख्या करने वाली नहीं।" फिर, जब उसने यह स्वीकार किया कि उसे डर है कि वह अपना मानसिक संतुलन खो रहा है, तो उस बूढ़ी औरत ने अपने शब्दों से उसे चौंका दिया।
“मुझे लगता है कि इसका उल्टा सच हो सकता है,” भविष्यवक्ता की बूढ़ी आँखों ने उसे स्थिर निगाहों से देखा। “मैं इस विषय का विशेषज्ञ नहीं हूँ, लेकिन हो सकता है कि तुम वास्तव में अपना दिमाग – या यों कहें, अपनी स्मृति – वापस पा रहे हो।”
इस संभावना ने उसे बेचैन कर दिया था। उसने यह मान लिया था कि वह अपने अतीत के बारे में कभी नहीं जान पाएगा – कि काली मंदिर में अवंती के सैनिकों द्वारा छिपाए जाने से पहले उसके साथ जो कुछ भी हुआ था, वह हमेशा रहस्य में

डूबा रहेगा। उसने अपने जीवन में आए खालीपन को स्वीकार कर लिया था और उससे समझौता कर लिया था, इस ज्ञान से आश्वस्त था कि जो कुछ उसे याद था – महल में बिताया उसका बचपन, विक्रमादित्य के साथ दोस्ती का बंधन – उसके दिनों को रोशन करता था।
काली मंदिर से पहले के अपने जीवन के बारे में अनजान रहकर वह खुश था। लेकिन अब, अगर देवी ओरेकल की भविष्यवाणी सही थी, तो वह जीवन दरवाजे की दरार से अपना रास्ता बना रहा था। एक ऐसी दरार जिसके अस्तित्व से वह अनभिज्ञ था। “जो कुछ तुम देखते हो, उसका विरोध न करना सीखो,” भविष्यवक्ता ने उसके विदा लेते समय पुकारा था। “दर्शनों को अपने पास आने दो और उन्हें स्वीकार करो। जो तुम्हारा है, उसे अपने पास लौटने दो, ताकि तुम फिर से पूर्ण हो सको।”
उस रात के बाद से, उसने उस बूढ़ी औरत की सलाह मानी थी, न तो लड़ाई की, न ही विरोध किया, बल्कि उन दृश्यों को बार-बार अपने मन में चलने दिया, एक अंतहीन, लुभावना चक्र जो प्रकट करने से कहीं अधिक छुपाता था। कालिदास को एहसास हुआ कि उस बंद दरवाजे के पीछे और भी बहुत कुछ है। और भी दृश्य, और भी जानकारी, और भी अतीत – ज़ोर से धक्का देते हुए, दरार से बाहर निकलने की कोशिश करते हुए, दरवाजे को तोड़कर खोलने की कोशिश करते हुए। वह इंतज़ार करने के लिए तैयार था, लेकिन प्रशिक्षण मैदान में जो कुछ हुआ था उसके बाद नहीं।
दरवाजे के इस तरफ जो कुछ हो रहा था, वह उसे पागल कर रहा था। उस तरफ क्या है, यह जानने की तीव्र इच्छा उसे अंधा बना रही थी। उसके आसपास जो कुछ हो रहा था, उससे वह बेखबर था, और दूसरों को पहुंचाए जा रहे संभावित दर्द से भी बेखबर था।
वह इस बात को स्वीकार नहीं करेगा।
अपने घोड़े की छाती और कंधों पर पट्टियों और बकलों को कसते हुए, उस विशालकाय ने फैसला किया कि उसे कुछ करना ही होगा। अगर धनवंतरी और देवी ओरेकल उसके लिए दृष्टियों का समाधान नहीं कर पाईं, तो उसे कहीं और से सहायता लेनी पड़ेगी।
सौभाग्य से, वह जानता था कि मदद के लिए किससे संपर्क करना है - एक ऐसा व्यक्ति जो खोई हुई यादों को जगाने में माहिर साबित हुआ था।

* * *

द्वारका जाने वाली सड़क घाटी में उतरते ही वरारुचि ने निष्कर्ष निकाला कि इतने वर्षों में रायवता शहर में कोई बदलाव नहीं आया था। यह अब भी वैसा ही शांत दिखता था, घाटी की तलहटी में धान और बाजरे के हरे-भरे खेतों के बीच बसा हुआ, तीन तरफ से ऊँची दीवार से घिरा हुआ और चौथी तरफ रायवता पर्वत से सटा हुआ, जिससे शहर का नाम पड़ा था। शहर हमेशा से उसे शांत और सौम्य प्रतीत होता था, और अब भी, पहाड़ की ढलान पर एक चौथाई दूरी पर स्थित मुखिया मणिधरा के निवास पर सुबह की ठंडी हवा में लहराते शहर के झंडे को देखकर उसे एक सुखद शांति का अनुभव होता था।
"जब से मुझे याद है, यह जगह वैसी ही बनी हुई है, महाराज," वरारुचि के कंधे के पास एक कर्कश आवाज आई, जिससे वह चौंक गए।
पीछे मुड़कर देखने पर पार्षद ने उदयसंग को रैवत की ओर देखते हुए पाया। बलिष्ठ शरीर वाले और शायद कालिदास से कुछ ही छोटे कद के संसप्तक रैवत का चेहरा बड़ा था, जिस पर उनकी विशाल मूंछें समाई हुई थीं जो उनके गालों तक फैली हुई थीं। उन्होंने करीने से संवारी हुई दाढ़ी भी रखी हुई थी जो ठुड्डी के नीचे एक नुकीले सिरे पर समाप्त होती थी।
उदयसांगा ने आगे कहा, "एकमात्र नई चीज़ जो जोड़ी गई है, वह है दीवार।" "मुझे अक्सर ऐसा लगता है कि रायवाता में समय थम सा जाता है।"
हालांकि, कस्बे की शांति जल्द ही भंग हो गई। जैसे ही वरारुचि और संसप्तकों का छोटा समूह घाटी की तलहटी में उतर रहा था, रैवता का मुख्य द्वार खुला और तीन सौ से अधिक कवचधारी घुड़सवार बाहर निकले। कस्बे का झंडा लिए हुए घुड़सवार जल्दी से इकट्ठा हुए और द्वारका की ओर पश्चिम दिशा में चल पड़े। जब वरारुचि के दल ने द्वार पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई, तो शहर के रक्षकों ने भी घुड़सवारों की तरह ही तत्परता दिखाई। बिना किसी पूर्व सूचना के द्वार खोल दिया गया, और जबकि शेष संसप्तकों को स्नान और नाश्ते के लिए बैरक में ले जाया गया, वरारुचि और उदयसांग को सीधे मणिधरा ले जाया गया। “वरारुचि, मेरे दोस्त, आपका स्वागत है,” मणिधरा ने पार्षद को गले लगाने के लिए अपनी बाहें फैला दीं। “इतने वर्षों बाद आपसे मिलकर बहुत अच्छा लगा।

काश हमारे पास और कोई ज़रूरी काम न होता – तो हम सोमा पीते हुए देर रात तक संगीत पर चर्चा कर सकते थे।”
"आप मुझे वचन देते हैं कि शांति स्थापित होने के बाद मैं इसके लिए भी समय निकालूंगा, मुखिया," वरारुची ने गले लगने के बाद गर्मजोशी से जवाब दिया। “और तुम – मुझे याद है तुम,” मणिधरा ने उदयसांग की ओर उंगली हिलाते हुए सख्ती से कहा। “तुम वही हो जिसने उन पाँच आदमियों को लगभग मार ही डाला था जिन्होंने उस रात शहर में डेरा डाले हुए हाथीदांत के काफिले में घुसने की कोशिश की थी, है ना? मुझे याद है तुमने क्या गड़बड़ की थी। तो ये क्या – अवंती तुम्हें इसके लिए सैनिक बनाकर इनाम दे रही है?”
उनके शब्दों की गंभीरता के बावजूद, उनकी आवाज में एक हल्की सी चंचलता झलक रही थी।
“मुझे एहसास हुआ कि जब तक मैं वर्दी पहने रहूंगा, मुझे लड़ाई-झगड़े करने और लोगों के सिर फोड़ने के लिए कोई सजा नहीं मिलेगी, मुखिया,” संसप्तक ने मुस्कुराते हुए कहा। “लेकिन उस रात जो कुछ हुआ, उसके लिए मैं आपसे तहे दिल से माफी मांगता हूं।”
मणिधरा ने हाथ हिलाकर बात को टाल दिया और अपने मेहमानों को नाश्ते के लिए आमंत्रित किया। जैसे ही वे ताजे फलों, पैनकेक और ताजे, झागदार दूध से भरी मेज के चारों ओर बैठे, वरारुचि ने उदयसंगा को देखा।
"मुझे लगता है कि कस्बे के चारों ओर दीवार बनाने का कारण आप ही थे।" मणिधरा से एक प्याला ठंडा नारियल पानी लेते हुए, संसप्तक फिर मुस्कुराया। लेकिन दीवार का जिक्र होते ही, अनार्तों की पारंपरिक बहुरंगी पगड़ी के नीचे मुखिया का चौड़ा, गोरा चेहरा गंभीर हो गया।
वररुचि ने मुखिया के चेहरे के भावों में आए बदलाव को देखा। “जैसे ही हम पास आ रहे थे, हमने देखा कि घुड़सवार द्वारका के लिए रवाना हो रहे हैं। क्या हमें कुछ जानना चाहिए?”
“भोर होने से ठीक पहले हमें चचेरे भाई युगंधरा का संदेश मिला,” मणिधरा ने उत्तर दिया। “हूण जहाजों को देखा गया है।”

वरारुचि ने मुखिया को घूरकर देखा, उसके हाथ में पकड़ा प्याला होठों तक पहुँचने से पहले ही रुक गया था। संसप्तक से सतर्क निगाहें मिलाते हुए उसने पूछा, “कहाँ? द्वारका से कितनी दूर?”
"हमारे कुछ जहाजों ने कच्छा के खारे दलदल से कुछ मील उत्तर में लंगर डाले हुए उनके काले पाल देखे।"
“इसका मतलब है कि वे अभी भी कुछ दूरी पर हैं,” उदयसांगा ने टिप्पणी की। “जी हाँ, लेकिन यह खबर कल दोपहर की है,” मणिधरा ने अपने मेहमानों की ओर देखते हुए कहा। “अगर जहाज रवाना हो चुके हैं, तो हूण द्वारका से ज्यादा दूर नहीं होंगे। वास्तव में, वे शायद द्वारका पहुँच भी चुके हों। इसीलिए इतनी जल्दी है।”
“हमें तुरंत निकलना होगा,” वरारुचि ने प्याला खाली करते हुए कहा। द्वारका रायवता से लगभग एक दिन की दूरी पर था। एक पैनकेक उठाकर उसने उसे दो टुकड़ों में तोड़ा और एक टुकड़ा मुंह में डाल लिया। “आपने हमें पहले क्यों नहीं बताया, मुखिया जी? हम नाश्ता छोड़ कर सीधे आगे बढ़ सकते थे।”
“मेरे मित्र, युद्ध खाली पेट नहीं लड़े और न ही जीते जाते हैं,” मणिधरा ने खुद एक और पैनकेक लेते हुए और अपने मेहमानों की थालियों में एक-एक पैनकेक रखते हुए कहा। “अच्छी तरह खा लो, क्योंकि अगर हमारे पहुँचने तक हूण द्वारका पहुँच गए, तो पता नहीं अगली बार हमें भोजन कब मिलेगा।”
तीनों व्यक्ति भोजन करते समय कुछ देर तक चुप रहे।
“हूण लोग इस यात्रा के लिए कितने जहाजों का इस्तेमाल कर रहे हैं?” वरारुची ने पूछा।
"हमारे जहाजों ने गिनती करने के लिए रुककर नहीं देखा, लेकिन अनुमान है कि उनकी संख्या लगभग तीस या पैंतीस थी।"
“बस इतना ही?” पार्षद ने राहत की सांस ली। “सबसे पहले तो, यह सिर्फ एक अनुमान है,” मणिधरा ने जवाब दिया। “और अगर अनुमान सही भी है, तो हमें यह नहीं पता कि डार्क रिवर के मुहाने तक कितने और हूण जहाज़ दक्षिण की ओर रवाना होने के लिए तैयार खड़े हैं। आपकी भविष्यवक्ता ने हज़ार जहाज़ों की बात की थी, है ना?”

"हाँ, उसने किया, हालाँकि शायद यह कहने का एक तरीका था कि बहुत सारे लोग थे," वरारुची ने कहा।
फिर भी, अगर सिर्फ तीस जहाज़ हैं, तो वे तीसों ही लंबी नावें होंगी। मुखिया की आवाज़ में एक लहजा था, एक गंभीरता जिसने सलाहकार और संसप्तक को उनकी ओर देखने के लिए मजबूर कर दिया। "एक लंबी नाव आसानी से ढाई सौ आदमियों को ले जा सकती है।"
मणिधरा की उंगलियों ने मेज के किनारे को मजबूती से पकड़ लिया।
"इसका मतलब यह है कि मरुस्थली से कम से कम सात हजार पांच सौ निर्दयी बर्बर लोग बाहर मौजूद हैं, जो द्वारका पर हमला करने और उसे नष्ट करने के लिए पूरी तरह तैयार हैं।"

* * *

“विक्रमा, मेरी राय में हमारे पास कोई विकल्प नहीं है। राजा हरिहर हमारी बात मान चुके हैं। अब हमारी बारी है – और हमारे हित में भी है – कि हम रियायत दें।”
विक्रमादित्य ने सिर हिलाया, लेकिन उनकी आँखों में चिंता झलक रही थी क्योंकि वे दो मंजिल नीचे हरे-भरे आंगन की ओर देख रहे थे। सम्राट और राजगुरु एक निजी छत पर बैठे सुबह की धूप का आनंद ले रहे थे और दालचीनी मिले ताजे गन्ने के रस की चुस्कियाँ ले रहे थे।
“राजकुमारी का विवाह किसी राजा से कराने की उनकी इच्छा समझ में आती है। लेकिन मुझे यह समझ नहीं आता कि वे औपचारिक घोषणा पर इतना ज़ोर क्यों दे रहे हैं।” विक्रमादित्य ने मुख्य सलाहकार की ओर मुड़कर देखा। “क्या उन्हें लगता है कि शशिवर्धन राजा नहीं बनेंगे?”
“मुझे तो ऐसा ही लगा,” आचार्य ने कंधे उचकाते हुए कहा।
“हम यह बात राजा चंद्रवर्धन के सामने कैसे रखें? हम उनके पास जाकर यह तो कह ही नहीं सकते कि शशिवर्धन को वत्स का राजा बनाया जाए।” सम्राट के लहजे से साफ पता चल रहा था कि उन्हें यह सारा मामला बेहद अप्रिय लग रहा था।
“इसके लिए सूझबूझ की जरूरत होगी,” वेताला भट्टा ने स्वीकार किया। “मुझे यह भी नहीं पता कि राजा चंद्रवर्धन इस मामले पर चर्चा करने के लिए स्वस्थ हैं

या नहीं। शायद सबसे पहले पार्षद यशोभावी और मंत्रिपरिषद के बाकी सदस्यों को मनाना और राजी करना जरूरी होगा।”
सम्राट ने कुछ नहीं कहा, वह मुंडेर पर झुककर, नाखुशी से अहाते हुए आंगन की ओर देखने लगा।
“मुझे पता है इससे आपको बहुत असहजता हो रही है, विक्रम,” राजगुरु आगे बढ़े और राजा के कंधे पर सहानुभूति भरा हाथ रखा। “लेकिन मैंने हरिहर से कह दिया है कि हम इस मामले में आपकी सहायता करेंगे। उनसे कुछ पाने के लिए मुझे बदले में उन्हें कुछ देना होगा।”
“राजगुरु जी, मैं इसकी सराहना करता हूँ। आपने उस अवसर की मांग के अनुसार कार्य किया। हमेशा की तरह, आप केवल अवंती के हितों का ध्यान रखते हैं।” विक्रमादित्य कुछ देर रुके। “हमें वत्सा में किसी को कब तक भेजना होगा?” “जितनी जल्दी हो सके। बात यह है कि मेरे महिष्मती पहुँचने से पहले ही हरिहारा ने रुक्मा का प्रस्ताव शूरसेना के दरबार में भेज दिया था।” वेताल भट्ट ने सम्राट को अर्थपूर्ण दृष्टि से देखा। “अगर शूरसेना मान जाते हैं – और मुझे उनके न मानने का कोई कारण नहीं दिखता – और शशिवर्धन के राज्याभिषेक की पुष्टि करने से पहले ही उनका जवाब हरिहारा तक पहुँच जाता है, तो हम दोनों जानते हैं कि हरिहारा क्या करेंगे।”
“ऐसी स्थिति में, किसी को बिना देरी किए कौशांबी के लिए रवाना हो जाना चाहिए।”
मैं अभी प्रस्थान की तैयारी करूंगा।
"नहीं राजगुरु, आप नहीं।"
“तो फिर कौन, विक्रम? वरारुचि तो यहाँ नहीं है। और अपने तमाम अनुभव के बावजूद, अमरा सिंह पर चतुराई से काम लेने के मामले में भरोसा नहीं किया जा सकता।”
विक्रमादित्य कुछ देर चुप रहे और सोचते हुए अपनी मूंछों को सहलाते रहे। “धनवंतरी,” उन्होंने कहा। “हम सब इस बात से सहमत हैं कि वह बुद्धि और वाक्पटुता के उस्ताद हैं। इसके अलावा, चंद्रवर्धन के दरबार में जाने का उनके पास एक बहुत अच्छा कारण है – राजा की बीमारी। यह यात्रा स्वाभाविक

लगेगी, और वह इस अवसर का उपयोग वत्स में सभी को शशिवर्धन को वत्स का अगला राजा घोषित करने के लिए राजी करने में कर सकते हैं।”
“यह एक चतुर विचार है, लेकिन क्या होगा यदि हमें अचानक चिकित्सक की सेवाओं की आवश्यकता पड़ जाए?” वेताल भट्ट ने चेतावनी दी। “उज्जायिनी अब यह जोखिम नहीं उठा सकतीं – खासकर तब जब देवता और असुर अभी भी हलाहल की तलाश में हैं।”
“हमारे पास राजगुरु, वैद्य हैं,” राजा ने उत्साहपूर्वक कहा।
मुख्य पार्षद ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा, "मुझे अब भी लगता है कि धनवंतरी का यहाँ होना अच्छा रहेगा।"
“वह कितने समय के लिए जाएंगे – एक सप्ताह के लिए? मुझे यकीन है कि हम संभाल लेंगे। और जरूरत पड़ने पर कुंजाला और अन्य दरबारी चिकित्सक वैद्य की सहायता कर सकते हैं।”
आचार्य ने अनिच्छा से सिर झुकाया। “ठीक है, मैं धनवंतरी को संदेश भेज देता हूँ। अच्छा होगा यदि वह आज ही चला जाए।”

Dvarka

"तुम्हारा क्या मतलब है कि हमें युद्ध शुरू नहीं करना चाहिए?" देवों के स्वामी ने नारद को घूरते हुए कहा, उनकी ठंडी, नीली आँखों में क्रोध मुश्किल से समाया हुआ था।
“हमारे इस खूबसूरत शहर को देखो,” इंद्र ने उस बालकनी की रेलिंग पर हाथ रखते हुए कहा, जहाँ वे और राजनयिक खड़े थे। बालकनी महल के एक ऊंचे शिखर पर बनी थी और वहाँ से अमरावती का शानदार नज़ारा दिखता था, जो अब भी धुएँ के घने गुबारों से घिरा हुआ था। “इसे देखो, असुरों ने इसे अपवित्र और उजाड़ दिया है। इसे देखो, नारद। युद्ध शुरू हो चुका है। और इसे मैंने शुरू नहीं किया – हालाँकि इसे खत्म करने का मेरा पूरा इरादा है।”
“मैं आपसे पुनर्विचार करने का आग्रह करता हूँ, मेरे प्रभु। मेरी राय में…”
“पुनर्विचार करने की कोई आवश्यकता नहीं है,” इंद्र ने क्रोध से कांपते स्वर में कहा। “असुर हमें क्या समझते हैं—जंगल में रहने वाले हिरण जिन्हें वे अपनी मर्जी से शिकार कर सकते हैं? क्या हिरण्याक्ष सोचता है कि उसकी सेना देवलोक पर आक्रमण कर देगी और हम प्रतिशोध में कुछ नहीं करेंगे? अश्विनों, मरुतों और अग्नि-प्राणों को सूचित करो कि वे देव सेनाओं को युद्ध के लिए तैयार करें। किन्नर स्वामी त्रिभानु को संदेश भेजो—वे हमें

यथासंभव किन्नर सेना की टुकड़ियाँ प्रदान करें। और तक्षक को बुलाओ। उसे बताओ कि देवलोक को नागों की सहायता की आवश्यकता है। शीघ्रता करो। जितनी जल्दी हम तैयार होंगे, उतनी जल्दी हम पाताल लोक के लिए प्रस्थान कर सकेंगे।”
“यदि हम पाताल के लिए रवाना होते हैं, तो हम सीधे शुक्राचार्य के जाल में फंस जाएंगे, महाराज। यही तो वह हमसे चाहते हैं।”
देवताओं के स्वामी ने राजनयिक को संदेह भरी निगाहों से देखा। "शुक्राचार्य चाहते हैं कि हम पाताल पर हमला करें?"
“बिल्कुल नहीं, लेकिन उसका इरादा हमें हलाहल से विचलित रखना है,” नारद ने उत्तर दिया। “अमरावती पर आक्रमण का यही एकमात्र उद्देश्य था।”
इंद्र के चेहरे पर असमंजस देखकर राजनयिक ने सिर हिलाया। “हमला बेहद क्रूर था, और हम पूरी तरह से घिरे हुए थे, महाराज। फिर भी, लड़ाई आधी रात से भी कम समय तक चली, और असुर जितनी अप्रत्याशित रूप से आए थे, उतनी ही अप्रत्याशित रूप से चले गए। उन्होंने हमें घेर लिया था, लेकिन इस स्थिति का पूरा फायदा उठाने के बजाय, उन्होंने न तो यहाँ और न ही देवलोक में कहीं और किसी क्षेत्र पर कब्ज़ा करने की कोशिश की। इतने विस्तृत और प्रभावी हमले के बाद अपनी मजबूत स्थिति को क्यों छोड़ना चाहिए, महाराज? ऐसे हमले का क्या उद्देश्य होता?”
"इससे हमारा ध्यान वीषाद के खंजर के अलावा अन्य चीजों में लगा रहेगा," इंद्र को धीरे-धीरे यह बात समझ में आई।
“बिल्कुल सही। हम अपना समय व्यालों की चिंता में या प्रतिशोध की योजना बनाने में व्यतीत करेंगे।” नारद ने सिर हिलाया। “हे प्रभु, हम इन बातों में समय नहीं लगा सकते। हमारी प्राथमिक चिंता कटार है – इसे प्राप्त करने के बाद हम जितना चाहें उतना बदला ले सकते हैं। लेकिन यदि हम अभी पाताल पर युद्ध छेड़ने पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो हलाहल पर अधिकार प्राप्त करने के हमारे प्रयास कमजोर पड़ जाएंगे, और शुक्राचार्य अपनी इच्छा पूरी कर लेंगे।”
“तो फिर हम कुछ नहीं करेंगे – असुरों ने इतना कहर बरपाया है?” यह विचार स्पष्ट रूप से इंद्र को आहत कर गया।

“हे स्वामी, मेरा सुझाव है कि हम असुरों के साथ संधि कर लें।”
“क्या?” इंद्र की आँखें फटी रह गईं और उन्होंने नारद को घूरते हुए कहा, उन्हें अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था। “यह कैसी बेतुकी बात है!” उन्होंने गुस्से में हाथ हवा में उछाल दिए। “वे मेरे शहर पर हमला करके उसे जलाकर राख कर देते हैं, और आप मुझसे उनसे समझौता करने की उम्मीद करते हैं? क्या आप पागल हो गए हैं?”
“यह सुनिश्चित करने का एक तरीका है कि हम किसी और असुर हमले से विचलित न हों, मेरे स्वामी,” नारद ने अपना स्वर शांत और स्थिर रखा।
“देव कब से इतने कमजोर हो गए हैं कि असुरों के हमलों से अपना बचाव करने में असमर्थ हैं? तुम ऐसे बोलते हो जैसे हम उनसे जानलेवा डर में जीते हों। क्या तुम भूल गए हो कि मैं शक्तिशाली वज्र धारण करता हूँ?” इंद्र ने तिरस्कारपूर्वक शहर की ओर मुँह फेर लिया और अपने हाथ पीछे बाँध लिए। उन्होंने अपना सिर हिलाया, उनके होंठ तिरछे होकर घृणा से भर आए। “नारद, तुमने मुझे निराश किया है। बुढ़ापे में कायरता तुम पर हावी हो गई है और…” “हे स्वामी, असुरों के साथ संधि करना भय या कमजोरी का संकेत नहीं है। यह हमें समय दिलाने का एक साधन है। और असुरों पर कड़ी नजर रखने का एक तरीका है ताकि हम जान सकें कि वे क्या कर रहे हैं।”
“हिरण्याक्ष और शुक्राचार्य संधि के विचार पर क्यों गौर करेंगे?” इंद्र के होंठ तिरस्कार से टेढ़े हो गए। “क्या वे इतने मूर्ख हैं कि हमारे इरादों को नहीं समझ पा रहे?”
“देव और असुर दोनों का एक ही शत्रु है - वह विद्रोही मानव राजा, और उनका एक ही उद्देश्य है - राजा को हराना। विक्रमादित्य ने हम दोनों को ही विफल कर दिया है। आपस में लड़ने के बजाय, दोनों पक्षों के हित में यही है कि वे मिलकर उसके विरुद्ध संघर्ष करें।”
“क्या आप यह कह रहे हैं कि मानव राजा को हराने का कोई और तरीका नहीं है?” इंद्र ने नारद की ओर पलकें झपकाते हुए पूछा।
“मुझे लगता है कि दोनों पक्ष यह समझते हैं कि सर्वज्ञ ईश्वर ने सही चुनाव किया है, और मानव राजा आसानी से किसी के सामने नहीं झुकेगा,” राजनयिक ने

कंधे उचकाते हुए कहा। “इन परिस्थितियों में, मुझे लगता है कि हिरण्यक्ष को देवताओं और असुरों के एक होने में ही समझदारी नज़र आएगी।”
हल्की बूंदा-बांदी शुरू हो गई थी, जिससे अमरावती पर पहले से ही धुंधली दोपहर और भी धुंधली हो गई थी। इंद्र सुई जैसी बूंदों को गिरते हुए देख रहे थे और साथ ही राजनयिक के तर्क पर विचार कर रहे थे।
“भले ही हिरण्याक्ष संधि के लिए सहमत हो जाए, मैं वैषद के खंजर को खोजने और उसे हासिल करने के अपने प्रयासों को छोड़ने से इनकार करता हूँ,” देवताओं के स्वामी ने दृढ़ता से कहा।
“जी हां, महाराज। और हमें पूरा यकीन है कि असुर भी ऐसा ही सोचेंगे। इस संधि का एकमात्र उद्देश्य एक-दूसरे को रास्ते से हटाना है, जबकि हम मानव राजा का पतन सुनिश्चित करेंगे।”

* * *

“हे देव, मुझे इन रस्सियों से मुक्त कर दीजिए। मैंने आपका आदेश मान लिया है। कृपया एक बूढ़ी किन्नर पर थोड़ी दया कीजिए।”
जयंता ने उन दयनीय शब्दों को अनसुना कर दिया, और ठंडे और उदासीन भाव से उज्जैनी को देखते हुए उनसे मुंह फेर लिया। जैसे-जैसे गोधूलि बेला मैदान में छा रही थी, शहर की बत्तियाँ टिमटिमा रही थीं और बढ़ती जा रही थीं। हालाँकि जिस पहाड़ी पर वह खड़ा था, वह उज्जैनी की दीवारों से बहुत दूर थी, फिर भी राजकुमार इतनी दूरी से भी महल को देख सकता था, जो जगमगाती झील के बीचोंबीच एक प्रकाशमान चमक की तरह दिख रहा था। अधिकांश लोगों के लिए, ऐसा मनमोहक दृश्य अत्यंत आकर्षक होता, लेकिन जयंता के उदास और गंभीर मन पर उस क्षण की सुंदरता का कोई प्रभाव नहीं पड़ा।
राजकुमार जानता था कि वह जो कार्य करने जा रहा है वह जोखिम भरा है और उसकी सारी ऊर्जा उसमें लग जाएगी। फिर भी, उसे इस बात से संतोष था कि अंत में वह उन सभी को सबक सिखा देगा जिन्होंने उसका उपहास किया था और उसे तुच्छ समझा था। अही उसके आसपास के सभी लोगों से उसका बदला था - और इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था कि उस बदले का अर्थ उस शहर का विनाश हो जो अब उसके सामने मैदान में फैला हुआ था। एक दयनीय मानव नगर उसके पिता से मिलने वाली शाश्वत प्रशंसा और कृतज्ञता के सामने कुछ भी नहीं था।

“इंद्रपुत्र, मैंने ऐसा क्या किया है कि मुझे ऐसा बर्ताव सहना पड़ रहा है?” दर्द भरी आवाज़ गूंजती रही। “क्या मैंने अपना वचन नहीं निभाया? क्या मैंने वादा करके तुम्हें मनुष्यों की भूमि पर नहीं पहुँचाया? क्या तुम मुझे इतना दूर लाने का जोखिम उठाने के बदले यही इनाम दे रहे हो?” झुंझलाहट भरी आह भरते हुए जयंता ने वक्ता की ओर मुड़कर देखा, जो एक ऐसा किन्नर था जिसका सिर और धड़ मनुष्य का तथा पिछला भाग घोड़े का था। किन्नर के सिर पर बिखरे हुए भूरे बाल थे, और ठुड्डी पर बिखरी हुई भूरी दाढ़ी थी। उसका शरीर और भुजाएँ दुबली-पतली थीं, उसकी पसलियाँ उसकी सिकुड़ी हुई, पीली पड़ चुकी छाती से बाहर निकली हुई थीं, और उसका चेहरा मुरझाया हुआ था, आँखें बूढ़ी, रंगहीन और थकी हुई थीं। फिर भी, उसके चारों घोड़े जैसे पैर लंबे और मजबूत थे, और उसकी पीठ, पेट और बगल को ढकने वाला भूरा रंग जवानी और जोश से चमक रहा था। किन्नर की कलाइयाँ और अगले पैर मजबूत रस्सियों से कसकर बंधे हुए थे, और एक रस्सी उसकी गर्दन के चारों ओर भी थी, जिससे वह जानवर पास के एक पेड़ के तने से बंधा हुआ था।
“किन्नर, तुम्हें शायद यह इनाम न लगे, और ऐसा होना स्वाभाविक भी है,” जयंता ने चिढ़कर जवाब दिया। “लेकिन यकीन मानो, यह कोई सज़ा भी नहीं है। यह तो बस एक एहतियाती कदम है ताकि जब तुम्हारा मन करे तो तुम अकेले भाग न जाओ।” “मैं ऐसा क्यों करूँगा, देव?” सेंटॉर ने विरोध किया। “मैंने आपको वचन दिया है कि मैं आपको देवलोक वापस ले जाऊँगा, और आप अच्छी तरह जानते हैं कि किन्नर अपने वचन का बहुत महत्व रखता है।”
“मुझे न तो तुम्हारी बातों पर शक है और न ही तुम्हारे इरादों पर। मुझे तुम्हारी सहज प्रवृत्ति पर संदेह है, जब तुम डर का सामना करती हो।” डर शब्द सुनकर किन्नर के चेहरे पर आई उलझन को देखकर राजकुमार ने आगे कहा, “लेकिन मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि तुम जो कुछ भी देखो या सुनो, तुम्हें डरने की कोई ज़रूरत नहीं है। जब तक तुम मेरे साथ हो, तुम सुरक्षित हो।” “किससे सुरक्षित?”
“मुझे खुद नहीं पता,” जयंता ने कंधे उचकाते हुए उज्जायिनी की ओर देखा, जो अब नीचे अंधेरे में रोशनी के छोटे-छोटे बिंदुओं के अलावा कुछ नहीं थी। “लेकिन हमें जल्द ही पता चल जाएगा।”

“तुम… तुम्हारा इरादा उस शहर को नुकसान पहुँचाने का तो नहीं है?” राजकुमार के शब्दों में छिपे अर्थ को समझते ही किन्नर की आवाज़ घबराहट से तेज़ हो गई। जब जयंता ने कोई जवाब नहीं दिया, तो सेंटॉर और भी ज़्यादा उत्तेजित हो गया। “तुमने मुझे बताया था कि तुम्हें देवताओं के स्वामी की ओर से एक गुप्त संदेश पहुँचाने के लिए यहाँ आना है। इसीलिए मैं तुम्हें यहाँ लाने के लिए राज़ी हुआ।”
“मुझसे यह उम्मीद मत करो कि मैं तुम्हारी बातों में आ जाऊँगा,” राजकुमार ने व्यंग्य करते हुए उस अनोखे जानवर को तीखी निगाहों से घूरा। “तुम मुझे यहाँ इसलिए लाए हो क्योंकि मैंने तुम्हें अमरावती में एक आलीशान महल और राज दरबार में विशेष अधिकार देने का वादा किया था। मुझे मूर्ख मत समझो, किन्नर। अब ये सब करना बंद करो और सोचो कि उस महल और उन विशेष अधिकारों को पाने के लिए तुम्हें क्या करना चाहिए। इससे तुम्हारा ध्यान दूसरी बातों से हट जाएगा।”
जयंता अपनी एड़ी पर घूमा और उस टिमटिमाती रोशनी के आयताकार घेरे की ओर बढ़ा, जो उस पुराने, वीरान लकड़हारे की झोपड़ी के प्रवेश द्वार को चिह्नित कर रही थी, जिस पर वह और किन्नर दोपहर में संयोगवश नज़र पड़े थे। झोपड़ी जर्जर थी, लेकिन राजकुमार के उद्देश्य के लिए बिल्कुल उपयुक्त थी। यह एकांत में, कंटीले पेड़ों के बीच छिपी हुई थी, फिर भी यहाँ से उज्जैन का मनोरम दृश्य दिखाई देता था - शहर के विनाश की निगरानी और योजना बनाने के लिए अही के लिए एक आदर्श स्थान।
चौकोर, बिना खिड़की वाली झोपड़ी के अंदर, मिट्टी की ईंटों से बने फर्श पर एक खाली जगह पर, कोयले, आटे और सिंदूर का उपयोग करके एक विशाल मंडल बनाया गया था। फर्श पर एक विशेष पैटर्न में सजे सात दीपक झोपड़ी को रोशन कर रहे थे, जिनकी रोशनी मंडल की रूपरेखा पर पड़ रही थी, जिससे अपनी ही पूंछ को निगलते हुए एक सांप की धुंधली आकृति दिखाई दे रही थी। मंडल के बीच में ताड़ के पत्तों का एक छोटा सा ढेर था, जिसके बगल में पानी से भरा एक भारी, चौड़े किनारे वाला तांबे का कटोरा रखा था।
राजकुमार मंडल के पास पहुंचा, उसकी रेखाओं को मिटने से बचाने के लिए सावधानी से कदम रखते हुए। ताड़ के पत्तों के पास बैठकर उसने अपने थैले से एक छोटा चाकू और एक नींबू निकाला। मंत्रों का जाप करते हुए, उसने पहले

नींबू को आधा काटा और उसके रस की सात बूंदें पानी के कटोरे में निचोड़ीं। फिर, चाकू से उसने अपने दाहिने अंगूठे पर एक चीरा लगाया, जिससे खून बहने लगा।
तांबे के कटोरे पर अंगूठा रखकर जयंता ने अपने रक्त की सात बूंदें पानी में बहने दीं और घुलने दीं। चूने, रक्त और पानी को मिलाकर घोल तैयार किया और उसमें से कुछ बूंदें सातों दीपों में डालीं। जैसे ही घोल तेल में मिला और आग पकड़ी, दीपों का रंग सुनहरे पीले से बदलकर धधकते लाल रंग का हो गया और वे और भी अधिक तीव्रता से जलने लगे।
जयंता मंडल के केंद्र में लौटकर बैठ गया और अपने पैरों को मोड़कर बैठ गया। उसने कटोरा अपने सामने रखा और ताड़ के पत्तों को छूते हुए एक गहरी, रहस्यमयी मुस्कान बिखेरी, जो एक निर्दयी, क्षमा न करने वाली दुनिया के प्रति घृणा, क्रोध और प्रतिशोध से भरी थी।

* * *

द्वारका जल रहा था।
फिर भी, शहर के रक्षक भयभीत और असहाय होकर केवल खड़े होकर देखते रहे, क्योंकि हूण जहाजों ने उन पर लगातार आग के गोले बरसाए।
चौदह संसप्तकों सहित सौ घुड़सवारों के दल का नेतृत्व करते हुए वरारुचि और मणिधरा ने संध्याकाल के आसपास पश्चिमी क्षितिज पर एक हल्की लालिमा देखी, लेकिन दोनों ने शुरू में इसे सूर्यास्त के बाद की देर तक रहने वाली चमक समझा। जब वह चमक लगातार बनी रही - स्पंदित होती हुई और अधिक स्पष्ट होती हुई, रात के आकाश में ऊँचाई पर फैलती हुई - तब रैवता से आ रहे योद्धाओं ने वास्तव में उसे देखा।
एक घंटे की घुड़सवारी के बाद जब द्वारका नज़र आया, तब तक शहर के तटवर्ती इलाकों का बड़ा हिस्सा आग की लपटों में घिर चुका था और छतों से धुएं के घने गुबार उठ रहे थे। पूर्वी द्वार के पास पहुँचते ही, जो बंदरगाह को सिंधुवार्ता के बाकी हिस्सों से जोड़ता था, घुड़सवारों ने देखा कि नागरिक दहशत में शहर छोड़कर आसपास के ग्रामीण इलाकों की ओर भागने लगे थे।

“हम बहुत देर हो चुके हैं,” मणिधरा ने स्वाभाविक आक्रोश के साथ चिल्लाते हुए अपने घोड़े पर एड़ी जमाई और गति बढ़ा दी। “तेज़ चलो, साथियों… तेज़। द्वारका को हमारी ज़रूरत है।”
शहर में प्रवेश करने की उनकी योजना चल रहे निकासी अभियान के कारण धीमी पड़ गई थी, और यद्यपि इससे मणिधरा को गुस्सा आया और वे परेशान हुए, पर बाद में देखा जाए तो इस देरी के कुछ फायदे भी थे। एक तो, सौ से अधिक घुड़सवारों का अचानक शहर के द्वारों से अंदर आ जाना द्वारका के रक्षकों को भ्रमित कर सकता था और वे उन्हें हूण घुड़सवार समझ सकते थे – यह एक ऐसी गलतफहमी थी जिसे टाला जा सकता था और जिसके संभावित रूप से विनाशकारी परिणाम हो सकते थे। देरी का दूसरा लाभ यह था कि वरारुचि और मणिधरा को शहर के एक रक्षक से पता चला कि द्वारका पर आक्रमण के दौरान हूण सेना अभी भी समुद्र में थी और उसने अभी तक जमीन पर कदम नहीं रखा था – इसलिए जल्दी करने की आवश्यकता होने के बावजूद, उनके पास युगंधरा से परामर्श करने का समय था।
तीसरा और संभवतः सबसे बड़ा फायदा यह था कि जल्दबाजी में वे गलती से धुएं से भरी किसी गलत गली में चले गए होंगे और दम घुटने से उनकी मौत हो गई होगी। “आग की तरह ही धुएं के बादल भी भारी तबाही मचा रहे हैं,” युगंधरा ने चिंता से भरी निगाहों से तट और खाड़ी पर नज़रें घुमाते हुए कहा, फिर उनकी नज़रें वरारुचि पर टिक गईं। “आखिरी गिनती के अनुसार अठारह लोग मर चुके हैं। ईश्वर ही जाने कितने और लोग धुएं में फंसे हुए हैं, मर चुके हैं या मरने की कगार पर हैं।”
द्वारका के घाटों और गोदियों के उत्तर में थोड़ी दूर स्थित एक छोटी पहाड़ी पर युद्ध परिषद एकत्रित हुई थी, जिसका अधिकांश भाग पहले से ही आग की चपेट में था। यह स्थान हवा की दिशा के विपरीत और तट से इतनी दूरी पर था कि गर्मी और धुआँ उन पर असर न डाल सके, फिर भी युगंधरा और उनके सेनापतियों के लिए कार्रवाई की निगरानी करने और द्वारका के सैनिकों को त्वरित निर्देश जारी करने के लिए पर्याप्त रूप से निकट था।
“उन भयानक अग्नि-गोलों में क्या है?” मणिधरा ने द्वारका से गुज़रते समय उन पर आई उस तीखी और चुभने वाली गंध को याद करके नाक सिकोड़ते हुए पूछा। अब भी, हवा के बदलते ही, वह दुर्गंध उनकी नाक तक पहुँच जाती थी, अपने रूप और इरादे में ही घिनौनी।

“मुझे कुछ पता नहीं, लेकिन जो भी इनमें भरा है, वह मेरे शहर को आग लगाकर और धुआं उड़ाकर राख करने का काम बखूबी कर रहा है,” युगंधरा का सुंदर चेहरा पीला पड़ गया जब उसने सैनिकों और नगरवासियों के छोटे-छोटे समूहों को आग बुझाने के लिए संघर्ष करते देखा।
हर गली में, यह एक व्यर्थ और असमान लड़ाई थी, क्योंकि आग के गोलों की लगातार बौछार खाड़ी पार करके शहर में गिर रही थी, जिससे हर जगह आग लग रही थी और रक्षकों को तितर-बितर होकर पीछे हटना पड़ रहा था। दर्द और भय की चीखें भयावह रूप से तेज़ होती जा रही थीं, और शहर धीरे-धीरे इस हमले के आगे ढहता जा रहा था।
“मुझे तेल और सल्फर की गंध आ रही है,” उदयसांगा ने अपना सिर उठाकर हवा को सूंघते हुए कहा। “और कुछ और भी है जिसे मैं ठीक से पहचान नहीं पा रहा हूँ।” “सरसों,” वरारुची ने बताया। “रसोई के बीज जलाने से निकलने वाला धुआँ हर किसी को रसोई में काम करते समय पता होता है कि यह कितना कष्टदायक होता है। अगर इसका इस्तेमाल बहुत अधिक मात्रा में किया जाए, तो यही धुआँ बेहद विषैला हो सकता है। दक्षिणी राज्यों में इसे कभी-कभी आत्माओं को भस्म करने वाला कोहरा भी कहा जाता है।”
“मुझे आश्चर्य है कि वे जहाज के डेक से अग्निकांतक का उपयोग कर रहे हैं,” मणिधरा ने समुद्र के अंधेरे में एकत्रित रोशनी को देखते हुए कहा, जो युगंधरा के अनुसार, हूणों के जहाजों के एक समूह को चिह्नित कर रही थी। “इन बर्बरों को ये तरकीबें किसने सिखाईं? मुझे लगा था कि वे नाव चलाना भी नहीं जानते।”
युगंधरा के सेनापतियों में से एक ने गंभीर भाव से कहा, "हमारा मानना है कि उन जहाजों पर एक नहीं बल्कि दो अग्निकांतक हैं।"
“हमने अब तक क्या जवाबी कार्रवाई की है?” वरारुचि ने युगंधरा से अपने सेनापतियों की ओर देखा। “तुमने हूणों के जहाजों से भिड़ने और अग्निकांतकों तक पहुँचने की कोशिश की होगी?”
“हमने कोशिश की, लेकिन बहुत कम सफलता मिली, पार्षद,” अनार्ता प्रमुख ने स्वीकार किया। समुद्र की ओर इशारा करते हुए उन्होंने समझाया, “जहाजों का एक घना घेरा उन जहाजों की रक्षा करता है जिनमें अग्निकांतक सवार हैं, और हम

तीन बार उस सुरक्षा घेरे को भेदने में असफल रहे हैं। स्थिति और भी जटिल इसलिए है क्योंकि उत्तर और दक्षिण में हूण जहाजों की कतारें हैं। जब हमारे जहाज घेरे की ओर बढ़ते हैं, तो वे चिमटे की तरह किनारों से हम पर हमला करते हैं, जिससे हमें पीछे हटना पड़ता है। हमारे भेजे गए दो जहाज तो वापस भी नहीं लौटे हैं।”
वरारुची ने धीमी सी सीटी बजाई, जिसमें हूणों की रणनीति के प्रति कुछ आश्चर्य और कुछ प्रशंसा झलक रही थी। "उनके पास वहाँ कितने जहाज हैं?" “शायद पच्चीस या तीस,” एक कमांडर ने जवाब दिया। “वे अंधेरा होने के बाद आए थे, इसलिए निश्चित रूप से कुछ कहना मुश्किल है।”
“आपके पास कितने हैं?” पार्षद ने पूछा। “लगभग तीस, यहाँ द्वारका में। तट के किनारे कुछ और हैं, और दस-बारह और भृगुकाक्षा से आ रहे हैं, लेकिन वे कल सुबह तक यहाँ नहीं पहुँचेंगे।”
“आपके पास यहाँ तीस जहाज हैं?” उदयसांगा ने अनार्ता सेनापतियों को हैरानी से देखा। “हम बराबर की ताकत से लड़ रहे हैं, तो फिर हमें पूरी ताकत से जवाबी हमला करने से क्या रोक रहा है?”
युगंधरा ने जलते हुए तट की ओर इशारा करते हुए कहा, "वह।"
“माफ़ कीजिए, लेकिन मुझे समझ नहीं आ रहा,” वरारुची का चेहरा भावहीन था। “हमारे आधे से ज़्यादा जहाज़ खाड़ी में लंगर डाले खड़े हैं,” सरदार ने कहा। “उन तक पहुँचने के लिए, हमारे सैनिकों को छोटी नावों में चप्पू चलाना पड़ेगा… जो या तो घाटों पर पहले से ही आग की चपेट में हैं, या वहाँ धुएँ के कारण पहुँच से बाहर हैं।”
वररुची ने हुना जहाजों में से एक ज्वाला प्रज्वलित यंत्र द्वारा उछाले गए एक जलते हुए गोले का पीछा किया। जलता हुआ गोला, जिसकी पूंछ भी जल रही थी, पानी के ऊपर एक घुमावदार चाप बनाता हुआ तटबंध में जा गिरा और एक पत्थर के टीले से टकरा गया। वह दो टुकड़ों में टूट गया, एक टुकड़ा फुफकारते हुए नीचे पानी में गिर गया, दूसरा एक रास्ते पर लुढ़क गया, चिंगारियां और जहरीली गैसों के गुबार छोड़ते हुए, जो हवा में फैल गईं, मानो किसी शिकार की तलाश कर रही हों।

“समझे मेरी बात?” युगंधरा ने कहा। “भले ही इससे कुछ जले नहीं, लेकिन यह धीरे-धीरे ज़हर फैलाता है। जब तक ये आग के गोले हमारी ओर फेंके जाते रहेंगे, हमारे सैनिक घाटों और नावों की ओर जाने वाली किसी भी गली में कदम नहीं रख पाएंगे।”
"और द्वारका जलती रहेगी," मणिधरा ने एक अशुभ स्वर में कहा।
“अगर अग्निकांतकों या उन्हें ले जाने वाले जहाजों को नष्ट कर दिया जाए तो क्या होगा?” उदयसांग ने पूछा।
“अगर ऐसा समय रहते हो गया, तो हम आग बुझा सकेंगे, कुछ नावों को बचा सकेंगे और हूण नौसेना पर हमला करने की कोशिश कर सकेंगे,” युगंधरा ने जवाब दिया, उनकी नज़र द्वारका की ओर बढ़ते एक और गोले पर थी। यह गोला एक मछुआरे की झोपड़ी पर गिरा और उसमें तुरंत आग लग गई। “लेकिन मुझे नहीं लगता कि हम ऐसा कर भी पाएंगे।”
"मुझे उस कोने में एक नाव फंसी हुई दिखाई दे रही है, जहाँ गोदी के दूसरी तरफ से पहुँचा जा सकता है," संसप्तक ने रेत के एक टीले पर खड़ी एक छोटी नाव की ओर इशारा करते हुए कहा।
“मेरे दोस्त, क्या तुम्हें अंदाज़ा है कि उस आकार की एक नाव को खाड़ी के पार सैनिकों की एक सेना को ले जाने में कितना समय लगेगा?” सवाल पूछने वाले कमांडर ने मुस्कुराते हुए कहा।
“इतने बड़े आकार की नाव को अग्निकांतकों की रक्षा कर रहे जहाजों के पास एक दर्जन आदमियों को ले जाने में कितना समय लगेगा?” उदयसांग ने अपनी बड़ी मूंछें घुमाईं और मुस्कुराते हुए अनर्त सेनापतियों के बीच फैली उलझन को देखा। पीछे मुड़कर उन्होंने देखा कि वरारुचि उन्हें ध्यान से देख रहे हैं।
“आप क्या प्रस्ताव रखते हैं?” युगंधरा ने पूछा।
“मेरा प्रस्ताव है कि हम समसप्तक उन जहाजों तक नाव चलाकर जाएं, कुछ दर्जन हूणों को मार डालें, अग्निकांतकों को नष्ट कर दें और बंदरगाह लौट आएं।” जब वरारुचि ने बोलना शुरू किया, तब मणिधरा और अनार्ता सेनापति इस साहसिक कार्य की मूर्खता पर अपना सिर हिला रहे थे।

“क्या तुम ऐसा करोगे?” इससे पहले कि संसप्तक उत्तर दे पाता, उसने कहा, “यदि तुम चाहो, तो मैं तुम्हारे साथ आऊंगा, उदयसंग।”
“संसप्तकों का सम्मान किया जाएगा, पार्षद वरारुचि,” उदयसांगा ने कहा। “लेकिन नहीं, इसे केवल हमारे लिए ही एक दावत रहने दीजिए। आगे आपके सामने और भी कई चुनौतियाँ आने वाली हैं।”
“ठीक है,” वरारुचि ने संसप्तक का सही अर्थ समझते हुए सिर हिलाया। इस मिशन के लिए सटीकता और समन्वय के उस स्तर की आवश्यकता थी जिसके लिए संसप्तक प्रशिक्षित थे – समूह में उनकी उपस्थिति उस स्वाभाविक समन्वय में बाधा उत्पन्न करेगी। यह मिशन संभावित रूप से आत्मघाती भी था, और उदयसांग ने यह सही कहा था कि द्वारका की रक्षा में परामर्शदाता की भूमिका केवल खुद को जोखिम भरे जुए में झोंकने से कहीं अधिक थी।
“यह तरीका काम नहीं करेगा, नौजवान,” मणिधरा ने जोर देकर कहा, हालांकि वह और अनार्ता के सेनापति उदयसांगा को विस्मय और नए सम्मान की दृष्टि से देख रहे थे।
“या तो यही करो या कुछ नहीं, मुखिया,” संसप्तक ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। “इसे कई साल पहले उस रात रैवता में मचाए गए हंगामे का बदला समझो।” युगंधरा आगे आए और उदयसंग का हाथ थाम लिया। उन्होंने कहा, “अगर मैं कहूँ कि मैं नहीं चाहता कि आप ऐसा करें, तो मैं झूठ बोल रहा हूँगा। इसलिए, अनर्तों के मित्र, आपको मेरा धन्यवाद।”
संसप्तक ने प्रणाम करने के इरादे से वरारुचि की ओर रुख किया, लेकिन सलाहकार ने उन्हें गर्मजोशी से गले लगा लिया। योद्धा के कंधे पर धीरे से थपथपाते हुए उन्होंने कहा, "अच्छी तरह लड़ो और आज रात अवंती को गौरवान्वित करो।"
“जी हां, हम ऐसा करेंगे।”
इतना कहकर वह रात के अंधेरे में एक परछाई की तरह गायब हो गया।

* * *

दरवाजे पर दस्तक इतनी धीमी थी कि वेताला भट्टा को पहले लगा कि शायद उसने ऐसा सोचा हो। फिर दोबारा दस्तक हुई, लकड़ी पर उंगलियों के पोरों की हल्की सी दबी हुई आवाज।
“जी हां,” पार्षद ने बिस्तर से उठते हुए दरवाजे की ओर इशारा करते हुए कहा। “मुझे एक पल दीजिए।”
दरवाजा खोलकर मशालों से रोशन गैलरी में झांकते हुए, बाहर खड़ी छोटी सी आकृति को देखकर उसकी भौहें आश्चर्य से ऊपर उठ गईं।
“अजीब समय में यहाँ क्या कर रही हो, लड़की?” वेताला भट्टा ने गर्दन उठाकर गैलरी में झाँका। लड़की अकेली थी। थोड़ी चिंता के साथ उन्होंने पूछा, “क्या सब ठीक है?”
“आपको परेशान करने के लिए क्षमा चाहता हूँ, राजगुरु,” शंकु ने धीमी आवाज़ में जवाब दिया, जिसमें गंभीरता झलक रही थी। “लेकिन मुझे आपसे कुछ ज़रूरी बात करनी थी।”
आचार्य ने देखा कि लड़की की बड़ी-बड़ी काली आँखें परेशान थीं। “कोई बात नहीं,” उन्होंने शंकु को अंदर आने देने के लिए पीछे हटते हुए कहा। “मुझे पूरी नींद नहीं आई थी। मैं बस एक दीपक जला लेता हूँ।”
“ठीक है, आप किस बारे में बात करना चाहते हैं?” साधारण सी चटाई पर बैठने के बाद बूढ़े पार्षद ने अपने आगंतुक की ओर आशा भरी निगाहों से देखा।
“यह राजगुरु, यानी उपचारक के बारे में है।”
“वह वैद्य?” वेतला भट्टा की जिज्ञासा बढ़ गई। “उसके बारे में क्या?” “राजगुरु, देवी माँ को उस पर भरोसा नहीं है।”
“उस पर भरोसा नहीं करता… किस अर्थ में?”
“आपको पता है, कुछ दिन पहले जब वो बीमार पड़ीं…?” शंकु ने आचार्य के बात को समझने का इंतज़ार किया। “दरअसल, दादी माँ इस बात पर अड़ी थीं कि वो वैद्य से अपना इलाज नहीं करवाना चाहतीं।”
“ओह! क्या उसने तुम्हें अपने कारण बताए?” वेताला भट्टा के पेट में उत्सुकता जाग उठी।

“अपने रहस्यमयी अंदाज़ में, हाँ।” लड़की ने अपनी बात कहने से पहले अपने विचारों को समेटा। “बाद में उसी रात, मैंने उससे पूछा कि उस वैद्य के बारे में उसे इतनी बुरी बात क्या लगी। उसने कहा कि उसे लगता था कि उसमें कुछ बुराई है।”
“अशुभ।” आचार्य ने इस शब्द को अपने मुख से निकलने दिया। “सिर्फ अशुभ? और कुछ नहीं, कुछ खास नहीं?”
"उसने यह भी कहा कि वह कभी भी अपने ऊपर वैद्य की छाया नहीं चाहती।" "चिकित्सक को संदिग्ध समझना उसके लिए उस पर अविश्वास करने का पर्याप्त कारण हो सकता है, लेकिन यह संदेह का कोई उचित आधार नहीं है। यह केवल उस व्यक्ति के बारे में उसकी राय है। इससे कुछ भी साबित नहीं होता।"
“मुझे पता है, राज-गुरु, लेकिन कुछ दिन पहले भविष्यवक्ता और मेरे बीच उस वैद्य के बारे में एक और बातचीत हुई थी। दादी ने उस दिन उनके बारे में जो कहा था, वह मुझे चैन से नहीं बैठने दे रहा है।”
“बोलते रहिए।” वेतला भट्टा बेहतर ढंग से सुनने के लिए अपनी सीट पर थोड़ा आगे खिसक गए।
“शहर पर हुए आखिरी हमले के बाद, मैं उसे पहाड़ी पर बने पार्क में ले गया था। मैंने उससे कहा कि उज्जैन के हम नागरिक वैद्य के कितने ऋणी हैं, जिन्होंने हमारी बहुत मदद की। इस पर देवी ने कुछ अजीब बात कही। उन्होंने कहा कि उन्हें डर है कि जब समय आएगा, तो वैद्य उज्जैन से बहुत भारी कीमत वसूलेंगे।”
“तुमने यह बात सम्राट और परिषद को पहले क्यों नहीं बताई, बेटी?” आचार्य ने धीमी आवाज़ में कहा, लेकिन उनका लहजा तीखा और फटकार भरा था। “तुम तो जानती हो कि देवी माँ बिना कारण के ऐसी बातें कभी नहीं बोलतीं।” “राजगुरु, मैं राज परिषद को क्या बताती?” वरिष्ठ सलाहकार की दृढ़ निगाहों के सामने शंकु ज़रा भी नहीं हिचकी। “यह तो उन्होंने बस यूँ ही कह दिया था, एक इशारा जिसे वे स्पष्ट करना नहीं चाहती थीं। बिना किसी ठोस स्पष्टीकरण के, उनका कथन केवल वैद्य के प्रति पूर्वाग्रह ही साबित होता। जैसा कि आपने अभी कहा, उनके शब्दों से कुछ भी साबित नहीं होता।”

लड़की ने सांस लेने के लिए थोड़ी देर रुककर कहा, "उज्जायिनी में शायद ही कोई ऐसा परिवार होगा जिसे राजगुरु जी के यहाँ आने से लाभ न हुआ हो। इस शहर में लगभग हर कोई उनके प्रति श्रद्धा रखता है। खासकर रानी के चमत्कारिक रूप से ठीक होने में उनकी भूमिका के बाद, इस महल में कितने लोग ऐसे होंगे जो वैद्य जी पर लांछन लगाने वाली किसी भी बात को सुनना चाहेंगे, और उसे बर्दाश्त करना तो दूर की बात है?"
वेतला भट्ट ने धीरे से सिर हिलाया। उन्हें याद था कि अस्तबल के रखवाले की बेटी बचपन से ही असाधारण रूप से समझदार थी, और उन्हें खुशी थी कि जवानी और उसके उतावलेपन ने उसकी बुद्धिमत्ता को ज़रा भी कम नहीं किया था। शंकु सही कह रहा था। निराधार आरोपों का सामना करते हुए, वैद्य राजा, महारानी और क्षपणक के समर्थन पर आसानी से भरोसा कर सकता था। इसके अलावा, उषांथा को उसके गठिया रोग से राहत दिलाकर, उसने वरारुचि का भी दिल जीत लिया था। फिलहाल, वैद्य के प्रशंसकों की कोई कमी नहीं थी, और उज्जैन में उसके आलोचकों या विरोधियों को शायद ही कोई सहानुभूति मिलती।
“उस भविष्यवक्ता ने कभी यह संकेत नहीं दिया कि वह वैद्य के बारे में ऐसा क्यों सोचती थी? या इस भारी कीमत का क्या स्वरूप हो सकता है?” “उसने सवाल को टाल दिया। आप तो जानते ही हैं, राजगुरु। हमेशा पहेलियों में बोलती है, और अपने श्रोताओं पर ही अपने शब्दों का अर्थ निकालने का काम छोड़ देती है।”
आचार्य को लड़की की चतुराई स्वीकार करनी पड़ी। राजा और परिषद से संपर्क करना असंभव समझते हुए, उसने उनसे मुलाकात की, खुद ही जानकारी दी और उन्हें सही राह दिखाई, यह जानते हुए कि वैद्य के इरादों की गुप्त रूप से जांच करना उनकी क्षमता के भीतर था। आचार्य को लड़की का यह तरीका कारगर लगा, लेकिन एक बात अभी भी स्पष्ट होनी बाकी थी।
“तुम्हें यह सब पहले से पता था, तो मेरे पास आने में देरी क्यों की? अब क्यों आए?”
“तब मुझे उस वैद्य के इरादों के बारे में पक्का पता नहीं था; मेरे पास कोई ठोस जानकारी नहीं थी। लेकिन अब मेरे पास है।”
"अर्थ?"

“आचार्य जी, जब आप महिष्मती में थे, तब मैंने पिछली रात कुछ देखा।” कुछ संक्षिप्त शब्दों में, लड़की ने वह सब बताया जो उसने देखा था और नाविक से वैद्य के क्षिप्रा नदी के पार रहस्यमय रात्रि भ्रमण के बारे में जाना था। शंकु के बात खत्म करने के बाद राजगुरु ने अपनी दाढ़ी में मुंह दबाकर बुदबुदाते हुए कहा, "यह तो वाकई बहुत संदिग्ध है।"
“आज दोपहर मुझे एक और बात याद आई,” लड़की की आवाज़ और भी धीमी हो गई। “भविष्यवाणी में कही गई कोई बात जो मैं पूरी तरह से भूल गई थी।”
“वह क्या है?” वेतला भट्टा ने पूछा।
“उसी शाम जब हम पार्क में मौजूद वैद्य के बारे में बात कर रहे थे, मैंने दादी से पूछा कि क्या वह श्रीस्थली में हूण जासूस की हत्या करने वाले गद्दार को ढूंढने में हमारी मदद कर सकती हैं। उन्होंने कहा कि वह नहीं कर सकतीं, लेकिन उन्होंने यह भी कहा कि दुश्मन... दुश्मन सचमुच पास ही है। उस समय, मैंने मान लिया कि वह सीमा पर मौजूद हूणों की बात कर रही थीं, लेकिन आज दोपहर मुझे लगा कि शायद वह हूणों के बारे में सामान्य रूप से बात नहीं कर रही थीं। क्या वह वैद्य को दुश्मन कह रही थीं, और क्या वह हूणों के लिए काम करने वाला कोई जासूस हो सकता है? क्या नदी पार की उसकी यात्राएँ किसी गुप्त मिशन का हिस्सा हैं? क्या उसकी गद्दारी वह कीमत है जो उज्जैनी को चुकानी पड़ेगी?”
“जिस तरह से तुमने बताया, संभावना को नकारा नहीं जा सकता,” वेताला भट्टा का चेहरा गंभीर था। “तुमने समझदारी से काम लिया है, बेटी। हमें अपनी इस प्रतिभाशाली अतिथि के बारे में जल्द से जल्द और अधिक जानकारी जुटानी होगी।”
शंकु के चले जाने के बाद, आचार्य ने दीपक बुझा दिया और अपने बिस्तर पर लेटकर देवी माँ द्वारा अपनी पोती को बताई गई बातों पर विचार करने लगे। उन्हें एहसास हुआ कि वैद्य के बारे में उनकी आशंकाएँ बिल्कुल सही थीं। किसी बात ने उस व्यक्ति को उज्जैनी और महल की ओर आकर्षित किया था, और यह निश्चित रूप से उसका परोपकारी स्वभाव नहीं था।
नींद से बेहाल होकर पार्षद उठे और ताजी हवा लेने के लिए खुली खिड़कियों में से एक के पास चले गए। बाहर झुककर उन्होंने महल के दक्षिणी भाग की ओर

देखा, जहाँ शाही मेहमानों के कमरे और क्वार्टर थे। तीसरी मंजिल की एक खिड़की में उन्हें एक जलती हुई बत्ती दिखाई दी। खिड़की बहुत दूर थी और उसका कोण इतना तीखा था कि वे अन्य विवरण नहीं देख पा रहे थे, फिर भी वेताला भट्टा की भौंहें तुरंत संदेह से तन गईं। वे जानते थे कि वह कमरा किसे आवंटित किया गया था, और वे सोच रहे थे कि उस कमरे में रहने वाला व्यक्ति इतनी देर रात तक क्यों जाग रहा है।
जैसे अचानक ही उसे अपनी निगाहों का एहसास हो गया हो, वैसे ही दीपक बुझ गया। पार्षद ने पलकें झपकाईं और मुँह फेर लिया, अपनी अगली चाल के बारे में सोचने लगा। जब तक वह खिड़की से दूर होकर अपने बिस्तर पर लौटा, तब तक उसने तय कर लिया था कि उसे आगे क्या करना है।
यदि वेताला भट्टा खिड़की पर कुछ क्षण और रुकते, तो शायद वे एक लंबे, मजबूत कद-काठी वाले व्यक्ति को वैद्य के तीसरे तल के कक्ष से निकलने वाली छत पर कदम रखते हुए देख पाते। वे शायद उत्सुकता से उस व्यक्ति का पीछा भी कर पाते, जब वह छत पार करके दूसरी मंजिल पर एक गैलरी की ओर सीढ़ियों से नीचे उतरता और फिर एक खुले द्वार से महल में प्रवेश करता।
संयोगवश, वेताल भट्ट उस आकृति को देखने से चूक गए - जिसे वे अन्यथा आसानी से कालिदास के रूप में पहचान लेते।

Udayasanga

उदयसंग जब खाड़ी की अंधेरी, बर्फीली गहराइयों में चुपके से आगे बढ़ रहे थे, तो हूणों के विशाल जहाज उनके सिर के ऊपर से फिसलते हुए निकल गए। कभी-कभी, जब बर्बर लोग द्वारका पर आग का गोला फेंकते थे, तो उनके ऊपर का पानी चमक उठता था, और प्रकाश की उन क्षणिक चमकों में, उदयसंग को अपने साथी संसप्तकों की झलक दिखाई देती थी जो उनके साथ तैर रहे थे।
प्रगति धीमी और कठिन थी। समसप्तक ठंडे और तेज़ समुद्री धाराओं से जूझ रहे थे जो उन्हें लगातार अपनी ओर खींच रही थीं और उनके मार्ग को भटका रही थीं। अंधेरा भी दिशाहीन करने वाला था। इसके अलावा, उन्हें बार-बार हवा लेने और अपनी दिशा का पता लगाने के लिए सतह पर आना पड़ता था, और पकड़े जाने से बचने के लिए जहाजों की छाया में छिपना पड़ता था। उनकी हर हरकत में गोपनीयता झलकती थी, और इसकी कीमत गति में कमी के रूप में चुकानी पड़ी।
समसप्तकों को अग्निकांतकों की सटीक स्थिति का अस्पष्ट ही अंदाजा था; हूणों ने गुलेलों के चारों ओर जो रक्षा व्यवस्था की थी, उसके बारे में तो उन्हें और भी कम जानकारी थी। लेकिन उचित सर्वेक्षण के लिए समय कम होने के कारण, योद्धाओं ने सीधे हमले का निर्णय लिया, इस उम्मीद में कि उनकी सूझबूझ और भाग्य उनका साथ देंगे।

उदयसांग ने मन ही मन सोचा, यह एक बड़ा जोखिम था, और वह एक जहाज के पतवार को पकड़कर ऊपर की ओर चढ़ गया। हालांकि, वह तुरंत पानी से बाहर नहीं निकला। अपनी सांस रोककर, उसने तब तक इंतजार किया जब तक कि अगला अग्नि गोला अग्निकांतक से न निकल जाए, जिसका प्रकाश पानी से होकर अपवर्तित हो रहा था। गोले के प्रक्षेप पथ को देखते हुए, उसने उसके प्रचंड मार्ग का अनुसरण किया, यह जानते हुए कि ऊपर के डेक पर मौजूद लोगों की निगाहें संभवतः उस विनाशकारी अग्नि गोले पर होंगी, न कि नीचे के पानी पर। ऊपर की निगाहें भी ज्वाला की चकाचौंध से चौंधिया जाएंगी। उसने धीरे से समुद्र की सतह को छुआ। उदयसांग ने पाया कि वह ज्वाला प्रज्वलन यंत्रों के चारों ओर सुरक्षात्मक घेरा बनाए हुए दो जहाजों के बीच सतह पर आ गया था – एक बाहरी घेरा और एक भीतरी घेरा। तेल, गंधक और जले हुए सरसों की गंध असहनीय थी, जो जहाजों के मस्तूलों और पालों से चिपकी हुई थी और कैंसरकारी कोहरे की तरह कोनों से रिस रही थी। उसने डेक से आती हुई कुछ फुसफुसाहटें सुनीं, और यद्यपि शब्द समझ से परे थे, लेकिन लहजे से उसे पता चला कि निर्देश दिए जा रहे थे। आवाज़ों में कोई जल्दबाजी या सतर्कता नहीं थी – उसे तो उनमें थोड़ी ऊब भी महसूस हुई, वैसी ऊब जो आत्मसंतुष्टि से पैदा होती है।
उन्हें यह अच्छा लगा। हूणों ने अपनी सतर्कता कम कर दी थी।
उसके चारों ओर, अन्य संसप्तकों के सिर एक-एक करके पानी के नीचे से बाहर निकलने लगे। उदयसंग ने उन सभी तेरहों को गिना और फिर अपनी उंगलियों से इशारा करते हुए अपने साथियों का ध्यान दो जहाजों के बीच एक ऐसी जगह की ओर आकर्षित किया जो उनके सामने हिल रही थी।
संकरी खाई के उस पार एक जहाज़ पड़ा था, लकड़ी का बना एक विशालकाय ढाँचा उसके डेक पर बेतरतीब ढंग से टिका हुआ था। तीन आदमी चरखी चला रहे थे, जो उस ढाँचे की एक भुजा से जुड़ी हुई थी। चरखे के आकार की वह भुजा चरखी के कसने के साथ धीरे-धीरे नीचे गिरती गई, यहाँ तक कि वह लगभग क्षैतिज स्थिति में, डेक से एक फुट ऊपर पहुँच गई। उनमें से एक आदमी ने जल्दी से भुजा के नीचे एक गाँठ लगा दी, जिससे वह कसकर बंध गई।
समसप्तकों ने एक-दूसरे को तीखी, चोरी-छिपे निगाहों से देखा। वे हूणों के एक गुलेल को देख रहे थे। दूसरा गुलेल भी ज़्यादा दूर नहीं होगा।

उदयसंग ने एक बार फिर इशारा किया, और संसप्तक डूबने लगे। उन्होंने आखिरी बार जहाज पर नज़र डाली और देखा कि दो आकृतियाँ लड़खड़ाते हुए दिखाई दे रही हैं, जिनके बीच में एक भारी वस्तु है। उन्होंने उस वस्तु को लीवरनुमा भुजा के एक सिरे पर बने कटोरे जैसे गड्ढे में रखा, और तुरंत ही हूणों में से एक ने उस वस्तु पर मशाल जला दी, जिससे वह चटकने लगी और धुआँ उगलने लगी। जहाज पर मौजूद लोग तब तक इंतज़ार करते रहे जब तक कि आग पूरी तरह से न लग गई, फिर उनमें से एक ने लीवरनुमा भुजा को पकड़े हुए रस्सी को खोल दिया।
जैसे ही उदयसांगा खाड़ी में वापस डूबा, स्प्रिंग-लोडेड भुजा ने द्वारका की ओर एक और धधकती मिसाइल दागी।

* * *

वह यक्ष काले आकाश में बहुत ऊपर एक प्रचंड धुंध की तरह दिख रहा था, समताप मंडल से होकर गुजरता हुआ एक उल्कापिंड, पृथ्वी की ओर आती हुई प्रकाश की एक चमकदार सफेद लकीर।
वह बेरोकटोक नीचे गिरता चला गया, और नीचे, और भी नीचे, चट्टान और खनिज का एक जलता हुआ टुकड़ा, सीधे सिंधुवर्त की ओर बढ़ रहा था।
अंततः, यक्ष क्यूमुलस बादलों के एक समूह में समा गया, लेकिन बाहर निकलकर नीचे की ओर जाने के बजाय, वह बादलों की कोमल परतों में समा गया और अपना रूप बदल लिया। उल्कापिंड से वह जल क्रिस्टल में परिवर्तित हो गया, जिससे वह ठंडा होकर बादल में पहले से मौजूद नमी के साथ मिल गया। बादल की गोद में छिपा हुआ, वह पूर्व से बहने वाली हवा में बहते हुए गहरी सांसें लेने लगा। विंध्य पर्वतमाला के पश्चिमी छोर पर बादल धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे, लेकिन जल्द ही वे दक्षिण से आ रही एक विपरीत धारा से टकरा गए। ठंडी, घूमती हवाओं ने बादलों को पर्वत की लहरदार चोटियों पर झुका दिया, और यक्ष ने अपने चारों ओर बारिश की बूँदें बनती हुई महसूस कीं। उसने स्वयं को पिघलकर एक बूंद के रूप में थोड़ी दूर तक गिरने दिया, लेकिन बादल से बाहर निकलने से ठीक पहले, यक्ष के रूप में एक और परिवर्तन हुआ।
जब वह बादल से बाहर आया, तो यक्ष एक बाज था, जिसके काले और लाल-भूरे पंख बारिश से भीगे हुए थे।

बाज़ घने जंगलों से घिरी अंधेरी घाटी के ऊपर चक्कर लगा रहा था, अपने पंखों की मांसपेशियों को फैलाकर और शरीर में रक्त संचार बढ़ाकर। फिर, जैसे ही बारिश तेज हुई और पहाड़ियों पर मूसलाधार बरसने लगी, पक्षी ने अपना रास्ता सीधा कर लिया, उसकी चोंच पश्चिम दिशा में उज्जैनी की ओर उठी हुई थी।

* * *

अग्निकांतक को मुख्य मस्तूल से कुछ गज की दूरी पर, जहाज के केंद्र में बांधा गया था और जहाज के किनारों से बंधी मोटी रस्सियों से उसे स्थिर रखा गया था। चरखी चलाने वाले तीन हूणों और गुलेल लादने वाले दो लोगों के अलावा, उदयसांग ने अनुमान लगाया कि लगभग एक दर्जन अन्य योद्धा जहाज की रक्षा के लिए तैनात थे। हालांकि, पहरेदार अपनी जिम्मेदारी को बहुत हल्के में लेते हुए प्रतीत हो रहे थे। वे गुलेल के चारों ओर सुस्त समूहों में खड़े थे, उनके हाथों में हथियार ढीले थे, और वे जहाज के अगले हिस्से से द्वारका की ओर देख रहे थे।
जहाज के पिछले हिस्से के पास, जहाँ सबसे गहरी छाया थी, वहाँ दुबके उदयसंग को समझ आ गया कि हूण पहरेदार इतने लापरवाह क्यों दिख रहे थे। द्वारका एक धधकती आग थी। तेज़ समुद्री हवा के कारण आग तट से आगे बढ़कर भीतरी शहर के इलाकों तक फैल गई थी, और धुएँ का एक घना गुबार तेज़ी से अंदर की ओर बढ़ रहा था। उदयसंग ने एक पल के लिए सोचा कि क्या ज्वाला फेंकने वालों को निष्क्रिय करने का अब कोई उद्देश्य रह गया है, लेकिन उन्होंने इस विचार को मन से निकाल दिया। वे यहाँ गुलेलों को नष्ट करने आए थे; वे यही करेंगे, चाहे इसके लिए उन्हें कुछ भी करना पड़े।
उदयसंग ने पीछे मुड़कर देखा जब उनके समूह का सातवां और अंतिम संसप्तक जहाज के ढलानदार पिछले हिस्से से कूदकर चुपचाप डेक पर उतर गया। फिर उन्होंने थोड़ी दूरी पर लंगर डाले दूसरे फ्लेमथ्रोवर वाले जहाज की ओर एक त्वरित नज़र डाली। उन्हें उम्मीद थी कि उस गुलेल को निष्क्रिय करने के लिए तैनात सभी सात संसप्तक भी अपनी-अपनी जगह पर होंगे। दोनों समूहों को स्वतंत्र रूप से काम करना था, चुनौतियों की व्याख्या करनी थी और परिस्थितियों के अनुसार उचित कार्रवाई करनी थी, लेकिन उदयसंग चाहते थे कि वे एक समन्वित हमला करें। सफलता की यही उनकी सबसे अच्छी संभावना थी।

उसके इशारे पर, उसके पीछे मौजूद समसप्तक दबे पांव, जहाज़ के रस्सियों की छाया में झुकते हुए, आगे बढ़ने लगे। जलते हुए घाटों से भागते समय जल्दबाजी में बनाई गई उनकी योजना अपनी सादगी में आदिम थी। यह योजना अचानक हमले पर आधारित थी, जिसमें पांच समसप्तकों को हूण रक्षकों से भिड़कर उनमें से यथासंभव अधिक से अधिक को मार गिराना था। रक्षकों के अग्निकांतकों से ध्यान भटकाने और उन्हें व्यस्त करने के बाद, शेष दो समसप्तक किनारों से आगे बढ़कर गुलेलों को नष्ट कर देते।
एक हाथ में तलवार और दूसरे हाथ में छोटा खंजर लिए उदयसांगा डेक पर रेंगता हुआ आगे बढ़ा। उसकी निगाह डेक के बाईं ओर खड़े चार हूणों के एक समूह पर टिकी थी, जिनकी पीठ उसकी ओर थी। उसके बगल में, एक कतार में फैले हुए, उसके छह साथी थे, जिनमें से प्रत्येक अपने चुने हुए लक्ष्य पर केंद्रित था। वे अपने शिकार तक आधी दूरी भी तय नहीं कर पाए थे कि अचानक, दूसरे जहाज पर एक मिसाइल दागे जाने से डेक रोशन हो उठा। उदयसांगा की नज़र में आए पहरेदारों में से एक ने लापरवाही से मिसाइल के प्रक्षेपण को देखने के लिए मुड़ा। प्रकाश सीधे पहरेदार के चेहरे पर पड़ा, उसके माथे पर खुदा हुआ गहरा निशान उसकी तैलीय भूरी त्वचा पर स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था।
पल भर में, गार्ड के चेहरे के भाव निष्क्रिय रुचि से बदलकर घबराहट में बदल गए।
“उरुग हा’की, आयो!” गार्ड ने चिल्लाते हुए अपना हाथ उछाला और पानी की ओर दूसरे जहाज की दिशा में इशारा किया।
उदयसंग को एक शब्द भी समझ नहीं आया, लेकिन घबराहट भरी आवाज़ से उन्हें पता चल गया कि खतरे की घंटी बज गई है। झुककर उन्होंने दूसरे जहाज़ पर एक नज़र डाली। जैसे ही गुलेल का हाथ झटका खाकर घूमा और आग का गोला हवा में उठा, उदयसंग ने उसकी रोशनी में दो नग्न संसप्तक योद्धाओं को हाथों में तलवार लिए स्पष्ट रूप से देखा। निराशा में उन्होंने गौर किया कि वे दोनों योद्धा अग्निकांतक के चारों ओर जमा हुए लगभग पंद्रह हूणों के आसपास भी नहीं थे। इससे भी बुरी बात यह थी कि पहरेदार की तीखी आवाज़ पानी के उस पार तक पहुँच गई थी, और दूसरे डेक पर मौजूद सभी हूण योद्धा उन घुसपैठियों को देखने के लिए मुड़ गए थे।

एक निराशाजनक अनुभूति के साथ, उदयसांग ने महसूस किया कि एक भी संसप्तक किसी भी ज्वाला प्रज्वलनशील यंत्र की मारक क्षमता के भीतर नहीं था, और उनका भेद पहले ही खुल चुका था।
"क्या चल रहा है?"
उदयसांगा ने अपने सामने मौजूद हूणों की ओर मुड़कर देखा तो पाया कि उनमें से एक - एक दुबला-पतला और कठोर योद्धा, जो एक भारी, लंबे हैंडल वाली कुल्हाड़ी चला रहा था - स्थिति को अपने नियंत्रण में ले रहा था।
“दा’आरो मेके,” उसने एक बार फिर गुस्से से भरी, उसकी आँखों में क्रोध की चमक थी। “ओज़ेब यान’ताह।”
एक पहरेदार ने अपनी कमर पर लटके हुए मेमने के सींग को उतारा। जैसे ही उसने खतरे की घंटी बजाने और मदद मांगने के लिए सींग को अपने होठों से लगाया, उदयसांगा ने दूसरे जहाज के डेक से कई आवाजों का शोर सुना, जिसके बाद पैरों की धमक और धातु के टकराने की आवाज आई।
तुरही की खोखली, उदास गूंज पूरे डेक पर फैल गई, जिससे बाकी सभी आवाज़ें दब गईं। इस शोर का फायदा उठाते हुए उदयसंग और उनके संसप्तक छिपने की जगह से बाहर निकले और हूणों पर टूट पड़े, उनकी तलवारें और कटारें आग की रोशनी में चमक रही थीं।
उनके हमले की गति भयावह थी। वे पल भर में पहरेदारों के करीब आ गए, तलवारें लहराते हुए परछाइयाँ हूणों पर टूट पड़ीं, इससे पहले कि उन्हें एहसास होता कि उनका जहाज भी हमले की चपेट में है। उदयसंग की तलवार ने उनके सबसे करीब खड़े पहरेदार के पेट को चीर दिया, लगभग उसे दो हिस्सों में काट डाला। जैसे ही पहरेदार ने अपने पेट को पकड़ा और घुटनों के बल गिर पड़ा, उसकी चीख तुरही की तेज आवाज में खो गई, उदयसंग ने दूसरे योद्धा पर छलांग लगाई, कलाई पर सटीक वार से हूण दर्द से कराह उठा और उसकी तलवार छूट गई। करीब आकर और उसे घेरकर, जिससे योद्धा के पास हिलने-डुलने की जगह कम रह गई, संसप्तक ने अपनी कटार पहरेदार की गर्दन में गहराई तक गाड़ दी, और इतनी जोर से घुमाई कि कई धमनियां कट गईं। उसी समय, उदयसंग ने तुरही बजा रहे पहरेदार पर अपनी तलवार से वार किया, लेकिन जगह की कमी के कारण, वह केवल उस व्यक्ति के कंधे और ऊपरी बांह पर एक दर्दनाक घाव ही कर पाए।

रक्षक चीखते हुए अपने होठों से सींग गिरा बैठा। उसी क्षण, एक अन्य संसप्तक की तलवार रक्षक के शरीर में घुस गई। सींग की कराह खाड़ी के पानी में घुल गई, और उसकी जगह तुरंत ही दोनों डेक पर चल रहे युद्ध की कर्कश चीखें और कराहें सुनाई देने लगीं।
उदयसंग ने अपनी आँखों के कोने से देखा कि दुबले-पतले हूण ने अपनी कुल्हाड़ी अपने दाहिने कंधे के ऊपर उठाई। हूण ने वार करने के लिए जितनी देर में संतुलन बनाया, उतनी ही देर में उदयसंग समझ गए कि वह उनकी चौड़ी, खुली पीठ पर निशाना साध रहा है। हिलने-डुलने के बजाय, संसप्तक वहीं स्थिर खड़ा रहा, उस रक्षक को सीने से लगाए हुए जिसे उसने गर्दन में छुरा घोंपा था, और मृत व्यक्ति का खून उसके ऊपर छिटक रहा था।
भयंकर अपशब्द बोलते हुए, हुना ने उदयसंग पर कुल्हाड़ी से वार किया। संसप्तक ने वार करने के लिए पर्याप्त समय दिया – ताकि उदयसंग खुद को रोक या सुधार न सके – फिर वह अपनी एड़ी पर घूमा और मृत हुना को उठाकर इस तरह घुमाया कि उसका शव उसके और कुल्हाड़ी के धारदार सिरे के बीच आ गया। कुल्हाड़ी हुना की पीठ में धंस गई, जिससे हड्डियाँ चूर-चूर हो गईं। वार की शक्ति और शव के भार ने उदयसंग को दो कदम पीछे धकेल दिया।
उदयसंग ने तुरंत संभलते हुए – और अपने हमलावर को सोचने का समय दिए बिना – अपने बचाव में खड़े शरीर को एक तरफ धकेल दिया। कुल्हाड़ी इतनी गहरी धंसी हुई थी कि अचानक हुई इस हरकत से हूण कुल्हाड़ीधारी आगे की ओर खिंच गया और उसका संतुलन थोड़ा बिगड़ गया। संसप्तक तुरंत आगे बढ़ा और हूण के चेहरे पर खंजर घोंप दिया, उसकी आंखों के बीचोंबीच, ह्रीज़ के भद्दे निशान के ठीक नीचे, भाले की नोक घुसा दी। जैसे ही हूण का सिर पीछे की ओर झुका और उसका मुंह एक भयानक चीख के साथ खुला, उदयसंग ने उसकी छाती पर लात मारी और खंजर छुड़ा लिया। जब कुल्हाड़ीधारी खून से लथपथ अपने चेहरे को खुजला रहा था, उदयसंग एक बार फिर आगे बढ़ा और उसकी छाती के ठीक नीचे वार कर दिया।
हूणों को डेक पर पीछे हटने देकर, संसप्तक ने हमले का जायजा लिया। उसके चारों ओर लड़ाई पूरे ज़ोरों पर थी। उसके साथियों का भी लगभग यही हाल था – वह देख सकता था कि उनमें से पाँच हूणों पर बेतहाशा वार कर रहे थे, उनके पैरों के पास लाशें बिखरी पड़ी थीं। चारों ओर देखते हुए, उसने एक परिचित

आकृति को एक तरफ लेटे हुए देखा, जिसके गले से खून की लाल धार बह रही थी – अग्निकांतक को नष्ट करने के लिए नियुक्त संसप्तकों में से एक।
अपने गिरे हुए साथी को देखकर उदयसांगा के चेहरे पर क्रोध की लाली छा गई, लेकिन आग लगाने वाली मशीन का ख्याल आते ही वह शांत हो गया। उसने खुद को याद दिलाया कि वे सब इसीलिए तो यहाँ आए थे।
अग्निकांतक को डेक पर असुरक्षित पड़ा देखकर उदयसंग ने मृत हूण की पीठ में धंसी कुल्हाड़ी के हैंडल को पकड़ लिया। एक क्रूर झटके से उसने कुल्हाड़ी को खींचकर अलग किया और गुलेल की ओर चल पड़ा।
तभी पहला तीर उसकी छाती पर, उसके दाहिने कंधे के ठीक नीचे लगा।
उसके सीने और कंधे में दर्द की लहर दौड़ गई और बांह तक फैल गई, जिससे उसने कुल्हाड़ी पर अपनी पकड़ और कस ली। हैरानी से उसने अपने चेहरे के ठीक सामने धंसे हुए पंखों वाले डंडे को देखा। तभी, एक और तीर लकड़ी के डेक पर, उसके पैरों से कुछ ही इंच की दूरी पर आकर लगा, तब उदयसांग को समझ आया कि क्या हो रहा है। ये आसपास के जहाजों से आए हूण तीरंदाज थे।
एक झटके में बाण का शाफ्ट निकालते हुए, संसप्तक अग्निकांतक की ओर दौड़ा। बाण उसके पास से तेज़ी से गुज़रे, एक बाण उसके माथे पर छूकर निकल गया, जिससे खून बहने लगा, लेकिन वह अपने रास्ते पर डटा रहा। पीछे से, उसे तलवार और बाण से घायल होते लोगों की दबी हुई चीखें सुनाई दे रही थीं। फिर भी वह दौड़ता रहा, उसके दिमाग में गुलेल के अलावा और कुछ नहीं था।
उस यंत्र के पास पहुँचकर उदयसंग ने कुल्हाड़ी से उसके चार स्तंभों में से एक पर प्रहार किया। लकड़ी पुरानी और कठोर थी, और यद्यपि स्तंभ सतह के पास से टूट गया, प्रहार इतना गहरा नहीं था। संसप्तक ने स्तंभ पर एक और प्रहार किया, और इस बार कुल्हाड़ी थोड़ी और गहरी चली गई। जैसे ही उसने अगले प्रहार के लिए अपने हाथ ऊपर उठाए, एक तीर उसके पेट में जा लगा। उसकी साँसें थम गईं, और वह दर्द से कराहते हुए झुक गया।
वे अपने कवच और हेलमेट पहन सकते थे, लेकिन कवच उन्हें पानी में भारी कर देते। कुल्हाड़ी पर झुकते हुए, दर्द से कराहते और हांफते हुए उदयसांग को पता था कि उन्होंने सही फैसला लिया है। कवच पहने हुए वे इतनी दूर तक कभी नहीं पहुँच पाते।

एक तीसरा तीर उसे लगा, इस बार वह उसकी दाहिनी जांघ में घुटने के ठीक ऊपर घुस गया।
दांत पीसते हुए उदयसंग सीधे खड़े हो गए। दोनों तीरों को तोड़कर एक तरफ फेंकते हुए उन्होंने कुल्हाड़ी उठाई और उसे बीम पर ज़ोर से प्रहार किया। प्रहार की तीव्रता से उनकी बाहों में चुभने वाला दर्द हुआ, लेकिन एक ज़ोरदार आवाज़ के साथ बीम मुड़ कर टूट गया। एक पल भी रुके बिना उदयसंग ने अपना ध्यान गुलेल के दूसरे पैर पर केंद्रित किया।
वह लगातार वार करता रहा और तीर उस पर लगातार बरसते रहे। जब तक उसने फ्लेमथ्रोवर का तीसरा पैर काट डाला, तब तक उसने तीर निकालना बंद कर दिया था। उसके सिर पर लगे दो घावों से निकला खून पसीने के साथ मिलकर उसके चेहरे पर धारियों की तरह बह रहा था, जो उसकी घनी दाढ़ी और मूंछों पर जम रहा था। जब चौथा और अंतिम खंभा टूट गया, तो अग्निकांतक एक जोरदार धमाके के साथ पलट गया जिससे जहाज पानी में अनिश्चित रूप से डगमगाने लगा। कुल्हाड़ी हाथ से फिसलकर उदयसांग चारों हाथों-पैरों के बल डेक पर गिर पड़े, उनका सिर लटका हुआ था और वे हांफते हुए सांस ले रहे थे। उनकी एक आंख खून के थक्के से भर गई थी और उनके होठों पर थूक में भी खून के धब्बे थे।
उसने अपना सिर उठाया और डेक पर नज़र डाली जहाँ समसप्तक और जहाज़ के रक्षक अभी भी आपस में लड़ रहे थे। दूसरे हूण जहाज़ों से तीरों की बौछार लड़ाकों पर बरस रही थी, और कभी-कभार कोई तीर किसी को लग जाता था - कभी समसप्तक को, कभी हूण को।
हुना रणनीति की क्रूरता ने उदयसांग के रोंगटे खड़े कर दिए।
जहाजों के बीच की दूरी बहुत अधिक थी और रात इतनी अंधेरी थी कि उनके तीरंदाज हूणों और संसप्तक में अंतर नहीं कर पा रहे थे। फिर भी तीरंदाजों ने अपने तीर चलाए, इस बात की परवाह किए बिना कि वे मित्र को मार रहे हैं या शत्रु को। आदिवासियों के लिए जो मायने रखता था वह था अपने जहाजों को शत्रुओं से मुक्त करना और ज्वाला प्रज्वलन यंत्रों की रक्षा करना। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए अपने ही कुछ योद्धाओं को मार डालना हूणों के लिए कोई बड़ा बोझ नहीं था।

इन लोगों में ज़रा भी दया नहीं थी। और अब ये लोग सिंधुवर्त पर कब्ज़ा करना चाहते थे। अगर वे सफल हो गए, तो उदयसंग समझ गए कि इसका अंजाम क्या होगा। उन्होंने अपना सिर पीछे की ओर झुकाया और क्रोध, भय और बेबसी से भरी एक कर्कश चीख के साथ अपने दाँत आसमान की ओर दिखाए। फिर लड़खड़ाते हुए खड़े होकर वे लंगड़ाते हुए दौड़ने लगे।
अग्निकांतकों का नाश करना काफी नहीं था। हूणों को इससे भी कहीं अधिक भयानक अंजाम भुगतना चाहिए था।
उदयसांगा बचे हुए कुछ योद्धाओं के पास से दौड़ते हुए उस छोटी मशाल पर नज़र रखे हुए थे जिसका इस्तेमाल हूणों ने आग के गोले जलाने के लिए किया था। मशाल डेक पर टिमटिमा रही थी और उससे हल्की नीली लपटें निकल रही थीं। कुछ ही इंच से चूकने वाले तीरों की परवाह किए बिना, वह जहाज की पूरी लंबाई पार करके दर्द से एक घुटने के बल बैठकर मशाल को उठाने के लिए आगे बढ़े।
उसने अंगारों पर ज़ोर से फूँक मारी, उन्हें तब तक तड़का लगाया जब तक कि नारंगी लपटों की तीन लपटें नहीं फूट पड़ीं। बचाई गई मशाल लेकर वह डेक के एक कोने में रखे बिना जले आग के गोलों के ढेर की ओर बढ़ा। तेल, गंधक और सरसों। हूणों को द्वारका को आग लगाने के लिए बस इतना ही चाहिए था। अब बदला लेने का समय था।
एक तीर उदयसंग को पीछे से भेदते हुए उनके बाएं कंधे के नीचे जा लगा। तीर गहरा धंस गया, मांस और हड्डी को चीरता हुआ फेफड़े को छेद गया। संसप्तक खांसते और लड़खड़ाते हुए गिर पड़े, उनके होठों से खून बहने लगा। फिर भी उन्होंने हिम्मत नहीं हारी, लड़खड़ाते और ठोकर खाते हुए आग के गोलों के ढेर की ओर बढ़े। उनके पैर जवाब दे गए, लेकिन वे रेंगते और पंजे मारते हुए तब तक आगे बढ़ते रहे जब तक कि ढेर तक नहीं पहुंच गए।
उसने हाथ बढ़ाकर मशाल को पास के गोले से छुआ। एक पल के लिए कुछ नहीं हुआ। फिर आग के गोले में मौजूद ज्वलनशील पदार्थ में चिंगारी उठी और आग लग गई। आग एक गोले से दूसरे गोले तक तेज़ी से फैल गई, लपटें तेज़ी से उठने लगीं। नीचे लकड़ी का डेक सुलगने लगा, जबकि ऊपर मस्तूल और पाल जलने लगे। डेक पहले पीला, फिर चमकीला नारंगी रंग से जगमगा उठा।

आग की चमक उदयसांगा के चेहरे पर पड़ रही थी, जो मैल, पसीने और खून से सना हुआ था। उसकी काली आँखों में चमक और भी तेज हो गई, जब वह डेक पर स्थिर लेटा हुआ था, उसकी निगाहें जमी हुई थीं, मानो अनंत की ओर टकटकी लगाए हुए हों।

* * *

झोपड़ी की खामोशी में पानी में हुई छपछपाहट इतनी तेज थी कि जयंता अपनी ध्यानमग्न अवस्था से चौंककर बाहर आ गया और उसकी आंखें खुल गईं।
दीपकों की तेज रोशनी के अचानक संपर्क में आने से राजकुमार की आंखें सिकुड़ गईं और वह पलकें झपकाने लगा, साथ ही धातु पर पानी की गूंज उसके कानों में गूंजती हुई धीमी होती चली गई। जैसे ही उसकी दृष्टि प्रकाश के अनुकूल हुई, राजकुमार ने तांबे के कटोरे पर नज़र डाली। कटोरे में पानी धीरे-धीरे हिल रहा था - वह शांत होने की ओर अग्रसर था - लेकिन जिस भी कारण से हलचल हुई थी, उससे पानी की बूंदें कटोरे के किनारे से छलक कर मिट्टी से सने फर्श पर गिर गईं।
जयंता थोड़ा और करीब आया और कटोरे में झाँका।
पहले तो उसे उथले पानी में अपने ही धुंधले चेहरे का प्रतिबिंब दिखाई दिया, जो पानी की गति के साथ तालमेल बिठाते हुए खिंचता और विकृत होता जा रहा था।
फिर उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगा।
एक लहर। पानी की सतह पर नहीं, जहाँ आमतौर पर लहरें देखी जाती हैं, बल्कि बर्तन के बिल्कुल तल पर।
असल में, कोई हलचल भी नहीं हुई। बस एक हल्की सी सरसराहट हुई।
कटोरे की वक्रता के साथ एक लंबी, फैली हुई लकीर, जैसे कोई ईल मछली फुफकारती है, लेकिन वहाँ कोई ईल नहीं थी। न ही कोई शरीर, आकार या पदार्थ था। बस एक धुंधली, लहरदार धारा – पानी से बनी हुई, फिसलती हुई और उसी पानी में विलीन होती हुई जहाँ से वह उत्पन्न हुई थी।
राजकुमार की सांस गले में अटक गई और उत्साह से उसके गाल लाल हो गए। वह सही रास्ते पर था।
पीछे झुककर, वह मंद स्वर में मंत्रोच्चार करने लगा, लेकिन कटोरे पर उसकी नज़र बनी रही। कुछ ही क्षणों में, पानी का तापमान बदलने के साथ ही कटोरे की

तलहटी में छोटे-छोटे बुलबुले बनने लगे, जो पतली-पतली धाराओं के रूप में सतह पर उठने लगे। अचानक, एक और ज़ोरदार हलचल हुई, जैसे तीन टेढ़ी-मेढ़ी धाराएँ एक-दूसरे को काटती और दौड़ाती हुई, अपनी पूंछों को गुस्से में लहराती हुई। इस उथल-पुथल से एक और छपछपाहट हुई, जो पिछली बार से कहीं ज़्यादा तेज़ थी, और कटोरे के चारों ओर पानी की बूँदें गिरने लगीं, कुछ बूँदें जयंता के खुले पैरों और पंजों को जला गईं।
लेकिन राजकुमार इतना व्यथित था कि उसे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था; उसके होंठ उग्रता से मंत्र जप रहे थे, आँखें चमक रही थीं और प्रतिशोध की लालसा से पागल हो रही थीं। उसे आभास हो रहा था कि अही अंततः उसके निकट पहुँच गया है। अब किसी भी क्षण वह अपने आतंक पर काबू पा लेगा।
अब किसी भी क्षण, उसका भाग्य - और मानव राजा और उसके शहर का भाग्य - बदलने वाला था।

बेड़ा

जहाज के डेक पर वातावरण पसीने और भय से भर गया था। वरारुची को हर सांस में अपने चारों ओर दबे हुए शरीरों से निकलती हुई घबराहट, दुर्गंध और तीक्ष्ण गंध महसूस हो रही थी। यह खारी हवा में घुलमिल गई, उनके सिर के ऊपर मंडरा रहे जहरीले धुएं के गुबार के साथ मिलकर नमी में एक घिनौना मिश्रण बना रही थी, जिससे पेट में मरोड़ उठ रही थी। और जब उसकी नजर उन आदमियों की आंखों में पड़ी, जो हूण जहाजों की परछाइयों को घूर रहे थे जो लगातार करीब आ रहे थे, तो पार्षद को उनकी आत्माओं में छिपे भय की झलक दिखाई दी।
अगर इन्हें थोड़ा समय दिया जाए तो ये डर से आत्महत्या कर लेंगे, वरारुची ने दुखी मन से आह भरी और डेक पर पैर टिकाते हुए पास ही आधे मील से भी कम दूरी पर हिलते-डुलते हुना जहाज को देखा। फिर उसने पीछे मुड़कर देखा, डेक पर ठसाठस भरे सौ से ज़्यादा पसीने से तरबतर आदमियों के सिर के ऊपर से, उन नावों की कतार पर जो द्वारका से सैनिकों को खाड़ी में इंतज़ार कर रहे अनार्ता जहाजों तक ले जा रही थीं।
“सावधान! तीर फिर से आ रहे हैं!”
जहाज के अगले हिस्से के पास तैनात पहरेदारों में से एक ने चेतावनी दी, और इस बार, लगभग एक साथ, डेक पर मौजूद सभी लोग झुक गए और हूण जहाज से दागे गए घातक तीरों से खुद को बचाने के लिए अपनी ढालें अपने सिर के ऊपर उठा लीं।

वरारुची ने भी ऐसा ही किया, यह देखे बिना कि क्या उनका जहाज वास्तव में हूण तीरंदाजों का निशाना था। अगर वे होते, तो उन्हें जल्द ही पता चल जाता। इसके बजाय, जितना हो सके खुद को समेटकर, वह अपनी ढाल के नीचे दुबक गया, अपने चारों ओर तीरों के फिर से गिरने का इंतजार करने लगा, और दर्द भरी चीखों की आशंका करने लगा क्योंकि तीर अनिवार्य रूप से किसी असुरक्षित, मांसल लक्ष्य को लग जाते। जहाज पर दागे गए पहले ही हमले में तीन सैनिक मारे जा चुके थे और चार अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए थे।
चीखें तो सुनाई दीं, लेकिन पास से नहीं। इस बार वे बहुत दूर से आ रही थीं, जहाज के डेक के पार कहीं से।
किसी ने उन्मादी स्वर में घोषणा की, "वे फिर से नावों पर हमला करने लगे हैं।"
मन ही मन बड़बड़ाते हुए पार्षद उठा और नावों की दिशा में पीछे मुड़कर देखा। पाँचों नावें इतनी दूर थीं कि वह बता नहीं सकता था कि हूण तीरंदाजों के निशाने पर कौन सी नावें थीं, हालाँकि उसे आभास हुआ कि सभी पाँचों नावें निशाने पर थीं। उसे लगा कि उसने एक नाव में किसी को आगे की ओर झुकते और गिरते हुए देखा।
“हमें तेज़ी से आगे बढ़ना होगा,” वरारुचि चिल्लाया। चारों ओर देखते हुए, उसकी नज़र मणिधरा पर पड़ी। “क्या हम जहाज़ की गति बढ़ा सकते हैं, हे सरदार? हमें उनके तीरंदाजों को जल्द से जल्द रोकना होगा।”
रायवाता के सरदार ने निराशा भरे स्वर में उत्तर दिया, “साझीदार अपनी पूरी ताकत से चप्पू चला रहे हैं, महोदय। ऐसे उबड़-खाबड़ पानी में वे इससे बेहतर कुछ नहीं कर सकते।”
"हमें अपने साथ कुछ तीरंदाज भी ले जाने चाहिए थे," वरारुचि ने अफसोस भरी आह भरी।
उनकी निगाह मणिधरा से हटकर उन दो हूण जहाजों के जलते हुए मलबे पर पड़ी, जिन पर ज्वाला प्रज्वलन यंत्र लगे हुए थे। उनके चारों ओर बनी सुरक्षा पंक्ति बहुत पहले ही बिखर चुकी थी, और दोनों जहाज खाड़ी में खुले में पड़े थे, वीरान और लावारिस, धुएँ और आग के दो छोटे-छोटे द्वीपों की तरह, जो धीरे- धीरे ढहते हुए टुकड़ों में पानी में समा रहे थे। अँधेरे में पहले जहाज के

आग की लपटों में घिरने का दृश्य परामर्शदाता के मन में ताजा था, और कुछ ही क्षणों बाद जब दूसरे जहाज में आग लग गई, तो द्वारका में जो जयजयकार गूंजा, वह इतना तेज था कि कान बहरे हो गए। आग के गोलों की वर्षा तुरंत रुक गई, जिससे युगंधरा और वरारुचि ने रक्षकों को त्वरित आक्रमण के लिए संगठित किया।
हालांकि, उनका जवाबी हमला शुरू होने से पहले ही विफल होने लगा, जिससे उनका उत्साह काफी हद तक धूमिल हो गया। जैसे ही सैनिकों से भरी कुछ पहली नावें तट से दूर लंगर डाले अनार्ता के जहाजों की ओर रवाना हुईं, समुद्र अचानक अशांत हो गया, जिससे योजनाओं में पहला बदलाव करना पड़ा। प्रशिक्षित, कुशल और साहसी योद्धा होने के बावजूद, अवंती के सैनिक नाविकों के अच्छे जानकार नहीं थे; समुद्र की उग्र लहरों में वे खुले पानी में बिल्कुल लाचार थे। इसलिए, वरारुची और कुछ मुट्ठी भर अन्य लोगों को छोड़कर, जिन्हें नौकायन का थोड़ा अनुभव था, अवंती के बाकी सैनिक द्वारका में ही रुक गए, और हूणों का समुद्र में सामना करने की चुनौती पूरी तरह अनार्ता के सैनिकों पर छोड़ दी। इस भयावह स्थिति से पहले ही भयभीत फेडरेशन की सेनाओं के लिए इससे भी बुरी स्थिति आने वाली थी। द्वारका में लगी आग से घाट रोशन हो गए थे और खाड़ी में मौजूद हूणों को अनार्ता जहाजों की ओर जाने वाली नावें स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थीं। हूणों ने तुरंत अपने तीरंदाजों को तैनात किया और बाहर जा रही नावों पर हमला कर रक्षकों को भारी नुकसान पहुंचाया। प्रत्येक नाव में सवार आधे से भी कम सैनिक अनार्ता जहाजों तक जीवित पहुंच सके, और उनमें से भी अक्सर इतने बुरी तरह घायल हो चुके थे कि वे आगे लड़ने में असमर्थ थे। इस जोखिम भरे रास्ते को पार करने की निरर्थकता और निरर्थकता को भांपते हुए, वरारुचि ने एक साहसिक प्रस्ताव रखा। वह और मणिधरा पहले से ही दो जहाजों पर सवार थे, उनके साथ लगभग दो सौ सैनिक थे। पूरे बेड़े के तैयार होने का अनिश्चित काल तक इंतजार करने और अपने सैनिकों को हूण तीरंदाजों के भरोसे छोड़ने के बजाय, पार्षद ने तीरंदाजों को ले जा रहे जहाजों पर धावा बोलने का प्रस्ताव रखा, जिससे संघ के सैनिकों को शेष जहाजों तक पहुंचने का बेहतर मौका मिल सके।
"क्या तुम्हें सच में लगता है कि यह तरीका काम करेगा, मेरे दोस्त?"

वररुचि ने मुड़कर देखा तो पाया कि मणिधरा भीड़ को धक्का देते हुए उनके पास आ गया था।
"अगर हम शेरों की तरह लड़ें, तो हाँ।"
मणिधरा एक पल के लिए चुप रहा। जैसे ही जहाज गहरी लहरों पर हिचकोले खाने लगा, उसने सहारे के लिए एक रस्सी पकड़ी और वरारुचि के कान में फुसफुसाया, "पुरुषों का मानना है कि यह एक अपशगुन है।"
“क्या है?” वरारुची ने सरदार की ओर मुड़कर पूछा।
"समुद्र," मणिधरा ने उनके चारों ओर उमड़ते पानी के विशाल समूह की ओर इशारा करते हुए कहा।
“लगता है तूफान आने वाला है,” पार्षद ने कंधे उचकाते हुए कहा। “मुझे लगता है आपके लोग इससे निपटने के आदी हो चुके होंगे।”
"अगर तूफान है, तो तूफान के बादल और हवा कहाँ हैं?"
वररुचि ने धुएँ के धुंधलेपन के बीच से आकाश का अवलोकन किया। उन्होंने तारों की घनी छटा देखी, दक्षिण-पश्चिम दिशा में आकाशगंगा चाँदी की एक चमकदार लकीर की तरह चमक रही थी। आसमान में न बादल थे, न हवा, ऊपर लटके पाल मस्तूलों और क्रॉसपीस से ढीले-ढाले लटक रहे थे। हवा लगभग मंद थी, वह हवा जो शाम भर द्वारका में आग को हवा देती हुई अंदर की ओर बह रही थी, अब बस एक याद बनकर रह गई थी।
“ये लोग सही कह रहे हैं,” मणिधरा ने उदास होकर सिर हिलाते हुए कहा। “यह एक अपशगुन है।”
“अगर ऐसा है, तो यह एक शुभ संकेत है,” पार्षद को जहाज की लकड़ियों की चरमराहट के बीच अपनी आवाज़ ऊँची करनी पड़ी। “आपके सैनिक समुद्री यात्रा में माहिर हैं, जबकि हूण नहीं। आपके सैनिक दुश्मन की तुलना में ऐसी कठिन परिस्थितियों से निपटने में कहीं अधिक कुशल हैं। समुद्र जितना अशांत होगा, हमारे पक्ष में संभावनाएं उतनी ही अधिक होंगी।”
“तुम्हारी बात में दम हो सकता है, मेरे दोस्त।” पार्षद की दलील से सरदार को कुछ खास तसल्ली नहीं हुई। “लेकिन यहाँ तो हम सौ हैं और वहाँ सौ और हैं…” उसने अपने पीछे आ रहे दूसरे अनार्ता जहाज की ओर अंगूठा हिलाते हुए कहा, “…

जबकि हूणों की संख्या इससे कई गुना ज़्यादा है। ऐसे हालात में बराबरी करना आसान नहीं है।”
वररुची ने कहा, “युद्ध में जीत सबसे ताकतवर, सबसे बहादुर या सबसे अधिक संख्या वाले की नहीं होती। जीत उसी पक्ष की होती है जो हार की कीमत को सबसे अच्छी तरह समझता है।”
"आप शायद पुरुषों को यह बात बताना चाहेंगी," मणिधरा ने पार्षद की ओर आशा भरी नजरों से देखा।
वररुची ने हूना के जहाजों पर एक सरसरी नज़र डाली। उन्हें अभी भी कुछ दूरी तय करनी थी, इसलिए वह रस्सियों को रखने के लिए बने एक बक्से पर चढ़ गया। “अनार्ता के योद्धाओं,” उन्होंने सैनिकों की ओर मुख करके कहा, अपनी आवाज़ को इस तरह नियंत्रित करते हुए कि वह डेक पर खड़े अंतिम व्यक्ति तक पहुँच सके। “हमने जो कार्य अपने हाथ में लिया है, वह असंभव लग सकता है, और सच कहूँ तो, मुझे नहीं पता कि हम हूण तीरंदाजों पर विजय प्राप्त कर पाएंगे या नहीं।”
डेक पर खड़े लोग घबराकर इधर-उधर हिलने लगे। मणिधरा ने वरारुचि को आशंका भरी नजरों से देखा, उसे समझ नहीं आ रहा था कि पार्षद इस बात को किस ओर ले जा रहा है।
“लेकिन याद रखो कि अग्निकांतकों का अंत करने में केवल चौदह लोग ही लगे थे,” पार्षद ने डूबते हुए हूण जहाजों की ओर हाथ बढ़ाया। “उन चौदह लोगों ने जो किया, वह इसलिए नहीं किया क्योंकि वे बहादुर और कुशल योद्धा थे, बल्कि इसलिए किया क्योंकि एक समय उनसे सब कुछ छीन लिया गया था – उनकी ज़मीनें, उनके परिवार, उनका आत्मसम्मान। यह सब वापस पाने में वर्षों और अनगिनत जानें लगीं। वे लोग आक्रमणकारियों के सामने झुकने की कीमत जानते हैं। वे और मैं भाग्य को चुनौती देंगे ताकि हूणों का साया फिर से हमारी ज़मीन पर न छाए। आप अधिक भाग्यशाली रहे हैं, लेकिन बर्बर अब आपके दरवाजे पर आ चुके हैं। क्या आप चुपचाप खड़े होकर उन्हें अपना हक छीनते हुए देखेंगे? आपका समुद्र, आपकी ज़मीन, आपकी आज़ादी? आपकी पत्नियाँ, आपका गौरव और आपका सम्मान?”

मणिधरा डेक पर माहौल में आए बदलाव को महसूस कर सकती थी। कंधे सीधे हो रहे थे, सिर अधिक दृढ़ता से ऊपर उठाए जा रहे थे, और पुरुषों की आंखों में अधिक दृढ़ता दिखाई दे रही थी।
“युद्ध का परिणाम कभी भी योद्धा के वश में नहीं होता। उसके वश में केवल यही होता है कि वह किस प्रकार लड़े और किसके लिए लड़े।” वरारुचि ने अपना हाथ ऊपर उठाया ताकि उसकी कुंडलित कुंडली सभी को दिखाई दे। “आज मैं अनार्त और सिंधुवर्त को आक्रमणकारियों से मुक्त रखने के लिए लड़ूंगा – और मैं इस प्रकार लड़ूंगा कि शत्रु आने वाली पीढ़ियों तक अपनी गाथाओं में मेरा स्मरण करेंगे। अनार्त के वीर योद्धाओं, आप क्या करेंगे?”
“हम भी इसी प्रकार लड़ेंगे, महाराज,” एक सैनिक ने उत्तर की ओर चिल्लाते हुए कहा। उसके चारों ओर खड़े लोगों ने सहमति में सिर हिलाया।
“हम अनार्तों के लिए, सिंधुवर्त के लिए और अपनी स्वतंत्रता के लिए लड़ेंगे,” एक अन्य सैनिक ने अपना भाला आकाश की ओर उठाकर हिलाते हुए चीख मारी। जवाब में भाले, तलवारें और कुल्हाड़ियाँ हवा में उठ उठीं, उसके साथियों ने उसके शब्दों को दोहराते हुए एक जोशीले युद्धघोष में बदल दिया। “अनर्तों, सिंधुवर्त और स्वतंत्रता के लिए,” मणिधरा ने वरारुचि से कृतज्ञता भरी निगाहें मिलाते हुए कहा।
सरदार की प्रशंसा को स्वीकार करते हुए, वरारुची ने अपना ध्यान हूण बेड़े पर वापस केंद्रित किया। तीरंदाजों वाले जहाज सौ गज से भी कम दूरी पर थे, और सलाहकार ने देखा कि कुछ और जहाज किनारों से अनार्ता जहाजों को रोकने के लिए आगे बढ़ रहे थे। हालांकि, समुद्र और भी उबड़-खाबड़ हो गया था, लहरें लगभग रेलिंग तक उठ रही थीं और डेक पर पानी उछाल रही थीं। हूण नाविक अपने जहाजों को सही दिशा में रखने के लिए संघर्ष कर रहे थे, और भोर के धुंधले प्रकाश में दुश्मन के जहाजों को लड़खड़ाते और डगमगाते देखकर वरारुची को राहत मिली। हूणों की संख्या उनसे कहीं अधिक थी, लेकिन फिलहाल, शायद उनकी सेना में अधिक अव्यवस्था थी। वह इस पर भरोसा नहीं कर सकता था, लेकिन इस विचार से आशा की किरण जगी।
जैसे ही वे करीब आए, हूण तीरंदाजों ने तीरों की एक और बौछार कर दी। उनके जहाजों की अनियमित गति के कारण, तीर निशाने पर ठीक से नहीं लगे और अनार्ता

के जहाज पर मुश्किल से दो दर्जन तीर ही लगे। फिर भी, मणिधरा ने खतरे को स्पष्ट रूप से भांप लिया।
“अपनी ढालें समेट लो और उनके पीछे छिप जाओ,” उसने अपने आदमियों को निर्देश देते हुए इशारा किया और चिल्लाया। “एक बार हम काफी करीब पहुँच गए, तो वे चूकेंगे नहीं। अपनी ढालें और पास रखो, हर कोने को ढक लो… जल्दी करो। तुम वहाँ… घुटने टेक दो। और तुम… अपने सामने वाले साथी के कंधे को ढक लो।” वरारुची पंक्ति में आ गया, अपनी ढाल उठाई और उसे एक सैनिक की ढाल के ठीक बगल में रख दिया। उसके चारों ओर सैनिक एकत्रित हो गए, उनकी ढालें आपस में जुड़कर धातु का एक कवच बना रही थीं, जिसके पीछे वे झुके या खड़े थे, सिर नीचे किए हुए, हाथों से अपने हथियारों को कसकर पकड़े हुए। तीरंदाजों ने एक और बार तीर चलाए, इस बार निशाना बेहतर था, लेकिन पंक्ति ने हमले का सामना किया, तीर ढालों से टकराकर बेअसर हो गए।
धीरे-धीरे, उफनते और प्रतिरोधी पानी को चीरते हुए, अनार्ता का जहाज हुना के जहाजों की ओर बढ़ा। संकरे होते समुद्र के उस हिस्से पर तीरों की बौछार हो रही थी, लेकिन अनार्ता की टुकड़ी डटी रही। उनका जहाज धीरे-धीरे करीब आता गया, चारों ओर घूमते हुए, जब तक कि उसका किनारा तीरंदाजों वाले एक जहाज से ज़ोर से टकरा नहीं गया।
"हमला करो!" मणिधरा ने अपनी पूरी ताकत से चिल्लाया।
अनार्तास के योद्धाओं ने छुपकर वार किया, ढालें हटीं और भारी कुल्हाड़ियाँ, घुमावदार तलवारें और लंबे भाले दिखाई दिए, सभी हुना जहाज की ओर तनी हुई थीं, मानो खून के प्यासे तेज धार वाले हथियारों का सैलाब उमड़ पड़ा हो। योद्धा दौड़ पड़े, उनके पैर डेक पर ज़ोर से पड़ रहे थे, हथियार हवा में लहरा रहे थे, उनकी चीखें लहरों के टकराने और गिरने की आवाज़ को दबा रही थीं। उन्होंने जहाज के किनारे से हुना तीरंदाजों पर छलांग लगा दी, ठीक उसी समय जब द्वारका के पीछे आकाश में भोर की पहली किरण दिखाई दी।

* * *

स्नानघर की ओर खुलने वाली दूसरी मंजिल की खिड़की इतनी धीमी खुली कि खिड़की के पास उगे जामुन के पेड़ पर घोंसला बनाए तोते भी अपनी नींद में मुश्किल से

हिले। बाहर अभी भी अंधेरा था, हालांकि पूरब में हल्की रोशनी की एक लकीर ने नए दिन के आगमन का संकेत दिया।
कमरे के अंदर और भी अंधेरा था, और आचार्य खिड़की से बाहर झुककर स्नानघर और महल से उस तक जाने वाले रास्ते को देख रहे थे, मानो उनकी परछाई मात्र थी। वे विशेष रूप से तालाब के काले आयताकार भाग को खोज रहे थे, लेकिन जब उनकी आँखों को कोई स्पष्ट आकृति दिखाई नहीं दी, तो उन्होंने किसी स्नान करने वाले व्यक्ति द्वारा पानी के छींटे मारने की विशिष्ट आवाज़ सुनने के लिए अपने कान तेज़ किए। हालाँकि, स्नानघर की दिशा से कोई आवाज़ नहीं आ रही थी, और झील के उस पार से कौकल की गहरी 'कूप-कूप-कूप' की आवाज़ के अलावा, सुबह सन्नाटे में डूबी हुई थी।
अपनी पलकें कसकर बंद करते हुए राजगुरु ने कामना की कि वैद्य तभी प्रकट हों जब पर्याप्त रोशनी हो जाए। वे लगभग पूरी रात जागते रहे, शंकु द्वारा बताई गई हर बात पर विचार करते रहे, वैद्य से जुड़ी हर छोटी घटना को अपने मन में दोहराते रहे, और अब उन्हें थकान का भारी बोझ महसूस हो रहा था, जो उनकी सोचने-समझने की क्षमता को धीमा कर रहा था, उनके दिमाग को सुस्त कर रहा था। परामर्शदाता को डर था कि अगर ठीक से दिखाई न दे तो वे वैद्य के विचारों पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पाएंगे।
यह कमरा महल के उत्तर-पूर्वी स्नानघर के ठीक ऊपर तिरछे में स्थित था, जो जामुन के पत्तों से ढका होने के कारण नीचे से दिखाई नहीं देता था। यह कमरा दरबारी कलाकारों के लिए एक स्टूडियो के रूप में आरक्षित था, जो एकांत में रेखाचित्र या पेंटिंग करना चाहते थे। इसका उपयोग बहुत कम होता था और यह वेताला भट्टा के उद्देश्य के लिए बिल्कुल उपयुक्त था; वह नहीं चाहते थे कि किसी को भी उनके कामों का जरा सा भी अंदाजा हो, कम से कम फिलहाल तो नहीं। बादलों से ढके धूसर आकाश में भोर होने लगी। पूर्वी हवा उज्जैन के ऊपर और अधिक बादलों को घेर रही थी, लेकिन ज़मीन के पास हवा गर्म और उमस भरी थी। समय बीतने के साथ ही वैद्य का कोई आभास नहीं हुआ, तो वेताल भट्ट सोचने लगे कि कहीं उन्होंने वैद्य की दिनचर्या को गलत तो नहीं समझ लिया। वे जानते थे कि वैद्य को यह स्नान पसंद था, लेकिन शायद उस सुबह उन्होंने महल के किसी और स्नानघर को चुना हो।

लगभग आधा घंटा बीत चुका था और राजगुरु अपना जागरण समाप्त करने ही वाले थे कि उन्हें पत्थर पर लकड़ी की पादुकाओं की खड़खड़ाहट सुनाई दी। वे थोड़ा आगे बढ़े और झाँक कर देखा तो पाया कि वैद्य आ रहे हैं। राहत की साँस लेते हुए, सलाहकार ने दाढ़ी वाले व्यक्ति के स्नानघर की सीढ़ियों से नीचे उतरने, अपनी पादुकाएँ उतारने और कुंड में प्रवेश करने का इंतज़ार किया। फिर उन्होंने पास ही दीवार के सहारे रखे अपने भाले को उठाया।
भाले को सावधानीपूर्वक छुपाए रखते हुए, वेतला भट्ट ने अपनी मुट्ठी छाती पर भींच ली और उनकी निगाहें पानी में आधे डूबे हुए वैद्य के सिर के पिछले हिस्से पर टिकी रहीं। जैसे ही वैद्य ने खुद को कुंड में डुबोया, परामर्शदाता ने अपनी आँखें बंद कर लीं और चुपचाप एक मंत्र का जाप करने लगे।
आचार्य के भाले से लटकी हुई दोनों खोपड़ियाँ अपनी खोखली जगहों पर चमक रही थीं और सुलग रही थीं।
फिर, सांस रोककर, राजगुरु के मन में एक के बाद एक दो छवियां उभर आईं - एक जटिल मंडल; और एक विशाल, धूप से जगमगाता मैदान जिसके केंद्र में एक अकेला बरगद का पेड़ था।

* * *

द्वारका पर जो भोर हुई वह भव्य और शानदार थी, पिघले हुए सोने के रंग जैसी, लेकिन अफसोस की बात है कि उस पर किसी का ध्यान नहीं गया। जो लोग शहर छोड़कर ग्रामीण इलाकों में शरण लिए हुए थे, वे इतने भयभीत और टूटे हुए थे कि अपनी पीड़ा और दुर्भाग्य से आगे कुछ देख ही नहीं पा रहे थे, जबकि जो लोग पीछे रह गए थे, वे आग को बुझाने या बढ़ती लपटों से जो कुछ बचा सकते थे, उसे बचाने में व्यस्त थे। और खाड़ी में मौजूद लोगों के मन में कुछ और ही विचार थे। जैसे कि कुल्हाड़ी का हर वार, तलवार का हर प्रहार और भाले का हर वार कैसे कारगर साबित हो, और इस खूनी लड़ाई से कैसे जिंदा बचा जाए।
उस सुबह जो लड़ाई चल रही थी, वह अब तक लड़ी गई सबसे खूनी लड़ाई थी, कम से कम अनारतास के सैनिकों की सामूहिक कल्पना में तो यही था।
हूण क्रूर और निर्मम योद्धा थे, जिनमें भय का अभाव और मृत्यु के प्रति उदासीनता का भाव था, जो विस्मृति का कारण बन जाता था। वे कुल्हाड़ियों और

तलवारों से वार करते हुए, गालियाँ बकते हुए, रक्तपिपासा में लहूलुहान होकर द्वारका की सेना पर टूट पड़े। वे समूहों में आते, अपने शत्रुओं को चीरते हुए, उनकी तलवारें सीने और पेट में धंस जातीं, उनकी कुल्हाड़ियाँ सिर और कंधों में गड़ जातीं; और वे एक-एक करके या दो-दो करके अनार्तास के सैनिकों के समूहों पर टूट पड़ते, लेकिन पल भर में ही भाले से छेद दिए जाते और टुकड़े-टुकड़े हो जाते। बलवान और राजसी, वे शेरों की तरह लड़ते; क्रूर और निर्दयी, वे पागल कुत्तों की तरह लड़ते।
फिर भी, अनार्तास के सैनिक विचलित नहीं हुए। वे डटे रहे और डटकर मुकाबला करते रहे, जैसे को तैसा जवाब देते रहे। अगर उनमें से किसी को डर भी लगता, तो सैनिक को बस वरारुची की ओर देखना होता और हिम्मत जुटाकर हूणों का फिर से सामना करना पड़ता। क्योंकि अवंती का सलाहकार मानो हर जगह मौजूद था, जहाज के एक छोर से दूसरे छोर तक, हर लड़ाई के बीचोंबीच।
एक पल पहले, उसका उरुमी (तलवार) एक हूण को बुरी तरह घायल कर रहा था जो एक गिरे हुए अनार्ता सैनिक का सिर काटने ही वाला था; अगले ही पल, वह एक युद्ध-कुल्हाड़ी के घातक प्रहार को रोक रहा था और फिर अपने हमलावर की बांह के नीचे झुककर कटारी से उसका गला काट रहा था। अचानक, वह उछल-कूद कर जहाज के रस्सियों पर चढ़ गया और अपने पीछे आ रहे छह हूणों से बचने लगा; एक क्षण बाद, वह रस्सी के सहारे डेक पर झूल रहा था और उन्हीं छह आदमियों पर शिकारी की तरह घात लगाकर हमला कर रहा था। वरारुची डेक पर एक प्रेत की तरह चल रहा था, वार करते हुए तलवारों से बचता और घातक भालों से हटता हुआ, अपने रास्ते में आने वाले हूणों को बुरी तरह घायल और क्षत-विक्षत कर देता। या फिर उन्हें बेजान कर देता।
युद्ध के दौरान किसी समय, कुछ अन्य हूण जहाज अतिरिक्त सैनिकों को उतारने के लिए आगे बढ़े, और आक्रमणकारियों के पक्ष में पलड़ा तेज़ी से झुकने लगा। संख्या में चार गुना कम और पीछे हटते हुए, अनार्ता के सैनिक गिरने लगे, जिनमें से एक मणिधरा भी था, जिसे उसके बाएं जांघ में, घुटने के ठीक ऊपर भाला लगने से मार गिराया गया। दर्द से चीखते हुए, सरदार लड़खड़ाकर गिर पड़ा, उसका सही पैर खून से लथपथ डेक पर फिसल गया और लड़खड़ा गया।
जब मणिधरा एक घुटने पर लड़खड़ा रहा था, उसका घायल पैर उसके पीछे घिसट रहा था, तभी एक हूण योद्धा ने उसका सिर दो टुकड़ों में काटने के इरादे से अपनी

कुल्हाड़ी उठाई। अनार्तस के सैनिक अपनी जान बचाने के लिए इतने मशगूल थे कि उन्हें अपने सरदार के आने वाले अंजाम का पता ही नहीं चला। हालांकि, हूण योद्धा के कुल्हाड़ी चलाने से कुछ ही पल पहले, चारों ओर लड़ रहे योद्धाओं के सिर के ऊपर से एक आकृति उस पर झपटी। वह आकृति हूण योद्धा से टकराई, जिससे उसका संतुलन बिगड़ गया और वह ज़मीन पर गिर पड़ा।
जब तक हूना का कंधा जमीन पर लगा, तब तक वह सीने में धंसी कटारी तलवार से मर चुका था, जिसका ब्लेड उसकी पसलियों को भेदते हुए उसके दिल में घुस गया था। स्तब्ध मनिधरा ने वरारुचि को गिरे हुए हूण से उठते हुए देखा, जो मृत व्यक्ति के धड़ से कटारी छीनकर पास में मौजूद अन्य हूणों के हमले का सामना करने के लिए घूम रहा था। हालांकि, उस समय न तो पार्षद और न ही सरदार किसी की नजर में थे, इसलिए वरारुचि ने मनिधरा की ओर एक त्वरित नजर डाली।
“क्या तुम तलवार चला सकते हो?” उसने संक्षिप्त स्वर में पूछा। मणिधरा को सिर हिलाते देख, सलाहकार ने तुरंत झुककर उसे सहारा दिया ताकि वह उठकर मस्तूल का सहारा ले सके। “मैं पास ही रहूंगा, लेकिन मैं हर समय तुम्हारी निगरानी नहीं कर पाऊंगा, मुखिया। इसलिए तलवार को अच्छी तरह पकड़ो – हमें हर मजबूत हाथ की जरूरत है।”
पार्षद हूणों का सामना करने के लिए अभी मुड़ा ही था कि जहाज़ अचानक ज़ोर से हिल गया, जिससे दोनों तरफ़ के सैनिक इधर-उधर बिखर गए। लहरें डेक पर टकराईं और एक पल के लिए जहाज़ का अगला हिस्सा आसमान की ओर और पिछला हिस्सा गहरे अंधेरे में डूबा हुआ सा लग रहा था। अगले ही पल, जहाज़ सीधा हो गया और पूरी तरह पानी में वापस आ गया। मणिधरा ने अशांत समुद्र और इधर-उधर हिलते जहाज़ों को हैरानी और डर के मिले-जुले भाव से देखा।
ऊपर आसमान में बादल नहीं थे, पूरब में सूरज तेज चमक रहा था और हवा का नामोनिशान नहीं था। समुद्र की उग्रता प्रकृति के हर नियम को चुनौती दे रही थी।
अशांति ने युद्ध को क्षणिक रूप से विराम दे दिया, और हमलावर और रक्षक दोनों ही जैसे-जैसे अपने पैरों पर खड़े होने की कोशिश कर रहे थे, द्वारका से पहला जहाज आ पहुँचा, जो अपने संकटग्रस्त भाइयों की सहायता के लिए अनार्तास की और सेना लेकर आया था। लड़ाई फिर से छोटे-मोटे संघर्षों के रूप में शुरू

हुई, लेकिन ऐसा लग रहा था कि हूणों का साहस अंततः खत्म हो गया था। जैसे- जैसे द्वारका से अधिक से अधिक जहाज युद्ध में शामिल होते गए, आक्रमणकारियों को धीरे-धीरे पीछे धकेला जाने लगा, उनके योद्धा जहाजों के किनारों से कूदकर खाड़ी में चले गए।
“वे भाग रहे हैं,” मणिधरा ने किसी को चिल्लाते हुए सुना और पीछे मुड़कर देखा तो उसे हूण जहाज पीछे हटते हुए दिखाई दिए। जैसे ही वरारुचि उसके पास प्रकट हुए, डेक पर ज़ोरदार जयकार गूंज उठी।
“हमने उन्हें खदेड़ दिया,” सरदार ने वरारुची के पसीने से तर कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, और साथ ही मुस्कुराते हुए दर्द से कराह उठा। “हमारे प्रतिरोध का फल मिला।”
“हाँ,” पार्षद ने अपनी बांह पर लगे घाव को देखते हुए सहमति जताई। मृत और घायल सैनिकों से भरे डेक पर नज़र घुमाते हुए उन्होंने कहा, “आपके सैनिकों ने असाधारण रूप से लड़ाई लड़ी, हालांकि समुद्र ने भी इसमें भूमिका निभाई।” “महत्वपूर्ण बात यह है कि बर्बर भाग रहे हैं।” पीछे हटती नावों को देखते हुए सरदार ने पूछा, “क्या हमें उनका पीछा नहीं करना चाहिए? उन्हें सबक सिखाना चाहिए?”
“हमें पहले युगंधरा से परामर्श करना होगा,” वरारुचि ने उत्तर दिया और अन्य अनार्ता जहाजों पर मुखिया के संकेत की तलाश करने लगा। “यदि हमें पीछा करना ही पड़े तो…”
पार्षद अचानक जहाज में आए बदलाव को महसूस करते हुए रुक गया। लोग बात करना और चिल्लाना बंद कर चुके थे, और छोटे-छोटे समूहों में खड़े थे, उनके हथियार हाथों में बेजान पड़े थे, और वे बड़ी-बड़ी आँखों से हूण जहाजों की ओर देख रहे थे।
“पालें!” एक सैनिक ने दबी आवाज में कहा।
मणिधरा से हैरानी भरी नज़रें मिलाते हुए, वरारुचि कुछ कदम आगे बढ़ा यह देखने के लिए कि भागते हुए जहाजों के विशाल समूह के पीछे सैनिकों की नज़र में क्या है। पहले तो उसे उठते-गिरते उग्र लहरों के अलावा कुछ भी दिखाई नहीं दिया, जिनकी चोटियाँ लहरों से जमी हुई थीं।

फिर, जैसे ही एक लहर शांत हुई और स्थिर हुई, उसने पहली पाल देखी। फिर दूसरी, उसके बाद तीसरी। देखते ही देखते, क्षितिज का उत्तर-पश्चिमी भाग काली पालों से भर गया, जो द्वारका के करीब आते ही बड़ी और अधिक स्पष्ट होती गईं। “भगवान हमारी मदद करें।” वरारुचि ने मणिधरा को अपने कान में फुसफुसाते हुए सुना, जो लंगड़ाते हुए उसके पास आया था। “शायद ये पूरी हूण सेना है।” "आपके अनुमान के अनुसार कितने जहाज होंगे, मेरे मित्र?"
“कम से कम पचास,” सरदार का चेहरा पीला पड़ गया था, उसकी आँखों में डर झलक रहा था। “हम इतने सारे लोगों का सामना नहीं कर सकते। हमें पीछे हटना होगा।”
हूण बेड़े को करीब आते देख, वरारुचि के कंधों पर निराशा का साया छा गया और उसके पैर डेक पर ही जम गए। अग्निकांतकों पर हमला, हूण जहाजों पर आक्रमण, युद्ध की भयंकर मार और तमाम बलिदान – द्वारका को बचाने के लिए उन्होंने जो कुछ भी किया था, सब व्यर्थ हो गया था। यह शहर अब भी हूणों के हाथों में जाने वाला था।

* * *

विशाल, धुंधले आकाश के नीचे तालाब में शायद ही कोई लहर उठी हो। तालाब की सतह के नीचे डूबे हुए शुक्राचार्य ने अपनी सांस रोक रखी थी, मानो एक भी मांसपेशी न हिला रहे हों, मानो अपने मन को शांत करने की कोशिश कर रहे हों। लेकिन उनका मन लगातार उथल-पुथल में था, विचार एक-दूसरे का पीछा कर रहे थे, बेचैन थे और थमने को तैयार नहीं थे। वे उन्हें राहगीर कुत्तों की तरह सता रहे थे, जिद्दी और बेमेल, जहाँ भी वे जाते, उनका पीछा करते, जब उनकी पीठ उनकी ओर होती, तो वे उनके करीब आ जाते, लेकिन जैसे ही वे अपना ध्यान उनकी ओर मोड़ते, वे दूर हट जाते। इन विचारों ने उन्हें नींद से वंचित और थका दिया था, जिससे उन्हें बुखार सा हो गया था, जिसे महायाजक उनकी थकी हुई हड्डियों में बढ़ता हुआ महसूस कर सकते थे।
शुक्राचार्य ने धीरे-धीरे सांस लेने के लिए पानी की सतह पर उठते हुए स्वीकार किया कि चिंता करने के लिए बहुत कुछ था।
वहाँ एक यक्ष था, जो अस्थियों के अनुसार उज्जैन की ओर तेज़ी से बढ़ रहा था।
श्मशान घाट की अपनी पिछली कुछ यात्राओं के दौरान, मुख्य पुरोहित ने बरगद

के सलाहकारों में से एक के रूप में पहचान लिया। वही जिसे वे शंकु कहते थे, वही जो चमत्कारिक रूप से मारुत के चंगुल से बच निकली थी।
वह तस्वीर गायब हो गई।
हैरान शुक्राचार्य अपने सामने टकटकी लगाए बैठे रहे, मानो कुछ समझ ही नहीं पा रहे हों कि आखिर हो क्या रहा है। फिर, पल भर में, उन्हें एक और छवि दिखाई दी – एक बूढ़ा आदमी, थका हुआ और उदास चेहरा लिए, जिसे उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था। "शूरासेना को मेरा पत्र अवश्य मिलेगा," पल भर में, उन्हें एक और छवि दिखाई दी, वह आदमी कह रहा था, पल भर में, उन्हें एक और छवि दिखाई दी, "क्या होगा अगर वह रुक्मा का हाथ थाम ले?"
अगले ही पल, वह छवि भी गायब हो गई। उसकी जगह उसने विक्रमादित्य को देखा। मानव राजा खड़े होकर अपनी मूंछें सहलाते हुए बोल रहे थे। धनवंतरी। उनके पास चंद्रवर्धन के दरबार में आने का एक बहुत अच्छा कारण है - राजा की बीमारी।
विक्रमादित्य धुंध में खो गए, और एक के बाद एक कई चित्र तेज़ी से आते-जाते रहे। उज्जैन की निर्माणाधीन बाहरी दीवार का एक हिस्सा; परिषद कक्ष में राजा और उनके सलाहकार नारद का प्रवचन सुन रहे थे – “आप हमसे मित्रता करके बहुत लाभ उठाएंगे”; पलंग पर लेटे राजा, आँखें बंद किए और मृत्यु के समान पीले दिख रहे थे; सफेद कोहरे का एक पर्दा, जिसके हिलते-डुलते आवरणों में कुछ अस्पष्ट, विशाल और छायादार छिपा हुआ था…
फिर से लड़की का चेहरा – नाविक कहता है कि उसने राजगुरु को कई बार नाव से यात्रा कराई है।
पलक झपकते ही युवा पार्षद गायब हो गया और प्रधान पुजारी के मन में एक नई छवि उभर आई। एक विशाल, आयताकार स्नानघर, एक ऊंचे पीपल के पेड़ की छाया में, स्नानघर की सीढ़ियों पर एक अकेला व्यक्ति खड़ा था। उस व्यक्ति ने पादुकाएं, एक गीली धोती और बाईं आंख पर पट्टी बांधी हुई थी। प्रधान पुजारी ने आश्चर्य और अविश्वास से अपना सिर झटकते हुए गहरी सांस ली - और स्नानघर की सीढ़ियों पर खड़े उस व्यक्ति ने भी ऐसा ही किया।
तभी शुक्राचार्य को अचानक से आकाश से बिजली गिरने की तरह इस घटना की गंभीरता का अहसास हुआ।

उसे अचानक एहसास हुआ कि वह किसी और के विचारों का अनुभव कर रहा है, वह उन चीजों को देख और सुन रहा है जो दूसरे व्यक्ति के मन में चल रही हैं। उनके मनों के बीच के द्वार खुल गए थे, जिससे विचार निर्बाध रूप से प्रवाहित हो रहे थे।
प्रधान पुजारी को उन दरवाजों के अचानक खुलने का केवल एक ही अच्छा कारण सूझा। किसी ने उनके मन की बात जानने के इरादे से उन्हें खोला होगा।

अही

कोई मेरे मन की बात जानने की कोशिश कर रहा है।
शब्दों का गहरा प्रभाव महसूस करते हुए, आचार्य खिड़की से जल्दी से हट गए, परछाइयों में छिप गए और अपने भाले को अंधकार में और गहराई तक घुसा दिया। उनके शरीर में एक हल्की सी कंपकंपी दौड़ गई, जिससे उनके पैर कांपने लगे और बेचैनी की भावना उनके भीतर फैल गई, जिससे उनके माथे पर पसीना आ गया और कनपटी से नीचे बहने लगा।
महल में कोई मेरी मनोवृत्ति को जानने की कोशिश कर रहा है... कोई ऐसा व्यक्ति जो मानव राजा और उसकी परिषद से परिचित है, कोई ऐसा व्यक्ति जिस पर वे भरोसा करते हैं।
भय से व्याकुल राजगुरु वैद्य के विचारों को छुप-छुप कर सुन रहे थे। उन्हें लगभग ऐसा लग रहा था जैसे वैद्य की निगाहें उन पर टिकी हों, मानो उनके मन में झाँक रही हों, उनकी पहचान उजागर करवाने के प्रयास में उनके अँधेरे कोनों और गुप्त स्थानों में छानबीन कर रही हों।
तुम कौन हो? तुम कहाँ हो?
अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति से आचार्य ने वैद्य के मन की पकड़ को ढीला कर दिया। वैद्य के विचार फिर से हावी होने और उन्हें ढूंढने की कोशिश करने लगे,

लेकिन राजगुरु ने अपनी आंखों से पसीना पोंछा। होठों को गीला करके उन्होंने कुछ मंत्रों का शीघ्रता से उच्चारण किया...
– यह चिकित्सक या वरारुचि नहीं है –
… वह उस संबंध को तोड़ने के लिए संघर्ष कर रहा था जो उसने वैद्य के दिमाग से बना लिया था।
– वह व्यक्ति भागने की कोशिश कर रहा है। क्या ऐसा हो सकता है? –
… और अचानक, जैसे पर्दा गिर गया हो, वैसे ही वैद्य और उनके विचार गायब हो गए!
उनकी जगह सन्नाटा छा गया, और उसके दिल की धड़कन घबराहट और राहत से भरी हुई थी, साथ ही उसके अपने दिमाग की आवाजें भी गूंज रही थीं, जो हांफती हुई, शोर मचाती हुई और तर्कहीन थीं, उसे कमरे से भाग जाने के लिए उकसा रही थीं ताकि उसे कोई ढूंढ न सके।
वेतला भट्ट ने संभलकर आगे बढ़ते हुए खिड़की के चौखट से झाँका। वैद्य अभी भी स्नानघर की सीढ़ियों पर खड़े थे, सीधे और सतर्क, धीरे-धीरे अपना सिर घुमाते हुए महल का जायजा ले रहे थे। वैद्य को अपनी ओर मुड़ते देख राजगुरु फिर से नज़रों से ओझल हो गए, अपनी साँस रोककर पल गिनते रहे। वे अभी यह सोचने ही लगे थे कि क्या दोबारा झाँकना सुरक्षित होगा, तभी पादुकाओं की खनक उनके कानों तक पहुँची और तेज़ी से दूर होती चली गई। आचार्य ने समय रहते अपना सिर बाहर निकाला और वैद्य को महल के सबसे नज़दीकी प्रवेश द्वार के किनारे लगे पारिजात के पौधों के पीछे गायब होते देखा।
आचार्य ने एक लंबी, कांपती हुई आह भरी और पसीने से तर हथेली से फिसलते हुए अपने भाले के डंडे पर अपनी पकड़ ढीली कर दी। प्रकाश खोपड़ियों से गायब हो चुका था, काली आँखें और खोखले भाग अब एक भयानक आनंद में शून्य की ओर घूरते और मुस्कुराते हुए प्रतीत हो रहे थे।
वैद्य को सब कुछ पता था! वैद्य ने उसे लगभग पकड़ ही लिया था।
इस अहसास ने राजगुरु को स्तब्ध कर दिया। नियम के अनुसार, वे कभी भी बिना सहमति के मन पढ़ने का प्रयास नहीं करते थे, लेकिन उन कुछ दुर्लभ अवसरों पर जब उन्होंने गुप्त रूप से लोगों के मन पढ़े थे, तो उनके शिष्यों को कभी भी यह आभास नहीं हुआ था कि उनके विचार उजागर हो रहे हैं। आखिर किस बात ने

उन्हें वैद्य के सामने उजागर कर दिया था? उन्होंने ऐसा क्या किया था जिससे वे लगभग भेद खुल गए थे? उत्तरों की खोज करते हुए भी, आचार्य के विचार वैद्य के मन से प्राप्त जानकारी की ओर मुड़ गए।
मंडल। उसने वैद्य को विशाखा के उपचार के दौरान तांत्रिक मंडलों का उपयोग करते देखा था, लेकिन वह मंडल रानी के शयनकक्ष के फर्श पर बने मंडल से बहुत अलग था। वैद्य के मन में बना मंडल कहीं अधिक जटिल था, भूलभुलैया जैसी खाइयों और वृत्तों का एक जाल जो कुछ अशुभ सा प्रतीत होता था। इसके अलावा, उसे मंडल पर हड्डियों के कुछ टुकड़े बिखरे हुए दिखाई दिए, जिससे चित्र में एक भयावहता का भाव आ गया था।
फिर एक अकेला बरगद का पेड़ था जो वैद्य के मन में बार-बार आता-जाता रहता था। आचार्य को पेड़ को पहचानने में ज़रा भी समय नहीं लगा – यह वही पेड़ था जो शहर के बाहर श्मशान घाट में था। उस पेड़ ने शंख से कही गई उस बात की व्याख्या कर दी कि क्षिप्रा नदी पार करते समय वैद्य के कपड़े और पैर राख से क्यों ढके रहते थे। लेकिन उस बरगद के पेड़ में – या शायद श्मशान घाट में ही? – वैद्य के लिए ऐसी क्या बात थी?
फिर भी, मंडल और बरगद के पेड़ के रहस्य से कहीं अधिक, आचार्य को भ्रमित और विचलित करने वाली बात एक ऐसी छवि थी जो क्षण भर के लिए ही वैद्य के मन में उभर आई थी। यह एक चेहरा था, बस एक पल के लिए, लेकिन राजगुरु को लगा कि यह नारद का चेहरा था; वही बुद्धिमान आँखें, नुकीली नाक और चौड़ा माथा जो उन्होंने पहली बार उस दिन देखा था जब देव इंद्र की मित्रता के बदले हलाहल प्राप्त करने आए थे।
यदि वह चेहरा नारद का था, तो वैद्य को हूण दूत समझने की उनकी और शंकु की धारणा बिल्कुल गलत थी। वेताल भट्ट को यह अहसास हुआ कि यदि वह चेहरा नारद का था, तो महल में हूणों से कहीं अधिक खतरनाक और कपटी व्यक्ति छिपा हुआ था। पार्षद ने कमरे का दरवाजा थोड़ा सा खोला और बाहर गलियारे का जायजा लिया, यह सुनिश्चित करते हुए कि कोई वहां मौजूद न हो। बाहर कदम रखते हुए, उन्होंने दरवाजा बंद कर दिया, उनका ध्यान कुछ क्षणों के लिए कालिदास पर केंद्रित हो गया।
आपने रानी को याद दिलाने में मदद की – क्या आप मेरी भी मदद करेंगे?

कालिदास भी वैद्य के प्रभाव में आ गए थे। शंकु सही थे। आचार्य ने कड़वाहट से सोचा कि वैद्य जितना लोकप्रिय होता जाएगा, उसके प्रशंसक और अनुयायी बढ़ते जाएंगे, वह अपनी प्रतिष्ठा के अनुरूप ही व्यवहार करता जाएगा, और लोगों के विश्वास को तोड़ना और उन्हें उसका काला पक्ष दिखाना उतना ही मुश्किल होता जाएगा।
उसे वैद्य की असली पहचान उजागर करनी थी, और वह भी जल्द से जल्द। दुर्भाग्यवश, अब उसे वैद्य की जासूसी करने की अपनी क्षमता पर भरोसा नहीं रहा, क्योंकि वह खुद को प्रकट किए बिना ऐसा कर सकता था। इससे उसके पास केवल एक ही विकल्प बचा था।
अपनी गति बढ़ाते हुए, राजगुरु मातृ भविष्यवक्ता की खोज में निकल पड़े।

* * *

तांबे के कटोरे से उठती भाप घनी, घुटन भरी और थोड़ी चिपचिपी थी। यह झोपड़ी की हवा में लटकी हुई थी, मानो खुद से चिपकी हुई हो, मानो झोपड़ी के संकरे दरवाजे से बाहर निकलने को तैयार न हो। नम और उदास, यह जयंता पर वापस टपक रही थी, उसके पसीने में मिल रही थी और उसके सिर और कंधों से नीचे बह रही थी, जब वह ताड़ के पत्तों पर लिखे गूढ़ मंत्रों का जाप कर बैठा था। इसने कमरे को रोशन करने वाले सात दीपों के चारों ओर एक रहस्यमय आभा बिखेर दी; इसने झोपड़ी की दरार वाली, मिट्टी की ईंटों की दीवारों पर फुंसियों की तरह निशान बना दिए, जो दबी हुई दुर्भावना से कांप रही थीं।
कटोरे से उठती भाप भयावह होने के साथ-साथ जीवंत भी थी और संभावनाओं से भरपूर थी।
राजकुमार के पैर सुन्न पड़ गए थे, लंबे समय तक झुके रहने से उनकी कमर में दर्द हो रहा था, और पसीना उनकी आँखों में जा रहा था जिससे उनमें जलन हो रही थी, लेकिन उन्हें इस तकलीफ का एहसास नहीं हो रहा था। उनकी सारी शक्ति अही को बुलाने पर केंद्रित थी।
जयंता अपने काम में इतना मग्न था कि उसके दिमाग को अपने आसपास हो रहे सूक्ष्म परिवर्तनों को समझने में कुछ समय लग गया।
जैसे ही कटोरे में पानी उबलने और उबलने लगा, टूटकर आपस में मिलकर धुंधली, सरीसृप जैसी धाराओं का रूप लेने लगा, उसकी गहराई से निकलती भाप का रंग

मटमैला भूरा हो गया। भाप की धुंध कटोरे के ऊपर अलग-अलग प्रवाहों और आकृतियों में उठने लगी, एक धीमी गति का नृत्य जो अधिक से अधिक भाप को इकट्ठा करता गया, हवा की धाराओं को आपस में मिलाता गया। पहले तो, इससे उभरने वाली आकृतियाँ ठोस नहीं थीं और बेतरतीब ढंग से इधर-उधर घूम रही थीं, लेकिन जैसे ही भाप आपस में मिलकर विशाल हुई, एक आदिम सर्प का आकार ले लिया, एक प्रेत जो पानी से बाहर निकला और कटोरे के ऊपर झिलमिलाने लगा, उसका पंखों वाला सिर किसी आदिम लय में धीरे-धीरे हिल रहा था।
जयंता के चारों ओर अंधेरा छा गया, दीपक डर से सिकुड़ते और टिमटिमाते हुए बुझने लगे, और यहाँ तक कि दरवाजे पर दिख रही सुबह की हल्की-सी रोशनी भी मानो कांपते हुए गायब हो गई। झोपड़ी के अंदर की हवा ठंडी हो गई, जिससे भाप की चादर छंट गई और सतहों पर जमी नमी बर्फ में बदल गई। कमरे में सन्नाटा छा गया, एक ऐसी खामोशी जो सदियों पुरानी थी, और उसके भीतर एक खोखली, घृणास्पद फुफकार की गूंज थी - कानों को सुनाई देने वाली आवाज़ से कहीं अधिक, एक ऐसी फुसफुसाहट जो रूह तक उतर जाती थी।
ठंड और उत्साह से कांपते हुए राजकुमार ने अपनी सांस रोक ली और अपने सामने धुंधली आकृति को घूरने लगा। उसकी आँखों में खुशी और अविश्वास की चमक थी, क्योंकि उसने जो हासिल किया था, वह अद्भुत था; उसने अही को जगा दिया था और उसे प्रकाश में ले आया था, ठीक उसी तरह जैसे प्राचीन ग्रंथों में बताया गया था।
अब उस भयानक जानवर को अपनी इच्छा के अनुसार काम करने का आदेश देना था। लगातार मंत्रों का जाप करते हुए, जयंता ने चाकू से अपने अंगूठे पर एक बार फिर खरोंच लगाई, जिससे खून बहने लगा ताकि सर्प रूप उसकी गंध पहचान सके। प्रेत ने अपना सिर ऊपर उठाया और मुंह चौड़ा खोलकर भाप की एक पतली सी लकीर को प्रकट किया, मानो वह खून की तलाश में हो। समुद्र तल की दुर्गंध उसके खुले मुंह से बाहर निकली और उसके नीचे छिपी हुई मृत्यु की सड़ी हुई गंध को राजकुमार ने महसूस किया। गले में उमड़ रहे पित्त को मुश्किल से दबाते हुए राजकुमार ने प्रेत की ओर हाथ बढ़ाया।
“अपने और मेरे रक्त के निशान का अनुसरण करो, उस हाथ का अनुसरण करो जो तुम्हारा मार्गदर्शन करता है,” राजकुमार ने रटी हुई पंक्तियाँ फुसफुसाईं। “उस रक्त का आज्ञापालन करो जिसने तुम्हें जीवन दिया है, हे

शक्तिशाली अही। आज्ञापालन करो, और वहाँ आओ जहाँ तुम्हारा रक्त तुम्हारा इंतजार कर रहा है।”
प्रेत-सांप ने अपनी गर्दन झुकाकर जयंता की खून से सनी उंगलियों पर झपट्टा मारा, उसकी दोमुंही जीभ लार टपकाते हुए बेतहाशा हरकत कर रही थी। वह कटोरे के किनारे पर झुक गया, उसका नम सिर जयंता के हाथ के चारों ओर लिपट गया और राजकुमार के खून से लथपथ हो गया। अंत में, बड़ी अनिच्छा से पीछे हटते हुए, प्रेत ने अपना सिर इधर-उधर घुमाया, उसकी जीभ हवा में तेजी से फड़फड़ा रही थी, मानो कुछ खोज रही हो।
अचानक, वह आकृति बिखर गई और अलग-अलग टुकड़ों में बंट गई, भाप के अलग-अलग रेशे उछलकर उस तंग छोटी सी झोपड़ी के चारों ओर घूमती ठंडी धाराओं में गायब हो गए। पल भर में, उस प्रेत-सांप का कोई निशान नहीं बचा।

* * *

खतरे की आवाज़ें उठ रही थीं। पुरुष, महिलाएं और बच्चे चीखते-चिल्लाते अपने घर छोड़कर द्वारका से निकलने के आखिरी, हताश प्रयास में शामिल हो रहे थे; सैनिकों को शहर के एक हिस्से या दूसरे हिस्से की रक्षा के लिए तैनात किया जा रहा था, आदेशों की तीखी और तेज़ आवाज़ गूंज रही थी; गलियों और संकरी सड़कों पर दौड़ते सैनिकों के कदमों की धमक सुनाई दे रही थी। और इन सबके ऊपर, हुना युद्ध-प्रवंचों की पीड़ादायक लेकिन अशुभ गर्जना खाड़ी में लहरों की तरह गूंज रही थी, मानो विनाश के संदेशवाहक हों।
वररुचि जब सुलगते तट पर कदम बढ़ाते हुए उस पहाड़ी की ओर बढ़ रहे थे, जहाँ कुछ ही घंटे पहले शहर की युद्ध परिषद एकत्रित हुई थी, तो चारों ओर शोरगुल एक कान फाड़ देने वाला बवंडर सा था। उनके साथ तीन संसप्तक थे, जो अग्निकांतकों पर आक्रमण करके उन्हें नष्ट करने वाले चौदह लोगों के दल के एकमात्र जीवित सदस्य थे।
“क्या आपको यकीन है कि बाकी लोग भाग नहीं पाए?” वरारुची ने अपने साथ आए एक-एक व्यक्ति की ओर देखा।
“महामहिम, इसकी संभावना बहुत कम है कि उनमें से किसी ने ऐसा किया हो,” एक संसप्तक ने उत्तर दिया। अपने एक साथी की ओर इशारा करते हुए उसने कहा, “हम दोनों ही उस जहाज से उतरने में कामयाब हुए थे जिसे हमने चुना था।”

“और आप…?” पार्षद ने तीसरे संसप्तक की ओर देखा, जिसकी बाईं मुट्ठी पर खून से सना हुआ कपड़ा लिपटा हुआ था।
“मेरे जहाज पर सवार बाकी सभी लोग हूणों के हाथों मारे गए, महाराज।” उस व्यक्ति की आँखों में अपने साथियों के भाग्य को लेकर गहरा दुख और क्रोध झलक रहा था।
“तो उदयसंग भी मर गए।” वरारुचि ने संसप्तक की याद में क्षण भर के लिए खाड़ी की ओर देखा। अवंती से लौटते समय उनकी अच्छी दोस्ती हो गई थी, और सलाहकार के मन में उस विशालकाय, बुद्धिमान योद्धा के लिए गहरा आदर और स्नेह का भाव विकसित हो गया था।
“मैंने उन्हें गिरते हुए देखा, महाराज,” पट्टी बंधे हाथ वाले सिपाही ने कहा। “मैंने उनकी मदद करने की पूरी कोशिश की, लेकिन जब तक मैं उनके पास पहुँचा… उनके शरीर में आधा दर्जन तीर धंसे हुए थे – फिर भी उन्होंने अग्निकांतक को ध्वस्त कर दिया और जहाज में आग लगा दी, महाराज। ऐसे वीर योद्धा के साथ युद्ध करना मेरा सौभाग्य था।”
पार्षद ने सिर हिलाया, और संसप्तक की आवाज में गर्व और पीड़ा को महसूस किया। उस व्यक्ति के हाथ की ओर देखते हुए उन्होंने पूछा, "क्या यह खराब है?"
“ये दो उंगलियां जिनका मैंने वैसे भी कभी ज्यादा इस्तेमाल नहीं किया,” सैनिक ने गंदे कपड़े को देखते हुए जवाब दिया। “वैसे, मैं दाहिने हाथ से लिखता हूँ। सौभाग्य से, बर्बर लोग इतने मूर्ख थे कि उन्होंने इस बात पर ध्यान ही नहीं दिया।”
वररुचि के होठों पर हल्की सी मुस्कान थी। ये ऐसे लोग थे जो आसानी से हार नहीं मानेंगे, और जब हूण सेना अंततः द्वारका के तट पर उतरेगी, तो उन्हें अपने साथ पाकर वह बहुत खुश था।
वे पहाड़ी पर पहुँचे, जहाँ युगंधरा और दो अन्य अनार्ता सरदार लगभग आधा दर्जन अनार्ता सेनापतियों के साथ परामर्श कर रहे थे। नए जहाजों के बेड़े को देखते ही और उसकी ताकत का आकलन करते ही, शहर के रक्षकों ने पुराने हूण जहाजों का पीछा करना छोड़ दिया और जल्दी से किनारे लौट आए। कहीं अधिक विशाल हूण बेड़े से मुकाबला करना असंभव था – हालाँकि किसी को भी ठीक से पता

नहीं था कि ज़मीन पर शरण लेने से क्या लाभ होगा, जहाँ हूण सेना कहीं अधिक सुरक्षित थी।
वररुचि और संसप्तकों को पास आते देख तीनों सरदारों ने मौन प्रणाम करते हुए सिर झुकाया। वररुचि ने भी वैसा ही किया और हूण जहाजों से भरी खाड़ी पर एक और नज़र डाली। युद्ध के बाद से खाड़ी के पानी में जो अजीब हलचल थी, वह कुछ कम हो गई थी, और हालांकि समुद्र अभी भी उबड़-खाबड़ और लहरदार था, लेकिन उसकी तीव्रता स्पष्ट रूप से कम हो गई थी।
“मुख्य मणिधरा कैसे हैं?” उन्होंने युद्ध के बिगुलों की गूंज के बीच अपनी आवाज बुलंद करते हुए पूछा।
“उन्हें निकाल लिया गया है,” युगंधरा ने पार्षद पर अपनी कोमल, भूरी आँखों से देखते हुए उत्तर दिया। “घाव गहरा है, और चिकित्सकों को आशंका है कि भाले के प्रहार से कोई हड्डी टूट गई होगी। बेशक, वह वहीं रुककर लड़ना चाहते थे।” “मनिधारा ने कहा कि आपने उनकी जान बचाई, वीर पार्षद,” दूसरे सरदारों में से एक ने कहा। “इसके लिए हम आपके आभारी हैं।” “जब हम दूसरों की जान बचाते हैं, तो हम अपनी जान भी बचा लेते हैं,” वरारुचि ने झुककर जवाब दिया। फिर उन्होंने खाड़ी का जायजा लिया। “इस स्थिति के बारे में आपकी क्या राय है?” युगंधरा ने जहाजों की ओर इशारा करते हुए हाथ हिलाया, "हालात निराशाजनक हैं। उनकी संख्या चिंताजनक है।"
“उनके पास कितने जहाज हैं?” वरारुची के अनुमान के अनुसार, खाड़ी में दो दर्जन से अधिक जहाज थे, इसके अलावा वे जहाज भी थे जो पिछली शाम को आए थे। उन्होंने यह भी देखा कि कुछ हूण जहाज द्वारका की ओर बढ़ने के बजाय दक्षिण की ओर चले गए थे।
“चालीस से पैंतालीस, महाराज,” कमांडरों में से एक ने उत्तर दिया। उसने उत्तर की ओर इशारा किया, जहाँ क्षितिज के ऊपर और भी पाल दिखाई देने लगे थे। “अभी लगभग एक दर्जन और इस समूह में शामिल होने बाकी हैं।”
वरारुचि का मनोबल टूट गया। बर्बरों की रणनीति स्पष्ट रूप से समझ में आ रही थी। उनका मुख्य बेड़ा द्वारका से कुछ ही दूरी पर खाड़ी में तैनात था, वहीं हूण सेनापति अनार्ता तट के साथ दक्षिण की ओर जहाज़ भेज रहे थे, ताकि उनके योद्धा शहर के बाहर तट पर उतर सकें। वरारुचि को संदेह था कि क्षितिज पर

दिखाई देने वाले जहाज़ द्वारका के उत्तर की ओर बढ़ेंगे - उनका पूरा मकसद द्वारका की रक्षा पंक्ति को कमज़ोर करना था, ताकि कम से कम प्रयास से शहर पर कब्ज़ा किया जा सके।
“भृगुकाक्ष से अतिरिक्त सैनिकों को लेकर आने वाले जहाज कब तक आने की उम्मीद है?” पार्षद ने पूछा। अगर वे जहाज द्वारका के पास पहुँच रहे थे, तो वे दक्षिण की ओर जा रहे हूणों के जहाजों को रोक सकते थे, ऐसी उन्हें उम्मीद थी।
युगंधरा ने उत्तर दिया, “हमारा अनुमान था कि सुबह से दोपहर तक का समय होगा। अगर हवाएँ अनुकूल रहीं तो।” वरारुचि ने उदास मन से सोचा कि इसमें लगभग दो से चार घंटे लगेंगे, क्योंकि उन्हें याद था कि भृगुकाक्ष से ज़्यादा से ज़्यादा एक दर्जन जहाज़ ही आ रहे थे। उन्हें इस बात का कोई अंदाज़ा नहीं था कि उनमें से प्रत्येक जहाज़ में कितने लोग सवार हैं, इसलिए उन पर उम्मीदें लगाना सरासर गलत था। उन्हें हूणों को रोकने का कोई और तरीका सोचना होगा। पार्षद युगंधरा से बात करने ही वाले थे कि तभी अचानक किसी ने जोर से चिल्लाया।
“यह क्या है?”
लगभग उसी समय, वरारुचि ने अपने पास खड़े एक संसप्तक को गहरी साँस लेते हुए सुना। "ये लोग क्या कर रहे हैं?"
युद्ध के बिगुलों की आवाज़ शांत होते देख, वरारुची ने हूण जहाजों पर नज़र डाली। पहले तो उन्हें कुछ भी ऐसा नहीं दिखा जिस पर ध्यान देने की ज़रूरत हो। फिर उनकी नज़र खाड़ी में दूर तक गई – जहाँ समुद्र की सतह से भाप का एक विशाल स्तंभ ऊपर उठ रहा था। पार्षद ने अनुमान लगाया कि स्तंभ कई गज व्यास का था, भाप का एक घना, घुमावदार ढेर, लगभग बादल जैसा घनत्व वाला, पानी से लंबवत उगता हुआ।
“यह तो जादू-टोना ही होगा,” सरदारों में से एक ने भय और विस्मय से फुसफुसाते हुए कहा। “समुद्र को देखो।”
अचानक ही खाड़ी का पानी फिर से उग्र हो गया, और लहरें उठती-गिरती हुई एक-दूसरे से अंधाधुंध टकराने लगीं। बड़ी-बड़ी लहरें द्वारका के घाटों की ओर तेज़ी से बढ़ती गईं, गरजती और झाग उड़ाती हुई तटरेखा पर टकराती और फैलती

गईं, जिससे हवा में फुहारें और धुंध की बौछारें उड़ने लगीं। नावें बेपरवाही से इधर-उधर उछलने लगीं, और यहाँ तक कि बड़ी-बड़ी नावें भी अपनी जगह पर चरमराती और डगमगाती रहीं।
उसी समय, वरारुची ने प्रकाश में एक परिवर्तन महसूस किया। ऐसा नहीं था कि सूर्य बादल के पीछे छिप गया हो - आकाश अभी भी निर्मल था। प्रकाश स्वयं बदल गया था, गहरा, घना और किसी प्रकार अधिक क्रूर और हिंसक हो गया था। ऐसा लग रहा था मानो सूर्य के प्रकाश पर किसी अभिशाप का साया पड़ गया हो।
लहरें अब चिंताजनक ऊँचाई तक उठ रही थीं, और आती हुई लहरें शहर के तट पर बिखरे हुए जले-बिखरे भवनों पर छलक रही थीं। पानी की फुहार पहाड़ी जितनी ऊँची उठ रही थी, जिससे वहाँ खड़े लोग नमकीन बूंदों से भीग रहे थे। अनार्ता सेनापतियों में से एक ने दबी आवाज़ में कहा, "यह तो सचमुच जादू- टोना है। बर्बर लोग द्वारका को बाढ़ में डुबोकर नष्ट करने की योजना बना रहे हैं।"
“जो कुछ भी हो रहा है, वह बर्बरों की करतूत नहीं है,” पार्षद ने कहा। “उनके जहाजों को देखो। वे खुद के साथ ऐसा क्यों करेंगे?”
खाड़ी में हुना बेड़ा पूरी तरह से अस्त-व्यस्त था। विचित्र उथल-पुथल के भंवर में फंसे जहाज एक-दूसरे से टकराते हुए घूम रहे थे। इतनी दूरी से भी, शहर के रक्षक जहाजों की लकड़ियों को टकराते हुए चटकते, उनके ढांचों में छेद होते और पालों को बुरी तरह उलझते हुए देख सकते थे। विशाल लहरें जहाजों के डेक पर टकराती और उन्हें बहा ले जातीं, हुना योद्धाओं को समुद्र में बहा ले जातीं, और एक दर्जन जहाज खतरनाक तरीके से एक तरफ झुकने लगे, जबकि कम से कम तीन जहाज पलट गए और खाड़ी की तलहटी में डूबने लगे।
समुद्र में लंगर डाले अनार्ता के अपने जहाजों का भाग्य भी कुछ अलग नहीं था
– लेकिन इस तथ्य से उन्हें काफी राहत मिली कि उन पर शायद ही कोई सैनिक या नाविक सवार था। इसलिए, हालांकि अपने जहाजों को लड़खड़ाते हुए देखकर अनार्ता सरदारों और सेनापतियों के चेहरे पर निराशा छा गई थी, लेकिन हूण नौसेना को बिखरते हुए देखकर उन्हें जो उल्लास हुआ, उसके आगे वह फीकी पड़ गई। शहर भर में धीरे-धीरे जयकारे गूंजने लगे, जो धीरे-धीरे बढ़ते गए –

लेकिन कुछ ही सेकंड में वह सन्नाटे में डूब गया, जब भाप के घूमते हुए स्तंभ के शीर्ष पर एक विशालकाय, काले और भयानक सर्प का सिर आकार लेने लगा। वरारुची ने हूना बेड़े के ऊपर आकार लेते और उठते हुए उस खुरदुरे, टेढ़े- मेढ़े सिर और गर्दन को देखा। सर्प के सिर पर काले और भूरे पंखों का मुकुट था जो उसकी कलगी से लेकर पीठ तक फैला हुआ था, और उसकी आँखें अंबर रंग की पतली, ज्वालामुखी जैसी और भयंकर चमकती हुई थीं। उसके मुँह से कोयले जैसी काली, दोमुँही जीभ निकली हुई थी। भाप से राक्षस का और अधिक रूप प्रकट होता गया - और फिर, एक भयंकर घुमाव के साथ, स्तंभ अचानक ढह गया और गायब हो गया, जिससे सर्प अपने पूरे वैभव और क्रूरता के साथ प्रकट हुआ, चमकदार काले रंग का और एक मील लंबा।
“यह क्या चीज है?” युगंधरा ने हांफते हुए कहा। “क्या इसका कोई अंत नहीं है?”
सरदार के आखिरी शब्द एक दिल दहला देने वाली फुफकार में दब गए। यह फुफकार सर्प के भीतर गहराई से निकली, क्रूरता और दुष्टता से भरी हुई, और द्वारका के ऊपर हवा में जहर की तरह फैल गई, मनुष्यों के दिलों में भय पैदा करती हुई। इसने मनुष्यों को भय से कांपने पर मजबूर कर दिया, उनकी आत्माएं क्षीण हो गईं और उनकी इंद्रियां सुन्न पड़ गईं। यह केवल एक ध्वनि थी, मुश्किल से सुनाई देने वाली, लेकिन इसने मनुष्यों को भय से थरथरा दिया।
फुफकार जितनी अचानक शुरू हुई थी, उतनी ही अचानक शांत भी हो गई, और सन्नाटे में हुना जहाजों से दहशत भरी चीखें खाड़ी के उस पार गूंज उठीं। ऐसा लगा मानो चीखों ने सांप को और उत्तेजित कर दिया हो, जिसने अपना सिर जहाजों की दिशा में घुमाया और अपनी जीभ मुंह से बाहर निकाल ली। अगले ही पल, उसने अपने जबड़े चौड़े खोले और जहाजों पर धूसर-सफेद रंग का तरल पदार्थ की एक धार फेंक दी।
जहाज़ टूटने लगे और धुएँ में बदलने लगे। जहाज़ दो टुकड़ों में बिखर गए क्योंकि उन्हें जोड़ने वाली लकड़ियाँ चूर-चूर होकर राख में बदल गईं। पाल में आग लग गई, और हूण योद्धाओं का मांस उनकी हड्डियों से अलग होकर गलने लगा, उनकी दर्द भरी चीखें उस अंधेरे सूरज की रोशनी को चीर रही थीं जो अदृश्य छायाओं से भरी हुई थी। पहाड़ी पर खड़े लोग भय और आश्चर्य से देख रहे थे कि कैसे उनके बीच सर्प और उफनता समुद्र हूण बेड़े को नष्ट कर रहे थे।

यह तबाही सिर्फ खाड़ी तक ही सीमित नहीं थी। उत्तर से तट की ओर आ रहे जहाज समुद्र में ही रुक गए थे, लेकिन अपनी पूंछ के एक झटके से, जिससे द्वारका पर एक विशाल लहर उठी, उस समुद्री राक्षस ने उन पर भी हमला कर दिया, फुफकारते हुए और अपना तेजाब उगलते हुए। इसी बीच, लहरें बंदरगाह पर लगातार टूट पड़ती रहीं, जिससे उसकी सड़कें और गलियां समुद्री पानी से भर गईं।
अचानक, बिना किसी स्पष्ट कारण के, वह प्राणी घूमकर द्वारका का जायजा लेने लगा। एक ज़ोरदार डुबकी के साथ, वह पानी में गायब हो गया - और कुछ ही क्षणों बाद खाड़ी के अंदर फिर से सतह पर आ गया। उसकी पीठ से पानी बह रहा था, उसके पंख हल्की हवा में लहरा रहे थे, सर्प ऊँचा उठा और बंदरगाह को घूरने लगा, फिर अपनी ठंडी, सुनहरी आँखों से उस छोटी पहाड़ी को देखा, जहाँ युद्ध परिषद जड़वत खड़ी थी, इतनी स्तब्ध कि हिल भी नहीं पा रही थी।
“हमारा अंत हो गया,” सरदारों में से एक ने सूखी, निराशा भरी कर्कश आवाज में कहा।
अगले ही पल, सर्प चमक उठा और पारदर्शी हो गया, उसका शरीर घनत्व और पदार्थ खोता चला गया। फिर, एक अचानक, बिना किसी शोर के धमाके के साथ, जिससे तटवर्ती इलाके में बारिश की बौछारें फैल गईं, वह जानवर एक बार फिर भाप में बदल गया और सूरज की रोशनी में गायब हो गया, जो लगभग तुरंत ही तेज और खुशनुमा हो गई।
“इसके विपरीत, मुझे लगता है कि हम बच गए हैं।” राहत की एक लंबी सांस छोड़ते हुए, वरारुची ने समुद्र की ओर इशारा किया।
खाड़ी में अभी भी बहुत हलचल थी, लेकिन लहरें आपस में टकराकर शांत होने लगी थीं। उफनते पानी के बीच में हूना जहाजों के मलबे पड़े थे - फटे-पुराने, टूटे-फूटे और तबाह।

यक्ष

विशाखा के ऊपर उठे चेहरे पर बारीक पाउडर की फुहार गिरी, जिससे वह खुशी से आंखें सिकोड़ने लगी। उसने शरारत से अपनी जीभ बाहर निकाली, मानो उन छोटी- छोटी बूंदों का स्वाद चखना चाहती हो, लेकिन झिझकते हुए हल्की सी हंसी के साथ उसने विक्रमादित्य की ओर एक नज़र डाली, जो उसके बगल में सवार था।
"यह तो बग्घी या पालकी में बैठने से कहीं बेहतर है," उसने फुहार महसूस करने के लिए अपनी हथेली फैलाते हुए कहा।
सम्राट मुस्कुराया और अपनी ठुड्डी ऊपर उठाकर बारिश की बूंदों को अपने चेहरे पर गिरने दिया। वह सोच रहा था कि उसने आखिरी बार बारिश को कब महसूस किया था - सचमुच महसूस किया था, भावनात्मक रूप से - अपनी त्वचा पर इस तरह। उसे यकीन था कि लगभग दो साल हो गए थे। अधिक गंभीर चिंताओं और परेशानियों ने इस तरह की भावनाओं के लिए बहुत कम गुंजाइश छोड़ी थी।
“इस सैर के लिए राजी होने के लिए धन्यवाद। और उसके लिए भी,” विशाखा ने धीरे से उस सफेद घोड़ी की गर्दन थपथपाई जिस पर वह सवार थी।
“उसके लिए मुझे धन्यवाद देने की ज़रूरत नहीं है,” विक्रमादित्य ने घोड़ी की ओर इशारा करते हुए कहा। “इसके लिए तो नगर रक्षक दल का वह सिपाही धन्यवाद का पात्र है जिसने यह जानकर कि आपको वह पसंद है, उसे आपको उपहार में दे दिया।”

“महल में वापस आने के बाद मैं ऐसा करूँगी,” रानी ने कहा। “क्या आपको लगता है कि मुझे उसे कुछ भेंट करनी चाहिए… मेरी कृतज्ञता के प्रतीक के रूप में? आख़िरकार, वह उसकी घोड़ी थी।”
"घुड़साल के वार्डन ने सैनिक को पहले ही एक बेहतरीन प्रतिस्थापन दे दिया है, लेकिन हाँ... आपकी ओर से कुछ मदद मिलने पर हमें बहुत खुशी होगी।"
राजा और रानी मौन हो उठे, सुबह की खामोशी को अपने कोमल आलिंगन में समा जाने दिया। केवल उनके घोड़ों के खुरों की धीमी गड़गड़ाहट घास के रास्ते पर सुनाई दे रही थी, और पीछे से घोड़ों के लगाम की समय-समय पर आने वाली झनझनाहट, जहाँ महल के रक्षक दल के एक दर्जन सैनिक सम्मानजनक दूरी पर उनका पीछा कर रहे थे। यह रास्ता उज्जैन के ठीक दक्षिण में ग्रामीण इलाके से होकर गुजरता था, जो उज्जैन को महिष्मती से जोड़ने वाली मुख्य सड़क से थोड़ा हटकर था। रास्ते के दोनों ओर छोटे-छोटे ग्रामीण खेत और धान के खेत फैले हुए थे, और दल को कभी-कभी कीचड़ भरे तालाबों में आराम करते भैंसों के झुंड दिखाई देते थे।
“क्या हम लगभग पहुँच ही गए हैं?” विशाखा ने पूछा, जबकि रास्ता एक संकरे बाँस के पुल से गुज़रते हुए एक खड़ी, घने जंगल वाली पहाड़ी पर चढ़ रहा था। उसने चारों ओर देखा, मानो दिशा का पता लगा रही हो। “यह पुल… और हाँ, वह पत्थर का कुआँ नीचे… क्या घास का मैदान उस पहाड़ी के उस पार ही नहीं है?” सम्राट ने रानी को ध्यान से देखा। उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि रानी अप्रत्याशित रूप से – सहजता से – इतनी सारी बातें याद कर रही थीं, मानो जादुई रूप से उनके पैरों के नीचे रोशन रास्ते खुल गए हों, जो उन्हें एक स्मृति से दूसरी स्मृति तक ले जा रहे हों। फिर भी, कुछ ऐसे स्थान थे जहाँ उनका मन अभी भी जाने के लिए बहुत अँधेरा था…
“हाँ, हम लगभग पहुँच ही गए हैं,” उसने उत्तर दिया। थोड़ा आगे झुकते हुए उसने पूछा, “क्या आप वाकई वहाँ जाना चाहते हैं?”
“I do,” Vishakha nodded.

दो रात पहले, विशाखा ने रात के खाने पर इस विषय पर चर्चा शुरू की थी। घास के मैदान में जाने की उसकी इच्छा ने सम्राट को आश्चर्यचकित कर दिया था, लेकिन विशाखा अपनी बात पर अड़ी रही। उसने तर्क दिया, "शायद वहाँ जाना ही मेरे ठीक

होने के लिए काफी है। शायद मैं इसे वहीं खत्म कर सकूँ जहाँ से यह सब शुरू हुआ था।"
वे चुपचाप ढलान पर चढ़ते रहे, लेकिन उम्मीद और निराशा के गहरे डर ने उनके बीच धड़कन की तरह हलचल मचा रखी थी। यहाँ तक कि उनके दोनों घोड़े भी उनकी घबराहट और उत्तेजना को भांपते हुए, खड़ी चढ़ाई पर अपने कान फड़फड़ा रहे थे और सिर हिला रहे थे।
पहाड़ी की चोटी पर पहुँचकर विक्रमादित्य और विशाखा ने अपने घोड़ों की लगाम खींची और उस संकरी घाटी की ओर देखा जो उन्हें एक मील दूर स्थित अगली पहाड़ी से अलग करती थी। घाटी जंगली, फलदार पेड़ों से भरी हुई थी, और उनकी शाखाओं के बीच से राजा और रानी को बाईं ओर दूर स्थित समतल, घास का मैदान दिखाई दिया।
“ये रहा,” सम्राट ने इशारा करते हुए कहा।
विशाखा ने सिर हिलाया और उसकी ओर देखा। एक पल के लिए उनकी आँखें एक-दूसरे से मिलीं, मानो वे एक-दूसरे को छोड़ने से डर रहे हों, अगले पल के अंजाम से भयभीत हों। फिर, एक-दूसरे को हल्के से सिर हिलाकर, उन्होंने अपनी निगाहें हटाईं और एक बार फिर मैदान का जायजा लिया, इससे पहले कि वे अपने घोड़ों को घाटी की ओर पगडंडी पर आगे बढ़ा दें।

* * *

जब समय आएगा, तो वैद्य उज्जैनी से भारी कीमत वसूलेगा।
गहन चिंतन में डूबे, अपनी भूरी भौहों को सिकोड़ते हुए, शुक्राचार्य बेचैनी से अपने कक्ष में चहलकदमी कर रहे थे।
उस युवा पार्षद ने उसका नाम लेकर ज़िक्र किया था – उस वैद्य का। किसी तरह, उसे पता चल गया था – या उसने अंदाज़ा लगा लिया था – कि वह कुछ गड़बड़ कर रहा है, उसका अपना कोई गुप्त मकसद है। लेकिन वह लड़की वास्तव में कितना जानती थी, और उससे भी ज़्यादा महत्वपूर्ण बात यह थी कि वह मन की बात जानने वाला कौन था जिसके साथ वह अपने डर साझा कर रही थी?
प्रधान पुरोहित जानता था कि यह धनवंतरी या वरारुचि... या शंकु भी नहीं हो सकते थे। चिकित्सक वत्स के दरबार में था, जबकि राजा का सौतेला भाई अनर्तों

में कहीं था। यह स्वयं विक्रमादित्य भी नहीं हो सकते थे - उन्होंने मन-पाठक के विचारों में राजा को देखा था।
नाविक का कहना है कि उसने राजगुरु को कई बार नाव से यात्रा कराई है।
उनके पास वह था। आचार्य!
प्रधान पुजारी ने अपनी मूर्खता पर खुद को कोसा। उसे मन पढ़ने वाले की पहचान का अनुमान लगाने में इतना समय नहीं लगना चाहिए था - बूढ़ा सलाहकार हमेशा से ही शत्रुतापूर्ण था, और अगर कोई व्यक्ति गुप्त रूप से उसके विचारों को जानने में सक्षम था, तो वह राजगुरु ही था।
शुक्राचार्य मंडल के सामने बैठ गए। किसी बात के चलते लड़की ने अपनी शंकाएं आचार्य को बताई थीं। उन्होंने और किससे बात की थी? क्या कल रात कालिदास का आना इससे जुड़ा था? उन्हें ऐसा नहीं लगता था। दानव ने मदद की गुहार लगाते समय ईमानदारी दिखाई थी।
उन्हें यह भी नहीं पता था कि राजगुरु उनके कितने विचार पढ़ पाए थे। उन्होंने आचार्य के मन में घबराहट और पकड़े जाने का डर महसूस किया था, जिसका अर्थ था कि सलाहकार उनके विचारों को देखने और सुनने में काफी हद तक सफल हो गया था। सवाल यह था कि क्या राजगुरु ने उन्हें दोषी ठहराने के लिए पर्याप्त जानकारी हासिल कर ली थी। और यदि कर ली थी, तो वह उस जानकारी का क्या करेंगे?
आचार्य के पहले अपने इरादे ज़ाहिर करने का इंतज़ार करते हुए सतर्क रहना ही बेहतर समझते हुए, मुख्य पुजारी ने यक्ष के अहम मामले पर ध्यान दिया। हड्डियों को हथेलियों में थामे हुए, उन्होंने उन पर मंत्र बुदबुदाए और उन्हें मंडल पर बिखेर दिया।
यक्ष अपनी यात्रा के अंत तक पहुँच चुका है।
शुक्राचार्य एकदम सीधे बैठ गए, हड्डियों को घूरते हुए उत्तर की जाँच-परख करते रहे। टुकड़ों को समेटकर उन्होंने उन पर फिर से मंत्रोच्चार किया और उन्हें दूसरी बार नीचे फेंक दिया।
यक्ष मानव राज्य की राजधानी के दक्षिण में स्थित एक जंगल में है।
फिर से हड्डियों को उठाया गया और नीचे फेंक दिया गया।

यक्ष उस चीज की प्रतीक्षा में घात लगाए बैठा है जिसकी रक्षा करने का वचन मानव राजा ने दिया है।
अंतिम बार, प्रधान पुजारी ने मंडल पर हड्डियों को बिखेर दिया और वीषाद के खंजर का पता लगाने की कोशिश की।
बरगद के वृक्ष में ही अंतहीन चिताओं के मैदान को सहारा मिलता है। शुक्राचार्य पीछे झुककर खिड़की से बाहर बहते बादलों को निहारने लगे, जो धूसर और उदास लग रहे थे। वे व्याकुल थे। यदि हलाहल अभी भी उज्जैन के श्मशान घाट के पेड़ पर कहीं था, तो यक्ष उसे लेने क्यों नहीं आ रहा था?
इसके बजाय, यक्ष शहर के दक्षिण में स्थित एक जंगल में क्यों प्रतीक्षा कर रहा था - और वह किस चीज की प्रतीक्षा कर रहा था?

* * *

दरवाजे पर दस्तक सुनने से पहले ही पास आते कदमों की तेज आहट ने वेताला भट्टा को सतर्क कर दिया। मुख्य पार्षद ने कुर्सी के बाजू पर अपनी उंगलियों को झटकना बंद कर दिया और आंखें खोलीं, ठीक उसी समय लकड़ी पर उंगलियों की धीमी आवाज उनके कानों में पड़ी।
"अंदर आओ," उसने गला साफ करते हुए कहा और अधीरता से उठ खड़ा हुआ।
दरवाजा खुला और बाहर गैलरी में एक महल का सेवक खड़ा दिखाई दिया। आचार्य ने एक भौंह उठाकर पूछताछ भरे लहजे में उसकी ओर कदम बढ़ाया। "क्या देवी स्नान करके वापस आ गई हैं और आगंतुकों से मिलने के लिए तैयार हैं?"
“मैं… माननीय महोदय, नहीं… मुझे नहीं पता,” परिचारक ने असमंजस में बुदबुदाते हुए कहा।
“तुम्हें क्या नहीं पता, नौजवान?” पार्षद ने झुंझलाहट से भौंहें चढ़ाते हुए कहा। “क्या तुम मुझे बताने नहीं आए हो... तुम यहाँ किसलिए आए हो?” "माननीय पार्षद शंकुबाला ने आपसे परिषद कक्ष में तत्काल उपस्थित होने का अनुरोध किया है।"
“क्यों?” वेतला भट्टा की भौंहें चिंता से तन गईं। “क्या हुआ है?” "महामहिम, देवी ने उत्तर की पहाड़ियों में कुछ अजीबोगरीब घटना घटने की चेतावनी दी है।"

जब राजगुरु सभा कक्ष में दाखिल हुए, तो उन्होंने देखा कि कालिदास, क्षपणक, अमर सिंह और शंकु पहले से ही मेज पर बैठे हुए थे। उन्होंने अभिवादन करते हुए सिर हिलाया और बैठ गए, तभी वराहमिहिर भी लड़खड़ाते हुए अंदर आ गए। “क्या सम्राट को हमारे साथ जुड़ने की सूचना दे दी गई है?” आचार्य ने पूछा। “सम्राट को संदेश भेजा गया था, लेकिन वह उन तक नहीं पहुंच सका क्योंकि वह महल में नहीं हैं, राजगुरु,” शंकु ने उत्तर दिया।
वेताल भट्ट के चेहरे पर आश्चर्य देखकर क्षपणका बोली, “सम्राट और विशाखा मैदान में गए हैं।” उसने अपनी बात स्पष्ट करने के लिए अंतिम शब्द पर ज़ोर दिया। “रानी उस स्थान को देखना चाहती थीं।”
“राजगुरु, मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मुझे उनके पीछे दूत भेजना चाहिए या नहीं,” शंकु ने कहा।
"हम तभी फैसला करेंगे जब हमें ठीक-ठीक पता चल जाएगा कि भविष्यवक्ता ने क्या कहा था।"
सभी का ध्यान एक साथ अपनी ओर मुड़ते देख, लड़की ने संकोच से अपने हाथ मेज पर रख लिए। “कुछ देर पहले देवी ने मुझे अपने कक्ष में बुलाया था। ऐसा लगता है कि वह स्नान कर रही थीं जब उन्होंने आकाश में पक्षियों का एक झुंड देखा। उनकी चहचहाहट और पंखों की फड़फड़ाहट से उन्होंने समझा कि पक्षी शहर के उत्तर में पहाड़ियों में हुई किसी घटना से भयभीत थे।”
“किस प्रकार की घटना?” वराहमिहिर ने पूछा।
“भविष्यवाणी करने वाली महिला निश्चित रूप से नहीं कह सकती थी, लेकिन उसका मानना था कि पक्षियों ने पहाड़ियों में किसी ठंडी और बुरी शक्ति के जागृत होने की बात कही थी। उसने कहा कि पक्षी अपने पंखों के नीचे पाला और अंधेरा लिए हुए थे, इसलिए वे उस चीज से जरूर प्रभावित हुए होंगे जिसने उन्हें डराया था।”
“उज्जायिनी के उत्तर में केवल दो पहाड़ियाँ हैं…” आचार्य ने मेज के चारों ओर बैठे लोगों के चेहरों की ओर देखा। “इस घटना का पता लगाना कोई बड़ी समस्या नहीं होनी चाहिए।”

“मैं जाऊँगा,” अमारा सिम्हा गुस्से से उछल पड़ा, मानो किसी भी तर्क को बर्दाश्त न कर पा रहा हो। “मैं पहाड़ियों को जानता हूँ, मैं इलाके की बनावट को जानता हूँ, मैं सब कुछ जानता हूँ। इस बार मैं ही जाऊँगा।”
“मुझे नहीं लगता कि हममें से किसी को जाने की ज़रूरत है, मेरे मित्र,” राजगुरु का स्वर गंभीर था। “यदि कोई बुरी शक्ति जागृत हो रही है, तो उसका उद्देश्य पहाड़ों में रहना नहीं, बल्कि यहाँ आना है।”
बलवान पार्षद ने सिर हिलाया और अपनी सीट पर आराम से बैठ गया, तभी क्षपणक ने कहा, "क्या हमें उन लोगों को भी रोकने की कोशिश नहीं करनी चाहिए जो इस बुराई को जगा रहे हैं?"
“मैं सहमत हूँ।” आचार्य ने मेज के उस पार कालिदास की ओर देखा। “क्या आप अंगमित्र से कहेंगे कि वह नगर रक्षक दल के पाँच सौ जवानों का नेतृत्व करते हुए पहाड़ियों की खोज करे?”
कालिदास ने सिर हिलाया। उनका चेहरा उतरा हुआ था, और राजगुरु को स्पष्ट हो गया कि विशालकाय कालिदास को रात को नींद नहीं आई थी। आपने रानी को याद दिलाने में मदद की – क्या आप मेरी भी मदद करेंगे? वैद्य के बारे में सोचते ही राजगुरु को आश्चर्य हुआ कि क्या उनका आने वाली मुसीबत से कोई संबंध है। क्या इसका भी उन रहस्यमय रात्रि यात्राओं से कोई संबंध है जो वैद्य किया करते रहे थे?
“हमें शहर की रक्षा के लिए तैयार रहना होगा,” वह खड़े हो गए, उनके हावभाव ने साथी पार्षदों में तत्परता पैदा कर दी। “नगर सुरक्षा दल को दीवारों पर गश्त शुरू करने और सभी मीनारों पर पहरा लगाने का आदेश दें। शाही सेना और संसप्तकों को अपनी टुकड़ियों को तैयार रखने के लिए कहें। स्काउट्स मास्टर को सतर्क करें, द्वारों को तैयार करें…” वेताला भट्ट ने हाथ हिलाया। “आप सभी को प्रक्रिया पता है।”
शंकु ने याद दिलाया, "हमें सम्राट और विशाखा को सचेत करने के लिए एक संदेश भेजना चाहिए।"
“तुरंत,” राजगुरु ने ज़ोरदार सिर हिलाते हुए कहा। “और यह सुनिश्चित करें कि महल के रक्षक शाही परिवार को अल्प सूचना पर भूलभुलैया में ले जाने के लिए तैयार रहें।”

शहर की रक्षा पर चर्चा करते हुए, छह पार्षद परिषद कक्ष से बाहर निकले और दीर्घा के अंत तक चले गए, जहाँ से वह तीन भागों में बँट जाती थी। क्षपणक और अमर सिंह एक दिशा में तेज़ी से चले गए, जबकि वराहमिहिर लंगड़ाते हुए सीढ़ियों से नीचे उतरे। शंकु महल के रक्षकों को सतर्क करने और विक्रमादित्य के पास एक दूत भेजने के लिए चले गए, जिससे वेताल भट्ट के साथ केवल कालिदास ही रह गए। विशालकाय कालिदास अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने के लिए मुड़ने ही वाले थे कि राजगुरु ने उनके कंधे पर हाथ रख दिया।
“मुझे लगता है कि वे दृश्य अब भी आपको परेशान कर रहे हैं।” वेताल भट्ट की आवाज कोमल और सहानुभूति से भरी थी, लेकिन उनकी आंखें कालिदास के चेहरे को ध्यान से देख रही थीं।
उस दैत्य ने सिर हिलाया। "देवी की राय में, ये मेरे खोए हुए बचपन से हैं।" आचार्य यह देखने के लिए प्रतीक्षा कर रहे थे कि क्या कालिदास वैद्य का ज़िक्र करेंगे, लेकिन उन्होंने नहीं किया। स्वयं सिर हिलाकर राजगुरु ने अपना हाथ वापस अपनी कमर में रख लिया। नौ सदस्यों की परिषद ने पहले कभी एक-दूसरे से कोई रहस्य नहीं छिपाया था, और वह विशालकाय व्यक्ति उनके लिए लगभग बेटे जैसा था। "तुम्हें जाकर अंगामित्र की खोज के लिए दल का गठन करना चाहिए," उन्होंने अपनी निराशा को छिपाने की कोशिश करते हुए कहा।
जब आचार्य माता ओरेकल की खोज में जाने के लिए मुड़े, तो कालिदास ने फिर कहा, “यदि ये बचपन के दर्शन हैं, तो अब मैं कम से कम एक बात तो जानता हूँ – मेरे बचपन का हूणों से कुछ भयानक संबंध था।”
वेतला भट्टा ने हैरानी से पूछा, "तुम्हें यह कैसे पता चला?"
“उनसे लड़ने के बजाय, मैं उन दृष्टियों को स्वयं प्रकट होने देने की कोशिश कर रही हूँ। मातृ ओरेकल ने सुझाव दिया था कि इससे मदद मिल सकती है। आज सुबह-सुबह, पहली बार, मैंने एक दृष्टि में कुछ नया देखा। वह दृष्टि जिसमें धनुष लिए एक आदमी घोड़े पर सवार होकर मेरा पीछा कर रहा है, याद है?” आचार्य ने सिर हिलाया। “आपको वह आदमी जाना-पहचाना लगा।”
“मुझे अब भी नहीं पता कि वह कौन है, लेकिन वह व्यक्ति हूण है। मुझे यकीन है क्योंकि उसके माथे के बीचोंबीच एक बड़ा, काला बिच्छू खुदा हुआ है, जिसे ह्रीज़ का निशान कहते हैं।”

आचार्य की ओर पीठ करके कालिदास सीढ़ियों से नीचे उतर गए। प्रधान सलाहकार कुछ क्षण तक उस विशालकाय को जाते हुए देखते रहे, उनके मन में छिपे उन भयानक विचारों से भयभीत थे जो कभी भी प्रकट हो सकते थे। यदि मरुस्थली के बर्बर लोगों का उस विशालकाय के बचपन से कोई संबंध रहा हो, तो यह आश्चर्य की बात नहीं थी कि उस आघात ने लड़के की स्मृति को पूरी तरह मिटा दिया था। यदि कालिदास के बचपन में हूणों का कोई अस्तित्व रहा हो, तो बेहतर यही होता कि उन्हें भुला दिया जाता।
वेताल भट्ट ने अभी देवी ओरेकल के कक्ष की ओर अपना रास्ता खोजना शुरू ही किया था कि उज्जैनी पर एक भयानक फुफकार सुनाई दी। यह हवा में, महल की दीवारों में और सन्नाटे में घुलती हुई, ठंडी और शिकारी सी थी, जिसने आचार्य के हृदय पर बर्फीली पकड़ बना ली। यह समय से परे की ध्वनि थी, एक ऐसी ध्वनि जो किसी और ध्वनि जैसी नहीं थी, अपने रास्ते में आने वाली हर चीज को आतंक की लहरों में जकड़ती हुई।

नर-सिंह

जिस क्षण वह भयावह फुफकार शुक्राचार्य के कानों में पड़ी, भय ने उन्हें जकड़ लिया।
हड्डियों में यक्ष के बारे में जो लिखा था, वह गलत था, उसने मन ही मन सोचा और एक गाली देते हुए उछलकर खिड़की की ओर भागा। कुबेर के दरबार का वह रहस्यमय प्राणी किसी जंगल में घात लगाकर नहीं बैठा था – वह उज्जैन में ही था, वीषाद के खंजर की तलाश में। और वह इसके लिए तैयार नहीं था क्योंकि हड्डियों में जो लिखा था, वह पूरी तरह गलत था।
खिड़की से सिर बाहर निकालकर, प्रधान पुरोहित ने चारों दिशाओं में उस भयानक ध्वनि के स्रोत का पता लगाने की कोशिश की, लेकिन वह फुफकार हर जगह से आती हुई प्रतीत हुई – मानो हर जगह से आ रही हो। नीचे कहीं से महल के पहरेदारों की कर्कश चीखें सुनाई दीं, उसके बाद पैरों की अफरा-तफरी मच गई, और आंगन के उस पार, शुक्राचार्य ने शंकु और तीन पहरेदारों को दूर एक गैलरी में तेजी से भागते हुए देखा।
“वहाँ, आकाश में,” दूर से एक आवाज़ आई, जो आश्चर्य और भय से भरी हुई थी। जैसे ही प्रधान पुजारी ने अपना सिर उठाया, उसे फिर से वही आवाज़ सुनाई दी। “ऊपर… पश्चिम की ओर।”

उनके कक्ष की खिड़कियाँ उत्तर-पूर्व दिशा में खुलती थीं, और वहाँ से आकाश के एक अलग हिस्से का नज़ारा दिखाई देता था। शुक्राचार्य तेज़ी से कमरे से बाहर निकले और गैलरी से होते हुए एक खुली छत पर पहुँचे, जहाँ से महल का मुख्य मार्ग दिखाई देता था। वे छत पर उतरे और उनकी निगाहें पश्चिमी आकाश पर टिकी थीं, लेकिन महायाजक को पहले केवल घने और उदास बादल ही दिखाई दिए। कुछ क्षण बाद, उसकी नज़र बादलों के एक समूह पर पड़ी। वह आसपास के बादलों से कहीं अधिक गहरा था, और उसका आकार भी तेज़ी से बदल रहा था, मानो वह प्रकृति के किसी अनूठे नियम के अधीन हो। हल्के भूरे से स्लेटी रंग और फिर काले रंग में, वह कुछ ही सेकंड में रंग बदलता रहा, आकाश में विचित्र आकृतियों में घूमता और लहराता रहा, जब तक कि मुख्य पुजारी को उसकी परतों और छायाओं में छिपी किसी विशाल और भयावह चीज़ की रूपरेखा दिखाई देने लगी।
उसे एहसास हुआ कि यह कोई यक्ष नहीं था। फिर भी, उसे जो राहत मिलनी चाहिए थी, वह नहीं मिल रही थी।
अचानक ही बादल घने रूप में सिमट गया और पलक झपकते ही एक विशालकाय सर्प के सिर और गर्दन में बदल गया, उसका बाकी शरीर अभी भी बादलों से ढका हुआ था।
शुक्राचार्य ने काले और भूरे पंखों वाले उस काले सिर और उसकी कठोर, अंबर रंग की आँखों को देखते हुए लगभग उज्जैनी की सामूहिक सिसकी सुनी।
उसे अपनी आंखों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था।
“यह कैसी विपत्ति हो सकती है?” पास ही कहीं से एक फुसफुसाती आवाज आई।
प्रधान पुजारी ने मुड़कर देखा तो दरबारियों और महल के सेवकों का एक समूह पास की छत से उस भयानक प्राणी को घूर रहा था।
शुक्राचार्य ने मन ही मन कहा, तीनों लोकों में इससे बढ़कर कोई विपत्ति नहीं है। लेकिन उनके कहे शब्दों से आकाश में विराजमान उस भयानक जीव का वर्णन उस राक्षस के अलावा और किसी तरह नहीं हो सकता था – और उन्हें पूरा विश्वास था कि वह राक्षस बहुत जल्द अपनी सामर्थ्य का भव्य प्रदर्शन करेगा।
मानो प्रधान पुरोहित के विचारों से प्रेरणा लेकर, सर्प ने अपने जबड़े खोले और उज्जैनी पर एक गाढ़ा, धूसर रंग का तरल पदार्थ छिड़क दिया। शुक्राचार्य जहाँ खड़े थे, वहाँ से उन्हें यह पता नहीं चल सका कि विषैला द्रव कहाँ

गिरा, लेकिन उन्होंने झील के उस पार से धूल का बादल उठते देखा। उसी समय, उनके पैरों के नीचे ज़मीन एक पल के लिए काँपी। फिर, जैसे ही धूल का बादल धीरे-धीरे हवा में फैल गया, हवा में चीखों की गूँज सुनाई देने लगी।
चीखों ने महल को हरकत में ला दिया। नीचे प्रांगण से महल के रक्षकों की चीखें और आदेश गूंजने लगे, और जैसे ही फुफकार अचानक बंद हुई और सर्प धुएं के गुबार में गायब हो गया, उनकी आवाजें और तेज हो गईं। पुल पर घोड़ों के खुरों की गड़गड़ाहट गूंजी, और शुक्राचार्य ने अमर सिंह और क्षपणक को एक दर्जन सैनिकों के साथ बाहर आते देखा। वेताल भट्ट प्रांगण में प्रकट हुए और महल के रक्षकों को निर्देश देने लगे।
प्रधान पुरोहित ने और अधिक देखने की प्रतीक्षा नहीं की। उन्हें यह जानना आवश्यक था कि आदिम सर्प-ड्रैगन अही को उज्जैन में कौन और किस कारण से लाया था।
शुक्राचार्य तेज़ी से अपने कक्ष की ओर वापस लौटे। लेकिन एक तीखे मोड़ पर वे विपरीत दिशा से आ रही एक आकृति से टकराने से बाल-बाल बचे। अचानक रुककर उन्होंने देखा कि उनके चेहरे से कुछ ही इंच की दूरी पर स्थित चेचक के निशानों से भरा चेहरा लंगड़े सलाहकार वराहमिहिर का था।
“तुम कहाँ थे?” सलाहकार की भौंहें आश्चर्य से ऊपर उठ गईं। “मैं तुम्हें पूरे महल में ढूंढ रहा था।” “मुझे ढूंढ रहे थे?” शुक्राचार्य का स्वर सतर्क था। “क्यों?”
“मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे साथ आओ। धनवंतरी उज्जैन में नहीं है, और शहर को तुम्हारे जैसे प्रतिभाशाली और अनुभवी चिकित्सक की आवश्यकता है।”
“आप मुझे कहाँ आने के लिए कह रहे हैं?”
“मुझे लगता है, जहाँ भी वह राक्षस तबाही मचाता है, वहीं जाना पड़ता है। यह जानने का एकमात्र तरीका है कि आपको कहाँ बुलाया जा सकता है, महल से बाहर निकलना। आइए।”
पार्षद अपनी बैसाखी के सहारे आगे-आगे चलने लगा, लेकिन प्रधान पुजारी पीछे रह गया। “मैं… मुझे नहीं लगता कि मैं जा सकता हूँ…” पार्षद का उदास चेहरा उसकी ओर तेज़ी से मुड़ते देख उसने कहा, “मुझे… रानी से… थोड़ी देर में मिलना है।”

“झील के उस पार से चीखें सुनाई दीं। उज्जैन के नागरिकों की ज़रूरत इस समय कहीं ज़्यादा है,” वराहमिहिर ने शांत स्वर में कहा, उनकी निगाहें शुक्राचार्य के चेहरे पर टिकी थीं। ठीक उसी क्षण, उज्जैन में खतरे की घंटियों की बेमेल आवाज़ें गूंज उठीं। सलाहकार ने कान लगाकर उनकी ओर देखा और फिर हल्के से कंधे उचकाते हुए और ‘मैंने तो पहले ही कहा था’ वाले भाव से महायाजक की ओर मुड़ गए। “रानी की चिंता मत करो – वैसे भी तुम उन्हें अभी कुछ समय तक देख नहीं पाओगे। चलो चलते हैं।”
बहाने ढूंढने में असमर्थ, प्रधान पुजारी ने स्वयं को प्रांगण में ले जाने दिया, जो उस समय अशांत अवस्था में था। महल के रक्षक दरवाजों और फाटकों को सुरक्षित करने और मार्ग पर सुरक्षा व्यवस्था स्थापित करने में लगे हुए थे, हालांकि उनके हावभाव से स्पष्ट था कि वे ऊपर मंडरा रहे राक्षस से बचाव के लिए क्या सावधानी बरत रहे थे। वे बार-बार आकाश की ओर भयभीत निगाहें डालते थे, लेकिन राक्षस फिर से प्रकट नहीं हुआ था - हालांकि, एक अजीब तरीके से, उसकी अनुपस्थिति ने पहले से ही पुरुषों में व्याप्त भय को और बढ़ा दिया था। खतरे की घंटियों की गूंज इतनी तेज हो गई थी कि शुक्राचार्य को सलाहकार के कान में झुककर अपनी बात कहनी पड़ी।
“मेरे पास घोड़ा नहीं है,” उसने उम्मीद भरी आवाज़ में न दिखाने की कोशिश करते हुए चिल्लाकर कहा। “और यहाँ कोई भी ऐसा नहीं है जो मुझे अपना घोड़ा दे सके।”
मानो उसने एक शब्द भी न सुना हो, वराहमिहिर ने उंगलियों से इशारा करते हुए महायाजक को अपने साथ चलने का संकेत दिया। हताश और लाचार शुक्राचार्य उनके पीछे-पीछे चल पड़े, और वे एक ढके हुए बरामदे को पार करके एक कोने पर मुड़े। उनके सामने एक कंटीले बबूल के पेड़ के नीचे एक खुला, दो घोड़ों वाला रथ खड़ा था।
"क्या आपके पास रथ है?" महायाजक ने अपनी निराशा को छिपाने के लिए आश्चर्य का नाटक किया।
“तुम्हें क्या लगता है कि मैं अपने इस पैर से कैसे चल-फिर सकता हूँ?” वराहमिहिर रथ पर सवार हुए और महायाजक के लिए जगह बनाई। “आइए, उज्जैनी को आपकी सेवाओं की आवश्यकता है।”

* * *

क्षपणक और अमर सिंह ने उस व्यक्ति को धूल के आवरण से भूत की तरह निकलते देखा। वह लड़खड़ाते हुए भागा, अपनी बाहों में उठाई हुई युवती के भार से वह बेहाल था, उसका मुंह दर्द से कराह रहा था। उसकी आँखों से आंसू बह रहे थे, जो उसके चेहरे पर जमी धूल की परत पर गीले निशान छोड़ रहे थे, और उसके सिर और कंधों पर भी धूल की मोटी फुहारें थीं। लड़की भी धूल से ढकी हुई थी, जिससे उसकी बाईं कनपटी पर जमे खून का लाल धब्बा और भी स्पष्ट दिखाई दे रहा था। लड़की उस व्यक्ति की बाहों में बेजान पड़ी थी, उसका एक हाथ इस तरह लटका हुआ था कि न तो कोई भरोसा जागता था और न ही कोई उम्मीद।
वह व्यक्ति पार्षदों और सैनिकों की छोटी टुकड़ी के पास पहुँचा, लेकिन धीमा होकर मदद की गुहार लगाने के बजाय, वह उनके पास से ऐसे गुज़र गया मानो वे उसे दिखाई ही न दे रहे हों। उसने तमाशबीन दर्शकों की भीड़ पर भी ध्यान नहीं दिया, जो उत्सुक लेकिन भयभीत थे और धूल के गुबार को देखते हुए पीछे खड़े थे, खतरे का पहला संकेत मिलते ही भागने को तैयार थे।
"कोई उसकी मदद करो," क्षपनाका ने अलार्म की घंटियों की तेज़ आवाज़ के बीच पुकारा और पास खड़े दर्शकों के समूह की ओर हाथ हिलाया।
भीड़ में से दो लोग घबराए हुए और संशय से आगे बढ़े, लेकिन वह आदमी उनके पास से अंधाधुंध निकल गया, उसके होठों से एक तीखी कराह निकली। क्षपनाका उस आदमी के पीड़ादायक और बेसुध भागते हुए भाग का सहानुभूतिपूर्वक पीछा करती रही जब तक कि वह गली के एक मोड़ पर ओझल नहीं हो गया। जब वह धूल से ढके उस इलाके की ओर मुड़ी जहाँ उज्जैन के लोहार और धातुकर्मी रहते थे, तो उसका चेहरा क्रोध से लाल था।
उसने अपने घोड़े को आगे बढ़ाया और बाकी लोग उसके पीछे-पीछे चलने लगे। वे पत्थरों से बनी उस सड़क से धीरे-धीरे आगे बढ़े, जो मलबे से भरी थी और गड्ढों से गड्ढों से भरी थी। वे धूल के गुबार में धीरे-धीरे अंदर की ओर बढ़ रहे थे, जहाँ घायलों और मृतकों की चीखें गूंज रही थीं। लोग पार्षदों के रास्ते में इधर-उधर भाग रहे थे, और जहाँ धूल कम हो रही थी, वहाँ महल से आए आगंतुकों को ढहे हुए घर और धंसी हुई छतें दिखाई दे रही थीं।

"माननीय महोदय, नमस्कार," धूल से प्रकट होते हुए नगर सुरक्षा बल के एक कप्तान ने कहा। "मलबे के नीचे कई लोग दबे हुए हैं। अगर उन्हें जल्द नहीं निकाला गया तो उनकी मौत हो जाएगी। हमें मदद की ज़रूरत है।"
अमारा सिम्हा ने सिर हिलाया और समूह में मौजूद सैनिकों में से एक को संबोधित करते हुए कहा, “सबसे नज़दीकी पाँच नगर सुरक्षा चौकियों को संदेश भेजो। उनसे कहो कि बचाव कार्य के लिए ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को भेजें। शहर की दीवारों पर काम कर रहे मज़दूरों को काम पर लगाओ, जनता से स्वयंसेवक जुटाओ… बाहर खड़े लोगों से कहो कि वे यूँ ही खड़े न रहें, बल्कि काम में हाथ बँटाएँ… जल्दी करो!”
जैसे ही सिपाही ने निर्देशों का पालन करने के लिए अपने घोड़े को मोड़ा, धूल में से एक पुरुष और एक महिला लड़खड़ाते हुए निकले। महिला उस पुरुष को सहारा दे रही थी, जिसके कंधे पर गंभीर घाव से खून बह रहा था। उन्हें लंगड़ाते हुए आँखों से ओझल होते देख, अमारा सिम्हा ने अपने चेहरे से धूल झाड़ी और कप्तान की ओर देखा। "सच में चोट कितनी गंभीर है?"
“कहना मुश्किल है, महाराज,” कप्तान ने उत्तर दिया। “मुझे इतना तो पता है कि गली में आगे कई घर ढह गए हैं। कई लोग फंसे हुए हैं, और कई…” वह सही शब्द ढूंढने के लिए रुका, “…कई पिघल गए हैं।” “पिघल गए?” क्षपनाका ने तीखे स्वर में पूछा।
“मोम की तरह,” कप्तान कांपते हुए बोला। “उस जीव के मुंह से निकली लार मांस और हड्डियों को पिघलाकर चूर-चूर कर देती है। मैंने तीन लोगों को इस तरह मरते देखा है – यह बहुत भयानक है।”
"क्या जहर ने घरों को भी नष्ट कर दिया?"
"जी हां, माननीय न्यायाधीश। इसके संपर्क में आने वाली हर चीज टूट जाती है या पिघल जाती है।"
“क्या आपको अंदाज़ा है कि कितने…” क्षपणका ने कहना शुरू किया ही था कि अचानक चारों ओर से उन्मादी चीखों की एक लहर उठ उठी, जिससे उसकी बात अधूरी रह गई।
घोड़े सहज रूप से उछल पड़े और डर से फुफकारते हुए इधर-उधर भागने लगे। अपने घोड़ों को काबू में रखने की कोशिश करते हुए पार्षदों और सैनिकों ने एक-

दूसरे की ओर घबराई हुई निगाहों से देखा, लेकिन इससे पहले कि कुछ कहा जा सके, उनके नीचे की ज़मीन किसी भारी चीज़ के गिरने से कांप उठी। पैरों के नीचे तुरंत दरारें पड़ गईं और सड़क खतरनाक तरीके से एक तरफ झुक गई, जिससे घोड़े फिसलने लगे और स्थिर होने के लिए संघर्ष करने लगे। और भी चीख-पुकार हवा में गूंज उठी, जिसके बाद घबराहट में पैरों की भागदौड़ मच गई।
“यह वही प्राणी फिर से है!” क्षपनाका चिल्लाई, अपने घोड़े को घुमाते हुए धूल के पर्दे में बने छेद की ओर बढ़ी। “धनुषधारियों, मेरे साथ आओ।” पार्षद धनुष हाथ में लिए, तीर तैयार करके खुली सड़क पर आ दौड़ी। उसके पीछे नगर रक्षक दल के तीन घुड़सवार तीरंदाज धनुष और तीर तैयार रखे हुए थे। रकाब पर संतुलन बनाते हुए क्षपनाका ने ऊपर आकाश की ओर देखा, लेकिन उदास भूरे बादलों के अलावा वह खाली दिखाई दिया। तभी उसकी नज़र दो युवतियों पर पड़ी जो एक दरवाजे के नीचे दुबकी हुई थीं और उसके कंधे के ऊपर इशारा कर रही थीं। घोड़े की लगाम खींचते हुए क्षपनाका ने मुड़कर देखा तो सर्प पास के एक मोहल्ले की छतों के ऊपर मंडरा रहा था, जहाँ से धूल का एक नया बादल उठने लगा था। एक और यू-टर्न लेते हुए पार्षद ने अपने घोड़े को विपरीत दिशा में दौड़ा दिया।
अमर सिंह और बाकी सैनिक धूल से ठीक समय पर निकले और उन्होंने क्षपनाका और घुड़सवार तीरंदाजों को गली के अंत में गायब होते देखा। एक पल भी बर्बाद किए बिना, बलवान सलाहकार उनका पीछा करने दौड़ा और सैनिकों को अपने पीछे आने का आदेश दिया। उनका पीछा करते हुए वे घुमावदार गलियों और घरों से भरी संकरी सड़कों से गुज़रे, लेकिन इमारतों के बीच से सैनिकों को कभी-कभी सर्प के काले, गीले शरीर की झलक मिल रही थी। हर मोड़ पर सैनिक उस जीव के करीब आते गए, और अंत में वे एक चौड़ी सड़क पर पहुँच गए जो बाज़ार की ओर जाती थी। रुककर, अमर सिंह ने पहले एक तरफ और फिर दूसरी तरफ क्षपनाका को देखा। फिर वह स्तब्ध रह गया।
क्षपनाका और तीनों धनुर्धारियों को पहले ही बढ़त मिल चुकी थी, और अब वे चारों सुनसान सड़क के बीचोंबीच अपने धनुष तने खड़े थे, छतों के ऊपर खतरनाक ढंग से लहराते हुए राक्षस के पंखदार सिर पर निशाना साधे हुए। सर्प भी अपनी संकीर्ण, द्वेषपूर्ण आँखों से परामर्शदाता और धनुर्धारियों का आकलन कर रहा था, उसकी उत्सुक काली जीभ बार-बार उसके मुँह से अंदर-बाहर हो रही थी।

सड़क पर समय थम सा गया था, और यहाँ तक कि खतरे की घंटियों की आवाज़ भी सन्नाटे के सन्नाटे में गुम हो गई थी।
अपने घुटनों का सहारा लेते हुए, क्षपनाका ने धीरे-धीरे अपने घोड़े को आगे बढ़ाया और सर्प के करीब ले गईं; घुड़सवार धनुर्धारियों ने भी ऐसा ही किया, लेकिन उनमें उतना दृढ़ संकल्प नहीं था। अमर सिंह यह सब देख रहे थे, उनकी साँसें थम सी गई थीं। क्षपनाका ने तीर छोड़ने से पहले धनुष की डोरी को एक इंच पीछे खींचा। पल भर बाद, तीनों घुड़सवार धनुर्धारियों ने भी अपने तीर चलाए, और चारों तीरों की आवाजें सन्नाटे में गूंज उठीं।
चारों तीर एक साथ पूर्ण सामंजस्य में सर्प की ओर उठे। लेकिन राक्षस ने पलक भी नहीं झपकाई और तीरों के ऊपर उठने का अनुसरण किया। जब तीर उसके सिर और थूथन पर लगे, तो अमर सिंह ने देखा कि जहां तीर लगे थे, वहां से कीचड़ भरे पानी की छींटे हवा में उछलीं। अगले ही पल, चारों तीर सर्प के शरीर में समा गए, मानो पूरे निगल लिए गए हों, और उसकी चमकदार, गीली त्वचा पर केवल छोटी- छोटी लहरें ही रह गईं।
अमरा सिंह ने सोचा, मानो तीर पानी के कुंड में चलाए गए हों, क्योंकि सर्प, जो अब तक अप्रभावित था और द्वेष से भरा हुआ था, ने अपना सिर ऊंचा उठाया और प्रतिशोध में अपना मुंह खोल दिया।
“सावधान रहो!” यह चेतावनी अमारा सिम्हा के गले से चीर कर निकल गई, लेकिन बहुत देर हो चुकी थी।
राक्षस की सम्मोहक दृष्टि में फँसे क्षपनाका और धनुर्धारी जड़वत खड़े रह गए, जब सर्प के गले से भयानक फुफकार निकली। ठंडी हवा का एक झोंका गली में दौड़ पड़ा, अपने साथ पुराने युद्धक्षेत्रों और कालकोठरियों की फुसफुसाती गंध लेकर आया, और अमर सिंह को अपने हृदय में भय को प्रवेश करने से रोकने के लिए संघर्ष करना पड़ा। फिर, अचानक खाँसी के साथ, उस प्राणी ने अपने घातक विष की एक धार अपने हमलावरों पर थूक दी।
अमारा सिंह की आँखें भय से चौड़ी हो गईं, जब उन्होंने देखा कि क्षपनाका पर हमले का सबसे बुरा असर पड़ा है। बौछार पार्षद और उसके घोड़े पर सीधे पड़ी, जिससे वह घोड़े की पीठ से गिरकर सड़क पर जा गिरी। उसका घोड़ा दर्द से कराहते हुए क्षत-विक्षत होकर एक गूदेदार लोई में बदल गया, जबकि क्षपनाका

लुढ़कती हुई एक दीवार से जा टकराई। इसी बीच, तीनों घुड़सवार तीरंदाज और उनके घोड़े जलते हुए, फफोलेदार मांस के बेजान गड्ढों में बदल गए, और सड़क पर जहाँ जहर फैला था, वहाँ से भाप निकलती दरारें उभर आईं।
सांप ने अपने द्वारा मचाई गई क्षति का जायजा लेने के लिए कुछ देर रुककर झपट्टा मारा और सड़क पर फैल गया। उसकी निगाहें क्षपनाका पर टिकी थीं – जो बेसुध पड़ी थीं, उनके कपड़े फटे हुए थे, लेकिन चमत्कारिक रूप से विष से अप्रभावित थीं। वह दैत्य हवा में मंडराता हुआ पार्षद के ऊपर पहुंचा, और संदेह भरी निगाहों से अपनी जीभ हवा में लहराने लगा। अचानक, उसकी आंखें घृणा से पीले रंग की हो गईं। अपनी गर्दन को एक बार फिर झुकाकर, उस प्राणी ने पार्षद पर विष उगलने के लिए अपना मुंह खोला।
क्षपनाका को सड़क पर असहाय पड़ा देखकर, जब उसके ऊपर वह भयानक काला गड्ढा खुल गया, अमर सिंह क्रोध से लाल हो उठा। वह लड़की उसकी आँखों के सामने पली- बढ़ी थी, एक दुबली-पतली बच्ची जिसने कभी संस्कृत व्याकरण की पेचीदगियाँ नहीं समझीं, लेकिन बारह साल की होने से पहले ही उज्जैन के सर्वश्रेष्ठ धनुर्धारियों को मात दे सकती थी। उसे आज भी याद है जब उसने पहली बार उस लड़की के हाथों में धनुष दिया था, उसने लगभग उसके पैर के अंगूठे में तीर मार दिया था। उसे यकीन था कि वह कभी सीधा निशाना नहीं लगा पाएगी, और अब वह उस राक्षस की दया पर पड़ी थी क्योंकि उसने धनुष चलाना इस तरह सीख लिया था जैसा बहुत कम लोग सीख पाते हैं।
अमर सिंह ने अपनी युद्ध कुल्हाड़ी को मजबूती से पकड़ते हुए घोड़े से छलांग लगाई। उनके पैर जमीन पर पड़े ही थे कि वे सड़क पार करके क्षपनाका की ओर दौड़ पड़े, उनके भीतर से एक दहकती हुई पशुवत गुर्राहट निकल रही थी। जैसे-जैसे वह दौड़ में शामिल होता गया, पार्षद में तेजी से और उल्लेखनीय परिवर्तन आने लगा।
अमारा सिंह का आकार बढ़ता गया। उनकी लंबाई और वजन दोनों में वृद्धि हुई, उनके शरीर का वजन और मांसपेशियां आनुपातिक रूप से इतनी बढ़ गईं कि वे एक दैत्य बन गए। उनके घने लाल बाल और दाढ़ी दोनों गहरे रंग के हो गए, और बढ़कर उनकी गर्दन और कंधों के चारों ओर एक घनी गर्दननुमा गर्दन बन गई। साथ ही, पार्षद के मानवीय चेहरे के भाव बदल गए और वे स्पष्ट रूप से शेर जैसे हो गए, जबकि उनकी गोरी त्वचा पर भूरे रंग के बालों की एक महीन परत उग आई। उनकी

उंगलियों के सिरों से नुकीले, पीछे हटने वाले पंजे निकल आए, और उनके होठों के नीचे लंबे नुकीले दांत दिखाई देने लगे।
पांच शक्तिशाली छलांगों में, अमारा सिंह सर्प के निकट पहुँच गए। जैसे ही सर्प ने इस नए खतरे की ओर अपना सिर घुमाया, सलाहकार उसके पास पहुँच गए, उनका मानव रूप से आधा शेर में रूपांतरण पूर्ण हो चुका था। सर्प ने अपनी जीभ बाहर निकाली और विष उगलने के लिए अपने जबड़े और भी चौड़े कर लिए, लेकिन अमारा सिंह बिजली की तेज़ी से आगे बढ़े। अपनी युद्ध कुल्हाड़ी उठाकर, उन्होंने छलांग लगाई और चमकती हुई कुल्हाड़ी को सर्प के सिर पर ज़ोर से प्रहार किया।
जैसे ही कुल्हाड़ी उसके सिर में धंसी, वह राक्षस लाखों पानी की बूंदों में बदल गया। पानी की बौछार से सड़क और उसके आसपास की इमारतें भीग गईं, और लगभग एक मिनट तक पूरे मोहल्ले में बूंदें गिरती रहीं। सांप के अचानक गायब हो जाने से अमारा सिंह अपना संतुलन खो बैठा और लड़खड़ाते हुए सड़क पर गिर पड़ा। जल्दी से संभलकर वह उठा और राक्षस को ढूंढने के लिए चारों दिशाओं में घूमने लगा।
वहां सांप का कोई निशान नहीं था।
अचानक खांसी का दौरा पड़ने पर अमर सिंह ने मुड़कर देखा तो क्षपनाका हिल-डुल कर उठ खड़ी हुई थी। कुछ कदम चलकर वह उसके पास गया और उसे नीचे की ओर देखा।
"क्या आप ठीक हो?"
क्षपनाका ने पलकें झपकाईं, ऊपर देखा और सहज ही हांफते हुए पीछे हट गई। लेकिन जैसे ही उसने अपने ऊपर खड़े उस विचित्र पुरुष-सिंह को देखा, उसके चेहरे पर भय का भाव आश्चर्य में बदल गया।
“पार्षद अमारा सिम्हा?” उस आकृति को सिर हिलाते देख उसने दबी आवाज में पूछा, “आपको क्या हुआ?”
अमरा सिंह ने कंधे उचकाते हुए अपनी भुजाओं और हाथों का निरीक्षण किया, अपने बाएं हाथ के पंजों को बार-बार खोलते और बंद करते हुए। उसने अपना सिर ऊपर उठाया तो देखा कि नगर रक्षक दल के सैनिक उसे आश्चर्य और भय से देख रहे

हैं। उसने क्षपनाका की ओर हाथ बढ़ाया ताकि वह उठ सके। “हमारे साथ कुछ विचित्र हो रहा है। जो भी हो, इसने तुम्हें राक्षस के विष से बचाया।” आसमान खुल गया और तेज हवाओं के साथ मूसलाधार बारिश होने लगी। क्षपणका ने धीरे से बढ़ाया हुआ हाथ थामकर खुद को संभाला और अविश्वास से नीचे अपनी ओर देखा।
“मुझे कुछ नहीं हुआ? और बाकी लोगों को? तीरंदाजों को?”
“सब कुछ खत्म हो गया, गलकर चूर-चूर हो गया,” अमारा सिम्हा ने बारिश के पानी में तैरते हुए चिपचिपे पदार्थ के चार ढेरों की ओर इशारा करते हुए कहा। “तुम्हारा घोड़ा भी। हालांकि, मज़े की बात यह है कि तुम्हारा धनुष अभी भी साबुत है।”
सैनिक सड़क पार करके एक-एक करके या दो-दो करके उनकी ओर बढ़ रहे थे। उनके चारों ओर खिड़कियाँ और दरवाजे खुल गए, और लोग सिर बाहर निकालकर पार्षदों को विस्मय भरी निगाहों से देख रहे थे।
क्षपनाका लंगड़ाते हुए अपने गिरे हुए धनुष के पास गई और उसे उठाया। "क्या वह प्राणी मर गया है?"
“वह चला गया है। मैं बस इतना ही निश्चित रूप से कह सकता हूँ।”
“मुझे लगता है आपने ही इसे नष्ट किया है, महाराज,” सैनिकों में से एक ने अमारा सिम्हा से अपनी निगाहें हटाए बिना बोलना शुरू किया। “मैंने इसे चकनाचूर होते देखा…”
बारिश की बूंदों के बीच से एक बार फिर सरसराहट की आवाज आई। यह आवाज सड़क के उस छोर से आ रही थी जो बाजार की ओर खुलता था, और जैसे ही पार्षद और सैनिक उस तरफ मुड़े, उन्होंने एक मोटी काली पूंछ को बाजार के पास से फिसलते हुए और गायब होते देखा।
“यह अभी भी जीवित है,” अमरा सिंह ने अपनी कुल्हाड़ी कंधे पर उठाते हुए कहा। क्षपनाका की ओर मुड़ते हुए उन्होंने आगे कहा, “ऐसा लगता है कि तुम इसके विष से अप्रभावित हो, इसलिए शायद तुम ही अकेले हो जो इसके पास जाकर इसे मार सकते हो – अगर इसे मारा जा सके तो।”

* * *

वर्षा से गीली और फिसलन भरी उज्जैन की ऊबड़-खाबड़ सड़कों पर रथ हिचकोले खाता हुआ आगे बढ़ रहा था, और वराहमिहिर घोड़ों को तेज दौड़ाते हुए तीखे मोड़ों पर लड़खड़ाता जा रहा था। नीचे से पहियों की भारी गड़गड़ाहट बारिश की गर्जना और अलार्म की तेज, तीखी आवाज के साथ मिलकर शोर का एक कर्कश तूफान बना रही थी, जिससे शुक्राचार्य भयभीत होकर रथ के किनारों को कसकर पकड़े हुए शहर को गुजरते हुए देख रहे थे।
मुख्य पुरोहित के मन में कई सवाल उठ रहे थे। अही को निर्वासित किए हुए हज़ारों साल बीत चुके थे और उस राक्षस को बुलाने की कला हमेशा के लिए लुप्त हो गई थी। कम से कम यही सब लोग मानते थे। फिर भी, मंत्र किसी तरह गुप्त रूप से सुरक्षित रखा गया था। और इंद्र के पुत्र शची के पुत्र (शुक्राचार्य को इस बात का पूरा यकीन था क्योंकि केवल अर्ध-राक्षस ही उस राक्षस पर विजय प्राप्त कर सकते थे, और देवलोक में केवल एक ही अर्ध-राक्षस था) ने अब उस मंत्र का प्रयोग करके सर्प को बुलाया था। उनकी अंतरात्मा कहती थी कि जयंत ने अपने पिता की इच्छा से उस राक्षस को बुलाया था, लेकिन हड्डियों से अही के बारे में एक बार भी चेतावनी न मिलने से उन्हें संदेह हुआ। इसके अलावा, इंद्र पहले ही हलाहल पर अधिकार करने के लिए यक्ष को भेज चुके थे, इसलिए शुक्राचार्य के मन में अही को उज्जैन भेजना व्यर्थ था। लेकिन अगर इंद्र ने राक्षस को नहीं बुलाया था, तो किसने बुलाया था?
“हम कहाँ जा रहे हैं?” प्रधान पुरोहित ने पार्षद से पूछा। बारिश शुरू होने से पहले वह जितना देख पाया था, उसके अनुसार शहर में तीन अलग-अलग स्थानों से धूल के बादल उठ रहे थे – दो अगल-बगल से, और एक उस दिशा से आ रहा था जिसके बारे में उसने अनुमान लगाया कि वह उज्जैन के मुख्य बाजार की ओर जा रहा था। “हमारे सबसे नज़दीक का इलाका वह है जहाँ धातु कारीगर रहते हैं,” वराहमिहिर ने घंटियों की झंकार और रथ की खड़खड़ाहट के बीच चिल्लाकर कहा। “देखते हैं क्या होता है…”
अचानक एक तेज़ फुफकार सुनाई दी, जो हवा में गूंज उठी और बाकी सब कुछ दबा दिया। उसी क्षण, एक दर्जन से अधिक भयभीत नगरवासियों का झुंड एक गली से निकलकर रथ के रास्ते में आ गिरा। भय से चीखते हुए, कुछ लोग जान बचाने के लिए कूद पड़े, लेकिन अधिकांश लोग आते हुए रथ को देखते रह गए, हिलने-डुलने में असमर्थ। वराहमिहिर ने लगाम खींची, घोड़ों को अपनी पूरी ताकत से पीछे

धकेला, और जानवर दर्द और आश्चर्य से उछल पड़े। फिर भी रथ निर्बल रूप से आगे बढ़ता रहा, अपनी प्रबल गति से उन असहाय नागरिकों की ओर बढ़ता चला गया। ठीक जब ऐसा लगा कि कुछ नगरवासी निश्चित रूप से घोड़ों के खुरों के नीचे आ जाएंगे, तभी घोड़ों ने अपने पैर जमा लिए, और रथ भीड़ से कुछ इंच की दूरी पर रुक गया।
शुक्राचार्य ने अभी राहत की सांस भी नहीं ली थी कि अही का विशाल सिर उस गली से बाहर निकल आया, जिससे कस्बे के लोग अभी-अभी निकले थे। इस भयानक दृश्य को देखकर भीड़ तितर-बितर हो गई; देखते ही देखते गली में केवल रथ और सर्प ही एक-दूसरे के सामने खड़े रह गए।
प्रधान पुरोहित अही द्वारा रथ को गली से निकलते हुए ध्यान से देख रहे थे। घोड़े हिनहिना रहे थे और अपने कान खड़े कर रहे थे, लगाम से मुक्त होने के प्रयास में अगल-बगल सरक रहे थे, लेकिन वराहमिहिर ने लगाम कसकर पकड़ रखी थी और आसपास का रास्ता तलाश रहे थे। दाएं और बाएं जाने वाली गलियां रथ के लिए बहुत संकरी थीं, जबकि गली इतनी चौड़ी नहीं थी कि रथ को तुरंत मोड़ा जा सके। "मुझे लगता है कि जब आपको मौका मिले तो आपको चले जाना चाहिए," पार्षद ने अपना सिर एक तरफ झटकाते हुए बुदबुदाया ताकि वह अपनी बात स्पष्ट कर सके। “और आप?” शुक्राचार्य ने अपने साथी का आकलन किया।
अही पर निगाहें गड़ाए वराहामिहिर ने व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ कहा, “एक लंगड़ा आदमी उस चीज़ से आगे निकलने की उम्मीद नहीं कर सकता। इस समय शहर को पार्षद से ज़्यादा एक वैद्य की ज़रूरत है। कृपया जाइए।”
प्रधान पुजारी अभी उत्तर देने ही वाले थे कि उनकी नज़र के कोने से उस जानवर ने अपना मुँह खोला। उन्हें सड़ी हुई गंध आई – चिलचिलाती धूप में फटते हुए फूले हुए शवों की गंध। अगले ही पल, साँप ने रथ पर विष उगल दिया। शुक्राचार्य को उस मंत्र का आंशिक संरक्षण प्राप्त था जिसे उन्होंने महल से निकलते ही गुप्त रूप से जपा था; विष उन्हें चोट तो पहुँचाएगा, लेकिन कोई स्थायी क्षति नहीं पहुँचाएगा। हालाँकि, मनुष्य का नाश हो जाएगा – जो कि अच्छा ही हुआ, मुख्य पुजारी ने मन ही मन सोचा। सलाहकार से छुटकारा पाकर, वह अही, यक्ष और कटार के बारे में अपनी जाँच-पड़ताल करने के लिए स्वतंत्र हो

जाएगा। स्वयं को दृढ़ करते हुए, मुख्य पुजारी ने विष की फुहार को रथ की ओर बढ़ते हुए देखा।
आवेग और सहज प्रतिक्रिया के चलते, वराहमिहिर चौंक गए और विष से खुद को बचाने के लिए एक हाथ ऊपर उठा लिया - और शुक्राचार्य ने एक अजीब बात देखी। अचानक, ऊर्जा का एक पतला, चमकीला पर्दा, जो इतना सूक्ष्म और आँखों से लगभग अदृश्य था, सर्प और उसके लक्ष्य के बीच प्रकट हुआ। अही का विष उस नाजुक अवरोध पर फैल गया – और विष और पर्दा दोनों ही विलीन होकर हवा में गायब हो गए, जबकि रथ अक्षुण्ण रहा।
शुक्राचार्य ने आश्चर्य से वराहमिहिर की ओर पलकें झपकाईं। सलाहकार ने महायाजक की ओर स्तब्ध दृष्टि डाली। उन्होंने मुड़कर देखा तो सर्प ने और अधिक विष उगला। सलाहकार ने संशय और संकोच से अपना हाथ बढ़ाया, और एक पर्दा झिलमिलाता हुआ, फटा हुआ, धब्बेदार और अस्थिर रूप से प्रकट हुआ। हालांकि, जैसे ही विष चिलचिलाती बारिश में फैला, वराहमिहिर ने अधिक दृढ़ता से अपना हाथ ऊपर उठाया। पर्दा तुरंत स्थिर हो गया, और रथ को एक कांपते हुए, गुंबदनुमा बुलबुले में बंद कर लिया। विष पर्दे से टकराया, लेकिन इस बार पर्दा टिका रहा, भले ही विष धुंधले होकर गायब हो गया।
जैसे ही ऊर्जा का पर्दा पतला होने लगा, पार्षद ने लगाम को मजबूती से पकड़ लिया। हल्के से हिलाते हुए, उसने घोड़ों को सड़क पर आगे बढ़ाया, धीरे-धीरे उनके और सर्प के बीच की दूरी कम कर दी। इस खुलेआम अवज्ञा को देखकर राक्षस तुरंत उछल पड़ा और क्रोध से फुफकारा। अगले ही पल, वह भाप बनकर बारिश की धुंध में गायब हो गया।
“बाल-बाल बच गए!” वराहमिहिरा ने लगाम पर अपनी पकड़ ढीली कर दी। उसने चारों ओर गर्दन घुमाकर यह सुनिश्चित किया कि कहीं राक्षस वापस उन पर हमला न कर दे। “यह जो भी चीज है, हमें इसे रोकने का कोई न कोई तरीका ढूंढना ही होगा।” प्रधान पुरोहित ने सलाहकार को आदर और थोड़ी सहानुभूति भरी निगाहों से देखा। वह जानता था कि अही को नष्ट करना लगभग असंभव था – प्राचीन देवताओं और ऋषियों ने भी उसे केवल निर्वासित ही किया था। वह सर्प जल से उत्पन्न एक तात्विक दानव था, जो अपने स्वामी के मन द्वारा नियंत्रित होता था, इसलिए वास्तव में उसे मारना संभव नहीं था। वराहमिहिर की तमाम तरकीबों के बावजूद,

उस दानव पर विजय पाने का एकमात्र उपाय जयंत के उस पर नियंत्रण को कमजोर करना था – यह एक पेचीदा काम था जिसमें मंत्रों का प्रयोग करना पड़ता था, और सफलता की कोई गारंटी नहीं थी। फिर भी, अही के अविवेकी क्रोध से मनुष्यों को बचाने का कोई और उपाय नहीं था।
शुक्राचार्य इस बात को लेकर असमंजस में थे कि उन्हें मनुष्यों की सहायता के लिए आगे आना चाहिए या उन्हें उनके दुखद भाग्य पर छोड़ देना चाहिए और इस अवसर का उपयोग हलाहल की खोज के लिए करना चाहिए।
आपने अभी जो किया, वह आपने कहाँ से सीखा?
“मुझे तो पता भी नहीं था कि मैं ऐसा कुछ कर सकता हूँ,” वराहमिहिर ने कंधे उचकाते हुए महायाजक की ओर मुड़ते हुए कहा। “बस… हो गया।”
"दो बार?"
“ठीक है, दूसरी बार मैंने कोशिश की। लेकिन मुझे अभी भी नहीं पता कि यह कहां से आया।”
शुक्राचार्य ने मुंह फेर लिया क्योंकि वराहमिहिर की नव-खोजी प्रतिभा का रहस्य अचानक उनके सामने प्रकट हो गया। मानो पर्दा हट गया हो, अचानक सब कुछ स्पष्ट और प्रत्यक्ष हो गया।
वराहमिहिर की ऊर्जा ढाल; मारुत के पैर के नीचे से शंकु का गायब हो जाना; वरारुचि की बाजार चौक के ऊपर से अविश्वसनीय छलांग; क्षपणक द्वारा मारुत के कवच का विध्वंस; कालिदास का तीसरे मारुत के विरुद्ध निहत्थे युद्ध... सब कुछ आपस में जुड़ा हुआ था और सब कुछ तर्कसंगत था।
“– इसका मुकाबला नरक की आग से करो।”
“क्या?” महायाजक ने वराहमिहिर की ओर पलकें झपकाईं। वह सलाहकार के शब्दों को समझने के लिए बहुत ही व्यस्त था।
“मैं कह रहा था कि अगर सम्राट जल्दी लौट आएं तो अच्छा होगा। शायद हम नरक की आग से इस प्राणी का मुकाबला कर सकें।” “राजा कहाँ हैं? क्या वे उज्जैन में नहीं हैं?”

वराहमिहिर ने सिर हिलाया। “सम्राट और रानी उस मैदान की ओर गए जहाँ रानी गिरी थीं।” उन्होंने दक्षिण दिशा की ओर हाथ से इशारा करते हुए कहा, “यह शहर से कुछ मील दूर है।”
शुक्राचार्य एकदम स्थिर हो गए। बारिश थोड़ी कम हो गई थी और सड़क के दूसरे छोर पर धातुकर्मियों की बस्ती नज़र आने लगी थी। बचाव कार्य पूरी तेज़ी से चल रहा था और सैनिक व कस्बेवासी इधर-उधर भाग-दौड़ कर रहे थे।
"रथ को रोको।"
“क्या?” पार्षद ने आश्चर्य से प्रधान पुजारी की ओर भौंहें उठाईं। “क्यों?”
मैंने कहा, रुक जाओ। रानी की जान को गंभीर खतरा है।
शुक्राचार्य के स्वर में व्याप्त तीक्ष्णता और अधिकार ने वराहमिहिर को लगाम कसने पर मजबूर कर दिया। "किस प्रकार का खतरा?" उसने भयभीत होकर पूछा। उत्तर देने के बजाय, प्रधान पुरोहित रथ के रुकने से पहले ही उससे कूद गए। उन्होंने कुछ क्षण इधर-उधर देखा और फिर पास ही स्थित एक लोहार की कार्यशाला की ओर चल दिए। वराहमिहिर ने हैरानी से देखा कि प्रधान पुरोहित ठंडी, खुली भट्टी पर झुके और मुट्ठी भर राख उठा ली। राख को थामे शुक्राचार्य वापस सड़क पर आ गए और अपनी आँखें बंद कर लीं।
सभी भावनाओं में, दुःख सबसे अधिक प्रबल और दुर्बल करने वाला था। भय से भी अधिक, दुःख मन को विचलित करता था, उसे बोझिल कर देता था और उसके संकल्प को कमजोर कर देता था। इसलिए दुःख ही सही, प्रधान पुरोहित ने निर्णय लिया और राख के छोटे से ढेर में दुःख का मंत्र फुसफुसाया। मुट्ठी खोलकर, उन्होंने राख पर फूँका, जिससे बारीक कण नमी से भरी हवा में फैल गए।
“मुझे जाना होगा,” उसने अपनी हथेली से राख झाड़ते हुए कहा। उसने शहर के पहरेदारों में से दो को इशारा करके रोका। एक से दूसरे की ओर देखते हुए उसने पूछा, “क्या आप उस मैदान का रास्ता जानते हैं जहाँ आपकी रानी का हादसा हुआ था?” एक सैनिक ने धीरे से सिर हिलाया, उसे समझ नहीं आ रहा था कि बात किस ओर जा रही है।
“अच्छा। तुम मुझे वहाँ ले चलो।” प्रधान पुजारी दूसरे सिपाही की ओर मुड़े। “मुझे तुम्हारा घोड़ा चाहिए, सिपाही। अभी इसी वक्त।” व्याकुल होकर सिपाही

ने प्रधान पुजारी से वराहमिहिर की ओर देखा, लेकिन अंततः शुक्राचार्य के स्वर की तेज़ी और वैद्य के प्रति उसके आदर ने उसके सारे संदेह दूर कर दिए और वह घोड़े की पीठ से उतर गया। प्रधान पुजारी तुरंत घोड़े पर सवार हो गए। “आप यूं ही नहीं जा सकते। आपकी यहां जरूरत है – उन्हें आपकी जरूरत है,” पार्षद ने सड़क पर गिरे हुए मकानों की ओर इशारा करते हुए विरोध जताया। “रानी को मंडरा रहे खतरे के बारे में हमें बताइए और हम उनकी सुरक्षा के लिए सैनिक भेज देंगे…”
“यहाँ जो मृत हैं, उनकी सहायता नहीं की जा सकती, और घायल प्रतीक्षा कर सकते हैं,” शुक्राचार्य ने वराहमिहिर की आँखों में देखते हुए बीच में ही बात काट दी। “लेकिन आप मेरी बात मान लीजिए कि उज्जैनी जितने भी सैनिक भेजे, वे रानी की रक्षा के लिए पर्याप्त नहीं होंगे। केवल मैं ही ऐसा कर सकता हूँ – बशर्ते मैं समय रहते उन तक पहुँच जाऊँ।”
प्रधान पुजारी जाने के लिए मुड़े, लेकिन खुद को रोककर उन्होंने फिर से पार्षद से कहा, “मैंने सर्प को कमजोर करने के लिए अपनी पूरी कोशिश की है। आप लोग इसे रोकने में जुट जाइए, अन्यथा मृतकों और घायलों की संख्या बढ़ती ही जाएगी।” अपने मार्गदर्शक सैनिक को इशारा करते हुए उन्होंने घोड़े को एड़ी मारी और घोड़ों की टापों की गड़गड़ाहट और पानी की बौछार के बीच विदा हो गए।
यक्ष मानव राज्य की राजधानी के दक्षिण में स्थित एक जंगल में घात लगाए बैठा है। यक्ष उस चीज़ की प्रतीक्षा कर रहा है जिसकी रक्षा करने का वचन मानव राजा ने दिया है।
शुक्राचार्य ने खेदपूर्वक सोचा, "हड्डियाँ कभी गलत नहीं थीं," जब उनके अंगरक्षक उज्जैन के दक्षिणी द्वार की ओर जाने वाले मार्ग पर चल पड़े। गलती उनकी मंशा को समझने में हुई थी। इंद्र ने यक्ष को वैषद के खंजर के लिए नहीं भेजा था, बल्कि मानव राजा की सबसे प्रिय वस्तु को लेने के लिए भेजा था; वह वस्तु जिसकी रक्षा करने का वादा विक्रमादित्य ने विवाह की प्रतिज्ञा लेते समय किया था।
Vishakha.

उसकी मृत्यु इंद्र द्वारा विक्रमादित्य से लिए गए प्रतिशोध का परिणाम थी।

घास का मैदान

विक्रमादित्य के कानों में बारिश की लगातार गूंज सुनाई दे रही थी, एक गीली, खोखली सी आवाज़ जो बूंदों के भारी टपकने की आवाज़ से मिल रही थी, जो उस फैले हुए सुवर्णक के पत्तों और शाखाओं से टकराकर उछल रही थीं जिसके नीचे वह और विशाखा शरण लिए हुए थे। सम्राट और रानी दोनों पूरी तरह भीग चुके थे, उनके बाल गीले, उलझे हुए घुंघराले बालों के रूप में उनके माथे और गर्दन से चिपके हुए थे।
“क्या तुम्हें अब भी लगता है कि पालकी लाने के बजाय घोड़े पर सवार होकर आना बेहतर विचार था?” राजा ने अपनी बात समझाने के लिए विशाखा के करीब झुककर पूछा।
अपनी पलकों से बारिश का पानी झाड़ते हुए विशाखा मुड़ी और मुस्कुराई, लेकिन उसके जबड़े की जकड़न से उसकी मुस्कान बनावटी लग रही थी। उसने कहा, “अगर हम पालकी साथ लाए होते, तो हम यहाँ साथ होने के बजाय उज्जैन वापस जा रहे होते। मुझे... मुझे यह ज़्यादा अच्छा लग रहा है।”
विक्रमादित्य ने हल्की सी दबी हुई मुस्कान दी और घास के मैदान के उस पार विशाखा की सफेद घोड़ी को देखा, जो उनके अपने भूरे घोड़े के बगल में बंधी थी। महल के पहरेदारों का छोटा सा समूह कुछ कदम की दूरी पर अपने-अपने

घोड़ों पर सवार होकर राजा और रानी के आने की प्रतीक्षा में यथासंभव आड़ में बैठा था।
"क्या आप निराश हैं?" विशाखा ने अचानक सम्राट की ओर चौड़ी आँखों से देखते हुए पूछा।
“क्या आप हैं?” एक सवाल का जवाब देने के लिए दूसरा सवाल।
विशाखा की निगाहें अपनी उंगली में पहनी हुई जेड की अंगूठी पर टिक गईं। उसने अपने अंगूठे से अंगूठी पर खुदे हुए नाम के बारीक अक्षरों को छुआ, अंगूठी की चिकनी हरी सतह पर उनके किनारों को महसूस किया। "मुझे उम्मीद थी कि यहाँ आने से शायद कुछ मदद मिलेगी..." उसने अपने शब्द अधूरे छोड़ दिए, उसकी उदास आँखें बारिश से भीगे मैदान पर भटकती रहीं, उस एक अधूरी कड़ी को तलाशती रहीं जो उसे उस आदमी तक वापस ले जाए जो वफादारी से उसके साथ खड़ा था।
“मुझे खुशी है कि हम आए,” सम्राट ने उसका हाथ थाम लिया और उसे दिलासा देते हुए हल्के से दबाया। “अगर हमने यह मौका न लिया होता, तो हम अभी उज्जैन में होते, यहाँ साथ होने के बजाय। सिर्फ इसी वजह से यह यात्रा सार्थक रही।” एक-दूसरे को मुस्कुराकर अभिवादन करते हुए, जिससे उन्हें एक ही समय में सुकून और दर्द दोनों महसूस हुए, वे हाथ पकड़े खड़े रहे, एक-दूसरे के करीब धीरे से झुके हुए, बारिश की आवाज़ सुनते रहे।
“अगर मुझे कभी याद न आए तो क्या सब ठीक रहेगा?” विशाखा ने विक्रमादित्य की ओर देखते हुए पूछा। “या फिर सब कुछ निराशाजनक रूप से रुक जाएगा?”
राजा ने प्रश्न पर गहन विचार करने के बाद सिर हिलाया। “मार्ग तब शुरू होता है जब हम चलना शुरू करते हैं और वहीं समाप्त होता है जहाँ हम रुकते हैं। मार्ग हमारे पैरों में नहीं, बल्कि हमारे मन में होता है।” वह रानी की ओर मुस्कुराने के लिए रुके। “जब तक हम चलना चाहते हैं, हमें चलने के लिए मार्ग मिल ही जाएँगे। पुराने नहीं तो नए। जब हम दोनों में से कोई भी रुकना नहीं चाहता, तो हमें किस बात का डर है?” इन शब्दों से रानी को सुकून मिला और वे चुपचाप बारिश के रुकने का इंतज़ार करने लगे।
मानो सम्मान के प्रतीक के रूप में, बारिश की तीव्रता कम हो गई और हल्की फुहार में बदल गई। मैदान पर एक नज़र डालते हुए, विक्रमादित्य ने महल के

रक्षकों को एक जगह इकट्ठा होते देखा। फिर, शिष्टाचार का उल्लंघन करते हुए, एक रक्षक ने अपने घोड़े को मैदान के पार दौड़ाया और राजा और रानी की ओर बढ़ा।
“मुझे बहुत खेद है, सम्राट,” गार्ड जैसे ही सम्राट के आवाज़ देने की दूरी पर पहुँचा, रुक गया। वह अपने घोड़े पर बेचैनी से हिल रहा था, उसका हावभाव संकोचपूर्ण लेकिन तनावपूर्ण था। “मैं… गार्ड के कप्तान ने मुझसे पूछा था…”
“क्या बात है, सिपाही?” सम्राट ने सुवर्णक के नीचे से निकलते हुए पूछा। “बोल दो।”
“माननीय न्यायाधीश, घंटियाँ बज रही हैं।”
“कौन सी घंटियाँ?” विक्रमादित्य ने भौंहें चढ़ाईं, फिर उनका चेहरा भावहीन हो गया। सिर झुकाकर उन्होंने ध्यान से सुना। पहले तो उन्हें हल्की फुहार के अलावा कुछ सुनाई नहीं दिया, लेकिन हवा का रुख बदलते ही उन्हें उज्जैन की घंटियों की अस्पष्ट और मायावी ध्वनि सुनाई दी।
“हमें भी इस बात का पूरा यकीन नहीं है, महाराज,” सैनिक ने कहा। “हो सकता है हम गलत हों…”
हम जोखिम नहीं ले सकते। घोड़ों को तैयार करो।
रक्षक आदेशानुसार चला गया। विक्रमादित्य घूमे और विशाखा की ओर एक हाथ बढ़ाया। “हमें चलना होगा। उज्जैनी पर शायद हमला हो रहा है।”
“क्या ये पिछली बार की तरह ही राक्षस हैं?” रानी ने पूछा, जब वे जल्दी से घास के मैदान को पार करके अपने घोड़ों की ओर बढ़े। “क्षपणक ने मुझे बताया था कि वे लगभग महल के अंदर पहुँच चुके हैं।”
“ये राक्षस हो सकते हैं, या फिर देवलोक से भेजा गया कोई जीव भी हो सकता है,” सम्राट ने बिना रुके चलते हुए कहा। “उज्जायिनी पहुँचने पर ही पता चलेगा। लेकिन पहले हमें आपको भूलभुलैया की सुरक्षित जगह पर पहुँचाना होगा।”
“यह तो आसानी से हो जाएगा, खासकर यहाँ से,” विशाखा ने कहा। “हमें बस उसी पत्थर के कुएँ से होकर वापस जाना है जिससे हम यहाँ आते समय गुजरे थे।”

“तुम्हें भूलभुलैया से पत्थर के कुएं तक जाने वाला गुप्त रास्ता याद है?” सम्राट ने आश्चर्य से अपनी रानी की ओर देखा।
“हाँ। यह हमें विक ने दिखाया था…” विशाखा रुक गई। उसकी आँखें चौड़ी हो गईं और उसकी आवाज़ लगभग फुसफुसाहट में बदल गई। “… आपने।”
सम्राट ने अपनी सांस रोक ली, उन्हें अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था। "आपको उस दिन की क्या-क्या याद है?"
“क्षपणक और मैं जवान थे। विक्रम और कालिदास ने हमें भूलभुलैया से बाहर निकलने का रास्ता दिखाया था। हमें बताया गया था कि अगर कभी महल और शहर से बाहर जाना हो तो इसी रास्ते का इस्तेमाल करना।” विशाखा ने राजा की ओर देखते हुए अतीत में झांका। “मैं उस अंधेरे रास्ते में बहुत डर गई थी। मुझे लगा कि हम सब खो जाएंगे। तभी कालिदास एक चट्टान पर फिसल गए और लगभग खाई में गिर ही गए थे, लेकिन विक्रम… आपने उन्हें पकड़ लिया। आपने उन्हें ठीक समय पर बचा लिया।” उसने पलकें झपकाईं और अपने पति पर ध्यान केंद्रित किया। जैसे ही उसने अपने हाथ उनकी ओर बढ़ाए, उसकी आवाज कांप उठी। “तब… आपकी मूंछें नहीं थीं।”
विक्रमादित्य ने विशाखा की उंगलियों के सिरों को पकड़ रखा था, उनका गला इतना भर आया था कि वे कुछ बोल नहीं पा रहे थे, राहत की भावना उनकी आंखों में आंसुओं के रूप में उमड़ रही थी। आखिरी अड़ियल ताला आखिरकार तब खुल गया जब उन्होंने इसकी बिल्कुल भी उम्मीद नहीं की थी। अब बस कुछ ही समय की बात थी जब उसे याद आ जाएगा।
सम्राट की दृष्टि के परिधीय क्षेत्र में कुछ दिखाई दिया। वह जम गया।
एक तीर। घास के मैदान को पार करते हुए, सीधे विशाखा की ओर आ रहा है!
यह गति का एक धुंधला सा नजारा था, हल्की फुहार में एक फुसफुसाहट, बारिश और खुले मैदान के चारों ओर पेड़ों की रोशनी और छाया के बीच से धोखे से सरकती हुई। यह तेजी से आया, जानलेवा इरादे से हवा में अपनी नाक गड़ाए हुए, इसका नुकीला और धारदार सिर विशाखा की खुली गर्दन की कोमल वक्रता की ओर सीधा इशारा कर रहा था। जैसे-जैसे यह पास आता गया, यह खून की प्यास से चीखता और गाता रहा।

किसी छठी इंद्री से अनदेखे खतरे को भांपते हुए, विशाखा की आंखें डर से चौड़ी हो गईं और मुंह खुला रह गया। हालांकि, इससे पहले कि वह कुछ कह पाती, विक्रमादित्य ने एक हाथ से रानी की कलाई पकड़ ली और उसे अपनी ओर खींचकर खतरे से बचा लिया। उसी फुर्ती से, वह अपनी एड़ी पर घूमा और अपनी तलवार निकाल ली। पूरी तरह घूमते हुए, उसने अपनी तलवार से तीर पर वार किया, और सटीक समय पर वार करते हुए तीर को बीच से दो टुकड़ों में तोड़ दिया। मिसाइल के टूटे हुए टुकड़े ज़मीन पर गिरे, लेकिन घास को छूते ही दोनों टुकड़े एक रेंगते हुए साँप के हिस्सों में बदल गए – काँटेदार सिर एक नुकीले, त्रिकोणीय विषैले साँप के सिर में बदल गया, और पंखों वाला हिस्सा एक लहराती हुई पूंछ में। जैसे ही पूंछ घास में मचलती और लहराती हुई आगे बढ़ी, सिर वाला हिस्सा सीधे विशाखा के टखने की ओर बढ़ा।
रानी ने हल्की सी चीख मारी और उछल पड़ी, लेकिन घास में छिपे सांप के लिए वह हमेशा ही बहुत धीमी साबित होने वाली थी। सांप उससे बस एक फुट दूर ही था कि विक्रमादित्य की तलवार की नोक ने उसके सिर को छेद दिया, उसे चीर दिया और जमीन पर गाड़ दिया। वह एक पल के लिए वहीं छटपटाता रहा - और फिर सांप अपना रूप खो बैठा और अपनी ही परछाई बन गया, एक काली लहर जो तलवार से मुक्त होकर लंबी घास में, कांटेदार झाड़ियों के झुंड की ओर सरक गई।
“रक्षकों, रानी की रक्षा करो,” सम्राट चिल्लाया और अपना पैर ज़ोर से उस पूंछ पर पटका जो अभी भी फड़फड़ा रही थी, उसे कुचलकर खून से लथपथ कर दिया। उसी समय, उसने विशाखा को पीछे खींच लिया और खुद को उसके और उन झाड़ियों के बीच खड़ा कर दिया जहाँ साँप की परछाई गायब हो गई थी।
घोड़ों की टापों की गड़गड़ाहट के साथ, महल के रक्षक दौड़ते हुए आए और अपने राजा और रानी के चारों ओर एक तंग, सुरक्षात्मक घेरा बना लिया। चार रक्षक घोड़ों से उतरे और करीब आकर विक्रमादित्य को विशाखा को चारों ओर से बचाने में मदद करने लगे।
"हम किससे बचाव कर रहे हैं, महाराज?" गार्ड्स के कप्तान ने खतरे की आशंका जताते हुए पास के जंगल का जायजा लिया।
विक्रमादित्य ने कठोर स्वर में कहा, “जादू टोना। जंगल से तुम्हारी रानी पर एक तीर चलाया गया। मैंने तीर को दो टुकड़ों में काट दिया, लेकिन तीर एक

सांप में बदल गया। मैंने सांप को मारने की कोशिश की, लेकिन वह एक परछाई बनकर झाड़ियों में गायब हो गया।”
एक कलगीदार बुलबुल झाड़ियों से निकली और खुले मैदान के दूसरी ओर पेड़ों पर चढ़ गई। सम्राट ने उस पक्षी को ध्यान से देखा, जो एक शाखा से दूसरी शाखा पर फुदकती हुई घनी पत्तियों के बीच गायब हो गई।
“हमें रानी को यहाँ से निकालना होगा,” विक्रमादित्य ने झाड़ियों से नज़र हटाकर उस पेड़ की ओर देखते हुए कहा जहाँ बुलबुल गायब हो गई थी। “घोड़ों की ओर बढ़ो।”
छोटे-छोटे कदमों से, समूह धीरे-धीरे घास के मैदान को पार कर रहा था। पहरेदार चौकन्ने थे, उनकी तलवारें तनी हुई थीं और ढालें ऊपर उठी हुई थीं, तीनों घुड़सवार तीरंदाज हमलावर की पहली झलक मिलते ही तीर चलाने के लिए तैयार थे। फिर भी, उनकी पूरी सतर्कता के बावजूद, किसी भी सैनिक ने आसमान से गिरते भाले पर ध्यान नहीं दिया - जब तक कि बहुत देर नहीं हो गई। भाला घुड़सवार तीरंदाज की छाती में जा लगा, जो शरीर में गहराई तक धंस गया और उसका नुकीला सिरा खून से लथपथ उसकी पीठ के निचले हिस्से से बाहर निकल आया। जंगल की नम हवा में दो तीखी चीखें गूंज उठीं। एक चीख धनुर्धारी की थी, जो दर्द से कराह रहा था और घुट रहा था; दूसरी चीख विशाखा की थी, जो भाले से घायल सैनिक को काठी पर लड़खड़ाते देख भयभीत हो गई थी। बाकी लोग अभी सदमे से उबर ही रहे थे कि धनुर्धारी की चीख अचानक थम गई और उसका धनुष उसकी बेजान उंगलियों से फिसल गया। वह अपने घोड़े से एक तरफ गिर पड़ा, लेकिन इससे पहले कि उसका शरीर जमीन पर गिरता, उसकी पीठ से निकला भाला नारंगी लपटों की जीभ में बदल गया। कुछ ही सेकंड में, पूरा भाला आग की जलती हुई लपटों में बदल गया - और फिर आग बुझ गई, न तो उसका और न ही भाले का कोई निशान बचा। बस काले, तैलीय धुएं की एक धीमी सी लकीर बची, जो मैदान के ऊपर चक्कर लगाती हुई ऊपर उठ रही थी।
"चलो, चलो, चलो," विक्रमादित्य ने चिल्लाकर उन लोगों को उनकी अचेतना से जगाया और उनमें तत्परता पैदा की।
सैनिक लड़खड़ाते हुए बेढंगे तरीके से भागने लगे, रानी की रक्षा के लिए एकजुट रहने का प्रयास करते हुए भी, उनमें से प्रत्येक उस खतरे से मुक्त

होकर भागने की तीव्र इच्छा से जूझ रहा था जिसे वे समझ नहीं पा रहे थे। जिन घोड़ों पर सवार नहीं थे, उन्हें ऐसी किसी दुविधा का सामना नहीं करना पड़ा - भय के आगे झुककर वे सभी दिशाओं में जंगल की ओर दौड़ पड़े। जब राजा मृत धनुर्धर के पास से गुजरे, तो उन्होंने झुककर उसका धनुष और तरकश उठाया और दोनों को अपने कंधों पर टांग लिया।
भागते हुए दल के पीछे और ऊपर, धुएं का एक हल्का सा गुबार हवा में फैलता हुआ, लंबा और गोल घूमता हुआ दिखाई दिया। पलक झपकते ही, वह एक मोटी, रेशेदार बेल में बदल गया, जिस पर बड़े-बड़े कांटे उग आए थे। वह घूमी और दो घुड़सवार पहरेदारों की ओर बढ़ी, अपने सिरों को उनकी गर्दन के चारों ओर कसकर लपेट लिया और एक ज़ोरदार झटके से दोनों को नीचे गिरा दिया। दोनों सैनिक ज़मीन पर ज़ोर से गिर पड़े, कराहते और हांफते हुए, क्योंकि बेल उनके गले के कांटों को जकड़ती जा रही थी, जिससे उनकी गर्दन की कोमल त्वचा में धंस गई। घास पर तड़पते और लात मारते पहरेदारों को देखकर सम्राट मुड़े और दौड़ पड़े। उन्होंने पूरी ताकत से लता पर हमला किया, तब तक काटते रहे जब तक कि उसके सख्त रेशे टूटकर बिखरने न लगे। फिर भी लता ने पहरेदारों को अपनी जकड़ में जकड़े रखा। सैनिक अपने गले के चारों ओर लिपटी लताओं को छुड़ाने के लिए बेताब होकर हाथ-पैर मार रहे थे, उनकी उंगलियां नुकीले कांटों से छिल रही थीं, और उनकी आंखें दहशत से फट रही थीं। विक्रमादित्य ने अपनी तलवार से लता पर तब तक प्रहार किया जब तक कि वह अंततः टूट नहीं गई, लेकिन तब तक पहरेदारों के लिए बहुत देर हो चुकी थी। कांटे उनकी गर्दन में गहरे धंस गए थे, जिससे धमनियां फट गई थीं। लता की लताओं के नीचे से खून बहने लगा और दोनों धीरे-धीरे दर्दनाक मौत की ओर तड़पने लगे।
“हम तैयार हैं, महाराज,” गार्ड्स के कप्तान ने चिल्लाकर कहा।
हताशा भरी चीख के साथ, सम्राट मुड़ा और खुले मैदान के किनारे प्रतीक्षा कर रहे समूह की ओर दौड़ा। विशाखा अपनी घोड़ी पर सवार थी, जंगल के अंधेरे में उसका चेहरा पीला और निर्जीव लग रहा था। उसकी आँखें सम्राट से मिलीं, भयभीत थीं और मदद व सुरक्षा के लिए उसकी ओर देख रही थीं। अपने घोड़े के पास पहुँचकर, राजा काठी पर सवार हो गया।
“रानी के जितना हो सके उतना करीब रहो,” उसने धनुष उतारते हुए और तीर को सही जगह पर लगाते हुए आदेश दिया। “चलो चलें।”

मैदान में घोड़ों के खुरों की आवाज़ गूंज रही थी, क्योंकि समूह तेज़ी से आगे बढ़ा और उज्जैनी के रास्ते की ओर चल पड़ा। मैदान पर अंतिम नज़र डालते हुए विक्रमादित्य ने देखा कि लता ने दो मृत रक्षकों पर अपनी पकड़ ढीली कर दी। खुलते ही वह तेज़ी से हवा में गायब हो गई। सम्राट ने धनुष उठाया और उसकी डोरी खींची, उनकी निगाहें जंगल में खोज रही थीं।
वह जानता था कि खतरा अभी टला नहीं था। जो भी हो, उसे नाकामयाबी पसंद नहीं थी। वह नए जोश के साथ, पहले से कहीं अधिक प्रतिशोधी और क्रूर होकर उन पर हमला करेगा।

* * *

जली हुई भांग की मदहोश कर देने वाली गंध। और अगरु और चंदन के तेल की बासी महक।
जयंता चौंककर झोपड़ी के संकरे कमरे में चारों ओर देखने लगा, उसे समझ नहीं आ रहा था कि ये गंध कहाँ से आ रही है। सातों दीपक धीमी गति से जल रहे थे और बारिश के बादल घिर आने और मैदान पर अपना कहर बरपाने से कमरा अंधेरा हो गया था। बाहर किन्नर का पेड़ फिर से कराह रहा था। जयंता ने धीरे से हवा को सूंघा, फिर गहरी सांस ली, लेकिन उसे केवल नम, फफूंदी लगी लकड़ी की गंध आ रही थी।
फिर भी, राजकुमार को यकीन था कि कहीं न कहीं इसके नीचे भांग और चंदन के तेल की हल्की सी गंध जरूर मौजूद थी।
उन खुशबुओं ने उसके भीतर कुछ पुराना और उदास भाव जगा दिया। उसने भांग और चंदन की खुशबू को अपनी माँ से जोड़ा – उस माँ से नहीं जो पुलोमन की मृत्यु से पहले थी, बल्कि उसके बाद वाली माँ से। वह माँ जो चट्टानों के चित्रों के प्रति आसक्त थी; वह आत्मा जो अमरावती महल के एक वीरान, सुनसान कोने में भटकती रहती थी।
राजकुमार ने शची के विचारों को मन से निकालने के लिए अपना सिर ज़ोर से हिलाया, लेकिन यादें इतनी देर तक बनी रहीं कि वे उमड़ पड़ीं। दुख के आवेश में, उन्हें याद आया कि शची पुलमन की मृत्यु पर उन्हें सीने से लगाकर रो रही थी। इंद्र ने प्रतिशोध की असाधारण भावना से शची को अपने पिता का शव देखने तक से मना कर दिया था, और जयंत को अभी भी अपनी माँ की पीड़ा महसूस हो

रही थी जब वह अपने पति से पुलमन को अंतिम बार देखने की विनती कर रही थी।
इंद्र ने दृढ़ता से इनकार कर दिया था, और शची ने दो पूरी रातें जयंत के कंधों पर सिर रखकर रोते हुए बिताई थीं।
तीसरी सुबह ही शाची ने पहली बार चट्टानों पर चित्रकारी की।
जयंता को अपने गालों पर नमी महसूस हुई और मुँह के कोनों पर नमक का स्वाद आया। सिसकते हुए और आँसू पोंछते हुए, उसने अपने सामने उबलते हुए कटोरे को देखा और अपने विचारों को भटकने से रोकने की पूरी कोशिश की। अही उज्जैन में थी और उसे काम करना था...
शाची की हंसी राजकुमार की अपनी मां की सबसे पुरानी याद थी। यह एक साफ हंसी थी, जैसे छोटी पीतल की घंटियाँ बज रही हों, हर बार जब वह उसे हवा में उछालती और पकड़ती, या उसकी गोल-मटोल नन्ही उंगलियों से उसे गोल-गोल घुमाती, तो खुशी से भर जाती थी। उसे अपनी खिलखिलाती हंसी शाची की हंसी में घुलती सुनाई देती थी, उसकी दुनिया रोशनी और रंगों का एक बवंडर थी जिसके केंद्र में शाची थी। वह तब भी हंसती थी जब वह अमरावती के बगीचों में तितलियों का पीछा करता था, और वह तब भी हंसती थी जब वह उससे बच्चों की भाषा में बात करता था जिसे उन दोनों के अलावा कोई नहीं समझता था। जयंता ने शाची की हंसी में धीरे-धीरे आई कमी और फीकापन कभी नहीं देखा था - और फिर एक दिन वह गायब हो गई, हमेशा के लिए एक ऐसी खामोशी में समा गई जो दर्द से कहीं गहरी थी।
उस भूली हुई हंसी की याद आते ही जयंता की आंखों में फिर से आंसू आ गए और उसका सीना दुख से भर गया। कहीं न कहीं, उसके भीतर की एक छोटी सी आवाज उसे बार-बार याद दिला रही थी कि अही को काबू में रखना होगा, उसे हलाहल को वापस लाने पर ध्यान केंद्रित रखना होगा...
उर्वशी भी अपनी मनमोहक हंसी के लिए जानी जाती थी।
उसे अपने पिता के दरबार में पुलमन के समय की अप्सरा याद थी, लेकिन पुलमन की मृत्यु और शची के अपने एकांत में निर्वासन के बाद ही वह महल में इधर-उधर भटकते हुए उसे अक्सर देखने लगा था। लंबे समय तक वह उससे कोई वास्ता नहीं रखना चाहता था, और उर्वशी भी उससे दूर ही रही थी। लेकिन महल के स्नानघर के पास जब उनकी मुलाकात हुई, उस सुबह सब कुछ बदल गया।

राजकुमार स्नानघर के चारों ओर बने सुंदर बगीचे में टहल रहे थे, तभी उनकी नज़र उर्वशी पर पड़ी जो धीरे-धीरे बहते पानी की नहर के ऊपर लटकी एक डाल से ऑर्किड तोड़ रही थीं। अप्सरा एक लकड़ी के पुल पर खड़ी थीं और दूर रखे फूलों के गुच्छे को तोड़ने के लिए झुकते समय उनका संतुलन बिगड़ गया। उन्होंने तुरंत पुल की रेलिंग पकड़ ली और गिरने से बच गईं, लेकिन फूलों की टोकरी उनके हाथ से फिसल गई। टोकरी रेलिंग से टकराई और पानी की ओर लुढ़क गई। जयंता ने सहज ही टोकरी पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाया और उसे थाम लिया – लेकिन उसका यह प्रयास समय पर नहीं हुआ, जिसके कारण वह लड़खड़ाकर नदी में जा गिरा। खांसते-हंसते वह पानी से बाहर आया तो उसे उर्वशी की हंसी सुनाई दी। यह उसकी दयनीय स्थिति पर निर्मम और उपहास भरी हंसी नहीं थी, बल्कि आनंद, सहानुभूति और मासूमियत से भरी हंसी थी। जब वह पानी से बाहर निकला और फूलों से आधी भरी टोकरी उर्वशी को सौंपी, तो अप्सरा ने उसमें से बैंगनी ऑर्किड की एक टहनी निकालकर उसे बड़ी प्यारी मुस्कान के साथ दे दी।
यही वह क्षण था जब उर्वशी की सुंदरता ने जयंत को पहली बार मोहित कर लिया था। जब उन गहरी और मोहक आँखों में उसने अप्सरा के भीतर छिपे प्रेम और जुनून को देखा था। उस दिन स्नानघर के पास पुल पर, उसके हृदय में उर्वशी के लिए वासना जागृत हुई थी।
वह अप्सरा से सबसे अधिक प्रेम करता था और उसे प्रसन्न करने के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार था। फिर भी, वह उसके साथ खिलवाड़ करती रही। वह दरबार के हर देवता के साथ इश्कबाजी करती थी, और नारद के सामने नखरे दिखाती और मुंह फुलाती थी, उसके बेतुके चुटकुलों पर हंसती थी - उसकी वह मासूम, युवा हंसी जो उसे केवल नारद के लिए ही रखनी चाहिए थी, लेकिन वह बेधड़क सबके साथ बांटती थी।
उर्वशी और शची, वो दो औरतें जिनसे उसे सबसे ज़्यादा लगाव था। एक ने उसे प्यार से मोहित कर लिया था, दूसरी ने उस पर स्नेह बरसाया था। फिर भी, समय बीतने के साथ-साथ दोनों उससे दूर होती चली गईं। दोनों ने अपने-अपने तरीके से उसे निराश और उनके प्यार के लिए तड़पता हुआ छोड़ दिया था।
ओस से भीगी हुई ऑर्किड और बासी चंदन की सुगंध एक बार फिर राजकुमार पर छा गई, और उसे असहनीय दुःख में डुबो दिया। उसे नहीं पता था कि उसे इतना गहरा

दुःख क्यों हो रहा है, लेकिन उसने इसकी कोमलता के आगे आत्मसमर्पण कर दिया, और जैसे-जैसे यादें उसे घेरती गईं, वह इसकी गहराई में डूबता चला गया। जयंता को शायद ही पता चला कि कब तेज दर्द की पहली लहर उसके शरीर में दौड़ गई।

* * *

जब क्षपनाका छत पर बैठकर राक्षस पर धनुष तान रही थी, तभी कुछ मिनट पहले शंकु द्वारा कहे गए शब्द उसके दिमाग में कौंध गए।
“तुममें कुछ खास है, कुछ दुर्लभ और अनोखा जो तुम्हें सर्प के विष से बचाता है। इसी ने तुम्हें महल पर आक्रमण करने वाले राक्षस के कवच को नष्ट करने में भी मदद की। ज्योतिषी कहती हैं कि ये सब वरदान हैं, ये हमारे लिए सौभाग्य की बात है। लेकिन वह कहती हैं कि हमें इन वरदानों का उपयोग करना सीखना होगा – अन्यथा ये व्यर्थ हैं और इनके बिना हमारा भला होगा। अपने वरदान पर विश्वास रखो, क्षपणक। विश्वास रखो कि तुम सर्प को हानि पहुँचा सकते हो।”
लोहारों के क्वार्टर में तबाही देखकर उसके मन में उमड़े सारे गुस्से को इकट्ठा करते हुए, क्षपनाका ने अपनी उंगलियों के बीच से तीर छोड़ दिया। उसने तीर को धूसर आकाश में उड़ते हुए देखा और वह राक्षस के सिर में जा लगा। उसने तीर के लगने से बने पानी के छींटे देखे, वही गंदा भूरा छींटा जो हर बार जब उसने उस जानवर पर तीर चलाया था तब दिखाई देता था। लेकिन इस बार उसने कुछ और भी देखा।
एक घनी, गहरे काले रंग की धारा, सर्प की त्वचा पर लहरों की तरह फैल गई, जिससे सर्प दर्द से कराह उठा। क्षपणक ने अपने धनुष में एक और बाण चढ़ाया। डोरी खींचते हुए, उसे महल के रक्षकों के मृत प्रमुख सद्गुण की छवि याद आई, जो सीढ़ियों के नीचे सिरविहीन पड़ा था। उस बूढ़े ने राक्षस से महल के घर की रक्षा करते हुए अपना प्राण त्याग दिए थे; राजगद्दी के प्रति उसकी वफादारी के लिए मृत्यु एक अन्यायपूर्ण दंड था। यह सोचकर वह क्रोधित हो उठी और उसने सर्प पर बाण चला दिया।
वह प्राणी लगभग लड़खड़ाकर पीछे हट गया, और जैसे ही वह उठा, क्षपणक ने देखा कि वह कुछ जगहों से कमजोर हो रहा था और उसका सार कम हो रहा था। हालाँकि,

उसकी दुर्भावना ज़रा भी कम नहीं हुई थी, और जैसे ही उसने परामर्शदाता को देखा, उसने अपना मुँह चौड़ा खोलकर विष उगला।
“क्या हो रहा है? कोई कामयाबी मिली?”
क्षपनाका ने नीचे सड़क पर एक नज़र डाली, जहाँ अमर सिंह और शंकु सुरक्षा के लिए एक दीवार के पीछे दुबके हुए थे। अमर सिंह अपने मानव रूप में लौट आए थे और अपनी घनी लाल भौहों के नीचे से उसे घूर रहे थे।
क्षपनाका के उत्तर देने से पहले ही, विष का एक जोरदार प्रहार उन पर हुआ। स्वयं को तैयार करने के बावजूद, उनका संतुलन बिगड़ गया और उन्हें खुद को संभालने के लिए छत की टाइलों को पकड़ना पड़ा। विष, जिसकी गंध नींबू के रस और सड़े हुए पानी जैसी थी, ने उन्हें पूरी तरह से भिगो दिया, लेकिन उन्हें कोई अन्य क्षति नहीं हुई। परामर्शदाता ने तुरंत एक तीर धनुष पर चढ़ाया और उसे झुकाया। हालांकि, इससे पहले कि वह तीर चला पातीं, राक्षस फट गया और मूसलाधार बारिश में बिखर गया।
मन ही मन बड़बड़ाते हुए क्षपनाका ने बाण को तरकश में वापस रख दिया। धनुष को कंधे पर टांगकर वह तेज़ी से छत से नीचे उतरी और सड़क पर आ गई। "यह फिर से गायब हो गया," उसने हताश स्वर में कहा और एक हाथ से अपने माथे से बारिश का पानी पोंछा।
“पता नहीं यह अगली बार कहाँ दिखाई देगा,” अमारा सिम्हा ने झुंझलाहट में गुर्राते हुए कहा। “मुझे तो यह भी संदेह है कि हम जो कर रहे हैं उससे कोई फायदा हो भी रहा है या नहीं।”
क्षपणक ने कहा, “इससे फायदा हो रहा है। शंकु सही था। मैं राक्षस को पीड़ा पहुँचाने और उसे कमजोर करने में सफल रहा हूँ।”
“तुम्हारे पास है?” शंकु का चेहरा उत्साह से चमक उठा।
"मैंने उसे दर्द से तड़पते हुए देखा," क्षपनाका ने सिर हिलाते हुए कहा और नगर रक्षक दल द्वारा दिए गए घोड़े पर सवार हो गई।
"इससे इसका जहर उगलना बंद नहीं हुआ है," अमारा सिम्हा ने अपनी काठी पर बैठते हुए कहा।

“ज़हर कमज़ोर पड़ गया है।” क्षपनाका ने उस जगह की ओर इशारा किया जहाँ वह बैठी हुई थी। “ज़हर छत पर लगा, लेकिन उससे बस कुछ दरारें ही आईं।”
तीनों पार्षदों ने अपने घोड़ों को सड़क पर दौड़ाया और उस जानवर के संकेतों के लिए आसमान पर नजरें गड़ाए रखीं।
“अगर मैं सही समझा हूँ, तो तुम जा सकते हो। जहाँ चाहो वहाँ जाओ, जहाँ चाहो वहाँ रहो। यही तुम्हारी प्रतिभा है…” अमरा सिंह ने शंकु की ओर देखा, जिसने सिर हिलाया। “क्या तुम जाकर पता नहीं लगा सकते कि यह प्राणी कहाँ हो सकता है?”
“मैंने अभी तक इस कला में पूरी महारत हासिल नहीं की है। अगर कर भी ली होती, तो वह प्राणी कहीं भी हो सकता था। मैं केवल वहीं जा सकता हूँ जहाँ मुझे पता है कि वह प्राणी है, न कि जहाँ वह आगे होगा।” शंकु ने क्षपनाका को डिंपल वाली मुस्कान दी, उसकी आँखों में शरारत की चमक थी। “भविष्यवाणी मेरी दादी की है, मेरी नहीं।”
सड़क के आधे रास्ते में, नगर सुरक्षा बल के एक घुड़सवार सैनिक ने पार्षदों को सूचित किया कि महल के पास पूर्व दिशा में एक सर्प देखा गया था, लेकिन वह तुरंत बादलों में गायब हो गया। पार्षद महल की ओर मुड़े, लेकिन जल्द ही उन्होंने अपने बाईं ओर, शहर के उत्तरी द्वार के पास आकाश में उस राक्षस को देखा। जब तक वे उत्तरी क्षेत्र में पहुँचे, नगर सुरक्षा बल के सैनिकों ने उन्हें बताया कि वह जानवर एक बार फिर नज़रों से ओझल हो गया था।
“क्या यह हमारे साथ खेल खेल रहा है?” अमरा सिंह गुर्राया। “या तो यह, या फिर यह हमसे भाग रहा है,” क्षपनाका ने कंधे उचकाते हुए कहा। “महाराज, लगता है इसकी शक्ति कम हो गई है,” एक सैनिक ने कहा। सार्वजनिक स्नानघर के पास बनी इमारतों की एक पंक्ति की ओर इशारा करते हुए उसने कहा, “इसने वहाँ दुकानों की कतार पर जहर उगला, लेकिन सभी घर और दुकानें सुरक्षित हैं।”
क्षपनाका ने अमर सिंह को न्यायोचित दृष्टि से देखा। बलवान सलाहकार ने सिर हिलाकर कहा, "चलो उस दुष्ट प्राणी को ढूंढकर उसका अंत कर देते हैं।"
लगभग आधे घंटे तक पीछा करने और बचने के बाद, पार्षदों और सैनिकों ने अंततः मिट्टी के बर्तनों की बिक्री करने वाले एक बाज़ार में उस राक्षस को घेर लिया। सर्प बाज़ार के ऊपर अनिश्चित रूप से मंडरा रहा था, बारिश में भीगते

हुए अपने हमलावरों पर गुस्से से फुफकार रहा था। सैनिक अभी भी उस प्राणी से सावधान थे और पीछे हट गए, लेकिन तीनों पार्षद उसके पास पहुँचे, क्षपनाका धनुष को कसकर पकड़े हुए आगे-आगे चल रही थी।
विष से आक्रमणकारियों पर हमला करने के लिए राक्षस के जबड़े खुल गए, और क्षपणक ने तुरंत उस काले, दुर्गंधयुक्त गुहा में तीन तीर चलाए। हर तीर के साथ, सर्प हवा में डगमगाता गया, किनारों से धीरे-धीरे फटने लगा और उसके पंखों वाली पीठ से पानी अनियमित, अनियंत्रित धाराओं में बहने लगा। एक अंतिम झटके के साथ, उसने विष की एक पतली धारा निकाली, लेकिन वह धारा पार्षदों तक पहुँचने से पहले ही वाष्पित हो गई।
जैसे ही क्षपणका ने चौथा बाण निशाने पर लगाया, उसे लगा जैसे सर्प के मुख से दुख भरी सिसकी निकली हो। उसी क्षण, उस जानवर की आँखों का रंग अंबर से बदलकर हल्का सुनहरा हो गया, और वह मानो बंधनों से मुक्त होकर आकाश की ओर उठा। फिर, कोहरे की तरह तेज़ी से गायब होते हुए, वह बरसती बारिश में लुप्त हो गया।

* * *

कच्चे रास्ते के दोनों ओर पेड़ों की शाखाएँ सवारों के सिर के ऊपर इस तरह उलझी हुई थीं कि एक छत्र बन गया था जो बाज़ को विक्रमादित्य की दृष्टि से छिपाए हुए था। सम्राट कभी-कभी शाखाओं के बीच की खाली जगह में पक्षी की झलक देखते थे, जो धूसर आकाश में उड़ता हुआ जंगल की ज़मीन पर दौड़ रहे छोटे समूह का पीछा कर रहा था।
राजा ने अपनी गर्दन घुमाई और तिरछी नज़र से ऊपर देखा कि क्या वह गांठदार शाखाओं के बीच से तीर चला सकता है, लेकिन उसे संदेह था। वे उबड़-खाबड़ और खुरदरी ज़मीन पर तेज़ी से आगे बढ़ रहे थे, और बाज़ तो उससे भी तेज़ गति से, सिर के ऊपर एक पतली सी लकीर की तरह उड़ रहा था। इसके अलावा, वह जानता था कि निशानेबाज़ी में वह क्षपनाका की तरह कुशल नहीं था - वह तो पक्षी को आसानी से मार गिरा सकती थी।
ऐसा नहीं था कि विक्रमादित्य को यह भ्रम था कि पक्षी को तीर मारने से समस्या का कोई स्थायी समाधान हो जाएगा। वह जीव - चाहे जो भी हो - असाधारण रूप से लचीला था और तीन बार तलवार से घायल होने के बाद भी जीवित हो चुका

था। यह मानने का कोई कारण नहीं था कि जहाँ तलवार नाकाम रही, वहाँ तीर काम करेगा। इस विचार से सम्राट चिंतित होकर अपने घोड़े को विशाखा के घोड़े के करीब ले गए।
उस चीज़ को विशाखा से क्या चाहिए था? उसने किसी का कोई नुकसान नहीं किया था, तो उस पर हमला करके किसी को क्या फायदा होता? उसे इस बात की भी चिंता थी कि उस चीज़ ने उनके साथ आए तीनों गार्डों को कितनी बेरहमी से मार डाला था। उसका निर्मम इरादा साफ था – वह विशाखा तक पहुँचने के रास्ते में आने वाली हर बाधा को हटा देगा। वह किसी भी रूप में आ सकता था...
सम्राट ने घबराकर ऊपर की ओर एक नज़र डाली। बाज़ का कोई निशान नहीं था। उसने अपना सिर दोनों ओर घुमाया, डालियों के बीच से झाँकने की कोशिश की, पक्षी को ढूँढ़ने की पूरी कोशिश की, लेकिन वह गायब हो चुका था।
“अपने आस-पास ध्यान रखो,” उसने पहरेदारों पर चिल्लाते हुए कहा। “अपनी आँखें खुली रखो।”
विशाखा ने भयभीत और असमंजस में विक्रमादित्य की ओर देखा। सम्राट ने उसे आश्वस्त करने की उम्मीद में सिर हिलाया, हालांकि वह स्वयं भी चिंतित थे। फिर वे जंगल का अवलोकन करने लगे और बीच-बीच में बाज़ को देखने के लिए ऊपर की ओर देखते रहे।
पगडंडी बाईं ओर मुड़कर एक छोटे से टीले पर चढ़ गई। टीले को पार करते ही वे जंगल से बाहर निकलकर खुले मैदान में पहुँच जाएँगे, उज्जैन जाने वाली सड़क पर। सम्राट आशा कर रहा था कि वे जितनी जल्दी हो सके सड़क तक पहुँच जाएँ - क्योंकि आसपास कोई आड़ न होने पर उस जीव के लिए हमला करना कठिन होगा। विक्रमादित्य ने अपनी दृष्टि के कोने से झाड़ियों के बीच से एक काले बिंदु को चाप बनाते हुए निकलते देखा। राजा को यह समझने में एक पल लगा कि यह एक बड़ा भौंरा था, जो भिनभिनाता हुआ रास्ते पर सवारों की ओर तेज़ी से बढ़ रहा था। एक पल भी सोचे बिना, विक्रमादित्य ने धनुष उठाया और भौंरे पर निशाना साधा। हो सकता है कि उनका निशाना गलत हो, लेकिन वे कोई जोखिम नहीं लेना चाहते थे। तीर को पूरी तरह खींचकर, उन्होंने भौंरे के अचानक मुड़ने पर ध्यान से नज़र रखी और उसके करीब आने का इंतज़ार किया। जैसे ही वह कीड़ा सीधा हुआ और नीचे गोता लगाते हुए समूह की ओर बढ़ा, सम्राट ने तीर चला दिया।

तीर सीधे मधुमक्खी को लगा, उसके नुकीले सिरे ने उसे इतनी ज़ोर से कुचला कि वह छोटे-छोटे टुकड़ों में बिखर गई, शरीर के अंग चारों दिशाओं में उड़ गए। एक पल के लिए विक्रमादित्य को लगा कि उसने एक निर्दोष मधुमक्खी को मार डाला है, लेकिन इससे पहले कि उसे पछतावा होता, कीट के टुकड़े चुंबक की तरह लोहे के बुरादे की तरह आपस में जुड़ गए। मधुमक्खी चटकती हुई एक छोटी, धधकती हुई रोशनी की गेंद में बदल गई और शाखाओं के जाल से होते हुए आकाश में उड़ गई।
“तेज़ चलो, पुरुषों। जल्दी करो,” सम्राट ने विशाखा की घोड़ी की लगाम पकड़कर उसे और तेज़ गति से दौड़ने के लिए प्रेरित करते हुए कहा।
घोड़ों के खुरों की गड़गड़ाहट के बीच समूह तटबंध के ऊपर से गुजरा और पेड़ों से निकलकर उज्जैनी जाने वाली सड़क पर आ गया, ठीक उसी समय बारिश की एक और बौछार शुरू हो गई। एक पल भी रुके बिना, वे सड़क पर दौड़ पड़े और पेड़ों की कतार से काफी दूरी बना ली।
“सावधान रहो और उस चीज़ पर नज़र रखो,” विक्रमादित्य की आवाज़ अब कर्कश हो गई थी। “हमें बस कुएँ तक पहुँचना है।”
वे अभी सौ कदम ही चले थे कि आगे चल रहे पहरेदारों ने अपनी गति धीमी कर दी, जिससे पीछे आ रहे लोगों को भी धीमा होना पड़ा। "क्या बात है?" सम्राट ने गुस्से से पूछा जब सुरक्षा दल अचानक रुक गया। भीड़ को चीरते हुए उसने आदेश दिया, "चलते रहो, साथियों। खतरा अभी टला नहीं है।"
"महामहिम," अग्रिम पंक्ति के सैनिकों में से एक ने इशारा करते हुए राजा का ध्यान आगे सड़क की ओर आकर्षित किया, जहाँ दो घुड़सवार आ रहे थे।
बारिश के कारण दृश्यता कम हो गई थी, और विक्रमादित्य ने सहज ही अपने घोड़े को विशाखा के आगे बढ़ा दिया, उन्हें बचाते हुए उन्होंने एक नया बाण तैयार किया और धनुष उठाया। रक्षकों ने भी उनका अनुसरण किया, रक्षात्मक मुद्रा अपनाई और अपनी रानी के चारों ओर एक मजबूत घेरा बना लिया। जैसे ही दोनों घुड़सवार पास आए, सम्राट की भौंहें तन गईं जब उन्होंने उनमें से एक की आंखों पर बंधी पट्टी देखी।
“आप यहाँ क्या कर रहे हैं?” विक्रमादित्य ने पूछा जब शुक्राचार्य और उनके मार्गदर्शक राजा के दल के सामने आकर रुके। उज्जैन की घंटियाँ अब स्पष्ट

रूप से सुनाई दे रही थीं, और राजा ने उत्तर क्षितिज पर धुंधले से दिखाई दे रहे शहर की ओर चिंता भरी नज़रों से देखा। “घंटियाँ क्यों बज रही हैं? क्या बात है?”
“मैं रानी की रक्षा के लिए यहाँ आया हूँ,” असुर प्रधान पुरोहित ने घोड़े से उतरते हुए पहले प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा। एक घुटने पर बैठकर उसने गीली, मथनी हुई मिट्टी के दो बड़े ढेर उठाए और उन्हें अपनी हथेलियों पर मल लिया। सम्राट की ओर देखते हुए, जो उसे हैरानी से घूर रहा था, उसने कहा, “मुझे लगता है कि आप पर हमला हुआ था। क्या हुआ था?”
“आपको कैसे पता चला…” खतरे की गंभीरता को समझते हुए विक्रमादित्य के चेहरे पर हैरानी की जगह गंभीर भाव आ गए। “हमें नहीं पता कि यह क्या है, लेकिन यह कई रूप धारण करता है। तीर, सांप, भाला… मधुमक्खी। आखिरी रूप में यह प्रकाश के गोले में बदल गया। और इसे मारना नामुमकिन लगता है।” “आदरणीय वैद्य, इसने पहले ही तीन लोगों की जान ले ली है,” कप्तान ने बीच में कहा। शुक्राचार्य ने सिर हिलाया और महल के पहरेदारों को बेचैन आँखों से पानी पोंछते और आसपास के मैदान की ओर सतर्कता से देखते हुए देखा। उन्होंने कहा, “ये लोग इसलिए मरे क्योंकि ये बाधा थे। इसे तो बस रानी चाहिए।”
“तो हमें उसे जल्दी से भूलभुलैया की सुरक्षा में ले जाना होगा,” सम्राट ने घबराते हुए कहा। “हम यहाँ बहुत कम हैं…”
“इससे विशाखा कुछ समय तक सुरक्षित रहेगी,” शुक्राचार्य ने विशाखा की ओर बढ़ते हुए कहा। पहरेदार रास्ता छोड़कर हट गए और प्रधान पुरोहित घोड़ी के पास गए। “अगर मेरे पास चंदन का लेप और शहद होता तो अच्छा होता, लेकिन अभी इसी से काम चलाना पड़ेगा। अपना चेहरा मेरे पास लाओ, बच्ची।”
शुक्राचार्य जब अपनी हथेलियों में मंत्रों का जाप कर रहे थे, तब विशाखा ने अपना सिर झुका लिया। मंत्रों का जाप जारी रखते हुए, उन्होंने रानी के गालों, माथे और बालों पर कीचड़ मल दिया, जब तक कि उनका चेहरा पूरी तरह से कीचड़ से ढक नहीं गया और कीचड़ की धाराएँ उनकी ठुड्डी और गर्दन से नीचे बहने लगीं।

“इससे मदद मिलनी चाहिए,” प्रधान पुजारी ने अपने प्रयासों का जायजा लेने के लिए पीछे हटते हुए कहा। संतुष्टि से सिर हिलाते हुए, वह अपने घोड़े की ओर मुड़ गया। “हम जा सकते हैं।”
“पुरुषों का क्या हुआ?” विक्रमादित्य ने पूछा। “उन पर भी हमले हो रहे हैं।”
“वे नौ हैं। उन सभी पर जादू करने में बहुत अधिक समय लगेगा, और रानी पर जादू का असर कम होने लगेगा। इससे क्या फायदा होगा?”
“वे अपनी जान जोखिम में डालकर रानी की रक्षा कर रहे हैं,” सम्राट ने दृढ़ता से जबड़े कसते हुए मुख्य पुरोहित की ओर देखा। “वे आपकी हर संभव मदद के पात्र हैं। यदि देरी चिंता का विषय है, तो मैं रानी के साथ आगे बढ़ जाता हूँ।”
अपने घोड़े की काठी पर एक हाथ रखे शुक्राचार्य ने राजा का क्षण भर अवलोकन किया। “इसकी आवश्यकता नहीं होगी। मैं अपनी ओर से हर संभव प्रयास करूंगा, लेकिन हमें जल्दी करनी होगी।”
मिट्टी से हाथ भरकर, प्रधान पुरोहित ने महल के रक्षकों को मंत्रों से अभिषेक करने की प्रक्रिया शुरू की। राजा और सैनिक खतरे पर नज़र रखे हुए थे, लेकिन किसी ने भी - यहाँ तक कि स्वयं विशाखा ने भी - उसके कंधों और पीठ पर गिरी दस फीकी बारिश की बूंदों पर ध्यान नहीं दिया। गुरुत्वाकर्षण को चुनौती देते हुए, दस धूसर बूंदें बेतरतीब ढंग से उसकी पीठ पर रेंगती और दौड़ती रहीं, इधर-उधर भटकती रहीं, मानो उस तक पहुँचने का रास्ता खोज रही हों। लेकिन शुक्राचार्य का मंत्र कारगर साबित हुआ। अपनी गति खोकर, बूंदें एक साथ नीचे की ओर, उसकी कमर से होते हुए, उसके कूल्हे से गुजरते हुए काठी पर गिरीं - जहाँ, एक-एक करके, वे काले बिच्छुओं में परिवर्तित हो गईं।
न तो पहरेदारों ने और न ही विक्रमादित्य ने उन जीवों को देखा जो घोड़े की काठी में घुस गए या सफेद घोड़ी के पेट में रेंगने लगे, उनके डंक नुकीले और हमले के लिए तैयार थे। जब घोड़ी डर से हिनहिनाई और पैर पटका, तो विशाखा ने बस उसकी गर्दन सहलाई और उसके कान में कुछ दिलासा भरे शब्द कहे।
असुर पुरोहित ने नगर रक्षक दल के मार्गदर्शक पर अपना मंत्र अभी पूरा ही किया था कि विशाखा का घोड़ा उछल पड़ा और दर्द से कराहते हुए हिनहिनाया। उस

आवाज़ से चौंककर सबने मुड़कर देखा तो घोड़ी ने अपने पिछले पैर पटके और एक और तीखी हिनहिनाहट निकाली, जबकि विशाखा अपनी जान बचाने के लिए काठी को कसकर पकड़े हुए थी। फिर, इससे पहले कि कोई कुछ कर पाता, घोड़ा बेकाबू होकर घूमा और कीचड़ और पानी उछालते हुए सड़क पर दौड़ पड़ा।
“घोड़ा लाओ!” सम्राट चिल्लाया, विशाखा की भयभीत आँखों में देखते हुए, जो असहाय होकर उसकी ओर मुड़ी थी। राजा ने अपने घोड़े को दौड़ाया, और सभी पहरेदार एक साथ घोड़े के पीछे दौड़ पड़े। उनके पीछे, शुक्राचार्य दौड़ा और अपने घोड़े पर कूद पड़ा, उसे घुमाकर वह भी पीछा करने लगा।
घोड़ी हर कुछ सेकंड में उछलती और हिनहिनाती थी, और इस हरकत से विशाखा बुरी तरह से इधर-उधर गिरती थीं, लेकिन इससे घोड़ी की गति धीमी हो गई, जिससे पीछा करने वालों को रानी के करीब पहुंचने का मौका मिल गया। विक्रमादित्य और महल के रक्षक घोड़ी से मुश्किल से एक दर्जन कदम ही पीछे थे कि वह सड़क से हटकर ग्रामीण इलाके में जा घुसी।
सम्राट और उसके साथी मूसलाधार बारिश में भीगते हुए आगे बढ़े और पीछा करते हुए गीले घास के मैदान में पहुँच गए। ज़मीन छोटी-छोटी पहाड़ियों में बँधी हुई थी, घास की जगह झाड़ियाँ और खुरदरी मिट्टी आ गई थी, और घोड़े थकने लगे थे। फिर भी, विशाखा का घोड़ा बिच्छुओं के काटने से बेहाल होकर आगे बढ़ता रहा।
घोड़ी एक छोटी पहाड़ी की चोटी पर पहुंची और उसके ऊपर से ओझल हो गई - और जब विक्रमादित्य कुछ ही सेकंड बाद उस पहाड़ी की चोटी पर पहुंचे, तो उनकी आंखें भय से फटी रह गईं।
नीचे एक अप्रत्याशित रूप से गहरी खाई थी, जिसकी न तो विशाखा और न ही उसके घोड़े ने कल्पना की थी। घोड़ी का संतुलन बिगड़ गया और वह बुरी तरह गिर पड़ी, जिससे विशाखा भी काठी से नीचे गिर गई। राजा ने देखा कि उसका घोड़ा खाई के किनारे पर लड़खड़ाते हुए फिसल रहा है और विशाखा अपने साथ कीचड़ और पत्थरों का ढेर नीचे की ओर बहा ले जा रही हैं। घोड़ी किसी तरह फिसलने से बच गई और अपने लड़खड़ाते पैरों पर खड़ी हो गई, लेकिन विशाखा लुढ़कती-उछलती तब तक लुढ़कती रही जब तक कि वह खाई के किनारे बहने वाली एक छोटी सी सूखी नदी के पास आकर नहीं रुक गई।

“Vishakha!”

विक्रमदित्य के होंठों से रानी का नाम चीख के साथ निकला। अगले ही पल, सम्राट काँटेदार झाड़ियों की परवाह किए बिना गड्ढे की ढलान पर फिसलते हुए नीचे गिर पड़े, जिनसे उनके चेहरे और बाजुओं पर दर्दनाक खरोंचें पड़ रही थीं। वे लड़खड़ाते हुए ज़मीन पर गिरे, लेकिन खुद को संभालते हुए वे रानी के पास गए और घुटनों के बल बैठ गए। उन्होंने रानी को धीरे से पीठ के बल लिटाया और उनके मिट्टी से सने चेहरे पर झुक गए।
"विशाखा," उसने उत्सुकता से उसके गाल को थपथपाते हुए फुसफुसाया। "अपनी आँखें खोलो, विशाखा। विशाखा..."
रानी हिल उठीं। उनकी पलकें खुलीं और उन्होंने सम्राट की ओर देखा।
“भगवान का शुक्र है कि तुम ठीक हो,” विक्रमादित्य ने राहत की सांस लेते हुए कहा।
रानी की ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं आई।
“विशाखा?” राजा के मन में भय और निराशा का एक भयानक भाव छा गया। “विशाखा!” रानी ने कुछ नहीं कहा। वह दृढ़ता से उसे घूरती रही। उस निगाह की जानी- पहचानी सी खामोशी - खाली, निर्मल, दृष्टिहीन - चौंका देने वाली थी। वही निगाह जिसने दो साल तक विशाखा के तकियों से उसे अनदेखा किया था - उसका उपहास किया था। विक्रमादित्य को लगा जैसे उसकी दुनिया उसके नियंत्रण से बाहर हो रही है।
“विशाखा, नहीं… नहीं। मेरे साथ ऐसा मत करो।” विक्रमादित्य ने उसकी कलाई पकड़कर अपनी उंगलियों से उसकी नब्ज़ महसूस की, जो मज़बूत और नियमित थी। उसकी छाती सांसों के साथ लयबद्ध तरीके से ऊपर-नीचे हो रही थी। केवल उसकी आँखें ही स्थिर थीं, मानो कहीं दूर और उदासीन हों।
सम्राट ने हताशा में रानी का हाथ अपने सीने से लगा लिया। “फिर कभी मत जाओ, मेरी प्रियतमा। प्लीज़… प्लीज़ मत जाओ,” ये शब्द दर्द भरी सिसकियों के बीच निकले। लेकिन वह पहले ही जा चुकी थी, उस शून्य में विलीन हो गई थी जहाँ अब कुछ भी उस तक नहीं पहुँच सकता था।

विक्रमादित्य ने अपना सिर झुका लिया और अपनी आँखें कसकर बंद कर लीं, अपने भीतर उमड़ रही दुःख की लहर को रोकने की कोशिश कर रहा था, जो उसकी पसलियों से बाहर निकलने के लिए संघर्ष कर रही थी, और उसके ब्रह्मांड को निराशा के लाखों टुकड़ों में चीर देने की धमकी दे रही थी।

Aparupa

देवा… हमें यहाँ से चले जाना चाहिए, देवा।
जयंता हिले-डुले और अपने ऊपर छाए दुख के कोहरे से बाहर निकले। चेहरे से आंसू और नाक पोंछते हुए उन्होंने मंद रोशनी में पलकें झपकाईं। सारे दीपक बुझ चुके थे, उनके साथ सारी रौनक भी चली गई थी और अंदर नमी लौट आई थी, जो जहर की तरह उनके शरीर में समा रही थी। तांबे के कटोरे में पानी ठंडा और स्थिर था। उस छोटे से कमरे में जो कुछ हुआ था, उसका एकमात्र सबूत ताड़ के पत्तों का बिखरा हुआ ढेर और मंडल की धुंधली आकृति थी।
बड़ी मुश्किल से हिम्मत जुटाकर राजकुमार उठ खड़ा हुआ। उसका शरीर दर्द से व्याकुल था और गला फटा हुआ सा लग रहा था, मानो उसमें एक दर्जन कांटे चुभ गए हों। उसकी बाहों और कंधों पर लाल रंग के गहरे घाव थे, जो अंत में भद्दे बैंगनी रंग के निशानों में तब्दील हो गए थे, जिनसे उसकी त्वचा सिकुड़ गई थी। सबसे ज़्यादा दर्द उसके सिर में था; जयंता को यकीन था कि ज़रा से झटके से भी उसका सिर लुढ़क कर गिर जाएगा।
“मनुष्य निकट हैं, इंद्र पुत्र। कृपया… हमें अभी जाना होगा।” किन्नर की आवाज में घबराहट थी, साथ ही वह बेचैनी से अपने खुर पटक रही थी।

राजकुमार ने ताड़ के पत्तों को बेतरतीब ढंग से अपने थैले में ठूंस दिया और लड़खड़ाते हुए झोपड़ी से बाहर निकला। वह अपने हाथों और घुटनों के बल गिर पड़ा और कुछ देर तक गीली मिट्टी को घूरता रहा।
“देव, मनुष्य तलवार और भाले लिए घूमते हैं,” किन्नर ने फुफकारते हुए कहा। “अगर वे हमें ढूंढ लेंगे तो हमें मार डालेंगे।”
जयंता सिहर उठा और उस सेंटॉर को घूरने लगा, जो उछल-कूद कर अपनी बेड़ियों को छुड़ाने की कोशिश कर रहा था। फिर उसने सिर झुकाकर ध्यान से सुना। पास ही से कुछ आवाज़ों की हल्की फुसफुसाहट सुनाई दी। कोई आदेश दे रहा था। टहनियाँ चटकने लगीं और झाड़ियाँ पैरों के नीचे सरसराने लगीं।
राजकुमार जितनी जल्दी हो सके लंगड़ाते हुए किन्नर के पास पहुँचा और उसकी रस्सियों को काटने लगा। जब तक किन्नर मुक्त हुआ, तब तक आवाज़ें झोपड़ी के खतरनाक रूप से करीब पहुँच चुकी थीं। जयंता ने अपना चाकू वापस अपने थैले में रखा और बड़ी मुश्किल से दर्द से कराहते हुए किन्नर की पीठ पर चढ़ गया, और अपने घुटनों से उसे कसकर पकड़ लिया। किन्नर को किसी उकसावे की ज़रूरत नहीं थी – वह तेज़ी से मुड़ा और उस दिशा के विपरीत दिशा में भाग गया जहाँ से वे लोग आ रहे थे। जैसे ही वह वृक्षों की कतार से आगे बढ़ा, जयंता ने पीछे मुड़कर उज्जैनी की ओर देखा, जो धुंधले आकाश के नीचे शांत पड़ी थी, मानो मैदान पर एक गहरा घाव हो।
अही का कोई अता-पता नहीं था। उसके वश से मुक्त होकर वह दानव गायब हो गया था।
जब वह भाग रहा था, तब भी शहर खड़ा था। शहर जीत गया था और वह हार गया था। एक बार फिर। अमरावती में उसकी कोई विजययात्रा नहीं होगी, न ही उसके सम्मान में कोई दावत होगी। इसके बजाय, उपहास और हंसी होगी।
उसके सीने में दर्द उमड़ रहा था, मानो सारे दर्द दब गए हों। लेकिन जयंता को इसकी परवाह नहीं थी, क्योंकि शची और उर्वशी की यादें फिर से उसके मन में उमड़ पड़ी थीं। वह किन्नर की पीठ पर गिर पड़ा, उसे बाहों में भर लिया और गर्म आँसुओं की धारा बहने दी।

* * *

किसी को पता भी नहीं चला और सुबह दोपहर में बदल गई। वैसे भी, रोशनी के बदलते रंग से किसी को फर्क पता नहीं चल रहा था। वही धुंधले भूरे बादल एक के ऊपर एक जमे रहे, वही रुक-रुक कर बारिश की बौछारें, वही उदास अर्ध-अंधेरा; सब कुछ दिन के दूसरे हिस्से में भी जारी रहा।
वैसे तो उज्जैन में किसी को इस बात की परवाह भी नहीं थी कि दिन का कौन सा समय है। लोगों का ध्यान कहीं अधिक महत्वपूर्ण मामलों पर था।
कुल मिलाकर, उस भयानक तूफान ने छह इलाकों को मलबे में तब्दील कर दिया था, और इनमें से चार इलाकों में भारी तबाही और जानमाल का नुकसान हुआ था। पूरे मोहल्ले पार्षदों और नगर सुरक्षाकर्मियों की मदद के लिए सड़कों पर उतर आए थे, और उज्जैन के अस्पताल मलबे के नीचे दबे मृतकों और घायलों से भरे पड़े थे। सांप के जहर से मारे गए लोगों का कोई नामोनिशान नहीं बचा था। पीड़ितों के जो थोड़े-बहुत अवशेष बचे थे, वे बारिश के पानी में घुल गए थे और शहर की नालियों में बह गए थे। दुख ने धीरे-धीरे उज्जैन को अपनी गिरफ्त में ले लिया था, और शहर की शायद ही कोई ऐसी गली बची हो जहाँ औरतें दुख से सीना पीटती हुई या पुरुष घुटनों के बल बैठकर निराशा में सिर पकड़े हुए न दिखाई दें।
महल के अंदर का वातावरण बेहद हलचल भरा और तनावपूर्ण था। विशाखा को कुएँ से नीचे जाने वाले गुप्त मार्ग से भूलभुलैया में लाया गया था – यह एक खतरनाक मार्ग था जिसे विक्रमादित्य और महल के रक्षकों ने बड़ी सावधानी और तत्परता से पार किया था। उनके पहुँचने तक सर्प-राक्षस का खतरा टल चुका था, और विशाखा को उनके शयनकक्ष में ले जाया गया ताकि दरबारी चिकित्सक उनकी देखभाल कर सकें।
चिकित्सक आपस में परामर्श कर रहे थे और कुंजला के आने का इंतज़ार करते हुए कई तरह के उपचारों की व्यवस्था कर रहे थे, जो शहर के घायलों की देखभाल करने बाहर गए हुए थे। महल के कर्मचारी निर्धारित लेप, मलहम और काषायम के लिए सामग्री लाने के लिए इधर-उधर भाग रहे थे। दरबारियों, कनिष्ठ महल अधिकारियों और नौकरों की एक अच्छी-खासी भीड़ रानी के कक्ष के बाहर गैलरी और सीढ़ियों पर जमा थी, और इसी भीड़ के बीच से कुंजला - महल के एक वरिष्ठ चिकित्सक, जो कौशल और अनुभव में धनवंतरी के बाद दूसरे स्थान पर थे - को अंततः विशाखा के पास ले जाया गया।

सम्राट, आचार्य और रानी उपश्रुति को कठोर प्रणाम करते हुए कुंजला पलंग तक गया। विशाखा की नाड़ी जाँचने, उसकी खाली, खुली आँखों में देखने और स्थिति का जायज़ा लेने के बाद उसने अपने सहायकों से पूछा, “रानी को अब तक क्या- क्या दिया गया है?” कनिष्ठ चिकित्सकों द्वारा रानी के उपचार के लिए उठाए गए उपायों की सूची उसने धैर्यपूर्वक सुनी। अंत में, एक गहरी साँस लेते हुए, वह सम्राट की ओर मुड़ा। लेकिन इससे पहले कि वह कुछ कह पाता, क्षपनाका पसीने, गंदगी और घबराहट से लथपथ चेहरे के साथ द्वार पर भीड़ को धकेलते हुए कक्ष में प्रवेश कर गई।
“क्या वो ठीक है?” क्षपणका ने अचानक पूछा, उसका सिर बेतहाशा एक चेहरे से दूसरे चेहरे की ओर घूम रहा था। उसकी नज़रें आखिरकार विशाखा पर टिकीं और वह दबे पांव कमरे में गई और पलंग के पास खड़ी होकर अपनी बहन की खाली निगाहों में देखती रही। कमरा मानो थम सा गया था, आठों दीये कमरे में रोशनी से ज़्यादा परछाइयाँ बिखेर रहे थे, मानो मकड़ी के जाले महल के घराने के जीवन से फिर से चिपक रहे हों।
क्षपणका ने विशाखा से अपनी निगाहें हटाईं और विक्रमादित्य की ओर देखा। “उन्होंने कहा कि वह फिर से गिर गई…”
गहरी सांस लेते हुए राजा ने हल्के से सिर हिलाया। फिर वह कुंजला की ओर मुड़ा। "तुम इस बारे में क्या सोचते हो?" उसने ऐसे स्वर में पूछा मानो उसे पहले से ही जवाब पता हो।
“ऐसा होगा…” वरिष्ठ चिकित्सक ने रुककर सोच-समझकर अपने शब्द चुने। “उसकी चोटें न तो गंभीर हैं और न ही बहुत गहरी। मुझे लगता है उसे आराम की जरूरत है। आज सुबह उसके साथ जो कुछ भी हुआ है, वह बहुत तनावपूर्ण रहा है…”
"क्या आपको लगता है कि आप उसका इलाज कर सकते हैं?" वेताला भट्टा ने सीधे- सीधे पूछा। "क्या वह ठीक हो जाएगी?"
“मैं उसका इलाज कर सकता हूँ,” कुंजला ने सावधानी से जवाब दिया, अपने झुर्रीदार, कंकाल जैसे हाथों को देखते हुए। “मैं वही उपाय अपनाऊँगा जो पार्षद धनवंतरी ने पहले अपनाए थे। उनके वापस आने के बाद, वे…”

“धनवंतरी अभी कुछ समय तक नहीं लौटेंगे,” क्षपनाका ने हैरानी से कहा। वह सम्राट की ओर मुड़ी। “हमें वैद्य की ज़रूरत है, जो उनका निरीक्षण करें। वे कहाँ हैं?”
“जी पुत्र,” रानी उपश्रुति ने भी राजा पर अपनी निगाहें टिका दीं। “वैद्य ने उनका इलाज कर दिया है, उन्हें ठीक कर दिया है। वही आए और उन्हें उस बीमारी से बचाया जो उन पर हमला कर रही थी। उन्हें पता होगा कि क्या करना है। उन्हें संदेश भेज दो।”
किसी ने भी उस उदासी पर ध्यान नहीं दिया जो राजगुरु के चेहरे पर वैद्य का नाम सुनते ही छा गई थी, या उस तरीके पर भी नहीं जब आचार्य ने विक्रमादित्य का आकलन करते हुए अपनी आँखें सिकोड़ ली थीं।
सम्राट ने महारानी माँ के शब्दों पर विचार करने के लिए कुछ क्षण लिए। अंत में, सिर हिलाकर उन्होंने दरबारियों में से एक को संबोधित किया। “वैद्य की खोज के लिए घुड़सवार भेजो। हमने उन्हें आखिरी बार भूलभुलैया में जाने वाले कुएँ से थोड़ी दूरी पर देखा था, लेकिन वे कहीं भी हो सकते हैं।” दरबारी आदेश का पालन करने के लिए तुरंत आगे बढ़ा, लेकिन दरवाजे तक पहुँचने से पहले ही राजा की आवाज ने उसे रोक दिया। "जब वह मिल जाए, तो उसे परिषद कक्ष में पेश किया जाए।"
“परिषद कक्ष क्यों?” रानी उपश्रुति ने आश्चर्य से कहा, उनके स्वर में थोड़ी झुंझलाहट भी थी। “विशाखा यहाँ है। इससे क्या लाभ होगा…”
“मैं जानता हूँ मैं क्या कर रहा हूँ, माँ,” विक्रमादित्य ने दृढ़ता से हाथ उठाकर सभी तर्कों को शांत कर दिया। महारानी माँ चुप हो गईं। सम्राट दरबारी की ओर मुड़े। “चिकित्सक को सीधे सभा कक्ष में ले जाया जाए। मैं उनसे वहीं मिलूँगा।”

* * *

घटाकरपारा का मन प्रसन्न हो उठा जब वह उदयपुरी की मुख्य सड़क पर टहलते हुए उत्सव के माहौल में डूब गया। पिछली दोपहर, एक यात्रा मेले ने इस कस्बे को अपना अगला पड़ाव बनाया था, और जैसे ही उसने आगंतुकों के लिए अपना भव्य तम्बू खोला, कस्बेवासियों ने बड़े उत्साह से उसका स्वागत किया। मेले का उत्साह संक्रामक था, जिससे उदयपुरी के दुकानदारों ने भी अपनी दुकानों को

रंग-बिरंगे रेशम और साटन के कपड़ों से सजाकर लोगों का ध्यान आकर्षित किया। नक्काशीदार लाख के दीयों से लेकर सुंदर लेस के हाथ के पंखों और दुर्लभ जड़ी-बूटियों से सजी छाछ तक, तरह-तरह की वस्तुओं की बिक्री करने वाले अस्थायी स्टॉल हर गली के कोने पर लग गए, क्योंकि हर वर्ग के व्यापारी कस्बे की ओर उमड़ पड़े थे।
गलियाँ लोगों से गुलजार थीं, कई लोग खास मौकों के लिए रखे जाने वाले शानदार परिधानों में सजे हुए थे, और घटाकरपारा को लगा कि उसने छावनी कार्यालयों में कुछ चेहरों को पहचाना भी है। शाही सेना और सीमा रक्षक दल के कुछ सैनिक भी थे, जो अपनी ड्यूटी से छुट्टी लेकर सीमा पर गश्त की नीरस दिनचर्या से कुछ समय के लिए आराम कर रहे थे। फिर भी, बच्चों की संख्या वयस्कों से कहीं अधिक थी। वे हर जगह थे, दुकानों के बीच भाग-दौड़ कर रहे थे और खरीदारों के बीच से निकल रहे थे, कोनों से मुड़ते ही उत्साह से बड़बड़ाते और चीखते हुए नज़र से ओझल हो जाते थे। यह दृश्य उसे उज्जैन में वसंत उत्सव के दौरान अपने बचपन की याद दिला रहा था, और राजकुमार को पुरानी यादों में खो जाने का एहसास हुआ।
फिर वह रुक गया, सड़क के उस पार तिरछे दिख रहे एक चेहरे को देखकर उसकी निगाहें ठहर गईं, एक ऐसा चेहरा जिसे उसने पहले भी देखा था। सिर्फ एक बार। अपने सोने के सूर्य-चिह्न वाले पदक को छुपाते हुए, घटाकरपारा भीड़ में से धक्का-मुक्की करते हुए आगे बढ़ा। भीड़ उस व्यक्ति को निहार रही थी जो ऊंचे डंडों पर खड़े होकर चाकुओं से करतब दिखा रहा था। हालांकि, जब वह दूसरी तरफ के फुटपाथ पर पहुंचा, तो उसे वह चेहरा कहीं नहीं मिला जिसकी तलाश में वह आया था।
राजकुमार अपने पंजों पर खड़ा हो गया और गर्दन उठाकर चारों ओर देखने लगा, उसकी नज़रें हर तरफ दौड़ रही थीं, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। निराश होकर कंधे झुकाकर वह पीछे मुड़ा और चार कदम ही बढ़ा था कि उसने गली में थोड़ी दूर पर ताज़ी मालाएँ बेचने वाली एक दुकान के पीछे से उसे निकलते देखा। यह देखकर उसका दिल खुश हो गया और कंधे सीधे करके वह उसकी ओर चल पड़ा।
जब तक घटाकरपारा उसके पास पहुंचा, वह चूड़ियों की एक दुकान में जा चुकी थी। जब वह सामान का निरीक्षण कर रही थी और एक-दो चूड़ियाँ पहनकर देख रही थी, तभी राजकुमार पीछे से उसके पास आ गया।

"आखिरी बार मुझे यही सुनने को मिला था कि मेरे व्यवहार के लिए मेरी शिकायत मेरे वरिष्ठों से की जाएगी और मुझे फटकार लगाई जाएगी," उसने धीमी आवाज़ में कहा, लगभग उसके कान के पास झुकते हुए।
अपारूपा ने तेज़ी से मुड़कर अपना सिर पीछे किया ताकि वह वक्ता को बेहतर ढंग से देख सके। पहचानते ही उसकी आँखें चौड़ी हो गईं और गालों पर हल्की सी लाली छा गई। उसने कुछ कहने के लिए मुँह खोला, लेकिन राजकुमार की आँखों में मुस्कान देखकर और उसकी आँखों में चमक देखकर उसने अपना इरादा बदल दिया। “उसका क्या हुआ?” उसने एक भौंह उठाकर जिज्ञासा से पूछा।
“मुझे लगा कि एक आम सैनिक पर इतना खर्च करना ठीक नहीं है,” अपारूपा ने सिर हिलाते हुए शरारती अंदाज़ में जवाब दिया। हाथ में पीतल की चूड़ी पहनते हुए, उसने अपनी कलाई को इधर-उधर घुमाकर गहने को गौर से देखा। फिर उसने चूड़ी उतारकर वापस ट्रे में रख दी।
जैसे ही लड़की वहां से जाने लगी, घटाकरपारा ने कहा, “अगली बार जब आप किसी को रिपोर्ट करके सबक सिखाने की धमकी दें, तो कम से कम उसका नाम तो पूछ लें। वरना आप उस व्यक्ति से यह उम्मीद कैसे कर सकते हैं कि वह आपकी धमकी को गंभीरता से लेगा?”
अपारूपा फिर से शरमा गई और तिरछी नज़र से राजकुमार को देखने लगी। घातकपर ने एक प्यारी सी मुस्कान के साथ मोती की चमक से जगमगाते शंख के कंगन को उठाया और कहा, "मुझे लगता है तुम्हें इसे पहनकर देखना चाहिए।"
“मैं सीप नहीं पहनती,” लड़की ने कंधे उचकाते हुए कहा।
“तुम नहीं जानती?” राजकुमार की निगाहें अपारूपा पर चमक उठीं, फिर उनकी नज़र उसके कान पर पड़ी, जो शंख से बनी एक छोटी सी बाली से सजा हुआ था। "मेरा मतलब शंख की चूड़ियों से था," लड़की के गाल तीसरी बार लाल हो गए, और इस बार शर्मिंदगी काफी देर तक बनी रही।
घटाकरपारा ने कंगन को एक पल के लिए अपने कान से लगाया, मानो कुछ सुन रहा हो। फिर, सिर हिलाकर, उसने उसे वापस उसकी जगह पर रख दिया। अपारूपा ने राजकुमार को संदेह भरी निगाहों से देखा। "तुमने अभी क्या किया?"

“तुमने चूड़ी को अस्वीकार कर दिया था, इसलिए मैं देखना चाहता था कि यह ठीक है या नहीं।” राजकुमार ने लड़की को गंभीरता से देखा और फिर उदास होकर कंधे उचका दिए। “तुमने इसका दिल तोड़ दिया। लो, खुद देख लो।” चूड़ी उठाकर उसने उसे अपारूपा के कान के पास लाया और हल्का सा हिलाया। चूड़ी के खोखले खोल के अंदर के छोटे-छोटे मोती खड़खड़ाहट करते हुए हल्की सी आवाज़ करने लगे। “देखा?” उसने शरारती मुस्कान के साथ कहा।
अपारूपा ने अपने चेहरे और कंधों पर बिखरे बालों की छाया में अपनी मुस्कान छिपाने के लिए मुँह फेरा। "एक आम सैनिक के लिए तुम काफी उद्दंड हो," उसने कहा। अपनी आवाज़ में आलोचनात्मक लहजा लाते हुए उसने आगे कहा, "और तुम्हारे पहनावे को देखकर लगता है कि तुम कुलीन बनने की आकांक्षा रखते हो।" राजकुमार की ओर पीठ करके, वह गली की अगली दुकान की ओर बढ़ने लगी, और घटाकरपारा उसके साथ-साथ चलने लगा। अपारूपा ने उसकी ओर देखा, लेकिन यह जताने का कोई संकेत नहीं दिया कि वह उसे अपने आसपास नहीं चाहती। हिम्मत पाकर, घटाकरपारा ने लापरवाही से चारों ओर देखते हुए कहा, "मैं कुलीन बनने की आकांक्षाओं के बारे में तो कुछ नहीं कह सकता, लेकिन मुझे सुंदरता और शिष्टाचार की परख है।" अपारूपा ने कोई जवाब नहीं दिया, और कुछ देर तक दोनों साथ-साथ चलते रहे। वे थोड़ी देर के लिए रुके और लगभग छह साल की एक छोटी जिप्सी लड़की को सिर पर लंबे गले का घड़ा संतुलित करते हुए रस्सी पर चलते हुए देखकर आश्चर्यचकित रह गए। फिर, जैसे ही वे भीड़ से दूर हुए, घटाकरपारा ने चुप्पी तोड़ी।
“कैसा है…” कुछ याद करने की कोशिश करते हुए उनकी भौंहें तन गईं। “…आपकी नौकरानी का बेटा? मुझे उसका नाम याद नहीं आ रहा।” लड़की ने राजकुमार को हैरानी से देखा और उसका चेहरा नरम पड़ गया। “द्विज। वैसे मुझे नहीं लगता कि मैंने उस दिन उसका नाम लिया था,” उसने कहा। “वह ठीक है।”
“क्या वह… हमेशा से ऐसा ही रहा है? बचपन से ही?”
अपारूपा ने सिर हिलाया।
“देखिए, उस दिन जो कुछ हुआ उसके लिए मुझे खेद है। लेकिन हमारे पास और कोई चारा नहीं था? सीमावर्ती इलाकों में हूण जासूसों की भरमार है, और किसी पर भी भरोसा नहीं किया जा सकता।”

“क्या द्विज आपको हूना स्काउट जैसी लगती है?” लड़की ने संदेह भरी निगाहों से उसकी ओर देखा।
“अगर आप यही सोचते हैं तो बता दूं, हुना जासूस माथे पर हरिज़ का निशान लगाकर नहीं घूमते,” राजकुमार ने झुंझलाहट में हाथ ऊपर उठाते हुए कहा। “वे हमारे जैसे दिखने के लिए भेस बदलते हैं। अगर कोई हुना जासूस आपके ठीक बगल में भी खड़ा हो तो आप उसे पहचान नहीं पाएंगे।” घटाकरपारा ने शब्दों पर ज़ोर देने के लिए बीच-बीच में दूरी रखी और हर शब्द पर विराम लगाने के लिए हथेली से हवा में इशारा किया।
अपारूपा ने अपने कंधे उचकाए और दूसरी तरफ देखने लगी। उनके बीच का माहौल फिर से ठंडा पड़ रहा था। राजकुमार को एहसास हुआ कि द्विज के बारे में बात करना व्यर्थ साबित हो रहा है, इसलिए वह बातचीत के लिए कोई और विषय खोजने में जुट गया।
“उस दिन… सीमा पर… तुमने कहा था कि तुम्हारे पिता के अच्छे संपर्क हैं।” अपारूपा को सिर झुकाते देख उसने मज़ाक में आगे कहा, “उनके कितने अच्छे संपर्क हैं? मेरा मतलब है, क्या वे राज्यपाल को जानते हैं? क्या वे सम्राट को जानते हैं?”
“हां, वह राज्यपाल को जानते हैं। और हां, वह सम्राट को भी जानते हैं।” जब लड़की ने देखा कि घटाकरपारा उसकी ओर रुचि से देख रहे हैं, तो उसने आगे कहा, “मैं भी सम्राट को जानती हूं।”
राजकुमार का मुंह आश्चर्य से खुला रह गया, तभी अपारूपा ने कहा, "यह तो अलग बात है कि सम्राट न तो मेरे पिता को जानते हैं और न ही मुझे।" लड़की की आँखों में शरारत की एक चमक दिखाई दी और अगले ही पल वह खिलखिलाकर हंस पड़ी। घटाकरपारा ने एक मूर्खतापूर्ण मुस्कान दी और शर्मिंदगी से अपने बालों को बिखेर लिया।
वे थोड़ी दूर और चले ही थे कि अपारूपा की बारी सवाल पूछने की आई। "आपका नाम क्या है - ताकि अगली बार जब मुझे आपके खिलाफ शिकायत करनी हो तो मुझे पता रहे?"
“घटा… घटराजा,” राजकुमार ने प्रेरणा के आवेग में आकर यह नाम पुकारा।

“सैनिक के लिए यह एक दिखावटी नाम है,” अपारूपा ने कहा। हालाँकि, उसकी आवाज़ कठोर नहीं थी और उसका लहजा मज़ाकिया था।
"आपने कहा कि मेरी कुलीन बनने की आकांक्षा है। मुझे ये आकांक्षाएं अपने माता-पिता से मिली होंगी, जिन्होंने मेरा इतना भव्य नाम रखा," घटाकरपारा ने कंधे उचकाते हुए और शरारती मुस्कान के साथ कहा।
अपारूपा फिर हँसी, एक और भी मधुर और गहरी हँसी जिसने उनके बीच की दूरी और अपरिचितता को पिघलाकर रख दिया। वे बातें करते हुए चल रहे थे, और उनमें से किसी ने भी उस छोटे से व्यक्ति पर ध्यान नहीं दिया जो गली के उस पार कोने से उन्हें ध्यान से देख रहा था। उस व्यक्ति की निगाहें गली के दो भागों में बँटने तक उनका पीछा करती रहीं, और अंततः घटकरपारा और अपारूपा उसकी नज़रों से ओझल हो गए।
होंठ चबाते हुए, वह व्यक्ति मुड़ा और चौकी की ओर वापस चल पड़ा। वह व्यक्ति चिरायु था, जो राज्यपाल सत्यवेद का चमचा था।

गठबंधन

I am Shukracharya, mahaguru of the noble asuras.”
प्रधान पुरोहित ने विक्रमादित्य और उनके सलाहकारों को चुनौती देते हुए शब्द कहे, जो विशाल सभा-मेज के दूर छोर पर गंभीर घेरा बनाकर खड़े थे। शब्द दीवारों से टकराकर गूंज उठे, उनकी तीव्रता बढ़ती गई और अंधेरे कक्ष को रोशन करने वाले चारों दीपों की बत्तियाँ मंद पड़ने लगीं। बाहर मूसलाधार बारिश हो रही थी, जिससे उज्जैन में सूर्यास्त से काफी पहले ही शाम हो गई थी।
"और आज सुबह रानी पर हमला करने वाला प्राणी एक रूप बदलने वाला यक्ष था, जिसे इंद्र ने उसे मारने के लिए भेजा था।"
क्षपणक ने गुस्से में एक गहरी साँस ली। “विशाखा क्यों? उसने इंद्र के साथ क्या किया है?” “शायद इंद्र के हिसाब से निष्पक्ष लड़ाई?” सम्राट ने मेज के शीर्ष पर अपनी कुर्सी की पीठ को कसकर पकड़ लिया और प्रधान पुरोहित को घूरते हुए कहा।
“प्रतिशोध की प्यास में हमेशा परिप्रेक्ष्य और नैतिकता का अभाव होता है,” शुक्राचार्य की अच्छी आँख दीपक की रोशनी में चमक रही थी, जो क्षपणक और राजा के बीच घूम रही थी। “अश्विनों और मरुतों को परास्त करके, आपने इंद्र के

क्रोध को भड़का दिया, जिसे शांत करना आसान नहीं था। मेरा मानना है कि वह आपको वहीं चोट पहुँचाना चाहता था जहाँ सबसे गहरा दर्द होता।”
सम्राट का जबड़ा सख्त हो गया। इंद्र द्वारा नियुक्त एक यक्ष। जब वह और महल के रक्षक विशाखा को अपने कंधे से टिकाए खाई से दूर जा रहे थे, तब उन्होंने आखिरी बार मुड़कर देखा कि वैद्य खाई के किनारे एक काले, तड़पते हुए शरीर को काबू में करने की कोशिश कर रहा था, जो आधा प्रकाश और आधा छाया था। "यक्ष का क्या हुआ?" उन्होंने पूछा।
“वह चला गया। मैंने उसे पकड़ने की कोशिश की, लेकिन वह फिसलकर दूर चला गया। अब वह वापस नहीं आएगा।”
अगर विक्रमादित्य को इससे कोई राहत मिली भी तो वह उनके चेहरे पर ज़ाहिर नहीं हुई। कक्ष में क्षण भर के लिए सन्नाटा छा गया, जिसे वराहमिहिर ने तोड़ा। “आपने अश्विनों… और मरुतों पर हमारी विजय की बात की थी…” उन्होंने अपनी बैसाखी को थोड़ा खिसकाया ताकि वे मेज पर बेहतर ढंग से टिक सकें। “ये मरुत कौन हैं जिन्हें हमने कथित तौर पर पराजित किया है?” "पिछली रात बिजली की कड़क के साथ नीचे आए चार सींगों वाले राक्षस।"
“वे राक्षस थे, जिसका अर्थ है कि वे असुरों के अंश थे,” वराहमिहिर ने जवाब दिया। “देवताओं के स्वामी असुरों को आदेश कैसे दे सकते थे…”
“यह एक लंबी कहानी है,” प्रधान पुरोहित ने बीच में ही टोकते हुए कहा। “लेकिन मेरी बात मानिए, असुरों का मरुतों के यहाँ आने से कोई लेना-देना नहीं था।”
“आपकी बात पर।” विक्रमादित्य ने अपनी कुर्सी के पीछे कोहनी टिकाते हुए कहा। “इतने दिनों तक हम मानते रहे कि आप लौहित्या नदी के किनारे रहने वाले एक गुमनाम वैद्य हैं, और अब हमें पता चला है कि ऐसा नहीं है। और आप चाहते हैं कि हम आपकी बात मान लें?”
“मैं आपको यकीन नहीं दिला सकता, फिर भी यह सच है,” प्रधान पुरोहित ने हल्के से कंधे उचकाते हुए कहा। “मरुत इंद्र की देन थे। अश्विन, यक्ष और अहि भी उन्हीं के वश में थे।”
“अही… वही राक्षस है जिसने आज उज्जैनी पर हमला किया?” अमारा सिंह ने अपनी घनी भौहों के नीचे से गुस्से भरी निगाहों से देखा।

“हाँ, वही सर्प-ड्रैगन। इंद्र के पुत्र जयंत ने, निस्संदेह अपने पिता के आदेश पर, उसका आह्वान किया था। इस नगर का सौभाग्य है कि जयंत का मन दुर्बल है, इसलिए मेरे मंत्रों से अहि पर उसका प्रभाव टूट गया। अन्यथा…” शुक्राचार्य ने अनकही बातों को सम्राट और परिषद के मन में भरने दिया।
कुछ पल के विराम के बाद, प्रधान पुजारी परिषद कक्ष के द्वार की ओर आधा मुड़ा। "मैं अब रानी से मिलना चाहता हूँ," उसने एक तेज़ स्वर में कहा जिससे यह आशय निकलता था कि चर्चा समाप्त हो चुकी है।
“तो तुम यह स्वीकार करते हो कि अवंती पर हमला करने वाला अंधा राक्षस और पिशाच सेना तुम्हारे आदेश पर आए थे,” सम्राट ने ऐसे कहा मानो उसने महायाजक की बात सुनी ही न हो।
शुक्राचार्य ने कहा, “मैं अपनी गलती मानता हूँ। इसीलिए मैं उज्जैनी के पास मदद करने और अपनी गलती सुधारने आया हूँ।”
“यदि इरादा प्रायश्चित करना था, तो वैद्य का वेश क्यों, छल क्यों?” विक्रमादित्य ने जोर देकर पूछा।
“सम्राट, मुझे डर था कि अगर मैंने अपनी असली पहचान बता दी तो आप मेरी सहायता का प्रस्ताव ठुकरा देंगे। उज्जैनी को मेरी मदद की ज़रूरत थी; रानी को मेरी मदद की ज़रूरत थी। इसलिए मैंने पहले आपका विश्वास जीतने का फैसला किया।”
वेतला भट्टा, जो लगातार चुपचाप अपनी दाढ़ी सहला रहे थे, आगे झुके। "और यह इच्छा... जैसा कि आपने कहा... प्रायश्चित करने की... क्या यही वह वजह है जो आपको अवंती तक ले आई?"
शुक्राचार्य ने जवाब देने में थोड़ा समय लिया – और यही क्षण उनके स्वभाव को उजागर कर गया। उन्होंने कड़े स्वर में कहा, “मुझे एहसास हुआ कि हम दोस्त बन सकते हैं। मेरी मदद इस बात का प्रतीक है कि असुर इस दोस्ती को कितना महत्व देते हैं।”
"हर कोई दोस्त बनना चाहता है, फिर भी विडंबना यह है कि जब से यह शब्द हम पर थोपा गया है, तब से हमें केवल दुश्मनी, नफरत और रक्तपात का ही सामना करना पड़ा है," वराहमिहिर ने टिप्पणी की।

"श्मशान घाट के प्रति आपका यह जुनून क्या है?" राजगुरु ने बिना किसी पूर्व सूचना के बातचीत का रुख बदल दिया।
“क्या?” शुक्राचार्य आश्चर्य से लगभग पीछे हट गए। खुद को संभालते हुए, उन्होंने एक साथ अचंभित और क्रोधित स्वर में पूछा, “कौन सा श्मशान घाट?” “और आप रात में उज्जैन में छुपकर क्यों घूमते हैं?” अब आचार्य की बारी थी कि वे मुख्य पुरोहित के बचाव को नज़रअंदाज़ कर दें। “आप नियमित रूप से पवित्र क्षिप्रा नदी में नाव से यात्रा करते हैं – पार्षद शंकु ने आपको देखने वाले लोगों से बात की है।”
“रानी के इलाज के लिए मैं जो औषधियाँ बनाता हूँ, उनके लिए मैं दुर्लभ जड़ी- बूटियाँ खोज रहा हूँ। ऐसी जड़ी-बूटियाँ जो केवल रात में ही तोड़ी जा सकती हैं।” शुक्राचार्य की निगाहें एक सलाहकार के चेहरे से दूसरे पर घूमती रहीं, मानो वे अपने इस कथन के प्रभाव का आकलन कर रहे हों। बाहर का प्रकाश और भी कम हो गया था, और कक्ष में अँधेरा छाया हुआ था, जिससे मुख्य पुरोहित के लिए उनके भावों को पढ़ना मुश्किल हो रहा था। फिर भी, उनके सामने खड़े सभी कठोर हाव-भाव अपने आप में कहानी बयां कर रहे थे।
“अवंती की मदद और मित्रता के बदले तुम क्या कीमत वसूलोगे?” सम्राट ने शुक्राचार्य को घूरते हुए पूछा। “रुको, हमें मत बताओ। कहीं यह वैषद का खंजर तो नहीं? यहीं से तो सब कुछ शुरू और खत्म होता है, है ना?”
प्रधान पुरोहित ने गहरी साँस ली और सीधे खड़े हो गए। “सम्राट, आपने देखा है कि देवता किस हद तक जा सकते हैं। वे कितनी नीच हरकतें कर सकते हैं। अपने नगर को देखिए – उन्होंने छुरी पाने के लिए उज्जैनी के साथ क्या-क्या नहीं किया? अगर उन्हें रोकना है तो आपको हमारी सहायता की आवश्यकता है। छुरी आपके लिए बोझ के सिवा क्या नहीं है? इसे असुरों को दे दीजिए, हम आपकी रक्षा करेंगे। मैं आपकी रक्षा करूँगा। मैंने उज्जैनी को दो बार विनाश से बचाया है। मैं खुशी-खुशी फिर से ऐसा करूँगा।”
“तुमने उज्जैनी को बचाया?” अमरा सिम्हा की आवाज में संदेह झलक रहा था। “दो बार?”
“पार्षद जी, आपको क्या लगता है कि मरुत कैसे पराजित हुए? मैंने शहर पर – आप सब पर – पुनर्जन्म का मंत्र डाला था ताकि आप मरुतों से बेहतर ढंग से लड़

सकें। आज, मेरे दुःख के मंत्र ने ही जयंता की अही पर पकड़ ढीली की। मेरे मंत्रों के बिना, उज्जैनी का अस्तित्व ही समाप्त हो जाता।”
“उज्जायिनी और उसके रक्षक मिट्टी के नहीं बने हैं कि बादलों से कोई सर्प फुफकारता हुआ निकल आए तो हमारा अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा,” अमरा सिंह के कंधे क्रोध से तन गए। “आप जिन मंत्रों की बात कर रहे हैं, उनका सबूत कहाँ है? या हमें बस आपकी बात मान लेनी होगी?”
“कोई सबूत नहीं है, और मैं इसे साबित नहीं कर सकता,” मुख्य पुजारी ने अप्रत्याशित स्पष्टता के साथ स्वीकार किया। “लेकिन सम्राट और महल के रक्षक इस बात के गवाह हैं कि मैंने आज रानी की जान बचाई। अगर मैं समय पर वहाँ नहीं पहुँचता, तो रानी अब तक मर चुकी होतीं।”
मेज पर बेचैनी भरी खामोशी छा गई। जब किसी ने कुछ नहीं कहा, तो शुक्राचार्य ने विक्रमादित्य से विनती की।
“सम्राट, आपको महल में मेरी ज़रूरत है। मैंने सुना है कि रानी की तबीयत फिर बिगड़ गई है। पिछली बार मैंने ही उन्हें बचाया था, और मैं उन्हें फिर से ठीक कर सकता हूँ। मैं उनका इलाज करूँगा। सिर्फ़ रानी का ही नहीं। और भी लोग हैं, जैसे कि पार्षद वरारुचि की माता और…” मुख्य पुरोहित ने राजा के दाहिनी ओर चुपचाप खड़े कालिदास की ओर देखा, लेकिन उस विशालकाय व्यक्ति का चेहरा भावहीन था। “…और उज्जैन के कई नागरिक भी हैं जिन्हें सहायता की आवश्यकता है।”
सम्राट धीरे-धीरे और संयमित कदमों से शुक्राचार्य के पास पहुंचे। जब वे एक-दूसरे से मात्र तीन कदम की दूरी पर थे, तब वे रुक गए।
“महागुरु, आपने मेरे और मेरे इस प्रिय नगर के लिए जो कुछ भी किया है, उसके लिए मैं आपका आभारी हूँ,” उन्होंने कहा। “आपने जो कुछ भी किया, वह मेरी इच्छा के विरुद्ध नहीं था, फिर भी मैं आपको कुछ प्रतिफल देना चाहता हूँ। दुर्भाग्यवश, मैं आपको वह नहीं दे सकता जो आप चाहते हैं – क्योंकि जो मेरा नहीं है, मैं उसे नहीं दे सकता। यदि आपको मेरी कोई और वस्तु चाहिए, तो कृपया उसका नाम बताइए, वह आपकी हो जाएगी।” शुक्राचार्य मौन रहे।

“अगर मैं आपको और कुछ नहीं दे सकता, तो मैं आपको यह पेशकश करता हूँ – अवंती से सुरक्षित यात्रा। आप जैसे आए थे वैसे ही जा सकते हैं, कोई भी आपको परेशान या तंग नहीं करेगा।”
“महाराज, जल्दबाजी मत कीजिए,” महायाजक ने आखिरी, हताश प्रयास में हाथ उठाया। “रानी के बारे में भी सोचिए। मुझे एक बार उन्हें देखने दीजिए…” “रानी का भाग्य तो पहले ही तय हो चुका है,” राजा ने शुक्राचार्य के भाषण को बीच में ही रोकते हुए कहा। “मेरा भी, और तुम्हारा भी। महल में अब और आपका स्वागत नहीं किया जा सकता। आप जा सकते हैं।”
प्रधान पुरोहित ने सम्राट के हाथ को देखा, जो उन्हें द्वार की ओर इशारा कर रहा था। "मैं लौट कर आऊंगा," उन्होंने धमकी भरे स्वर में कहा।
“सुरक्षित मार्ग का मेरा प्रस्ताव केवल आपके प्रस्थान तक ही मान्य है,” सम्राट ने शांत भाव से कहा। “आपके पास उज्जैन छोड़ने के लिए सुबह तक का समय है, और अवंती की सीमाओं को पार करने के लिए दो दिन का समय है। इसके बाद, मेरे राज्य में कहीं भी आपका स्वागत नहीं होगा। यदि हमारी मुलाकात फिर कभी हुई, तो हमारी मुलाकात इतनी सौहार्दपूर्ण नहीं होगी।”
शुक्राचार्य की पीठ पर दरवाजा ज़ोर से बंद हो गया, एक कठोर, अपरिवर्तनीय धमाका जिसकी गूंज परिषद कक्ष की दीवारों तक सुनाई दी। विक्रमादित्य ने बंद दरवाजे को कुछ देर देखा, फिर अपने साथियों की ओर मुड़े। उन्होंने कहा, "मैं कुछ देर के लिए अकेला रहना चाहता हूँ।"
छह सलाहकारों के चले जाने के बाद, राजा एक कुर्सी पर बैठ गए। उन्होंने अपने हाथ मेज पर रखे और थके हुए सिर को अपनी कोहनियों पर टिकाकर आँखें बंद कर लीं। उन्हें इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि वे कितनी देर तक वहाँ बैठे रहे, अपनी लाचारी और निराशा को अपने भीतर से निकलने देते रहे। आखिरकार, दरवाजे के खुलने और बंद होने की आवाज ने उन्हें जगाया। सिर उठाकर उन्होंने देखा कि रानी उपश्रुति दीपक लेकर अंदर आ रही हैं।
“कैसे हो बेटे?” उसने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए और उसके बालों में उंगलियां फेरते हुए पूछा।
“थका हुआ।” वह बस इतना ही कह पाया। उसने अपना सिर वापस परिषद की मेज पर रख दिया।

दीपक नीचे रखकर महारानी माँ ने एक कुर्सी पास खींची और बैठ गईं। कुछ देर तक वह चुप रहीं। बारिश रुक चुकी थी, लेकिन छज्जे से बूँदें गिरती रहीं। कहीं दूर, झींगुर और मेंढक सुरों के भयानक मिश्रण में एक-दूसरे से होड़ कर रहे थे।
“मैंने सुना है कि आपने उपचारक… प्रधान पुरोहित को भेज दिया?” उसने कोमल स्वर में पूछा, अब वह खुद को और रोक नहीं पा रही थी। विक्रमादित्य को बिना सिर उठाए सिर हिलाते देख उसने कहा, “आप उसे विशाखा को एक बार देखने तो दे सकते थे।”
सम्राट ने अपना सिर उठाया और अपनी माँ को देखा। “यह जानते हुए भी कि वह कौन है और मुझसे क्या चाहता है? कभी नहीं।” सिर हिलाते हुए वह सीधा बैठ गया। “इसमें क्या हर्ज था, बेटा? मुझे बताया गया है कि उसने उससे मिलने का प्रस्ताव दिया था…”
“अगर मैंने उसे इस बार उससे मिलने दिया होता, तो मैं उसका ऋणी होता, माँ। मैं जानबूझकर ऐसा ऋणी नहीं बनूँगा जिसे मैं चुका न सकूँ।” अचानक उठकर विक्रमादित्य कक्ष से बाहर चले गए ताकि महारानी माँ उनकी आँखों में चिंगारी की तरह जलते आँसू न देख सकें।

* * *

अगले दिन उजाले में ही उज्जैनी ने अपनी स्थिति का पूर्ण जायजा लिया। अही के निरर्थक क्रोध के कारण तबाह हुए छह मोहल्लों में से सबसे बुरी तरह प्रभावित दो मोहल्ले थे - एक लोहारों की बस्ती वाला और दूसरा शहर के धनी व्यापारियों और कारोबारियों का आवासीय क्षेत्र।
लगभग डेढ़ सौ लोगों की मौत और लगभग उतने ही घायलों के बाद, उज्जैन से शरणार्थियों का आना फिर से शुरू होना कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। भोर होते ही बैलगाड़ियाँ और घोड़े की गाड़ियाँ शहर के द्वारों से धीरे-धीरे गुजरने लगीं, और जब तक सूरज एक चौथाई ऊपर आ चुका था, बाहर जाने वाले वाहनों की इतनी भीड़ हो गई थी कि द्वारों पर जाम लग गया था, जहाँ उनका सामना बाज़ारों के लिए सामान ले जाने वाले आने वाले काफिलों से हुआ। फिर भी, हर किसी के पास रहने की जगह नहीं थी - गरीब कारीगरों और व्यापारियों को शहर के किसी न किसी मैदान में तंबू लगाने के लिए मजबूर होना पड़ा, और कुछ परिवारों

मांग घट रही है, और अब जब घरों और लोहारों को पुनर्निर्माण की आवश्यकता है, तो उनकी आजीविका खतरे में है।
राजगुरु ने कहा, “धातु कामगारों का अपने उत्पादों की मांग में गिरावट के बारे में कहना सही है। आखिरकार, हमने ही लोहे, कांसे और लकड़ी पर अधिक शुल्क लगाकर मांग को कम किया था, ताकि हमारे शस्त्रागारों को हथियारों की कमी का सामना न करना पड़े।”
राजा और सलाहकार आपस में विचार-विमर्श करने और आगे की कार्रवाई तय करने के लिए परिषद कक्ष में वापस आ गए थे।
“अगर हम करों को थोड़ा कम कर दें तो क्या इससे मदद मिलेगी?” सम्राट ने पूछा।
“सिर्फ उन्हें ही लोहे की जरूरत नहीं है,” वेताला भट्टा ने बताया। “छह मोहल्लों को फिर से बनाना होगा, जिनमें से चार लगभग बिल्कुल नए सिरे से बनाने होंगे। और हां, हमारी अपनी भट्टियों और शस्त्रागारों को भी धातु की जरूरत है।”
“हमें अपने भंडार को तुरंत मजबूत करना चाहिए, और अधिक लोहा खरीदना चाहिए,” अमारा सिम्हा ने कहा।
“लेकिन एक छोटी सी समस्या है,” वराहमिहिर ने अपने चेचक के दाग वाले गाल को खुजाते हुए कहा। “बाजार में लोहा उपलब्ध नहीं है।” “लोहा नहीं है, इसका क्या मतलब है?” अमर सिंह आश्चर्य से घूरने लगा।
“कल रात मेरी रॉयल इंजीनियर्स के एक ओवरसियर से बात हुई थी। लगता है लोहे की आपूर्ति लगभग ठप हो गई है। दंडकभुक्ति से लोहे की कोई नई आपूर्ति नहीं आ रही है।” आचार्य ने किसी को संबोधित किए बिना कहा, “शूरसेना।” “जिस बात का हमें डर था, वही सच हो गया है,” अमर सिंह गरजते हुए बोले। “हम शूरसेना को लोहे की आपूर्ति इस तरह रोकने नहीं दे सकते। इस कमी का असर सिंधुवर्त में हमारे सभी सहयोगियों पर पड़ेगा।”
"मगध के खिलाफ सेना उतारने के अलावा, मुझे नहीं लगता कि हम इसके बारे में कुछ कर सकते हैं," वेतला भट्ट ने उत्तर दिया।

“इस समय तो यह संभव ही नहीं है,” सम्राट का स्वर दृढ़ था। “हमें अपनी सेना सीमा पर चाहिए। और सीमा से जितने भी सैनिक हम भेज सकते हैं, उनकी उज्जैन में आवश्यकता है।”
अमारा सिम्हा ने सिर झुकाया। "तो फिर हम इस लोहे के संकट से कैसे निपटेंगे?"
“हमें अपने लौह भंडार को फिर से भरने के लिए कोई और स्रोत खोजना होगा,” सम्राट ने उत्तर दिया।
“दंडकभुक्ति की खानों के अलावा, सिंधुवर्त में लोहे का केवल एक ही ज्ञात स्रोत है,” वेतला भट्टा ने धीरे-धीरे कहा। “यह भंडार भूत दलदल से सटे रिक्शा पर्वत की दुर्गम ढलानों पर पाए जाते हैं।”
विक्रमादित्य ने सिर हिलाया। "भंडार अपेक्षाकृत छोटे हैं, लेकिन कुछ नमूनों से पता चला है कि अयस्क दंडकभुक्ति से उत्पादित अयस्क से भी अधिक समृद्ध है।"
परिषद की मेज के ऊपर का वातावरण नई संभावनाओं से गूंज रहा था।
“क्या रानी अभिरामी और राजा वीरयंका इस तरह के अनुरोध पर विचार भी करेंगे?” राजगुरु ने सोचा। “संग्रह राशि बहुत अधिक नहीं है, शायद ओद्रा और कलिंग की मांग को पूरा करने के लिए पर्याप्त ही होगी।”
“और अगर वे व्यापार कर भी सकते, तो सवाल यह है कि क्या वे करेंगे?” वराहमिहिर ने कहा। “ओद्रा और कलिंग ने अतीत में कभी भी हमारे प्रस्तावों का जवाब नहीं दिया। अभिरामी और वीरयंका से ज़्यादा अविश्वासी और रूखे शासकों की जोड़ी मुझे नहीं सूझती।” “पूछने में कोई हर्ज नहीं है। अगर शूरसेना वंगा पर कब्ज़ा कर लेता है, तो वह ताम्रलिप्ति से आने वाले सभी सामानों पर निश्चित रूप से ज़्यादा कर लगाएगा। श्रीभोज और श्रीविजय राज्यों के साथ व्यापार करने वाले किसी दूसरे बंदरगाह की तलाश करना बेहतर होगा – और वह बंदरगाह तोसाली या उत्तरा तोसाली हो सकता है।”
“आपकी बात में दम है,” आचार्य ने होंठ चबाते हुए कहा। “शायद अब समय आ गया है कि हम एक बार फिर ओद्रा और कलिंग से संपर्क साधें।”
क्षपनाका ने पूछा, "क्या हम लोहे के व्यापारियों से बात करके ओड्रा में उनके समकक्षों के साथ बातचीत शुरू करें?"

“नहीं, यह बातचीत उच्चतम स्तर पर – महारानी अभिरामी के साथ – होनी चाहिए। हम केवल व्यापारिक साझेदार नहीं खोज रहे हैं। हम गठबंधन बनाने की दिशा में काम कर रहे हैं।” सम्राट ने प्रत्येक पार्षद की आँखों में गहराई से देखा, जब तक कि उनकी दृष्टि वेताला भट्टा पर नहीं टिक गई।
“राजगुरु जी, आपकी इस उम्र में ऐसा करना मुझे अच्छा नहीं लग रहा। लेकिन मुझे रानी अभिरामी से मिलने और उन्हें हमारे साथ सहयोग करने की आवश्यकता समझाने के लिए आपसे बेहतर कोई और नहीं सूझ रहा। मुझे पता है उत्तरा तोसाली की यात्रा लंबी और थका देने वाली होगी। इसलिए मुझे माफ़ करना, लेकिन क्या आप फिर भी मेरे साथ जाने को तैयार होंगे?”
“विक्रमा, क्षमा करने जैसी क्या बात है?” आचार्य ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया। “यह अवंती के हित में है; मैं जल्द से जल्द आगे बढ़ूंगा।”

* * *

दो टिमटिमाती मशालों की रोशनी बड़ी मुश्किल से उस अंधेरे को भेद पा रही थी, जो पल्लवन को उसकी तंग और बदबूदार कोठरी में बंद करने वाली मजबूत लोहे की सलाखों के पार था। फिर भी, दूत के लिए अपने तीन आगंतुकों को पहचानना संभव हो पा रहा था, जो कालकोठरी के खुरदुरे पत्थर के फर्श पर बैठे हुए, हाथों में बेड़ियां और एक पैर दीवार पर लगे भारी ब्रैकेट से बंधे हुए, उसे ध्यान से देख रहे थे।
“मैंने सपने में भी नहीं सोचा था कि हमारी मुलाकात ऐसे विचित्र हालातों में होगी, महोदय,” शूरासेना ने अपने पतले होठों पर हल्की सी मुस्कान लिए कहा। मगध के नए राजा ने अपने हाथ सामने की ओर बांध रखे थे, सिर एक तरफ झुका हुआ था, और मशाल की रोशनी में उनकी दाढ़ी-मूंछें एकदम साफ दिखाई दे रही थीं। “आप और आपके राजा, आप दोनों मुझे सचमुच आश्चर्यचकित कर देते हैं।” पल्लवन ने बोलने का कोई प्रयास नहीं किया, आंशिक रूप से इसलिए क्योंकि उसे कुछ भी उचित कहने के लिए सूझा नहीं, और आंशिक रूप से इसलिए क्योंकि उसके चोटिल और सूजे हुए होंठों के कारण बोलना दर्दनाक था।
“एक साधारण सराय में रहना, भेस बदलकर गिरिव्रज में घूमना, अपने दरबारियों के कानों में झूठी कहानियाँ फुसलाना, मेरी अनुपस्थिति में विद्रोह भड़काना…” शूरासेना ने बनावटी आश्चर्य से सिर हिलाया, लेकिन मशाल की

रोशनी में उसकी हरी आँखें ठंडी और कठोर थीं। “बहुत चालाक, लेकिन आपके उच्च पद के व्यक्ति के लिए बिल्कुल भी उचित नहीं। आप जानते हैं कि गिरिव्रज में प्रवेश करते समय यह सब जानकर मुझे कितना दुख हुआ? मैं अपने लोगों के साथ वांगा के पतन का जश्न मनाना चाहता था, लेकिन इसके बजाय मैं इस बदबूदार कालकोठरी में आप जैसे कीड़ों से बात कर रहा हूँ। मेरा मन कर रहा है कि मैं आपको अभी मरवा दूँ – और हो सकता है मैं ऐसा कर भी दूँ, आप जानते हैं?”
“तुम कुछ भी करो, तुम्हें हर चीज़ का हिसाब चुकाना पड़ेगा,” पल्लवन ने धीरे से कहा, उसके होंठ पर पड़ी दरार फैलकर खुल गई और वह दर्द से कराह उठा। “इससे बचने का कोई रास्ता नहीं है।”
"क्या ऐसा है?"
शूरासेना ने आश्चर्य का भाव दिखाते हुए अपनी भौहें उठाईं और अपने दोनों ओर खड़े दो व्यक्तियों की ओर देखा। चौड़े चेहरे, घुमावदार मूंछों और बड़े, तांबूल से सने दांतों वाले व्यक्ति को पल्लवन ने सेनापति दैपायन के रूप में पहचाना; दूसरा सांवला, चौकोर जबड़े वाला व्यक्ति था जिसने मगध परिषद का पदक धारण किया हुआ था, जिसे उसने पहले कभी नहीं देखा था। सेनापति और पार्षद ने शूरासेना पर मुस्कुराया, जिसने अपनी निगाहें वापस दूत पर टिका दीं।
“तुम जंजीरों में जकड़े मेरे पैरों के पास बैठे हो और मुझसे कहते हो कि इससे बचने का कोई रास्ता नहीं है? तुम्हारा समय इस बात पर सोचने में बेहतर लगेगा कि तुम इससे कैसे बच सकते हो,” शूरासेना ने कालकोठरी के चारों ओर फैले अंधेरे में अपनी उंगली से एक गोला बनाया।
दैपायाना आगे झुकी और मुस्कुराई, मानो कोई दोस्ताना सुझाव दे रही हो। “राजा सही कह रहे हैं। लेकिन मैं आपको बता दूं, वह भी समय की बर्बादी होगी – क्योंकि यहाँ से निकलना भी नामुमकिन है।” सेनापति की आँखों में उन्मादी खुशी की चमक आ गई, उसने अपना सिर पीछे की ओर झुकाया और दाँतों और थूक से भरी हुई हँसी हँस दी।
"मुझे इस बात की चिंता नहीं है कि मेरे साथ क्या होगा," पल्लवन ने कहा, और कोठरी के गंदे फर्श पर अधिक आरामदायक स्थिति खोजने के लिए इधर-उधर हिलते हुए उसने यथासंभव गरिमा बनाए रखने की कोशिश की।

“जब हम तुम्हारे गले में रस्सी डालकर तुम्हें और तुम्हारे साथियों को शहर के बाज़ार में लटका देंगे, तब तुम्हें यह कहते हुए सुनना मुझे बहुत अच्छा लगेगा,” शूरासेना ने तीखी मुस्कान के साथ कहा। इतना कहकर वह मुड़कर कोठरी से बाहर निकल गया।
"अगर मुझे कुछ हुआ तो तुम मेरे राजा के क्रोध का पात्र बन जाओगे," दूत ने शूरसेना की पीठ की ओर देखते हुए कहा।
मगध का नया राजा जेल के दरवाजे से बाहर निकलने के लिए झुका, लेकिन पल्लवन को देखकर रुक गया। “तो फिर, हम बाजार में भूमिपाल को भी फांसी पर लटकाने के लिए एक जगह बचा कर रखेंगे।” अपने बगल में खड़े सलाहकार की ओर मुड़ते हुए उसने कहा, “यह सुनिश्चित कर लेना कि जेल के रखवाले उसे इतना ही खाना दें कि वह भूख से न मर जाए।”
शूरासेना, दैपायाना और पार्षद कालकोठरी से बाहर निकलने वाली घुमावदार सीढ़ियों पर चढ़ रहे थे, तभी पार्षद ने कहा, "हम उसे फांसी कब देंगे, महाराज?"
“किसे फांसी दी जा रही है?”
“राजदूत, महाराज। आपने कहा था कि उसे बाजार में लटका दिया जाएगा।”
“हम उसे फांसी नहीं दे रहे हैं,” शूरासेना ने पार्षद को तीखी निगाहों से देखते हुए कहा। “ये तो बस उसे चैन से सोने से रोकने के लिए दी गई धमकियां थीं।”
पार्षद और सेनापति ने एक-दूसरे को हैरानी भरी निगाहों से देखा। "माननीय, क्या मैं उसे ज़िंदा रखने का कारण जान सकता हूँ?" दैपायना ने पूछा। शूरासेना ने जवाब दिया, "हम उसे बंधक बनाकर भूमिपाला से फिरौती की मांग करेंगे।"
“माननीय महोदय, मुझे ठीक से समझ नहीं आया,” जनरल ने कहा। “हम भूमिपाला से कहेंगे कि यदि वह बदले में हमारी मांगें पूरी करने के लिए सहमत हो जाता है, तो वह अपने दूत को जीवित और सुरक्षित वापस ले जा सकता है।”
"और वह यह है कि…?"

“संगीतकार।” अपने साथियों के चेहरों पर हैरानी देखकर शूरसेना ने समझाया, “याद है पल्लवन ने उत्तम, अस्माबिंदु, दिगंत और भास्कर को क्या बताया था? श्रावस्ती में भी बहुत कम लोग जानते हैं कि वह संगीतकार मौजूद है। इसलिए हम पल्लवन के बदले उसे सौंप देंगे। जैसे ही हम उसे पकड़ लेंगे, हम उसे मार डालेंगे, और उसकी मृत्यु के साथ ही जो कुछ हुआ उसका सारा सबूत मिट जाएगा।” “यह सच हो सकता है, महाराज,” दैपायन ने सोच-विचार करते हुए कहा। “लेकिन भूमिपाल, पल्लवन और श्रावस्ती के दरबार में कुछ अन्य लोग अभी भी जानते हैं कि क्या हुआ था। वे यह खबर फैलाना शुरू कर सकते हैं…”
“वे क्या कहेंगे?” राजा ने बीच में ही टोकते हुए कहा। “कि एक संगीतकार ने गिरिव्रज में कुछ भयानक होते देखा है? अगर वे ऐसा कहते हैं, तो लोग जानना चाहेंगे कि वह संगीतकार कहाँ है। भूमिपाल और पल्लवन इस पर क्या कहेंगे? कि उन्होंने अपने दूत की जान बचाने के लिए उस संगीतकार को मगध के साथ बदल लिया? मुझे नहीं लगता कि इससे कोसल की छवि अच्छी बनेगी। नहीं, मुझे पूरा यकीन है कि भूमिपाल और उनके दरबारी चुप रहेंगे।”
और अगर भूमिपाला लेन-देन करने से इनकार कर दे तो?
शूरासेना ने कंधे उचकाते हुए कहा, "इससे यह जानने का अच्छा मौका मिलेगा कि कोसला के लिए क्या मायने रखता है।"
"माननीय न्यायाधीश, अगर हम पल्लवन को बरी करने के बजाय उसे फांसी दे दें तो क्या होगा?" पार्षद ने पूछा।
“ऐसा करने से हमें क्या हासिल होगा? इससे भूमिपाला और उनकी अदालत हमारे खिलाफ हो जाएंगे, और उस संगीतकार को पाने के हमारे सारे मौके हाथ से निकल जाएंगे।”
“हम कोसला पर हमला कर सकते हैं और उनसे संगीतकार को सौंपने की मांग कर सकते हैं, महाराज। कोसला ने पल्लवन को गिरिव्रज के पास आपके और सिंहासन के विरुद्ध कार्रवाई करने के लिए भेजा था। क्या यह उकसावे के लिए काफी नहीं है?”
राजा रुका और सलाहकार की ओर मुड़ा। “ठीक है, हम कोसल पर हमला करते हैं। आगे क्या होगा? वत्स, मत्स्य और अवंती कोसल की सहायता के लिए आएंगे। हम उनकी संयुक्त सेना से लड़कर जीत नहीं सकते, इस समय तो बिलकुल नहीं। अगर हम लड़ने

का फैसला भी करते हैं, तो संगीतकार चुपके से निकलकर अपनी कहानी फैला सकता है। और उसकी कहानी अंततः मगध तक पहुँच ही जाएगी। पल्लवन सही कह रहा है। अगर सच्चाई काफी लोगों तक पहुँच गई, तो संदेह के बीज बो दिए जाएंगे। हमारी समस्या वह संगीतकार है। जब तक वह जीवित है, हम चैन से नहीं बैठ सकते। हमें उसे ढूंढना होगा और जल्दी से चुपचाप उसे चुप कराना होगा।”
“माननीय, मैं आपकी बात समझ गया,” दैपायाना ने कहा। “पल्लवन और संगीतकार के बारे में बातचीत करना ही सबसे बुद्धिमानी होगी। चलिए, हम भूमिपाला के पास एक दूत भेजते हैं।”
“महामहिम, बाकी लोगों का क्या?” पार्षद ने शूरसेना के चेहरे पर असमंजस देखा। “मेरा मतलब दरबारी दिगंता, उत्तम और भास्कर से है?”
“उन्हें मरना ही होगा,” शूरासेना ने माथे पर गहरी शिकन के साथ उत्तर दिया। “मेरे विरुद्ध षड्यंत्र रचने की हिम्मत करने वाले इन कृतघ्न कुत्तों को दंडित किया जाना चाहिए। किकाटाओं की सहायता करने की साजिश रचने का आरोप उन पर लगाओ और कल सुबह बाजार में उन्हें फांसी पर लटका दो।”
“जी हां, माननीय महोदय। इससे मुझे याद आया…” पार्षद थोड़ी देर रुके। “दरबारी अस्माबिंदु ने वांगा के राज्यपाल पद के लिए विचार किए जाने हेतु औपचारिक निवेदन भेजा है। यही वह व्यवस्था थी जो हमने तय की थी।”
“जी हां, बिल्कुल। उसका बदला। और मैं हमेशा से उसे पिता के सबसे वफादारों में से एक मानता था।” शूरासेना ने व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ कहा, “दरबारी को बता देना कि उसके अनुरोध पर पूरी गंभीरता से विचार किया जाएगा।”
“जी हां, माननीय न्यायाधीश।”
सीढ़ियों के शीर्ष पर पहुँचकर राजा और उनके सैनिक एक दीर्घा में प्रवेश कर गए जहाँ तीन महल के रक्षक प्रतीक्षा कर रहे थे। रक्षकों के साथ दो ऐसे व्यक्ति भी थे जो यात्रा से थके हुए प्रतीत हो रहे थे, हालाँकि उनके वस्त्र स्वच्छ और सलीकेदार थे।
“महाराज को प्रणाम,” एक पहरेदार ने झुककर अभिवादन किया। उसने दो व्यक्तियों की ओर इशारा करते हुए कहा, “महाराज, ये हेहेया के दूत हैं, राजा

हरिहर के दरबार से आए हैं।” शूरासेना ने अजनबियों को देखकर अपनी एक भौंह उठाई। “आप यहाँ किस उद्देश्य से आए हैं?”
“महामहिम,” उनमें से एक व्यक्ति ने सीलबंद कैनवास का एक पत्र निकालते हुए कहा। “हम अपने राजा का संदेश लाए हैं। यदि आपके पास कोई उत्तर हो तो हम उसकी प्रतीक्षा करेंगे।”
शूरासेना ने सैनिकों के जाने का इंतजार किया। फिर उसने मुहर तोड़कर पांडुलिपि खोली। उसे पढ़ते ही उसके होठों पर एक मुस्कान आ गई, जो धीरे- धीरे उसके चेहरे पर फैल गई।
“अच्छी खबर है, महाराज?” दैपायाना ने शूरासेना की ओर आशा भरी निगाहों से देखा।
“बहुत अच्छा,” राजा ने पत्र को वापस मोड़ते हुए और सेनापति पर गर्व जताते हुए उत्तर दिया। “हरिहारा ने प्रस्ताव रखा है कि मैं उसकी पुत्री राजकुमारी रुक्मा का विवाह करूँ। हेहेया हमेशा से अवंती का गुलाम रहा है। हरिहारा कभी राजा महेंद्रादित्य, वरारुचि और विक्रमादित्य से आगे नहीं देख पाया। लेकिन यह…” उसने पत्र को जादू की छड़ी की तरह लहराया। “यह अवंती के बाहर किसी के प्रति हरिहारा का पहला सम्मान है। यह मगध के गौरव की ओर अग्रसर होने का संकेत है, सेनापति।”
“निःसंदेह, महाराज। क्या आप हरिहारा द्वारा प्रस्तावित रुक्मा का हाथ स्वीकार करेंगे?”
“मैं ऐसा क्यों नहीं करूँगा?” शूरासेना सीधे खड़े थे, उनका चेहरा गर्व से भरा और आकर्षक था। “सिंधुवर्त पर अवंती के वर्चस्व को तोड़ने का इससे बेहतर तरीका और क्या हो सकता है?”

* * *

विक्रमादित्य देवी के द्वार से मुड़ने ही वाले थे कि उन्हें अंधेरे से एक सूखी सी कर्कश आवाज सुनाई दी।
“बुद्धिमान और चतुर राजा वापस क्यों जा रहे हैं? आप मुझसे मिलने आए थे, है ना?”

सम्राट मुड़ा, यह सोचते हुए कि क्या उसने आवाज़ में छिपे व्यंग्य को सिर्फ़ कल्पना में सुना था। "मुझे नहीं पता था कि आप यहाँ हैं, माँ," उसने कहा, और भविष्यवक्ता के कमरे के घोर अंधेरे में झाँका। "अंदर बत्ती क्यों नहीं जल रही है?"
“हे महाराज, मैंने इस संसार को बहुत देखा है।” बूढ़ी औरत की आवाज़ थकी हुई थी। “कभी-कभी न देखना राहत देता है। लेकिन आप अभी भी बाहर क्यों खड़े हैं? अंदर आइए।”
“माँ, मुझे रोशनी के बिना रास्ता नहीं मिल सकता।”
"अंधकार को गले लगाओ, मेरे राजा। कभी-कभी, अंधकार को ही अपना मार्गदर्शक बनने देना महत्वपूर्ण होता है।"
बाधाओं को टटोलते हुए, राजा कमरे में कुछ कदम आगे बढ़ा और फिर उसने सोचा कि वह काफी दूर आ चुका है। वह फर्श पर बैठ गया और अपने पैरों को मोड़कर उस दिशा में मुड़ गया जहाँ से आवाज़ आ रही थी।
"आखिरकार तुम्हें आने का समय मिल ही गया।" इस बार व्यंग्य का भाव स्पष्ट था।
“माँ, मेरे पास बहुत काम था और मैं बहुत सोच-विचार कर रहा था।” विक्रमादित्य रुका और गहरी साँस ली। “पर आप सही कह रही हैं। मैं आपसे मिलने नहीं आ पाया। क्षमा चाहता हूँ। मुझे पहले आकर आपको साँप के बारे में चेतावनी देने के लिए धन्यवाद देना चाहिए था।”
“मुझे क्षमा मांगनी चाहिए, हे बुद्धिमान महाराज।” सम्राट की आँखें अंधेरे में अभ्यस्त हो चुकी थीं, और उन्होंने सिर हिलाने से देवी की आकृति को पहचान लिया। “मैं खतरे के बारे में स्पष्ट नहीं था, और मैंने शंकु को समय रहते आगाह नहीं किया; इतने सारे जीवन जो बचाए जा सकते थे, वे नष्ट हो गए।” “आपने अपनी पूरी कोशिश की, माँ। ऐसा नहीं है कि आप असफल रहीं।”
महिला कुछ पल चुप रही। “मुझे भी खेद है कि मैं आपको यक्ष के बारे में चेतावनी नहीं दे सकी,” उसने कहा। “अगर मुझे समय रहते पता चल जाता, तो शायद हालात कुछ और होते।” “जो होना होता है, वही होता है। और वैसे भी, मैंने ही तो वैद्य के बारे में आपकी चेतावनियों पर ध्यान नहीं दिया।” विक्रमादित्य

शर्म से सिर झुका लिया। “तो मैं उस बात के लिए आपको कैसे दोषी ठहरा सकता हूँ जो आपको पता नहीं थी?”
“तुमने इतना बड़ा जोखिम उठाया है, इसका मतलब है कि तुम उससे बहुत प्यार करते होगे।” भविष्यवक्ता की आवाज कोमल और सहानुभूतिपूर्ण थी।
“और यह सब व्यर्थ ही हो गया,” सम्राट ने अपने हाथों की ओर देखा। ठुड्डी ऊपर उठाकर उन्होंने देवी ओरेकल की ओर देखा। “माँ, उन्हें मेरी याद आ गई थी। यक्ष के आक्रमण से ठीक पहले… उन्हें मेरी एक स्मृति याद आई थी। अब वह भी चली गई है। सब कुछ खत्म हो गया है।”
"यह शायद एक परीक्षा है, मेरे राजा।"
“एक परीक्षा… या शायद एक सज़ा। वीषाद का खंजर मुझ पर अभिशाप बनकर उतरा है, और मुझसे सब कुछ छीन लिया है जो मुझे प्रिय है। मैं अपनी प्रिय स्त्री की रक्षा नहीं कर सका; मैं अपने लोगों की रक्षा नहीं कर सकता। माँ, जब वे मुझसे पूछेंगे कि खंजर मेरे लिए उनके जीवन से ज़्यादा महत्वपूर्ण क्यों है, तो मैं उन्हें क्या कहूँगा? जो लोग डर के मारे अपने घर छोड़कर भाग रहे हैं, उनसे मैं क्या कहूँगा?” विक्रमादित्य की आवाज़ में कड़वाहट भरी थी। “मैंने उज्जैन के लोगों को बहुत निराश किया है।”
फिर भी आपको पता है कि आपने सही काम किया है।
“माँ, इसकी क्या कीमत चुकानी पड़ेगी? उन निर्दोषों की जान, जिनका न तो उस कटार से कोई लेना-देना है और न ही उस सर्वज्ञ से किए गए वादे से? और यह जानते हुए भी कि अगली बार जब देव या असुर हलाहल पर किसी राक्षस को भेजेंगे, तो और भी जानें कुर्बान होंगी? हालात हमेशा से हमारे खिलाफ थे, लेकिन आने वाले दिनों में ये और भी बदतर होते जाएंगे।”
"तो अब समय आ गया है कि आप कुछ नए सहयोगी ढूंढकर अपने पक्ष में संतुलन बनाएँ।"
“माँ, नए सहयोगी तो लगभग न के बराबर ही हैं।” सम्राट का लहजा फिर से तीखा हो गया। “और पुराने सहयोगियों में से भी कुछ ने हमारा साथ छोड़ना शुरू कर दिया है।”
“मैं सिंधुवर्त के मानव राज्यों की बात नहीं कर रही हूँ, मेरे महाराज। एक राक्षस का मुकाबला दूसरे राक्षस से ही किया जा सकता है।” विक्रमादित्य ने

भविष्यवक्ता के चेहरे को घूरते हुए, अँधेरे में उसके हाव-भाव समझने की कोशिश की। “मुझे आपकी बात समझ नहीं आ रही।”
“आप दानवों के बारे में क्या जानते हैं?”
“दानव!” राजा की आवाज आश्चर्य से गूंज उठी। “मैं… खैर… वे राक्षसों की एक लुप्त जाति हैं जिनके बारे में माना जाता है कि वे निर्वासितों के वन के सबसे गहरे हिस्सों में निवास करते हैं। लेकिन यह तो बस एक कहानी है जो शरारती बच्चों को डराकर उन्हें सही व्यवहार सिखाने के लिए गढ़ी गई है…” “दानव कोई मिथक नहीं हैं,” देवी ओरेकल ने अचानक तीखे स्वर में कहा। “मैंने दंडक से बहने वाली हवा को उनके बारे में सजीव प्राणियों के रूप में बात करते सुना है।”
“क्या दानव सचमुच मौजूद हैं?” विक्रमादित्य ने धीमी, मासूमियत भरी फुसफुसाहट में कहा।
“क्या आप जानते हैं कि वे दंडक लोक में कैसे बसे?” राजा को सिर हिलाते देख भविष्यवक्ता ने कहा, “दानव पाताल लोक के मूल निवासी थे। उस समय पाताल एक घना जंगल था – आप जानते ही हैं कि दानव वन के देवता हैं, है ना? दरअसल, दानव लोहे से भी अधिक मजबूत जादुई लकड़ी से बने एक नगर में रहते थे। वे शांतिप्रिय और आतिथ्यप्रिय जाति थे और पाताल लोक में आने वाले हर व्यक्ति का स्वागत करते थे। इसी प्रकार देवलोक छोड़ने के लिए विवश हुए असुर पाताल लोक में आकर बस गए।”
“माँ, आपको यह सब कैसे पता है?”
“प्रकृति कहानियों और समाचारों से सदा भरी रहती है, हे बुद्धिमान राजा। जब हवा पत्तों को सरसराती है, पक्षी चहचहाते हैं, झरने कलकल करते हैं और लहरें समुद्र तट से टकराती हैं, तो क्या होता है? कहानियाँ साझा की जा रही होती हैं।” मातृ ओरेकल ने अपना वर्णन जारी रखने के लिए विराम लिया। खैर, जब असुर पाताल लोक पहुँचे, तो उन्होंने अपनी पसंद के अनुसार भूमि का पुनर्निर्माण शुरू कर दिया। उन्होंने अपने शहर के लिए जगह बनाने के लिए कई एकड़ में फैले पेड़ों को काट डाला और लोहे, कांसे और अन्य धातुओं की खदानें खोदनी शुरू कर दीं। उन्होंने अपने खेतों की सिंचाई के लिए पाताल गंगा पर बांध बनाए… असुरों ने प्रकृति के प्रवाह को अपवित्र और नष्ट करने के लिए हर संभव

प्रयास किया, जो उनके मेज़बान, दानवों को सबसे प्रिय था। भूमि के वास्तविक स्वामी होने के नाते, दानवों ने असुरों के इस कृत्य का विरोध किया और जल्द ही मेज़बान और अतिथि के बीच संघर्ष शुरू हो गया। संक्षेप में, ऋषि कश्यप के आशीर्वाद और दिति की जादूगरी से अंततः असुरों की विजय हुई और दानवों को पाताल लोक से निकाल दिया गया।
“क्या वे इसी तरह निर्वासितों के जंगल में आए थे?”
“और आज तक दानवों के मन में असुरों के प्रति गहरी शत्रुता है,” बूढ़ी औरत ने सिर हिलाते हुए कहा। “अगर तुम दानवों को यह विश्वास दिला सको कि असुर दंडक का इस्तेमाल अवंती पर हमला करने के लिए कर रहे हैं और तुम्हें उनकी सहायता की आवश्यकता है, तो तुम्हें एक शक्तिशाली और जादुई सहयोगी मिल जाएगा।”
सम्राट काफी देर तक चुपचाप बैठे रहे, जो कुछ उन्होंने अभी सुना था उसे आत्मसात करने की कोशिश कर रहे थे। अंत में, उन्होंने देवदूत से कहा, "दानव इतने एकांतप्रिय होते हैं - उनसे बातचीत शुरू कैसे की जाए?"
“आपने जंगल के भीतर स्थित जनस्थान नगर के बारे में तो सुना ही होगा। वह दानवों का निवास स्थान है।”
“दंडक के भीतर जनस्थान कहाँ है, यह भी किसी को नहीं पता,” विक्रमादित्य ने हैरानी से अपने होंठ दबाए। “हम इतने घने और विशाल जंगल के बीच इसे कैसे ढूँढेंगे, जिसमें हममें से कोई भी पहले कभी नहीं गया है?”
“हे महाराज, यह निर्वासितों का वन है,” द्रष्टा ने मानो किसी मंदबुद्धि बच्चे से कहा। “सुना जाता है कि दंडक वन से भाग निकले छह दोषी सिंधुवर्त लौट आए हैं। ये लोग इस जंगल और इसके घुमावदार रास्तों से भली-भांति परिचित हैं। आपको बस उनमें से एक को ढूंढना है जो आपको जनस्थान ले जाने के लिए तैयार हो।”
“माँ, यह जनस्थान को खोजने से भी ज़्यादा मुश्किल साबित हो सकता है। लेकिन हाँ, कोशिश करने में कोई हर्ज नहीं है।” सम्राट की आवाज़ में अब पहले से कहीं ज़्यादा उत्साह और जोश झलक रहा था।
“लेकिन एक बात याद रखना,” कर्कश, खुरदरी आवाज़ में थोड़ी सी सावधानी झलकने लगी। “अपने इतिहास के कारण, दानव एक शंकालु जाति हैं, जो अजनबियों और

घुसपैठियों को देखकर उन पर गहरा अविश्वास करते हैं और उनके प्रति शत्रुतापूर्ण रवैया रखते हैं। उनसे दोस्ती करना आसान नहीं है।”
"माँ, तुम एक ही पल में उम्मीद देती हो और उसे छीन भी लेती हो," राजा ने व्यंग्यपूर्वक कहा।
मैं बस इतना कह रहा हूं कि अगर आप दानवों को अपना सहयोगी बनाना चाहते हैं, तो आपको इसके लिए कड़ी मेहनत करनी होगी।

[redacted]

“[redacted], [redacted] [redacted] [redacted]

को देखते हुए उत्तर दिया। “जब भी कोई संधि का प्रस्ताव रखा जाता है, वह या तो भय से या फिर चालाकी से होता है। इस मामले में भय की संभावना को हम निश्चित रूप से नकार सकते हैं।”
“फिर भी आपको लगता है कि देवलोक में इंद्र का निमंत्रण स्वीकार करना हमारे हित में है?” होलिका ने अचंभित होकर मुख्य पुरोहित से अपने बगल में बैठे अपने भाई-पति की ओर देखा।
“यह एक चाल है, पर कोई जाल नहीं।” शुक्राचार्य ने एक गहरी साँस ली और सबसे निचले पायदान पर रखे एक छोटे, गद्देदार स्टूल पर बैठ गए। “नारद इतने बुद्धिमान हैं कि उन्होंने अमरावती पर हमारे हमले के पीछे का असली मकसद समझ लिया है। उन्हें यह एहसास है कि हमसे लड़ना व्यर्थ है, क्योंकि वे अपना ध्यान मानव राजा से हलाहल छीनने पर लगाना चाहते हैं। यह संधि महज़ इंद्र के चंगुल से हमें छुड़ाने का एक तरीका है।”
“यदि आपकी योजना वांछित परिणाम प्राप्त कर रही है, तो देवताओं पर दबाव कम क्यों करें, महागुरु?” हिरण्याक्ष की भौंहों पर पड़ी शिकन ने उनके काले चेहरे की झुर्रियों को और गहरा कर दिया और उनके चेहरे पर उदासी की छाया डाल दी।
“क्योंकि, इस बार मैं नारद की बात से सहमत हूँ जब वे कहते हैं कि देवों और असुरों का एक ही शत्रु है, मानव राजा, और दोनों पक्षों को अपने मतभेद भुलाकर राजा के विरुद्ध एकजुट होना चाहिए।” मुख्य पुरोहित ने अपने शब्दों को समझने के लिए दोनों बहनों को थोड़ा समय दिया। “निश्चित रूप से, जब नारद ने तुमसे ये कहा था, तो वे केवल खोखले शब्द थे – शायद उन्हें अपने शब्दों पर ज़रा भी विश्वास नहीं था। फिर भी, अपने झूठ में उन्होंने अनजाने में सत्य को छू लिया।”
“महागुरु, आप असुरों से एक साधारण मनुष्य के कारण अपना अहंकार छोड़ने को कह रहे हैं?” सिंहासन की सीढ़ियों पर जल रहे दीपों की लौ असुर स्वामी की सुनहरी आँखों में भड़क उठी। अविश्वास से उनकी आवाज कांप उठी। “हिरण्यकशिपु जब तपस्या से लौटेगा तो मैं उसे क्या बताऊंगा कि हमने एक मानव राजा के कारण कपटी देवताओं से संधि कर ली?”

एक बार फिर, विशाल हॉल में निराशा, अविश्वास और सावधानी से भरी फुसफुसाहट की लहर दौड़ गई। चंदासुर और अमरका की अमरावती से विजयी वापसी ने असुरों का मनोबल बढ़ा दिया था, और प्रधान पुरोहित असुरों की इस अनिच्छा को समझ रहे थे कि वे इतनी मेहनत से हासिल की गई जीत को छोड़ना नहीं चाहते थे। फिर भी, वे इस असंतोष को बेकाबू नहीं होने दे सकते थे…
“पाताल के स्वामियों, आप बहुत कुछ भूल जाते हैं,” शुक्राचार्य ने दरबार को नज़रअंदाज़ करते हुए केवल बहनों को संबोधित किया, लेकिन उनकी आवाज़ का लहजा स्पष्ट रूप से सेनापतियों को शांत करने के लिए था। “आप भूल जाते हैं कि विक्रमादित्य नरक की अग्नि धारण करते हैं, और उनके सलाहकार नौ मोतियों के धारक हैं। मैंने मानव जगत में अपने प्रवास के दौरान बहुत कुछ देखा और सुना है। मैंने राजा के दृढ़ संकल्प और उनके सलाहकारों के शौर्य को देखा है।”
सांस लेने के लिए रुककर, प्रधान पुरोहित उठे और चार सीढ़ियाँ चढ़े ताकि उनकी नज़र हिरण्याक्ष के सेनापतियों के समूह पर पड़ सके। “क्या मैंने अभी- अभी आपको यह नहीं बताया कि मनुष्यों ने मरुतों और अही को कैसे हराया? क्या मैंने आपको यह नहीं बताया कि जब मैंने राजा की रानी का इलाज करने की पेशकश की तो उन्होंने मेरी मदद ठुकरा दी? आप उस व्यक्ति के बारे में क्या सोचते हैं जो अपने कर्तव्य के लिए अपनी गहरी आशाओं और इच्छाओं का बलिदान कर देता है?”
शुक्राचार्य ने मुड़कर होलिका और हिरण्यक्ष पर तीखी निगाह डाली। “जब से उसने मुझे अपना महल छोड़ने के लिए कहा है, तब से मैं राजा और उसकी परिषद के बारे में हर संभव जानकारी जुटाने में लगा हुआ हूँ। मेरा निष्कर्ष सीधा-सा है – हम देव और असुर वीषाद के खंजर पर अधिकार पाने के लिए चाहे जितना लड़ें और छल करें, लेकिन जब तक मानव राजा पराजित नहीं हो जाता, तब तक हममें से कोई भी खंजर नहीं जीत पाएगा। और हममें से कोई भी अकेले ऐसा नहीं कर सकता – खासकर तब जब हम एक ही समय में एक-दूसरे के दुश्मन हों। फिर भी, अगर आप फिर भी ज़िद करते हैं, तो आप कोशिश कर सकते हैं।”
प्रधान पुरोहित की चुनौती क्रिस्टल सिंहासन की सीढ़ियों पर चढ़ी और मेहराबदार छत में समा गई, दीवारों से टकराकर महल के पास से गुजरती पाताल गंगा के जलप्रपात की धीमी गर्जना में विलीन हो गई। होलिका सिंहासन से

उठीं, उनके सुनहरे शरीर पर रेशमी वस्त्र लहराते हुए वे शुक्राचार्य की ओर कुछ सीढ़ियाँ उतरीं। जब उन्होंने बात की, तो उनका स्वर शांत और सौम्य था। “महागुरु, आपका ज्ञान पर सवाल उठाना हमारा कभी इरादा नहीं था। अगर हमने ऐसा कोई आभास दिया हो, तो हमें खेद है। हम वैसा ही करेंगे जैसा आप कहेंगे…” वह थोड़ी देर रुकी, “…लेकिन अगर मैं पूछ सकती हूँ, तो राजा को हराने के बाद वीषादा के खंजर का क्या होगा?”
“हलाहल के लिए भयभीत न हों।” होलिका की क्षमा सुनकर शुक्राचार्य का चेहरा नरम पड़ गया और उनकी आँखों में एक शैतानी चमक आ गई। “हड्डियों से संकेत मिला है कि राजा ने कटार कहाँ छिपाई है। जैसे ही उसका छोटा सा राज्य बिखरने लगेगा, मैं देवताओं के पहुँचने से पहले हलाहल को वापस लाने का कोई न कोई उपाय निकाल लूँगा।”

* * *

दो प्रेम में डूबी काली-पीली तितलियाँ धनवंतरी की नज़र के सामने से तेज़ी से गुज़र रही थीं, जिससे उन्हें पलकें झपकाने और बगीचे में फैले गुड़हल के पौधों के ऊपर उनकी चंचल, उन्मादी उड़ान का पीछा करने के लिए मजबूर होना पड़ा। फिर भी, इन रंग-बिरंगे कीड़ों के कारण भले ही उनका ध्यान भटक रहा था, लेकिन चिकित्सक के विचार कहीं और थे, क्योंकि वे कौशांबी की सुबह की तेज़ धूप में बैठे हुए आगे की कार्रवाई पर विचार कर रहे थे।
उज्जैन से यात्रा उम्मीद से कहीं अधिक लंबी हो गई थी, लगातार बारिश के कारण यमुना की अधिकांश सहायक नदियाँ उफान पर थीं और नदी के मैदानी इलाकों के बड़े हिस्से में बाढ़ आ गई थी। राजकुमार शशिवर्धन और सलाहकार यशोभावी द्वारा वैद्य का वत्स के राजमहल में स्वागत किए हुए केवल दो दिन ही बीते थे।
फिर भी, धनवंतरी ने अभी तक उस मुद्दे पर बात नहीं की थी जिसके कारण वह यहाँ तक पहुँचा था। इसका कारण राजा चंद्रवर्धन थे।
उनके आगमन के एक घंटे के भीतर ही चिकित्सक को चंद्रवर्धन के कक्ष में ले जाया गया। इतने दिनों में राजा की हालत में कोई खास सुधार नहीं हुआ था, और धनवंतरी ने ईमानदारी से स्वीकार किया कि स्थिति को सुधारने के लिए वह कुछ खास नहीं कर सकते। फिर भी, कुछ हद तक आदत के चलते और कुछ हद तक यशोभावी और

परिषद के बाकी सदस्यों पर अच्छा प्रभाव छोड़ने के लिए, धनवंतरी ने एक मरहम तैयार किया, जिसे उन्होंने सावधानीपूर्वक चंद्रवर्धन के लकवाग्रस्त अंगों पर मालिश किया। उस रात जब वह राजा के पास से विदा हुए, तो उन्होंने अगले दिन सुबह यशोभावी से शशिवर्धन के सिंहासनारोहण के बारे में बात करने का निश्चय किया।
लेकिन जब अगला दिन उज्ज्वल और धूप से जगमगाता हुआ निकला, तो कौशांबी के लोगों के लिए एक आश्चर्य लेकर आया। चंद्रवर्धन जब जागे तो उन्होंने पाया कि वे अपनी उंगलियों और पैरों की उंगलियों को हिला सकते हैं, और कुछ शब्द भी अस्पष्ट रूप से बोल सकते हैं। धनवंतरी को बुलाया गया, और चिकित्सक ने देखा कि राजा पहले की तरह पीले और सुस्त नहीं लग रहे थे - वे धनवंतरी की आंखों में आंखें डालकर कृतज्ञता के कुछ शब्द भी बुदबुदा पा रहे थे। धनवंतरी ने उपचार को और प्रभावी बनाने के लिए नई मलहमें बताईं, और एक बार फिर स्वयं दवा लगाई। दोपहर तक, चंद्रवर्धन बिना किसी खास सहारे के अपने बिस्तर पर करवटें बदल पा रहे थे क्योंकि धीरे-धीरे उनके अंगों में ताकत लौट रही थी। जब धनवंतरी रात में उनसे मिलने गए, तो राजा धीमी, कठिन गति से एक पूरा वाक्य बोल पा रहे थे।
“भगवान विक्रमा को आशीर्वाद दें कि उन्होंने आपको मेरा इलाज करने के लिए यहाँ भेजा,” उन्होंने धन्यवाद के भाव से सिर हिलाते हुए कहा था। चंद्रवर्धन के शब्दों ने वैद्य को शर्मिंदा और भ्रमित कर दिया था। राजा का इलाज महज एक बहाना था, उनकी यात्रा के पीछे के असली मकसद को छिपाने की एक चाल थी। लेकिन चंद्रवर्धन के ठीक होने के सक्रिय लक्षण दिखने पर - धनवंतरी को समझ नहीं आ रहा था कि रातोंरात इतना बड़ा बदलाव कैसे आ गया - वह अपनी योजना को आगे बढ़ाने की दिशा में असमंजस में था।
“महामहिम, राजा चंद्रवर्धन जाग गए हैं और अपने कक्ष में आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।”
चिकित्सक चौंक गया और चारों ओर देखा। महल का एक सेवक उसके बाईं ओर थोड़ा आगे खड़ा था, कमर झुकाकर गहरी प्रणाम मुद्रा में। धनवंतरी ने कौशांबी के मन में अपने प्रति नए सिरे से सम्मान की भावना जागृत होते देखी; सभी ने स्वाभाविक रूप से मान लिया कि राजा के स्वस्थ होने में उसकी भूमिका

महत्वपूर्ण थी, हालांकि स्वयं धनवंतरी के पास ऐसा मानने का कोई कारण नहीं था।
धनवंतरी ने संकरे रास्तों, खुले आंगनों और घुमावदार सीढ़ियों से होते हुए आगे बढ़ने की अनुमति दी। उज्जैन के झील महल की तुलना में वत्स का राजमहल काफी साधारण था, फिर भी चिकित्सक को चंद्रवर्धन के समक्ष ले जाने में कई मिनट लग गए।
“राजा, नमस्कार,” धनवंतरी ने यशोभावी, शशिवर्धन और चंद्रवर्धन के चारों ओर मंडरा रहे वत्स के चार चिकित्सकों को देखते हुए कहा। राजा तकियों के सहारे बैठे थे और धनवंतरी के अभिवादन के उत्तर में उन्होंने हाथ जोड़कर प्रणाम किया। “आज सुबह आप कैसा महसूस कर रहे हैं?” चिकित्सक ने राजा के गालों पर लौट आई रौनक देखकर प्रसन्नतापूर्वक पूछा।
“वैद्यनाथ, राजा की हालत में बहुत सुधार हुआ है,” महल के मुख्य चिकित्सक ने धनवंतरी को श्रद्धा और सम्मान से देखते हुए उत्तर दिया। “जैसा कि आप देख सकते हैं, राजा बैठ पा रहे हैं। उनका कहना है कि वे खड़े होने में भी सक्षम महसूस कर रहे हैं। वैद्यनाथ, आपने सचमुच चमत्कार कर दिया है।”
“यह महाराज की इच्छा है, और आप सभी के द्वारा दी गई देखभाल और ध्यान का परिणाम है। आपकी लगन ही चमत्कारिक इलाज है,” धनवंतरी ने विनम्रतापूर्वक उत्तर दिया और पलंग के पास पहुँचे। चंद्रवर्धन को सिर हिलाते हुए उन्होंने कहा, “और उठने के बारे में… महाराज, थोड़ा धैर्य रखिए। शायद हम कल कोशिश कर सकते हैं?”
“मैं… ठीक हूँ…,” चंद्रवर्धन ने नाममात्र का विरोध किया, लेकिन धनवंतरी को अपनी बात मानने दी। सभी पाँचों चिकित्सक तेल और मलहम तैयार करने और लगाने के काम में जुट गए, और लगभग एक घंटे बाद महल के चार चिकित्सक चले गए, जिससे धनवंतरी अपने राजा, राजकुमार और सलाहकार यशोभावी के साथ अकेले रह गए।
“क्या समाचार… द्वारका?” चन्द्रवर्धन ने धन्वन्तरि से पूछताछ की। चिकित्सक के असमंजस भरे चेहरे को देखकर शशिवर्धन ने कहा, "हमने हूणों द्वारा द्वारका पर आक्रमण करने की योजना के बारे में सुना है। क्या आपके पास इस संबंध में कोई अद्यतन जानकारी है, पार्षद जी?"

“अहा, वह बात।” धनवंतरी ने समझकर सिर हिलाया, फिर तुरंत ही अपना सिर झटक दिया। “मैं उज्जैन से लगभग उसी समय निकला था जब वरारुचि द्वारका की रक्षा के लिए अनार्तों के पास गया था। हमने अनार्तों की कई सेनाओं को उनके क्षेत्रों की रक्षा के लिए वापस भेज दिया था, और अवंती की भी काफी सेनाओं को द्वारका की ओर मोड़ दिया था। इसके अलावा मुझे कुछ नहीं पता।”
“आपको पता है ना कि शक वंश ने मत्स्य की सीमाओं पर लगातार हमले शुरू कर दिए हैं?” यशोभावी ने धनवंतरी के कंधे के ऊपर एक बिंदु की ओर तिरछी नज़र से देखा।
“जी हां, सम्राट के राजसूय सम्मेलन में राजा बाणहस्त ने इस बात को हमारे ध्यान में लाया था…”
“नहीं, पार्षद जी,” यशोभावी ने बीच में ही टोकते हुए कहा। “ये हमले हाल ही में हुए हैं और इनकी प्रकृति अधिक गंभीर है। मत्स्य सीमा पर स्थित कई निगरानी मीनारों को योजनाबद्ध तरीके से जलाकर नष्ट कर दिया गया है, और गश्ती दल पर घात लगाकर हमले भी हुए हैं। धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूप से, शक वंश आगे बढ़ रहा है।”
"मुझे इसके बारे में पता नहीं था," धनवंतरी ने एक दुखी आह भरते हुए कहा। कुछ देर तक कोई नहीं बोला। “सम्राट विक्रमादित्य ने पिता की सेवा के लिए आपको भेजा, यह उनकी बहुत बड़ी उदारता है,” शशिवर्धन ने अंत में कहा। “खासकर ऐसे समय में जब उज्जैन के नागरिकों को आपकी प्रतिभा की सख्त जरूरत है। हम समझते हैं कि देवताओं और असुरों के हमलों ने उज्जैन को पंगु बना दिया है।” “जी हां, उज्जैन के लोगों ने बहुत कष्ट झेला है,” धनवंतरी ने धीरे-धीरे स्वीकार किया, निर्णय लेने में कठिनाई हो रही थी। “दरअसल…” वह रुका, फिर उसने सीधे मुद्दे पर आने का फैसला किया। “मेरी यात्रा का एक और कारण है। यह राजा हरिहर के एक प्रस्ताव से संबंधित है।”
चंद्रवर्धन की भौहें धीरे से उठीं, उनके चेहरे के लकवाग्रस्त हिस्से की भौहें दूसरी से थोड़ी नीचे झुक गईं। तीन जोड़ी निगाहों का भार अपने ऊपर महसूस करते हुए, धनवंतरी हरिहर द्वारा शूरसेना को दिए गए प्रस्ताव, रानी सुमयंती द्वारा विक्रमादित्य को गुप्त रूप से भेजे गए संदेश और हरिहर को उसकी मूर्खता से समझाने के लिए आचार्य की हेहेया यात्रा की कहानी सुनाने

में मग्न हो गए। तीनों व्यक्ति बिना किसी रुकावट के सुनते रहे, और धनवंतरी के भाषण समाप्त होने के बाद ही यशोभावी ने बोलना शुरू किया।
"अगर मैं सही समझ रहा हूं, तो राजा हरिहर ने शूरसेना को भावी दामाद के रूप में अस्वीकार करने का मन बना लिया है, यदि राजकुमार शशिवर्धन राजकुमारी रुक्मा का हाथ स्वीकार कर लेते हैं।"
“जी हाँ। सम्राट ने हरिहारा को यही सुझाव दिया था।” धनवंतरी बेचैन होकर चंद्रवर्धन की ओर देखते हुए विनती करने लगा। “इससे सिंधुवर्त राज्यों का गठबंधन बरकरार रखने में मदद मिलेगी।”
“बेवकूफ… आदमी,” चंद्रवर्धन ने गुस्से में ये शब्द कहे। अगर किसी को शक था कि उसका मतलब किससे है, तो उसके अगले कुछ शब्दों ने उसे दूर कर दिया। “एक हत्यारा… दामाद के रूप में!” छोटे से समूह में एक अनिश्चित सन्नाटा छा गया, लेकिन यह ज्यादा देर तक नहीं रहा।
“सम्राट… सही कह रहे हैं,” चंद्रवर्धन ने सिर हिलाया और शशिवर्धन की ओर देखा। “हूणों के विरुद्ध राज्यों को… एकजुट रहना चाहिए। क्या तुम उससे… विवाह करोगे?”
“अगर इससे सिंधुवर्त एकाग्र और मजबूत रहेगा, तो मैं ऐसा ही करूंगा, पिताजी,” राजकुमार ने बिना पलक झपकाए उत्तर दिया। “अच्छा।” चंद्रवर्धन तकियों पर और नीचे लेट गया।
“हरिहारा की एक शर्त है।” धनवंतरी की बेचैनी साफ झलक रही थी। “वह चाहते हैं कि रुक्मा का विवाह एक राजा से हो।” जब किसी ने कुछ नहीं कहा और उन्हें एहसास हुआ कि उनकी बात ठीक से समझी नहीं गई है, तो वैद्य ने आगे कहा, “शूरासेना एक राजा हैं। लेकिन शशिवर्धन अभी राजा नहीं हैं।”
“तो?” चंद्रवर्धन ने फिर से खुद को सहारा दिया। “हरिहारा इस बात पर अड़ा है कि वह रुक्मा का विवाह केवल एक राजा से ही करवाएगा।”
“क्या वह शशिवर्धन को वत्स का राजा बनाना चाहता है? क्या यही उसकी शर्त है?” यशोभावी ने आखिरकार धनवंतरी के इशारे को पकड़ लिया। गुस्से से चेहरा लाल करते हुए सलाहकार लगभग चिल्ला उठा, “उसकी हिम्मत कैसे हुई? राजा चंद्रवर्धन अभी भी जीवित हैं…”

“हरिहारा राज्याभिषेक पर जोर नहीं दे रहे हैं,” धनवंतरी ने सांत्वना भरे अंदाज में हाथ बढ़ाते हुए कहा। “वे केवल इतना चाहते हैं कि राजा औपचारिक रूप से घोषणा कर दें कि राजकुमार वत्सा के सिंहासन के उत्तराधिकारी हैं।” “हरिहारा कौन होता है हमारे राजा को यह बताने वाला कि उसे क्या करना चाहिए और क्या नहीं? हमारे राजा तो स्वयं ही करेंगे…”
मैं… घोषणा… करूंगा।
चंद्रवर्धन के शब्द तलवार की तरह मंत्री के उग्र भाषण को चीरते हुए निकल गए, और उनके बाद सन्नाटा छा गया। धनवंतरी और शशिवर्धन राजा को आश्चर्य से देखते रहे, जब राजा ने थके हुए हाथों से अपनी आँखें ढँक लीं; उनमें से किसी ने भी यशोभावी को अकड़ते हुए और पिता से पुत्र की ओर एक संकीर्ण, कठोर नज़र डालते हुए नहीं देखा।
“मैं सिंधुवर्त के लिए यह करूँगा,” चंद्रवर्धन ने दोहराया। “हरिहारा को निर्णय की सूचना दे दी जाए। हम उन्हें भी संदेश भेजेंगे। हम रुक्मा को भावी रानी के रूप में स्वीकार करते हैं।” एक गहरी आह भरकर राजा अपने पलंग पर लेट गए और करवट बदल ली, जिससे शांति और सुकून की उनकी इच्छा का संकेत मिला। जैसे ही शशिवर्धन ने अपने पिता के पैरों पर एक पतली सूती शॉल डाली, धनवंतरी पलंग के पास रखी चौकी से उठ खड़े हुए।
“मैं अब आपसे विदा लेता हूँ, महाराज,” उन्होंने कहा। “मैं शाम को आपसे मिलने वापस आऊँगा।” शशिवर्धन और यशोभावी को प्रणाम करके वे कमरे से चले गए।
अपना मिशन पूरा करने की राहत ने चिकित्सक का मनोबल बढ़ा दिया और वह अपने निर्धारित कक्ष की ओर लौटते समय एक अलग ही उत्साह से चल रहा था। इसलिए, जब वह एक दरवाजे से निकलकर गलियारे में दाखिल हुआ, तो यह महज़ सौभाग्य ही था कि विपरीत दिशा से गलियारे में आ रहे एक व्यक्ति से उसकी टक्कर टल गई। “ओह, प्रलूपी!”
“आप, पार्षद?” प्रलूपी उन्हें देखकर आश्चर्यचकित रह गई, लेकिन वह खुश थी या नहीं, यह धनवंतरी निश्चित नहीं कह सकता था। राजकुमारी के साथ हमेशा से ही यह कहना मुश्किल रहा था। “आप यहाँ क्यों आए हैं?”

“मैं राजा को देखने आया था… यह देखने के लिए कि क्या मैं उनकी बीमारी में मदद कर सकता हूँ,” वैद्य ने अस्पष्ट रूप से उत्तर दिया। “मैंने सुना था कि आप और राजकुमार हिमवर्धन काशी की तीर्थयात्रा पर गए थे। आप कब वापस आए?” “आज सुबह। हम बाढ़ में फंस गए थे,” प्रलूपी ने उत्तर दिया। धनवंतरी की ओर देखते हुए उसने पूछा, “घटकरपारा का क्या हाल है? क्या वह उज्जैन लौट आया है?”
“वह अभी भी उदयपुरी में है।” प्रलूपी ने न तो महारानी माँ का हालचाल पूछा, न ही उनके भाइयों का, और न ही उस शहर के हालात के बारे में जहाँ वह पली-बढ़ी थीं। धनवंतरी को लगा कि इन दिनों प्रलूपी को बस अपने बेटे की ही चिंता है। “विक्रम उसे सीमा पर कब तक रखने का इरादा रखता है?” प्रलूपी ने चिकित्सक को चिढ़ से देखा, मानो वह किसी तरह घटकर्पर की इस स्थिति के लिए जिम्मेदार हो। “उसे उज्जैन में होना चाहिए, जहाँ वह राज्य चलाना सीखे।”
“राज्य चलाना कहीं से भी सीखा जा सकता है,” धनवंतरी ने असमंजस में पलकें झपकाईं। “और राज्य चलाने के लिए, पहले एक सैनिक बनना सीखना चाहिए।” राजकुमारी ने अपने होंठों को इस तरह मोड़ा जो व्यंग्य और आक्रोश के बीच का भाव था। "कम से कम मुझे उम्मीद है कि अमारा सिम्हा मेरे बेटे का अच्छे से ख्याल रख रहा होगा।"

“Amara Simha is back in Ujjayini.”
प्रलूपी की आँखें खुल गईं, और उनकी गहराई में धनवंतरी ने सदमा, क्रोध और भय देखा। “घटकरपारा सीमा पर बिल्कुल अकेला है?” वह फुफकारते हुए बोली। “विक्रमा क्या सोच रहा है? क्या वह पागल हो गया है?”
“उदयपुरी और उसके आसपास शाही सेना और सीमा रक्षक बल के हजारों सैनिक और अधिकारी तैनात हैं,” चिकित्सक ने कहा। “मुझे नहीं पता कि अगर घटाकरपारा चाहे भी तो वह सीमा पर अकेले कैसे रह सकता है।”
“विक्रम का दिमाग खराब हो गया है,” प्रलूपी ने गुस्से से सिर हिलाते हुए कहा। “मेरा बेटा सीमा पर नहीं होना चाहिए; यह उसकी जगह नहीं है। विक्रम को समझाना होगा…”

धनवंतरी को अचानक पीछे छोड़ते हुए, वह दरवाजे से तेजी से बाहर निकली और अंधेरे गलियारे में पैर पटकते हुए चली गई, गुस्से और पीड़ा से मुट्ठियां भींचे हुए, उत्तेजित होकर खुद से कुछ बुदबुदा रही थी।

* * *

शस्त्रागार के खुले दरवाजे से अंदर आ रही सूर्य की रोशनी के एक हिस्से पर एक छाया दिखाई दी, जिससे कालिदास रुक गए और उस पत्थर से ऊपर देखने लगे जिस पर वे अपनी तलवार को तेज कर रहे थे।
“आह, विक्रम,” उस दैत्य के गंभीर और उदास चेहरे पर मुस्कान आ गई। “यह तो सुखद आश्चर्य है।”
“मुझे खुशी है कि यहाँ का मौसम सुहावना है,” सम्राट ने मुस्कुराते हुए कहा, हालाँकि उनकी मुस्कान उनकी आँखों तक नहीं पहुँची। वे शस्त्रागार में दाखिल हुए और चारों ओर देखा। वह स्थान सुनसान था – राजा को इसका पहले ही अंदाजा हो गया था जब कालिदास ने उन्हें नाम से पुकारा था – अधिकांश संसप्तक या तो प्रशिक्षण मैदान में थे, या अपने नियमित अभ्यास के बाद अपनी बैरकों में लौट आए थे। हवा में लौंग की मीठी खुशबू फैली हुई थी, और विक्रमादित्य की नज़र लौंग के तेल के उस कटोरे पर पड़ी जिससे सलाहकार अपनी तलवार पर तेल लगा रहे थे।
“तुम यहाँ किसलिए आए हो?” कालिदास ने तलवार को सान पर रखते हुए पूछा। “दोस्तों की तरह बात किए हुए काफी समय हो गया,” राजा ने हल्के से कंधे उचकाते हुए कहा। वे सान के पास गए, तलवार उठाई और उसे प्रकाश में रखकर अंगूठे से उसकी धार को महसूस किया। “सचमुच बहुत लंबा समय,” उन्होंने ज़ोर देते हुए कहा और कुछ अभ्यास किए हुए करतबों में तलवार को घुमाकर भारी तलवार का वज़न और संतुलन परखा। सम्राट की तलवार चलाने की सहजता देखकर कालिदास ने स्नेहपूर्ण लेकिन प्रशंसा भरी नज़र डाली।
"अगर मेरी याददाश्त सही है, तो आखिरी बार जब हमने दोस्तों की तरह बात की थी, वह वही दिन था जब नारदा मिलने आया था।"
विक्रमादित्य ने कालिदास को ध्यानपूर्वक देखते हुए सिर हिलाया। “क्या आपका काम पूरा हो गया?” उन्होंने तलवार को मूठ से पकड़कर विशालकाय कालिदास को वापस देते हुए पूछा। सलाहकार को सिर झुकाते देख सम्राट ने अपने

हाथों से तेल पोंछने के लिए एक कपड़ा उठाया। “चलिए, थोड़ी ताज़ी हवा में चलते हैं। यहाँ लौंग की गंध घुटन पैदा कर रही है।”
धूप में कदम रखते ही दोनों मित्र त्वचा पर चमक और गर्माहट का अनुभव कर रहे थे, जो असहनीय नहीं थी। उज्जैन पर बरसी बारिश के बाद यह एक सुखद और उत्साहवर्धक दिन था, जिसने विक्रमादित्य को उन दिनों की याद दिला दी जब वह और कालिदास किसी न किसी रोमांच की तलाश में शहर की गलियों और पार्कों में घूमते थे। यह उनके राज्याभिषेक से पहले की बात है, जब बर्बरों को शहर से बाहर निकालने का भार वरारुचि और आचार्य पर था।
“क्या आप इन दिनों कुछ लिख रहे हैं?” सम्राट ने पूछा। कालिदास ने व्यंग्यात्मक मुस्कान दी। “तलवार और कलम का एक साथ खून बहना कभी तय नहीं था।”
वे कुछ देर चुपचाप चलते रहे – ऐसा लग रहा था मानो उनके पास बात करने के लिए कुछ खास था ही नहीं। स्थिति की निरर्थकता को भांपते हुए, उस विशालकाय व्यक्ति ने विक्रमादित्य की ओर रुख किया। “विशाखा कैसी है?” उसने पूछा, लेकिन अपने मित्र के चेहरे पर छाई उदासी को देखकर उसे तुरंत अपने प्रश्न पर पछतावा हुआ।
“वही हाल है,” सम्राट ने सिर हिलाते हुए कहा। “कुछ भी नहीं बदला है।”
जैसे दृढ़ इच्छाशक्ति से उसने कालिदास का सामना किया। “पर मैं उम्मीद नहीं छोडूंगा,” उसने स्वयं से कुछ कहते हुए, हिम्मत जुटाते हुए कहा। “उसे याद है कि हमने उसे और क्षपणक को भूलभुलैया से बाहर निकलने का रास्ता दिखाया था, और मैंने तुम्हें चट्टान से गिरने से बचाया था। अगर उसे एक बार याद आ गया है, तो उसे दोबारा भी याद आ जाएगा।”
“वह ऐसा करेगी, मेरे मित्र।” कालिदास को उम्मीद थी कि उनकी आवाज़ उनके वास्तविक मन से कहीं अधिक आत्मविश्वासपूर्ण लग रही होगी। हालाँकि, विक्रमादित्य का उदास चेहरा देखकर उन्होंने कहा, “क्या आपको शुक्राचार्य को विदा करने का पछतावा है?”
सम्राट ने कुछ देर सोचा। “अपने लिए तो नहीं, लेकिन मैं समझता हूँ कि उनके होने से बहुतों को लाभ होता। विशाखा, उज्जैन के लोग, बड़ी माँ… आप। यह

जानकर मुझे बहुत दुख होता है।” विक्रमादित्य रुका और अपने साथी के कंधे पर हाथ रखा। “इसके लिए मुझे खेद है, मेरे मित्र।”
“कृपा करके मुझे क्षमा न मांगें, विक्रम,” कालिदास ने सम्राट के हाथ पर अपना हाथ रखकर उसे दिलासा देते हुए थपथपाया। “आपने मेरे लिए जो कुछ भी किया है, उसके लिए मैं पहले से ही आपका ऋणी हूँ; आपकी क्षमा मुझे तोड़ देगी। शुक्राचार्य को जाने के लिए कहकर आपने जो किया, उसमें किसी को कोई संदेह नहीं है। इसके अलावा, आपने राजगुरु की बात सुनी है – हूणों से जुड़े अपने अतीत को दफन कर देना ही मेरे लिए सबसे अच्छा है। श्मशान घाटों पर भटकने वाले भूतों को कभी घर नहीं बुलाना चाहिए।”
विक्रमादित्य ने सहमति में सिर झुकाया। "जब तुम्हें ये दर्शन होने लगे, तो तुमने मुझे इनके बारे में क्यों नहीं बताया?"
“तुम्हारे मन में पहले से ही बहुत कुछ चल रहा था; मैं तुम्हें अपनी समस्याओं से और परेशान नहीं करना चाहती थी। मैं भी उलझन में थी… मुझे… समझ नहीं आ रहा था कि उनका क्या मतलब है… मुझे अभी भी समझ नहीं आ रहा है।” "क्या वे दृश्य अब भी बने हुए हैं?"
"सभी समय।"
“वही वाले? कोई बदलाव नहीं?” सम्राट ने कालिदास को ध्यान से देखा।
पार्षद ने तुरंत जवाब नहीं दिया। “आपको याद है ना वो दृश्य जिसमें मैं आग के पास बैठा हूँ, और एक आदमी खंजर लिए खड़ा है और मुझे पता है वो मुझे चोट पहुँचाने वाला है।” कालिदास यह देखने के लिए रुके कि क्या विक्रमादित्य उनका पीछा कर रहे हैं। “खैर, कल रात, पहली बार, मुझे उस आदमी का चेहरा साफ़ दिखाई दिया। मेरा मतलब है, खंजर वाले का। वही आदमी है जो घोड़े पर सवार होकर मेरा पीछा कर रहा है, मुझे तीर से मारने की कोशिश कर रहा है। वही कठोर चेहरा, माथे पर ह्रीज़ का निशान।”
वे तीरंदाजी क्षेत्र के बगल में एक खुले मैदान में पहुँच गए थे। विक्रमादित्य की नज़र उस खुले स्थान में बने एक छोटे से ढके हुए घेरे पर पड़ी और वे रुक गए। अपने राजा की दृष्टि का अनुसरण करते हुए, कालिदास भी ठहर गए।

परिसर के भीतर, तांबे से बने ग्यारह छोटे कलश एक ऊंचे चबूतरे पर रखे थे। प्रत्येक कलश के मुख पर लाल सूती कपड़े के चौकोर टुकड़े लगे थे, जिन्हें कलशों की छोटी गर्दन के चारों ओर बंधी डोरियों से टिकाया गया था। ग्यारह कलशों में द्वारका की रक्षा करते हुए प्राण त्यागने वाले ग्यारह संसप्तकों की प्रतीकात्मक अस्थियां थीं। संसप्तक परंपरा के अनुसार, जब ग्यारह योद्धाओं ने पहली बार मृत्यु शपथ ली थी, तब कलशों को यज्ञ की अस्थियों से भरा गया था - प्रत्येक संसप्तक ने विशिष्ट इकाई में दीक्षा के भाग के रूप में अपने अंतिम संस्कार स्वयं किए थे। अब जब वे मर चुके थे, उनके कलश शुभ मुहूर्त की प्रतीक्षा कर रहे थे ताकि उनमें समाहित अस्थियों को क्षिप्रा में पवित्र किया जा सके।
“वरारुचि का संदेश आया है कि उन्होंने अवंती को गौरवान्वित किया है,” सम्राट ने कहा। “प्रमुख युगंधर उनके लिए एक स्मारक बनवा रहे हैं। द्वारका में उदयसंग के नाम की एक पट्टिका लगाई जाएगी, जिस पर उन्हें अनर्तों के शाश्वत मित्र की मानद उपाधि से सम्मानित किया जाएगा।” अब विक्रमादित्य ने कालिदास के कंधे पर सांत्वना का हाथ रखा। “तुम्हारे योद्धाओं को वीर के रूप में याद किया जाएगा, मित्र।”
उस विशालकाय व्यक्ति ने जल्दी से सिर हिलाया, लेकिन कुछ देर चुप रहा। “उदयसांग हमारे सबसे अच्छे साथियों में से एक था, और सच्चा मित्र था,” उसने धीमी आवाज़ में कहा। “हूणों ने मुझसे बहुत कुछ छीन लिया है। एक दिन आएगा जब उन्हें इसका हिसाब चुकाना होगा। मैं उस समय का इंतज़ार कर रहा हूँ।”

* * *

“क्या आप सचमुच मुझे देवलोक वापस भेज रहे हैं, स्वामी?”
मेनका की बड़ी-बड़ी, विनती भरी आँखें आशा और राहत से भरी हुई थीं, जब उसने कुबेरा की कोयले जैसी काली आँखों में देखा, फिर भी उसकी आवाज में डर की एक झलक थी, जो इस संदेह से उपजी थी कि यह यक्ष द्वारा खेले जाने वाले कई विकृत खेलों में से एक और खेल तो नहीं था।
यक्ष स्वामी का सिर उनकी छोटी, मांसल गर्दन पर एक तरफ लुढ़का, मानो उन्होंने कंधे उचकाए हों या अनिश्चित रूप से सिर हिलाया हो। रेशमी तकियों से घिरे एक गोल पलंग पर लेटे हुए, अलका झील से उठने वाली धुंध उनके चारों

ओर धूप की तरह घूम रही थी, कुबेर अप्सरा को घूरते रहे, उनका चेहरा कठोर और भावहीन था। उनके पेट और छाती का फैलाव उनकी सांसों के साथ ऊपर-नीचे हो रहा था, लेकिन इसके अलावा, मांस और बालों के उस विशाल पिंड में शायद ही कोई मांसपेशी हिल रही थी।
“हे स्वामी, ऐसा क्यों?” मेनका ने अचानक डरते हुए पूछा, मानो उसने यक्ष को नाराज़ करने के लिए कुछ कर दिया हो। वह अलका के स्वामी को इंद्र का उपहार थी, और चाहे यह कार्य कितना भी घृणित क्यों न हो, अपने नए स्वामी को प्रसन्न करना उसका कर्तव्य था। “यदि मैं अपने कर्तव्य में विफल रही हूँ…” “सौदे के अनुसार, मैं तुम्हें अलका में तभी रख सकता था जब मैं देवताओं के स्वामी की इच्छा पूरी करता,” कुबेर ने अप्सरा की बात काटते हुए कठोर स्वर में कहा। “मैं अपना वादा पूरा नहीं कर पाया, इसलिए तुम्हें वापस भेजा जा रहा है।” यक्ष के मोटे होंठ कड़वी मुस्कान के साथ पीछे हट गए। “कम से कम हम यक्ष अपने वचन का सम्मान तो करते हैं।”
"क्या आप मुझे देवस्वामी को कोई संदेश देना चाहते हैं?" मेनका ने अपने शरीर में उमड़ रही राहत की लहर को रोकने की कोशिश करते हुए पूछा।
“देवलोक में तुम्हारा लौटना ही इंद्र के लिए पर्याप्त संदेश होगा,” कुबेर ने कहा, उनकी निगाहें मेनका पर टिक गईं, उनके सुडौल शरीर को निहारते हुए उनकी दूधिया सफेद कमर पर ठहर गईं। अचानक अपनी सांसों को गले में अटकते हुए महसूस करते हुए, यक्ष ने बड़ी मुश्किल से खुद को संभाला और अपनी धुंधली निगाहें अपने सामने खड़ी उस मोहक आकृति से हटा लीं। उनके हाथ के इशारे से अप्सरा के चारों ओर छाई धुंध छंट गई और दाईं ओर जाने वाली सीढ़ियों का एक छोटा सा रास्ता दिखाई दिया। झील के पानी से लथपथ, सबसे नीचे वाली सीढ़ी पर एक छोटी, अंडाकार नाव खड़ी थी।
“यह नाव आपको दूर किनारे तक ले जाएगी, जहाँ आपको एक पालकी मिलेगी,” कुबेरा ने नाव की ओर इशारा करते हुए कहा। “पालकी आपको अमरावती वापस ले जाएगी। अब जाओ – इससे पहले कि मैं तुम्हारे बारे में अपना विचार बदल दूं।”
यक्ष स्वामी ने मेनका के चारों ओर कोहरे के पूरी तरह से घिर जाने का इंतज़ार किया और फिर चुटकी बजाई। इस बार कुबेर के पीछे का कोहरा छंट गया और उसके हिलते हुए आवरणों के भीतर से दो आकृतियाँ प्रकट हुईं। दोनों यक्ष थे,

कद-काठी और रूप-रंग में भालू जैसे, लेकिन एक लंगड़ाते हुए चल रहा था, उसके कंधे बुरी तरह झुके हुए और विकृत थे। उस विकृत यक्ष को देखकर कुबेर के चेहरे पर आक्रोश छा गया।
उसने नवागंतुकों को आलोचनात्मक निगाहों से देखा, जब वे उसे प्रणाम कर रहे थे, फिर उसने अपंग व्यक्ति को ऐसी घूरती निगाहों से देखा जिससे पत्थर भी पिघल जाता।
“तुम असफल हो गए,” उसने कर्कश स्वर में कहा।
“मुझे क्षमा करें, महाराज, लेकिन यदि महागुरु शुक्राचार्य बीच में न आते तो मैं सफल हो जाता। उन्होंने मानव रानी पर शक्तिशाली सुरक्षात्मक मंत्र डाले थे। मैं उसका कुछ नहीं कर सका।”
“मेरी समझ से शुक्राचार्य बहुत देर से आए,” कुबेर ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा। “आपको रानी को पहले मारने से किसने रोका?”
“महाराज,” यक्ष ने अपनी निगाहें ज़मीन पर टिकाए रखीं। “वह चौकस, फुर्तीला और निडर है। लेकिन मैंने उसे भगा दिया था और महागुरु की कृपा से रानी को मार ही डालता।” कुबेर उठे और धीरे-धीरे कोहरे के घेरे की ओर बढ़े। उनके सामने एक रास्ता खुला और वे उसमें से फिसलते हुए संगमरमर के एक चबूतरे पर पहुँच गए, जिसके दोनों ओर सुगंधित फव्वारे लगे थे, जिनकी धाराएँ ऊपर जाकर एक जगमगाता मेहराब बना रही थीं। फिर भी, चबूतरे पर पानी नहीं गिर रहा था और यक्ष स्वामी के पैरों के नीचे संगमरमर ठंडा लेकिन सूखा था।
“क्या आपको यकीन है कि यह शुक्राचार्य ही थे?”
“जी हां, मेरे स्वामी।” यक्ष अपने अधिपति के पीछे-पीछे चल रहे थे, लंगड़ाते हुए और घिसटते हुए वह आगे बढ़ रहा था। “मैंने उसे तब पहचाना जब उसने मुझसे लड़ाई की थी। वह लगभग मुझे अपने वश में कर चुका था। मेरे पास भागने के अलावा कोई चारा नहीं था, अलका के स्वामी।”
“हमारी बेइज्जती के अलावा, क्या तुम जानते हो कि तुम्हारी इस नाकामी ने हमें और क्या-क्या नुकसान पहुंचाया है?” कुबेर ने पूछा, उसकी आवाज वासना और लालसा से भरी हुई थी, जब उसने एक छोटी नाव को दूर जाते देखा, जो धाराओं और धुंध के अदृश्य प्रेतों के हाथों से खिंची जा रही थी। “इंद्र ने हमें मेनका और एक दर्जन अन्य अप्सराओं को मानव रानी के जीवन के बदले देने का

वादा किया था।” वह मुड़ा और यक्ष पर तिरस्कार भरी नजर डाली। “हमें अकेला छोड़ दो।”
जब वे दोनों छत पर अकेले रह गए, तो कुबेर ने दूसरे यक्ष के बारे में सोचा। "क्या आपको लगता है कि वह शुक्राचार्य थे?"
“जी हां, महाराज,” यक्ष ने उत्तर दिया। “हमारे भाई से कोई गलती नहीं हो सकती। देखिए उसका क्या हाल हो गया है – शरीर और आत्मा दोनों से टूट चुका है। कोई मनुष्य उसके साथ ऐसा नहीं कर सकता, महाराज।”
“देवताओं के स्वामी उस एक चीज़ को नष्ट करना चाहते हैं जो मानव राजा को सबसे प्रिय है। और असुरों के महागुरु समय रहते आकर उसे नष्ट होने से बचाते हैं।” कुबेर ने सोचते हुए अपनी दाढ़ी खुजलाई। “मुझे आश्चर्य होता है कि इस मानव राजा में ऐसी क्या अनोखी बात है।”
“क्या देवलोक के स्वामी ने आपको नहीं बताया, स्वामी?” सेवक ने पूछा। “मैंने पूछा, लेकिन उसने कुछ नहीं कहा। और मैंने उस पर दबाव भी नहीं डाला। कभी-कभी, जब कीमत सही हो तो सौदा मान लेना ही काफी होता है।” कुबेर कुछ पल चुप रहे। “लेकिन अब हमें जानना ही होगा। मैं चाहता हूँ कि तुम इस मानव राजा के बारे में सब कुछ जानो, और यह भी कि देव और असुर उसमें इतनी दिलचस्पी क्यों ले रहे हैं। पता लगाओ कि क्या हम यक्षों को राजा के जीवित रहने से – या उसके विनाश से – कुछ लाभ हो सकता है।”

मेरु

जयंता के कोमल, श्वेत गले से तलवार की नोक कुछ ही इंच दूर थी, देवों के स्वामी इंद्र अपने क्रोध को काबू में रखने की कोशिश कर रहे थे और तलवार उनके हाथ में कांप रही थी। जयंता का चेहरा खून से पीला पड़ गया था, और उनकी आंखें ठुड्डी के नीचे दबी तलवार और अपने पिता के चेहरे के बीच बेतहाशा फड़क रही थीं, जो विशाल सुनहरी दाढ़ी के नीचे लाल और क्रोधित दिख रहे थे। “तुम्हें लगता है कि तुम अपने पिता से बहस करने के लिए काफी समझदार हो?” इंद्र ने दांत पीसते हुए कहा। “तुम अपनी नासमझी भरी साहसिक यात्रा से मुश्किल से ज़िंदा वापस लौटे हो, और तुम मुझे देवलोक के राजा के दायित्व सिखाने की हिम्मत कर रहे हो?”
अपने क्रोध पर काबू पाते हुए, देवदेव ने जयंता के कंधे से अपनी पकड़ ढीली की और पीछे हट गए। अपनी तलवार को म्यान में वापस रखते हुए, वे बृहस्पति की ओर मुड़े और बोले, “हे गुरुदेव, मैंने ऐसा क्या किया है कि मुझे ऐसा पुत्र मिला? यह उसकी माता के असुर रक्त का ही परिणाम है।”
राजकुमार ने बृहस्पति को गुस्से भरी नज़र से देखा, और फिर उनकी निगाह इंद्र के पीछे थोड़ी दूरी पर खड़े नारद पर पड़ी, जिनके होठों पर हल्की सी मुस्कान थी। जयंत की नज़रें फिर उर्वशी पर टिकीं, और शर्मिंदगी की लहर उन पर छा गई, मानो उनके पिता के अपमानों के सैलाब में दब गए हों। अहि को

बुलाने के असफल प्रयास से उनके शरीर में दर्द और पीड़ा अभी भी बनी हुई थी, लेकिन अप्सरा के चेहरे पर उदासीनता का भाव देखकर ऐसा लगा जैसे किसी ने उनकी पसलियों में खंजर घोंप दिया हो।
पिछली रात जब किन्नर अपने क्षत-विक्षत शरीर को अमरावती लेकर आया था, तो उसे अपने पिता, नारद या बृहस्पति से किसी तरह की चिंता या सहानुभूति की उम्मीद नहीं थी। लेकिन उसे आशा थी कि उर्वशी वहाँ मौजूद होंगी, उसे सांत्वना देंगी और देवलोक के लिए उसने जो प्रयास किए थे, उनकी सराहना करेंगी। इसके विपरीत, अप्सरा बस वहीं खड़ी रही, दूर और उदासीन, उसकी इस अपमानजनक स्थिति को देखती रही।
“गुरुदेव और नारद को मंत्र की खोज के बारे में?” उसके पिता की आवाज़ क्रोध, निराशा और आत्म-घृणा के धुंध में से निकली, और जयंता को यह समझने में थोड़ा समय लगा कि इंद्र अभी उससे बात पूरी नहीं कर पाए हैं। “अगर हमें अहि और मंत्र के बारे में पता होता तो अमरावती विनाश से बच सकती थी। क्या तुम्हें यह एहसास है? हम अहि का उपयोग व्यालों से अपनी रक्षा करने के लिए कर सकते थे। क्या तुम्हें यह एहसास है? बिल्कुल नहीं! तुमने अहि को गुप्त रखना चुना, और अब आधा शहर खंडहर में बदल गया है। लेकिन तुम्हें इसकी परवाह क्यों है?”
"पिताजी, मैं तो बस आपको हलाहला से चौंकाना चाहता था," राजकुमार ने अपने बचाव में बुदबुदाते हुए कहा।
“ओह!” इंद्र ने अपने बेटे को बनावटी दिलचस्पी से देखा। “चलो फिर, मुझे चौंकाओ। हलाहल कहाँ है?”
जयंता की ठुड्डी छाती पर झुक गई और वह अपने पैरों की उंगलियों को देखने लगा। “और अहि द्वारा मानव राज्य को नष्ट करने के बाद वीषाद का खंजर पाने की आपकी योजना क्या थी? क्या आपको खंजर के ठिकाने का ज़रा भी अंदाज़ा था? क्या आप उम्मीद कर रहे थे कि विक्रमादित्य खंजर हाथ में लिए आपके पास दया की भीख मांगते हुए रेंगता हुआ आएगा, या आपका इरादा मलबे में से खंजर ढूंढते रहने का था?” इंद्र थोड़ी देर रुके, लेकिन सिर्फ़ सांस लेने के लिए। “मुझे यकीन है कि आपके मन में यह ख्याल कभी नहीं आया होगा कि शहर के आसपास असुर छिपे हो सकते हैं, जो खंजर पर हमला करने के अवसर की प्रतीक्षा कर रहे हों।”

देवराज मुड़े और दक्षिणी पुल की ओर खुलने वाली खिड़कियों में से एक के पास चले गए। कमर पर हाथ रखे, वे एक मिनट तक सूरज के आसमान में आने के साथ-साथ पुल से परछाइयों को धीरे-धीरे हटते हुए देखते रहे। "दफा हो जा, मूर्ख," उन्होंने जयंता को तिरस्कार भरी निगाह से देखते हुए कहा। "जाओ अपनी लकड़ी की तलवारों और कुंद भालों से खेलो। दफा हो जा!"
राजकुमार कमरे में तेजी से आगे बढ़ा, उसने अपना चेहरा बृहस्पति, नारद और उर्वशी से दूर रखा ताकि वे उसकी पलकों से बहते गर्म आँसुओं को न देख सकें, क्योंकि आक्रोश, अपमान और घृणा उसे चारों ओर से जकड़ रही थी।
इंद्र की चौड़ी पीठ तिरस्कार से मुड़ी हुई थी, और जब उनके पुत्र के कदमों की आहट थम गई, तभी उन्होंने मुड़कर कमरे की ओर देखा। उर्वशी तुरंत कोमल और शांत भाव से पास आ गईं। “हे स्वामी, आपको उस पर इतना कठोर नहीं होना चाहिए,” उन्होंने धीरे से कहा। “वह जो कुछ भी करता है, वह केवल आपकी दृष्टि में स्वयं को योग्य साबित करने के लिए करता है। वह केवल आपको यह दिखाना चाहता है कि अब वह एक पुरुष बन गया है।”
“हम्फ!” इंद्र ने एक मेज पर रखे सोमा के गिलास को उठाते हुए तिरस्कारपूर्ण ढंग से अपना सिर हिलाया। “वह बस तुम्हें यह दिखाना चाहता है कि वह मर्द है,” उसने सुधार करते हुए कहा। “तुम ही हो वह बदमाश, और तुम्हें पाने के लिए वह कुछ भी करेगा। और तुम अपनी मुस्कान और रूठने से उसे और बढ़ावा देती हो – मैं सब जानता हूँ, इसलिए इनकार मत करो।”
“क्या मेरे स्वामी अपने पुत्र से ईर्ष्या करते हैं?” अप्सरा ने देवों के स्वामी की ओर पलकें झपकाते हुए पूछा और उनकी गाल पर उंगली फेरते हुए आगे कहा, “क्या मेरे स्वामी को मेरे प्रेम पर संदेह है?”
बृहस्पति ने उसी क्षण इंद्र को संबोधित किया। “उर्वशी सही कह रही हैं, स्वामी,” उन्होंने दो कदम आगे बढ़ते हुए कहा। “आपको जयंत पर इतना कठोर नहीं होना चाहिए। आखिरकार, अब हम जानते हैं कि राजकुमार अही को बुला सकता है, और यह वास्तव में एक दुर्लभ प्रतिभा है – जिसका उपयोग हम आवश्यकता पड़ने पर कर सकते हैं।”
“इससे क्या लाभ होगा?” देवराज ने चिढ़कर पूछा। “वह अही को बुला तो सकता है, लेकिन उस राक्षस को अपने वश में करने की क्षमता उसमें नहीं है। सर्प-

ड्रैगन को वश में करने के लिए दृढ़ इच्छाशक्ति चाहिए। दुर्भाग्य से, जयंता में इसकी कमी है।”
“उनकी इच्छाशक्ति को इस्पात की तरह दृढ़ और मजबूत बनाया जा सकता है,” चैंबरलेन ने जोर देकर कहा। “मैं यह सुनिश्चित कर सकता हूँ कि राजकुमार अपनी इच्छाशक्ति पर नियंत्रण रखने की कला में निपुण हो जाएँ।”
“आप ऐसा कर सकते हैं, यदि आपको लगता है कि इससे कोई लाभ होगा, गुरुदेव।” इंद्र ने बेपरवाही से कंधे उचका दिए। अधीरता से सिर झटकते हुए उन्होंने नारद की ओर देखा। “उस किन्नर का क्या हुआ जो उसे सिंधुवर्त ले गया था? मैं चाहता हूँ कि उसे सार्वजनिक चौक पर कोड़े मारे जाएँ और सबको सबक सिखाया जाए।”
“हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि किन्नरों ने राजकुमार की देखभाल की और उन्हें देवलोक की सुरक्षित जगह पर वापस ले आए, महाराज,” राजनयिक ने विनम्रता से याद दिलाया। “मेरा विनम्र मत है कि हम किन्नर स्वामी त्रिभानु को उचित दंड देने दें। ये कठिन समय हैं और यह उचित है कि हम त्रिभानु जैसे सहयोगियों को अपने साथ रखें।”
“हम्फ!” इंद्र ने फिर से नाक सिकोड़ी, लेकिन नारद के शब्दों की बुद्धिमत्ता ने उन्हें बहस करने से रोक दिया। “जो आवश्यक हो करो, लेकिन त्रिभानु को स्पष्ट कर दो कि कोई भी किन्नर मेरे उस मूर्ख पुत्र की सहायता न करे, चाहे उसे कितना भी प्रलोभन दिया जाए…”
द्वार पर एक विशाल छाया छा गई, जिससे देवताओं के स्वामी इंद्र का ध्यान भंग हो गया। ऊपर देखते हुए इंद्र ने एक गरुड़ को अपने पंख समेटकर दहलीज पार करते देखा। ये खोजी पक्षी लगभग विलुप्त हो चुके थे, लेकिन सौभाग्य से देवताओं के लिए, कुछ गरुड़ उत्तर और पूर्व दिशा में इतनी दूर चले गए थे कि वे व्यालों के शोरगुल भरे हमले से बच गए थे। द्वार पर खड़ा गरुड़ उन्हीं में से एक जीवित बचा हुआ था।
"प्रबल स्वामी को प्रणाम," गरुड़ ने झुककर प्रणाम किया, ये शब्द उसके गले से थकी हुई कर्कश आवाज में निकले।
“क्या बात है?” इंद्र ने अपनी भौंहें चढ़ाते हुए कहा।

“हे प्रभु, मैं असुर राजा हिरण्याक्ष और महागुरु शुक्राचार्य के बारे में समाचार लाया हूँ। हिरण्याक्ष और महागुरु सूर्योदय के कुछ समय बाद असुरों के एक दल के साथ मेरु पर्वत पर पहुँचे। आपके निर्देशानुसार उनका स्वागत किया गया है और वे आपसे मिलने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।”

* * *

व्यापारियों, घुमंतू कारीगरों और अवंती के अपने सैनिकों द्वारा इतनी तेज़ी से फैलते हुए, जो कि नगर उद्घोषकों को भी शर्मिंदा कर देती, उज्जैन में घटी असाधारण घटनाओं की खबरें रायवता से वरारुचि के प्रस्थान के तुरंत बाद उन तक पहुँचने लगीं। उज्जैन की लंबी वापसी यात्रा के दौरान, उन्हें जानकारी टुकड़ों-टुकड़ों में मिलती रही, कभी विश्वसनीय, कभी अविश्वसनीय या कभी स्पष्ट रूप से अतिरंजित। लेकिन यात्रा के दौरान, सम्राट के सौतेले भाई ने उनकी अनुपस्थिति में शहर में घटी घटनाओं का काफी हद तक सटीक विवरण इकट्ठा कर लिया था।
फिर भी, क्षिप्रा नदी पार करके उज्जैन के पश्चिमी द्वार से प्रवेश करते ही उसने जो तबाही देखी, उसके लिए वह बिल्कुल भी तैयार नहीं था। और यद्यपि उसकी वापसी को आधा दिन से अधिक समय बीत चुका था, फिर भी उसका दुख और अविश्वास पूरी तरह से दूर नहीं हुआ था। अब भी, जब वह अमरा सिंह के साथ राजधानी की सड़कों पर घूम रहा था, तो वह तबाह हो चुके उन इलाकों को देखकर दंग रह गया जो शहर के ताने-बाने में फिर से जुड़ने के लिए संघर्ष कर रहे थे।
“आपको विश्वास नहीं होगा कि हूण नौसेना को तबाह करते हुए सर्प को देखकर हम कितने प्रसन्न हुए थे,” उसने अमारा सिंह से सिर हिलाते हुए खेद व्यक्त किया। “किसी को भी यह नहीं पता था कि वह क्या था, कहाँ से आया था और कहाँ गया था, लेकिन द्वारका में हम सभी उस सुबह हमें बचाने के लिए उस जीव के प्रति सदा आभारी थे। काश मुझे उसके असली इरादे का पता होता…” वह अपनी बात अधूरी छोड़ते हुए, उस खुशी में शामिल होने के पश्चाताप में सिर झुका लिया। “इसमें बुरा मानने की कोई बात नहीं है,” अमारा सिम्हा ने कंधे उचकाते हुए कहा। “तुम्हें पता ही नहीं था। और अगर पता भी होता, तो तुम कुछ कर भी नहीं सकते थे।” बलवान पार्षद के होंठों पर एक कड़वी मुस्कान आ गई। “कम से कम उस राक्षस ने हुना बेड़े को नष्ट करके अपना काम तो कर दिया।”

वे कुछ देर तक चुपचाप सवारी करते रहे।
“क्या आपको सम्राट से मिलने का मौका मिला?” अमरा सिम्हा ने पूछा।
“मैं उनसे मिलने गया था, लेकिन वे सो रहे थे।” वरारुचि ने अपने घोड़े की लगाम खींची ताकि रेत और पत्थरों से लदी एक हाथगाड़ी उनके पास से गुजर सके। “मुझे बताया गया था कि वे लगभग पूरी रात विशाखा के पास जागते रहे थे।” अमरा सिम्हा ने सिर हिलाया। “उसे उसकी याद आ गई,” उन्होंने कहा। “यक्ष के हमले से ठीक पहले। इतना करीब, फिर भी इतना दूर। मुझे लगता है कि यही बात विक्रमा को सबसे ज़्यादा दुख पहुँचाती है।” एक पल की चुप्पी के बाद, उन्होंने निराशा भरी आह भरी। “अगर हममें से कोई एक पार्षद उनके साथ होता, तो शायद नतीजा कुछ और होता।”
"कैसे?"
“हमारी… प्रतिभाएँ। जिन्हें देवी ओरेकल उपहार कहती हैं। वे यक्ष के विरुद्ध काम आ सकती थीं।”
“क्या तुम सचमुच शेर बन गए थे?” वरारुची ने जिज्ञासा से अपने साथी की ओर देखा।
“मैंने अपना चेहरा तो नहीं देखा, लेकिन… हाँ, मेरे अंदर का एक हिस्सा ज़रूर देख पाया।” अमारा सिम्हा ने अपनी हथेलियों और बाजुओं को देखा और उंगलियों के सिरों पर उभरे हुए पंजों की याद में अपनी उंगलियां हिलाईं। “जिन्होंने मुझे देखा, उन्होंने कहा कि यह एक अद्भुत दृश्य था।”
“सिर्फ एक बार? आपने दोबारा ऐसा नहीं किया?”
“ऐसा लगता है कि इसके लिए अभ्यास की ज़रूरत होती है। यही बात ज्योतिषी ने शंकु को बताई थी। वह लड़की अपनी इस क्षमता पर काम कर रही है – तुम्हें उसे ज़रूर देखना चाहिए,” अमारा सिम्हा ने आश्चर्य से सिर हिलाया। “जिस तरह से वह अपनी मर्ज़ी से गायब होती है और प्रकट होती है, वह सचमुच डरावना है।” “क्या वह जहाँ चाहे वहाँ जा सकती है?” वरारुची ने अपनी भौहें ऊपर उठाईं। "कुछ मील के दायरे में कहीं भी, हाँ। उसे उस जगह के बारे में पहले से जानकारी होनी चाहिए जहाँ वह जाना चाहती है - वह उन जगहों पर यात्रा नहीं कर

सकती जिनके बारे में उसे कुछ भी पता नहीं है या जहाँ वह पहले कभी नहीं गई है।"
“अब भी प्रभावशाली।” वरारुचि थोड़ा रुके। “क्षपनाका और वराहमिहिर जो कर सकते हैं, वह भी अद्भुत है।”
“क्षपनाका अद्भुत थी। तुम्हें पता है?” अमर सिंह ने वरारुचि की ओर देखा। “वराहमिहिर ने कुछ दिन पहले एक छोटा सा प्रयोग किया। उन्होंने क्षपनाका से एक लक्ष्य पर बारह बाण चलवाए और बाणों के शीर्षों की जाँच करवाई। उन्हें उनमें कुछ भी नहीं मिला – वे केवल साधारण धातु के नुकीले टुकड़े थे। फिर उन्होंने उससे एक और दर्जन बाण चलवाए, लेकिन इस बार उन्होंने यक्ष और विशाखा के बारे में बात करके उसे क्रोधित किया। फिर उन्होंने बाणों के इस समूह की भी जाँच की। तुम्हें पता है उन्हें क्या मिला?”
"ज़हर?" वररुचि ने अनुमान लगाया.
एक क्षण के लिए, अमर सिंह को ऐसा लगा जैसे उन्हें अपनी कहानी के विजयी चरमोत्कर्ष को प्रस्तुत करने के आनंद से वंचित कर दिया गया हो। “हाँ,” उन्होंने उदास भाव से कंधे उचकाते हुए कहा, लेकिन वे तुरंत संभल गए। “क्षपनाका का वरदान क्रोध से प्रेरित है। वराहमिहिर को लगता है कि मेरा वरदान भी शायद क्रोध से प्रेरित है। और…” वे नाटकीय ढंग से रुके और अपने घोड़े को घुमाकर वररुचि की ओर मुड़े। “वराहमिहिर को लगता है कि बाज़ार चौक में राक्षस को गिराने वाली आपकी छलांग ही आपका वरदान है। हमने हूणों के जहाज पर उनसे युद्ध करते हुए आपके कुछ असंभव कारनामों के बारे में भी सुना है।”
“मैं इसके बारे में सोच रहा था,” राजा के सौतेले भाई ने स्वीकार किया। “मुझे चिंता हो रही थी… आख़िरकार, यह स्वाभाविक नहीं है। लेकिन हाँ, अब जब मुझे एक पैटर्न दिख रहा है…” उसने सीधे अमारा सिंह की ओर देखा। “यह सब अचानक कैसे हो रहा है? ये उपहार या जो भी आप इसे कहते हैं, कहाँ से आए?” “बिल्कुल पता नहीं। मुझे भी उतनी ही जानकारी नहीं है जितनी…” अमारा सिम्हा अचानक रुक गए, उनकी नज़र वरारुचि के थोड़ा ऊपर और पीछे एक बिंदु पर पड़ी। “अरे, देखो तो कौन आया है,” उन्होंने कहा।

अपने दाहिने कंधे पर नज़र डालते हुए, वरारुचि ने देखा कि कालिदास उसके ठीक पीछे स्थित दो मंजिला इमारत से नीचे उतरने वाली खुली सीढ़ियों के चबूतरे पर खड़े थे। विशालकाय कालिदास सीढ़ियों से नीचे उतर रहे थे जब उन्होंने सड़क पर दो सलाहकारों को देखा, और अब वे एक अजीब, मग्न भाव से वरारुचि को घूर रहे थे।
“कालिदास, नमस्कार…” वरारुचि ने कहा। फिर कवि के चेहरे पर असमंजस का भाव देखकर उन्होंने हल्के से भौंहें चढ़ाईं। “क्या कोई बात है?”
उस दैत्य ने दो-तीन बार पलकें झपकाईं और अपना सिर एक तरफ झुकाया, मानो किसी बात पर विचार कर रहा हो। "मैं... नहीं, कुछ नहीं," उसने सिर हिलाया। "तुम कब लौटे?"
“बस आज सुबह ही।”
“तुम यहाँ क्या कर रहे हो?” अमारा सिम्हा ने पूछा।
“द्वारका जाने वाले संसप्तकों में से एक यहीं रहता था,” दैत्य ने वरारुचि की ओर सिर हिलाते हुए उत्तर दिया। “ग्यारह में से एक जो वापस नहीं लौटा। वह अपने पीछे एक बूढ़े पिता और एक बहुत छोटे भाई को छोड़ गया है। उनका कोई और नहीं है, इसलिए मैं उनसे मिलने आया हूँ।”
“मुझे खेद है,” वरारुचि ने धीरे से कहा और उस घर की ओर देखा जिससे कालिदास बाहर निकले थे।
“चिंता मत करो, भाई,” उस विशालकाय व्यक्ति ने कहा। “वह शपथ का पालन करने वाला योद्धा था, और उसने बहादुरी से लड़ाई लड़ी और वीरगति को प्राप्त हुआ। यही उसकी अमर स्मृति बनी रहे। मैंने बूढ़े और बच्चे को भी यही बताया था।” वररुचि ने स्वीकृति में अपना सिर झुकाया।
“क्या आप महल लौट रहे हैं?” अमर सिंह ने पूछा। कालिदास को सिर हिलाते देख उन्होंने भी सिर झटक दिया। “चलिए फिर। हम भी उसी तरफ जा रहे हैं।”
“मेरा घोड़ा दूसरी तरफ बंधा है,” उस दैत्य ने एक गली की ओर इशारा करते हुए कहा। “आगे बढ़ो। मैं उसे ले आऊंगा और तुम्हारे साथ आ जाऊंगा।”
वररुचि और अमर सिंह ने अपने घोड़ों को आगे बढ़ाया, तभी कालिदास एक संकरी गली में मुड़ गए। धूप से जगमगाते संकरे, चौकोर फुटपाथ पर चलते हुए,

विशालकाय कालिदास ने एक बार फिर पलकें झपकाईं, मानो कोई विचार—या कोई जागरूकता?—को याद करने की कोशिश कर रहे हों, जो सीढ़ियों से उतरते समय उनके मन में एक प्रेत की तरह कौंध गई थी। एक पल पहले वह वहां थी, धुंध में एक हिरणी—घास में एक सांप?—लेकिन अगले ही पल वह गायब हो गई, मन की आंखों में एक परछाई बनकर, वास्तविकता से कहीं अधिक काल्पनिक।
कालिदास ने अपने दिमाग के हर कोने में उस विचार का कोई अंश खोजने की कोशिश की ताकि वह फिर से उस राह पर चल सके, लेकिन वह जो भी था, वह उससे दो कदम आगे ही रहा, उससे बचता रहा।

* * *

"हमें खुशी है कि पाताल के स्वामी देवताओं के साथ सहयोग करने में अवसर देख रहे हैं।"
पॉलिश की हुई सागौन की लकड़ी के उस लंबे फर्श के उस पार से, जहां ऋषि कश्यप के वंशजों के दो अलग-थलग समूह बातचीत के लिए बैठे थे, नारद ने हिरण्याक्ष और शुक्राचार्य पर एक चमकदार, कृत्रिम मुस्कान बिखेरी।
राजनयिक के तमाम सद्भावना और उत्साह के बावजूद, भव्य मंडप में बैठे लोगों में उत्साह की कमी साफ झलक रही थी, और हिरण्याक्ष और इंद्र एक-दूसरे को घूरने का कोई मौका नहीं छोड़ रहे थे, जिससे माहौल तनावपूर्ण हो गया था। शुक्राचार्य और बृहस्पति ने अपने छिपे हुए द्वेष से स्थिति को और बिगाड़ दिया, और हिमवंता के जंगल से बहने वाली धुंध भरी हवा - देवदारु, नरिलता और सौ प्रकार के जंगली ऑर्किड की सुगंध से भरी हुई - भी उस छोटे से समूह पर कोई सुकून देने वाला प्रभाव नहीं डाल पाई।
“यह अवसर का प्रश्न नहीं है। यह आवश्यकता का प्रश्न है,” शुक्राचार्य ने संक्षिप्त रूप से उत्तर दिया।
“किसकी ज़रूरत?” बृहस्पति ने तीखे लहजे में पूछा। “तुम्हारी या हमारी?” प्रधान पुजारी ने दरबारी को तीखी नज़र से देखते हुए उत्तर दिया, “गुरुदेव, यदि आप हमारी समस्या को बेहतर ढंग से समझ पाते तो यह प्रश्न अनावश्यक होता। लेकिन जैसा कि आपने कृपापूर्वक पूछा है, मैं आपको बता दूं कि यह आवश्यकता हम दोनों की है।”

शुक्रचार्य के इस दुस्साहस पर नारद मन ही मन आहत हुए और बृहस्पति के तीखे जवाब के लिए खुद को तैयार कर लिया। दोनों के बीच की प्रतिद्वंद्विता जगजाहिर थी, जो उस समय से चली आ रही थी जब वे देवलोक के दरबारी अंगिरा के शिष्य थे। प्रतिभा और लगन में दोनों बराबर थे, फिर भी आम राय यही थी कि शुक्रचार्य उनसे कहीं बेहतर शिष्य थे और देवताओं के आध्यात्मिक गुरु के रूप में अंगिरा के उत्तराधिकारी बनने की सबसे अधिक संभावना उन्हीं की थी। हालांकि, कई लोगों को आश्चर्यचकित करते हुए, नए दरबारी के अभिषेक के समय, अंगिरा ने शुक्रचार्य के बजाय अपने पुत्र बृहस्पति को चुना। बिना संघर्ष किए हार मानने वालों में से नहीं, शुक्रचार्य ने अंगिरा पर पक्षपात का आरोप लगाया और मामले का फैसला करने के लिए देवलोक की परिषद से अपील की। यह कभी पता नहीं चल पाएगा कि यह अंगिरासा के प्रति सम्मान के कारण था या फिर किसी भी तरह की गड़बड़ी से बचने की सामान्य अनिच्छा के कारण, लेकिन देवताओं ने अंगिरासा के निर्णय को पलटने से इनकार कर दिया - एक महंगी गलती, जिसे नारद ने बाद में निजी तौर पर अक्सर खुद स्वीकार किया था।
अपनी प्रतिष्ठा दांव पर लगाकर चुनौती देने वाले शुक्राचार्य को घोर अपमान का सामना करना पड़ा – साथ ही, देवलोक के नए दरबारी बृहस्पति की नाराजगी भी झेलनी पड़ी। अंगिरासा की मनमानी को घोर चाटुकारिता और योग्यता के स्थान पर भाई-भतीजावाद को बढ़ावा देने से क्रोधित होकर, युवा ऋषि ने देव परिषद से प्रतिशोध लेने की शपथ ली और अमरावती छोड़कर पाताल लोक चले गए, जहाँ उन्होंने द्वेषवश असुरों को अपनी सेवाएँ प्रदान कीं। असुरों ने तुरंत शुक्राचार्य को अपना महायाजक बना लिया, जिससे अंगिरासा के पूर्व शिष्यों के बीच घृणा और भी बढ़ गई।
“जरूरत,” इंद्र ने दरबारी की जगह जवाब दिया। “तुम ऐसे बोल रहे हो जैसे तुम्हें मानव राजा से बहुत डर लगता हो। उसके हाथों एक हार से तो शक्तिशाली असुरों का लड़ने का मन ही नहीं बचेगा।” देवों के स्वामी ने नारद से बृहस्पति की ओर देखा, उनके होठों पर एक हल्की मुस्कान थी।
“एक हार किसी इंसान के हाथों तीन हार से कहीं अधिक गरिमापूर्ण होती है।” अब हिरण्यक्ष की बारी थी व्यंग्य को और बढ़ाने की।
नारद निराश महसूस कर रहे थे। उन्होंने शांति वार्ता के लिए दोनों पक्षों को एक साथ लाया था, लेकिन पहले अविश्वास और विश्वासघात के इतिहास को पार

करना था। यहीं, इसी मंडप में, मेरु पर्वत की मठवासी छाया में, पुलमन की मृत्यु हो गई थी जब शांति के आह्वान पर हुई बैठक शब्दों के युद्ध में बदल गई और स्थिति नियंत्रण से बाहर हो गई; राजनयिक को चिंता थी कि वे फिर से उसी राह पर जा रहे हैं।
“आप सही कहते हैं कि मुझे डर है कि मानव राजा को हराया नहीं जा सकता,” शुक्राचार्य ने गंभीर स्वर में कहा, जिससे सभी लोग आश्चर्य से उनकी ओर देखने लगे। “हमने यह कठिन परिश्रम से सीखा है, और आपने भी।”
“एक-दो हार का मतलब यह नहीं कि उसे हराया नहीं जा सकता,” इंद्र ने जवाब दिया, लेकिन उनके स्वर से अहंकार अचानक गायब हो गया और उसकी जगह संदेह ने ले ली। “आखिरकार, वह भी इंसान ही है।”
“हमने अंधका और पिशाच सेना भेजी थी। आपने अश्विनी बंधु, मरुत और अही भेजे।” मुख्य पुरोहित ने देखा कि सर्प-ड्रैगन का नाम सुनते ही देवता एक-दूसरे को चोरी-छिपे देख रहे थे, और वह सोचने लगा कि ऐसा क्यों हो रहा है। “कोई सोचेगा कि इतना तो किसी भी शत्रु को हराने के लिए काफी होगा। लेकिन मानव राजा अभी भी डटा हुआ है। मैंने राजा के महल में बहुत समय बिताया है, इसलिए…”
“तुम राजा के महल में थे?” बृहस्पति ने अचानक कहा, सदमे से उसने महायाजक के प्रति अपनी सामान्य शत्रुता को त्याग दिया।
“मैं वैषद के खंजर तक पहुँचने का रास्ता खोज रहा था,” शुक्राचार्य ने अपने हाथ फैलाते हुए आश्चर्यजनक स्पष्टता से कहा। “यह एक लंबी कहानी है, लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि मैंने इतना देख लिया कि मुझे यह एहसास हो गया कि उसे न तो आप, न हम – और न ही हम दोनों मिलकर हरा सकते हैं। कम से कम अभी तो नहीं।”
“महागुरु, क्या मैं आपसे पूछ सकता हूँ कि आपको इतना यकीन किस बात से है?” नारद ने शुक्राचार्य की ओर गौर से देखा।
“नौ मोतियों के बारे में आप क्या जानते हैं?”
देवताओं ने एक-दूसरे की ओर देखा। “नौ पवित्र मोती?” इंद्र के माथे पर संदेह भरी शिकन आ गई। “वे अस्तित्व में नहीं हैं। यह तो सभी जानते हैं।”

“कुछ समय पहले तक, अमरावती में आप सभी यही मानते थे कि व्याल नामक राक्षस अस्तित्वहीन हैं।” शुक्राचार्य ने देखा कि उन भयानक राक्षसों का नाम सुनते ही देवताओं के चेहरे काले पड़ गए। “कुछ समय पहले तक, पाताल में हम यही मानते थे कि अहि को जगाने वाला मंत्र हमेशा के लिए नष्ट हो चुका है।” “तो नौ मोती मौजूद हैं। उनके बारे में क्या?” बृहस्पति ने पूछा। “विक्रमादित्य की नौ योद्धाओं की एक परिषद है। उनमें से प्रत्येक नौ मोतियों में से एक को धारण करता है।” मुख्य पुरोहित मेज के पार बैठे तीनों देवताओं का आकलन करने के लिए रुका। “मैंने देखा और सुना है कि मोतियों की शक्तियाँ परिषद के सदस्यों में कैसे प्रकट होती हैं। उनमें से एक विष से अप्रभावित है, दूसरा नर-सिंह में रूपांतरित हो जाता है, जबकि तीसरा इच्छा अनुसार प्रकट और लुप्त हो सकता है। मैं उनमें से एक के ठीक बगल में था जब उसने अही के विष को रोकने के लिए हवा से एक ऊर्जा ढाल उत्पन्न की। और आपको पता है सबसे रोचक बात क्या है? उनमें से अधिकांश को यह भी नहीं पता कि वे क्या कर रहे हैं, उनके पास कौन सी शक्तियाँ हैं। वे इन शक्तियों को पहली बार देख और उपयोग कर रहे हैं।”
“इन्हें ये शक्तियां कैसे प्राप्त हुईं?” इंद्र ने घबराते हुए पूछा।
“इन शक्तियों का होना तो हमेशा से ही स्वाभाविक था, बस इन्हें सुरक्षित रूप से छिपाकर रखा गया था। मैंने ही इन्हें जागृत किया,” शुक्राचार्य ने शरमाते हुए सिर हिलाया। “जब मरुत वीषाद का खंजर लेने आए, तो मैंने उज्जैनी पर पुनर्जन्म का मंत्र पढ़ा ताकि राजा की सेना अधिक शक्तिशाली हो जाए और हमले का सामना कर सके। दुर्भाग्यवश, मंत्र का असर कुछ ज़्यादा ही हो गया। इसने मोतियों की सुप्त शक्ति को जगा दिया और उन्हें सबके सामने ला दिया।” “तुम बिलकुल नहीं बदले,” बृहस्पति का लहजा व्यंग्यपूर्ण और चिड़चिड़ा था। “पिताजी की देखरेख में भी तुम जल्दबाज़ी करते थे, बिना सोचे-समझे काम करते थे। देखो तुम्हारी इस जल्दबाज़ी ने हमें कहाँ पहुँचा दिया है।”
“क्षमा कीजिए, महागुरु,” नारद ने बीच में दखल देते हुए एक और गरमागरम बहस को शुरू होने से पहले ही रोक दिया। “मुझे समझ नहीं आ रहा कि नौ मोती राजा को हराने में बाधा कैसे बन सकते हैं।”

“नौ मोती शक्तिशाली चीजों को नुकसान से बचाने के लिए बनाए गए हैं – यह कुछ भी हो सकता है, कोई स्थान, ऊर्जा स्रोत… या, जैसा कि इस मामले में है, मानव राजा। यह कोई संयोग नहीं है कि सभी नौ मोती धारण करने वाले राजा के सलाहकार हैं। यही नियति है। नौ मोती परस्पर निर्भर हैं और एक-दूसरे से शक्ति प्राप्त करते हैं, प्रत्येक मोती की शक्ति बढ़ने के साथ-साथ वे और भी मजबूत होते जाते हैं। यह एक सकारात्मक चक्र है। और वे जितने मजबूत होते जाते हैं, उतनी ही बेहतर तरीके से वे उस चीज की रक्षा करते हैं जिसकी रक्षा के लिए उन्हें बनाया गया है।” मुख्य पुरोहित ने अपने शब्दों को समझने के लिए कुछ देर रुककर कहा, “देखो, हम किस समस्या का सामना कर रहे हैं?” देवदार के जंगलों में हवा की सरसराहट और एक छिपे हुए पहाड़ी झरने की कलकल ध्वनि ने मंडप पर छाए सन्नाटे को तोड़ दिया। सागौन की मेज के चारों ओर बैठे लोगों के बीच से धुंध छंट रही थी, और सामने आने वाली चुनौती के गंभीर अहसास ने उनके भीतर के जुझारूपन को क्षीण कर दिया था।
“तुम्हें इसका कोई न कोई हल जरूर दिख गया होगा,” इंद्र ने हिरण्याक्ष से शुक्राचार्य की ओर देखते हुए कहा। “तुम पाताल से इतनी दूर सिर्फ यह बताने के लिए तो नहीं आए होगे कि यह संभव नहीं है।”
“ओह, एक रास्ता है,” प्रधान पुजारी मुस्कुराए। “हमेशा कोई न कोई रास्ता होता है।” उन्होंने मेज के चारों ओर देखा, उनके चेहरे से मुस्कान गायब हो गई। “जब तक नौ की परिषद एकजुट रहेगी, राजा को कुछ नहीं हो सकता। इसके विपरीत, राजा तक पहुँचने के लिए, हमें केवल नौ मोतियों के बीच के बल को कमजोर करना होगा। हमें मोतियों के बीच दरार डालनी होगी, और फिर उन्हें लगातार अलग करते रहना होगा।”
“हम पार्षदों को आपस में बांधने वाली कड़ी को तोड़ देंगे। उनकी एकता को तोड़ देंगे,” नारदा ने कहा। “कैसे?”
महापुजारी के चेहरे पर भेड़िया जैसी मुस्कान खिल उठी। “जब मैं महल में था, तब मुझे राजा और सलाहकारों को करीब से देखने का अवसर मिला, और उज्जैन छोड़ने के बाद, मैंने उनके बारे में हर संभव जानकारी हासिल करने का प्रयास किया। मैंने कुछ गहरे राज़ और कड़वी सच्चाइयाँ खोजी हैं जो राजा और उनकी परिषद को विभाजित कर सकती हैं – ऐसी गहरी दरारें, जिनके बारे में मनुष्य स्वयं अभी तक अनजान हैं, और जिनका लाभ हम उठा सकते हैं। मेरी कुछ मदद से,

उनकी एकता में पहली दरार पैदा करने की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है – किसी भी क्षण, वह दरार खुलकर सामने आ जाएगी। लेकिन यह तो बस शुरुआत होगी। महल को बीचोंबीच से विभाजित करने की भी संभावना है –” अपने हाथों को आपस में रगड़ते हुए, शुक्राचार्य ने इंद्र की ओर टकटकी लगाई, “–लेकिन इसके लिए मुझे आपकी मदद की ज़रूरत होगी। यही वह बदला हो सकता है जिसके लिए आप तरस रहे हैं।”
“महागुरु, मुझे बताइए कि मुझे क्या करना चाहिए।”
शुक्राचार्य ने अपनी योजना का विस्तार से वर्णन करना शुरू किया, और अपनी शत्रुता को त्यागते हुए, इंद्र और हिरण्याक्ष विक्रमादित्य पर आने वाली विपत्तियों की प्रत्याशा में एक-दूसरे के करीब आ गए।

घुड़सवार

जब कालिदास उबलते हुए फव्वारे पर झुके हुए थे, तो उनके सिर, गर्दन और कंधों से पानी की धाराएँ बह रही थीं। उन्होंने सहारा लेने के लिए अपने हाथों को फव्वारे के पथरीले किनारे पर टिका रखा था और नीचे गहरे, चमकते पानी के विशाल कटोरे में देख रहे थे। उनकी परछाईं लहरों के बीच तैर रही थी, तारों भरे आकाश में एक धुंधली आकृति सी दिख रही थी।
“नहीं, थ्रा’आखा… नहीं!”
कूदो, थ्रा’आखा… कूदो!
“क्या सब ठीक है, माननीय न्यायाधीश?”
कालिदास चौंककर मुड़े। चबूतरे के किनारे, सलाहकारों के शयनकक्षों की ओर जाने वाली गैलरी के ठीक बगल में, छाया में एक संतरी खड़ा था। वह सिपाही असमंजस में था, संसप्तक सेनापति के पास जाने को लेकर दुविधा में था। “हाँ… मैं ठीक हूँ,” उस विशालकाय व्यक्ति ने झट से कहा। “बस गर्मी लग रही है। आप जा सकते हैं।”
संतरी ने झुककर अभिवादन किया और महल की रात्रिकालीन निगरानी में लौट गया। कालिदास ने उसके ओझल होने का इंतज़ार किया और फिर धीरे-धीरे भारी कदमों से अपने कमरे की ओर चल दिए। फव्वारे से उनके शयनकक्ष तक की दूरी मुश्किल से

बीस कदम थी, लेकिन जब तक सलाहकार ने दरवाजा बंद किया, उनके माथे पर फिर से पसीना आ चुका था और वह उनकी गर्दन और जबड़े से बह रहा था।
“नहीं, थ्रा’आखा… नहीं!”
नींद में ही, अचानक ही, उसे समझ आ गया था कि धनुष-बाण लिए खड़ा आदमी क्या चिल्ला रहा है। उसे वे शब्द भी समझ आ गए थे जो उस आदमी के जवाब देने से पहले ही उसके होंठों से चीख के रूप में निकल गए थे, जिसमें उसे कूदने के लिए उकसाया गया था।
“बा… उन्नू पाहज़े!” पिताजी, मेरी मदद करो!
पिता।
धनुष खींचे हुए पीछे का गहरा चेहरा, रेगिस्तान की धूप से तपा हुआ।
घुंघराली दाढ़ी और खूंखार काली मूंछें, समय के साथ धुंधली होती गईं।
शिकारी जैसी भयंकर काली आंखें, जो उस पर टिकते ही कोमल और गर्व से चमक उठती थीं। माथे पर बाल, मजबूत, काले और ताबीज जैसे। पिता।
“तुम्हारा नाम क्या है?”
उसे याद था कि वह अनुष्ठानिक अग्नि के सामने बैठा अपने पिता को पवित्र ज्वालाओं में कटार को तराशते और शुद्ध करते हुए देख रहा था, जबकि पुजारी रेगिस्तानी बिच्छू को प्रसन्न करने के लिए प्राचीन भजन गा रहे थे। उसे याद था कि चमकती कटार को देखकर उसके मन में भय का संचार हो रहा था। उसे याद था कि वह मन ही मन सोच रहा था कि क्या यह कटार उसके माथे की त्वचा और मांस को काटते और खरोंचते समय बहुत दर्द देगी।
“ज़ाह, ज़ाह,” उसके पिता ने हल्की सी हंसी के साथ जवाब दिया। बिलकुल नहीं। आग की रोशनी में कटार की धार को परखते हुए उसने कहा, “अ’हिय ह’लुमी? ज़ुह ते’ई गा’उर थ्रा’अखा।” क्या दर्द? तुम गा’उर थ्रा’अखा हो, स्वयं मृत्यु का वरदान। “इनियामगो दु’ज़… दुज़’उर ज़ो ए’रामी।” इसके अलावा, तुम मेरे पुत्र हो… ज़ो ए’रामी के पुत्र, निडर ज़ो।
कालिदास को भी वह शिकार याद था। वे सब खुले मैदान में हिरणों के झुंड का पीछा करते हुए दौड़ रहे थे। यह उनका पहला शिकार था, और वे उत्साह से भरे हुए थे क्योंकि उनके पिता और उनके साथियों ने पहले हिरणों का पीछा किया,

फिर उन्हें घेर लिया और बड़ी कुशलता से उनका शिकार किया। वे हथियार चलाने के लिए बहुत छोटे थे, लेकिन पीछा करने का रोमांच फिर भी बहुत तीव्र था… फिर अचानक, बिना किसी चेतावनी के, उसका घोड़ा बेकाबू होकर भाग गया।
वह बेकाबू घोड़े को कसकर पकड़े बैठा था, और यह महज़ किस्मत की बात थी कि उसके पिता की नज़र मैदान के किनारे घने जंगल की ओर तेज़ी से भागते हुए उस पागल घोड़े पर पड़ी। उसके पिता ने उसका पीछा किया और चिल्लाते हुए उसे घोड़े से कूदने के लिए कहा, इससे पहले कि वह पेड़ों और झाड़ियों में जा टकराए। लेकिन डर के मारे वह सुन्न पड़ गया था और अपने पिता के आदेशों को अनसुना करते हुए घोड़े की गर्दन से चिपका रहा। आख़िरी कोशिश में, उसके पिता ने अपना धनुष उठाया और तीर से घोड़े को रोकने के इरादे से निशाना साधा।
"नहीं, थर'अखा...नहीं!" कूदो, थरखा। कूदना!
शायद डर था, शायद पिता के शब्द आखिरकार उसके दिल को छू गए थे, लेकिन वह घोड़े से कूद गया, ज़मीन पर ज़ोर से गिरा और उछलता-कूदता हुआ लुढ़क गया... उसका कंधा अपनी जगह से हट गया; घोड़ा जंगल में गायब हो गया और फिर कभी दिखाई नहीं दिया।
अपने कक्ष में खड़े होकर, अनमने ढंग से अपने सुगठित सीने और कंधों से पसीना और पानी पोंछते हुए, कालिदास को अचानक कुछ और याद आया। धुआँ। चारों ओर सफेद धुएँ के घने गुबार उठ रहे थे, जिनमें जलती हुई लकड़ी और झुलसे हुए मांस की गंध भरी हुई थी।
उसे याद आया कि वह पेट के बल लेटा हुआ था और नीचे घाटी में देख रहा था जहाँ कुछ इमारतों में आग लगी हुई थी। उसे याद आया कि सैनिकों का एक समूह चार कैदियों - तीन महिलाएं, एक पुरुष, सभी जंजीरों में जकड़े हुए - को एक अनाज भंडार में ले जा रहा था। फिर सैनिकों ने अनाज भंडार में आग लगा दी, जिससे कैदी जिंदा जल गए।
पार्षद की कांपती उंगलियों से तौलिया गिर गया। धुएं और धधकते अन्न भंडार की याद आते ही वह कांप उठा। उसका गला सूख गया था, मानो उन लपटों की गर्मी ने उसे क्षीण कर दिया हो। कमरा उसकी आंखों के सामने धुंधलाने लगा, कभी एक तरफ झुकता, कभी दूसरी तरफ डगमगाता। कालिदास पास की दीवार की ओर लड़खड़ाते हुए

गए और उस पर पीठ टिकाकर सहारा लेने लगे। उन्होंने घुटने मोड़े और ज़मीन पर बैठ गए।
जिस व्यक्ति को सैनिकों ने अनाज भंडार में धकेल दिया था, वह ज़ो एरामी था। हूना सरदार। बा। पिता। बलवान, अडिग, अपनी अंतिम सांस तक सिर ऊंचा रखने वाला। वे महिलाएं... उनमें से एक उसकी बड़ी बहन, एइही थी। एक विधवा चाची। तीसरी चाची की बेटी। अनाज भंडार से महिलाओं की चीखें सुनाई दे रही थीं, तभी एक और आवाज़ उसके कानों में गूंजी - चप्पल पहने पैरों की धमक, जो करीब आती जा रही थी। और इस पूरे समय उसकी निगाहें घुड़सवार पर टिकी थीं।
घुड़सवार। वही जिसने अपने परिवार के अंदर फंसे होने के बावजूद अनाज भंडार को आग लगाने का आदेश दिया था। सैनिकों का नेता। उसमें कुछ जाना-पहचाना सा था, जिस तरह वह काठी पर बैठा था, उसके बाएं कंधे का हल्का सा झुकाव...
तभी सब कुछ उबलते, उग्र ज्वार की तरह उस विशालकाय प्राणी के सामने लौट आया। सब कुछ।

* * *

भारी दरवाजे के चरमराने की आवाज सुनकर विक्रमादित्य ने ऊपर देखा तो प्रलूपी असंकोच ढंग से कमरे में दाखिल हुई।
“मुझे आपसे बात करनी है, विक्रमा।” राजकुमारी तीन कदम आगे बढ़ी और रुक गई, होंठ कसकर बंद किए राजा के जवाब का इंतज़ार करने लगी। अगर उसने विशाखा को अपने बिस्तर पर पीली और उदास लेटे हुए देखा भी, तो उसने इसका कोई संकेत नहीं दिया, और रानी की देखभाल के लिए नियुक्त दोनों दासियों और महिला को पूरी तरह से अनदेखा कर दिया।
सम्राट ने अपनी बहन की ओर आश्चर्य से भौंहें उठाईं, उसके चेहरे पर दिख रही थकान और आंखों के नीचे काले घेरे देखकर। "मुझे नहीं पता था कि उज्जैन में आपका इंतज़ार हो रहा है," उन्होंने कहा। "आप कब आईं?"
“कल रात।” प्रलूपी का लहजा अचानक बदल गया। “क्या हम बात कर सकते हैं?” विक्रमादित्य ने खुली खिड़की से बाहर झाँका। सूरज अभी क्षितिज से पूरी तरह नहीं निकला था, और झील पर अब भी घना कोहरा छाया हुआ था। लहराते रेशमी पर्दों से छनकर आती हवा में हल्की ठंडक थी जिससे राजा के हाथों पर रोंगटे खड़े हो गए। “अभी सुबह है। शायद जब आप ठीक से आराम कर लें तब…”

“मैंने काफी आराम कर लिया है।” प्रलूपी ने अपनी बाहें मोड़ीं और सीधे खड़ी हो गई ताकि कमरे में मौजूद सभी लोगों को उसका इरादा स्पष्ट हो जाए। विक्रमादित्य ने आह भरी। जहाँ तक उन्हें याद था, प्रलूपी का स्वभाव हमेशा से ऐसा ही था। जिद्दी और अपनी बात मनवाने वाली, हर बार अपनी मनमानी करने पर तुली रहती थी। उम्र ने उनकी बहन से बहुत कुछ छीन लिया था, लेकिन अफसोस की बात है कि उसकी कठोर हठधर्मिता पर कोई असर नहीं पड़ा था।
सिर हिलाकर राजा रानी के बगल से उठे। उन्होंने विशाखा को स्नेह भरी नज़र से देखा और झुककर उसके कान के पीछे से निकले बालों की लट को ठीक किया। उनकी उंगलियाँ उसके गाल पर फिर गईं, उसकी त्वचा को हल्के से छू गईं, मानो एक कोमल स्पर्श हो, और फिर वे बिस्तर से उठकर कार्यशैली में आगे बढ़ गए। “आओ,” उन्होंने प्रालूपी से कहा और दरवाजे की ओर इशारा किया।
जब तक भाई-बहन गैलरी के दूसरे छोर पर बने चबूतरे से सटे एक निजी कोने में नहीं पहुँच गए, तब तक उनके बीच एक भी शब्द का आदान-प्रदान नहीं हुआ। सम्राट ने यह सुनिश्चित करने के लिए रुककर देखा कि वे दोनों अकेले हैं, फिर प्रलूपी की ओर मुड़े। "तो ऐसी कौन सी नई समस्या है जो आपको उज्जैन तक ले आई है?" उन्होंने बिना किसी भूमिका के पूछा।
"शशिवर्धन को वत्स के सिंहासन का उत्तराधिकारी घोषित कराने के पीछे आपका हाथ था।"
अचानक हुए इस आश्चर्य से घबराकर विक्रमादित्य ने अपनी बहन की ओर पलकें झपकाईं। अंत में, उसने हल्के से कंधे उचका दिए, मानो कोई प्रतिक्रिया ही न दे रहा हो।
“क्यों?” प्रलूपी का लहजा तीखा था। “मुझे लगा था कि हमारी यह सहमति थी कि आप चंद्रवर्धन को घातकपारा को अगला राजा बनाने के लिए मना लेंगे।”
“कैसी समझ?” विक्रमादित्य ने आश्चर्य से प्रलूपी की ओर देखा। “मैंने स्पष्ट कर दिया था कि मैं राजा चंद्रवर्धन को इस संबंध में कुछ भी नहीं बताने वाला हूँ। मैंने तुम्हें बताया था कि वत्स के सिंहासन का उत्तराधिकार वत्स का आंतरिक मामला है, और मैं इसमें किसी भी तरह से हस्तक्षेप नहीं करूँगा।”

“लेकिन इससे तुम्हें चंद्रवर्धन को बहला-फुसलाकर शशिवर्धन को अगला राजा घोषित करवाने के लिए धनवंतरी को भेजने से नहीं रोका,” राजकुमारी ने अपने भाई को ताना मारते हुए कहा। “क्या यह वत्स के मामलों में दखलंदाजी नहीं है? तुमने आचार्य को राजा हरिहर पर दबाव डालने के लिए कहा ताकि वह रुक्मा का शूरसेना से विवाह तोड़कर शशिवर्धन से करवा दें। क्या यह हेहेय के मामलों में दखलंदाजी नहीं है? या रुक्मा का विवाह अब उसके पिता का निजी मामला नहीं रह गया है?”
विक्रमादित्य मन ही मन सहम गए, प्रलूपी के शब्दों में निहित सत्य से उन्हें गहरा आघात पहुंचा।
“अपने सहयोगियों के फैसलों में दखल न देने की ये सारी बातें महज़ बातें हैं। जब आपको फ़ायदा होता है, तो आप उनके जीवन में दखल देने में ज़रा भी संकोच नहीं करते, इसलिए मुझे नैतिकता का उपदेश देना बंद करें।”
“ऐसा लगता है कि आपको सिंधुवर्त के राज्यों में हो रही घटनाओं की अच्छी जानकारी है, इसलिए मुझे लगता है कि आप मेरी दखलंदाजी के पीछे के कारणों को समझ सकेंगी,” राजा ने उत्तर दिया। वास्तव में, प्रलूपी को अवंती की राजनीति में कभी कोई दिलचस्पी नहीं थी, इसलिए सिंधुवर्त के बाकी हिस्सों में चल रही घटनाओं के बारे में उसकी जानकारी विक्रमादित्य को आश्चर्यचकित कर गई। “मैं हूणों और शकों से बढ़ते खतरे के सामने हमें मजबूत और एकजुट रखने के लिए जो आवश्यक है वही कर रहा हूँ।”
प्रलूपी ने भौंहें चढ़ाकर राजा को एक पल के लिए देखा। “बर्बर लोग सचमुच खतरा हैं, फिर भी आप मेरे बेटे को उज्जैन वापस बुलाने के बजाय सीमा पर ही रखना चाहते हैं?” उसने अचानक ही हमले का नया मोर्चा खोल दिया। “आपने अमर सिंह को बुलवाया, जिसे हूणों से लड़ने का अनुभव है, लेकिन मेरे बेटे को उन बर्बरों के भरोसे छोड़ रहे हैं? आप ऐसा कैसे कर सकते हैं – वह आपका अपना भतीजा है, आपका अपना खून है!” राजकुमारी की आवाज़ आखिरी कुछ शब्दों पर तेज़ और उन्मादी हो गई। “उसे सीमा पर क्यों रखा गया है?”
“सीमांत क्षेत्र इंसान को कठोर बनाता है; महल उसे नरम बनाता है। घटाकरपारा एक सैनिक बनना सीख रहा है,” सम्राट ने अपनी आवाज़ को नियंत्रित करने की कोशिश करते हुए तर्क दिया। “यदि हूण सिंधुवर्त में प्रवेश कर गए, तो उसे एक

सैनिक की तरह लड़ना होगा, इसलिए बेहतर है कि वह यथासंभव खुद को तैयार कर ले। इसे चाचा की ओर से भतीजे को दिया गया उपहार समझो।”
“चाचा अपने भतीजे को वत्सा का अगला राजा बनाने की दिशा में प्रयास कर सकते हैं,” प्रालुपी ने चिढ़कर सुझाव दिया। “यह अधिक स्वागत योग्य उपहार होगा।” “ऐसा नहीं होगा। शशिवर्धन चंद्रवर्धन का असली उत्तराधिकारी है, और अब…” “शशिवर्धन अपनी सारी विरासत शराब और जुए में उड़ा देगा,” राजकुमारी ने कठोर स्वर में कहा। “वत्सा में हर कोई यह जानता है। चंद्रवर्धन की परिषद में भी उसके सुधरने की उम्मीद नहीं है। केवल तुम ही इस सच्चाई से अनजान हो।”
“शशिवर्धन पर कौन भरोसा नहीं करता?” विक्रमादित्य ने आश्चर्य से पूछा। यह जानते हुए कि शायद उन्हें इसका सीधा जवाब न मिले, उन्होंने सिर हिलाकर बात को टाल दिया। “मुझे शक है कि आप एक भी ऐसे पार्षद का नाम बता पाएंगे जिसे शशिवर्धन की क्षमताओं पर भरोसा न हो।”
"यशोभवी," प्रलूपी ने चारा ले लिया।
पार्षद यशोभावी। उनकी बहन को सारी जानकारी उन्हीं से मिल रही थी। सम्राट ने उस जानकारी को सावधानीपूर्वक अपने मन में संजो लिया। "क्या यशोभावी के पास उनकी चिंताओं का कोई समाधान है?" उन्होंने पूछा, उम्मीद करते हुए कि उनका सवाल सहज लगे।
"उनका भी मानना है कि वत्सा के अगले राजा के रूप में घटाकरपारा आदर्श विकल्प होंगे।"
विक्रमादित्य स्तब्ध रह गया, मानो कोई प्रतिक्रिया ही न दे पा रहा हो। आखिर वह क्या सुन रहा था? क्या उसकी बहन ये सब मनगढ़ंत कहानी बना रही थी ताकि किसी तरह उसे अपने पक्ष में काम करने के लिए उकसा सके, या फिर यही सच था? कौशांबी में प्रलूपी का प्रभाव वास्तव में कितना था? क्या यह प्रभाव केवल यशोभावी तक ही सीमित था, जिस पर चंद्रवर्धन को पूरा भरोसा था, या फिर उसके प्रभाव में अन्य सलाहकार भी थे?
“देखो, मैंने कहा था ना,” प्रलूपी ने विजयी भाव से राजा की ओर देखा। “भाई, घटकर्पर ही सिंहासन का सही उत्तराधिकारी है। अभी देर नहीं हुई है – अगर आप चाहें तो वह अभी भी राजा बन सकता है। मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ कि वत्स

की परिषद उसका स्वागत करेगी। और अगर आप हरिहर द्वारा रुक्मा को शूरसेना को सौंपने को लेकर चिंतित हैं… तो हरिहर को दामाद के रूप में एक राजा चाहिए। क्या उसे कोई फर्क पड़ेगा अगर वह राजा शशिवर्धन की जगह घटकर्पर हो? मेरा पुत्र रुक्मा को दुल्हन के रूप में स्वीकार करेगा…”
“नहीं,” विक्रमादित्य ने स्तब्ध होकर सिर हिलाया। फिर और भी दृढ़ता से कहा, “नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकता। राजा चंद्रवर्धन के साथ तो बिल्कुल नहीं।”
“तुम कर सकते हो, पर करोगे नहीं,” राजकुमारी ने अपने भाई पर गुस्से भरी निगाहें गड़ाते हुए कहा। “क्योंकि इसमें तुम्हारा कोई भला नहीं है। तुम चाहते हो कि सब तुम्हें एक नेक और न्यायप्रिय सम्राट, एक नेक दोस्त के रूप में देखें। अगर इससे किसी सहयोगी राज्य का पतन और अंततः विनाश हो जाए तो क्या फर्क पड़ता है? तुम किसी सहयोगी को बचाने की कोशिश में हाथ गंदे करने के बजाय चुपचाप बैठकर देखना पसंद करोगे। तुम्हारी छवि बेदाग और पवित्र बनी रहेगी। तुम्हें बस इसी बात की परवाह है।”
“आप तथ्यों को तोड़-मरोड़कर अपनी इच्छानुसार कोई भी निष्कर्ष निकाल सकते हैं, लेकिन नहीं…” विक्रमादित्य की आवाज़ में दुख था। “यह मामला यहीं समाप्त होता है।” वह इस निरर्थक बहस को आगे न बढ़ाना चाहते हुए मुँह फेरकर चले गए। लेकिन प्रलूपी ने उन्हें रोक दिया।
“मैं चाहती हूँ कि तुम घटाकरपारा को उज्जैन वापस बुला लो,” उसने कहा। चुनौती भरे लहजे में उसने आगे कहा, “या फिर यह भी तुम नहीं कर सकते?”
“मैं ऐसा नहीं करूँगा,” राजा ने अपनी बात सुधारते हुए कहा और पूरी तरह सीधा खड़ा हो गया। “मेरे भतीजे ने हूणों के आने की आशंका के बावजूद स्वेच्छा से सीमा पर जाने का फैसला किया था। मैं उसके साहस और आत्मविश्वास का अपमान करके उसे महल में वापस नहीं बुलाऊँगा। वह अपनी मर्ज़ी से गया था। जब वह लौटेगा, तो अपनी मर्ज़ी से ही लौटेगा।”
“तो तुम्हें यही उम्मीद करनी चाहिए कि वहाँ उसे कुछ न हो,” प्रालुपी ने चेतावनी दी। “अगर कुछ हुआ, तो मैं तुम्हें इसके लिए ज़िम्मेदार ठहराऊँगी…”

सीढ़ियों पर कदमों की आहट से भाई-बहन की बातचीत में खलल पड़ा। विक्रमादित्य ने मुड़कर देखा तो एक सिपाही दो-दो सीढ़ियाँ चढ़ता हुआ ऊपर की ओर दौड़ रहा था, जब तक कि वह नीचे पहुँचकर राजा और उसकी बहन को देख नहीं पाया।
“सम्राट को प्रणाम… राजकुमारी को प्रणाम,” सैनिक हांफते हुए बोला और झुककर प्रणाम किया।
“हम व्यस्त हैं,” प्रालुपी ने अधीरता से कहा।
“प्रणाम, सिपाही,” विक्रमादित्य ने अपनी बहन की बात को शांत भाव से अनसुना करते हुए कहा। “क्या बात है?”
“महामहिम, पार्षद कालिदास…” सैनिक झिझका, उसकी निगाहें सम्राट और प्रलूपी के बीच घूम रही थीं। सम्राट को उत्साहपूर्वक सिर हिलाते देख उसने कहा, “महामहिम, पार्षद सिंहासन कक्ष में आपसे और परिषद से मिलना चाहते हैं।”
“सिंहासन कक्ष?”
“जी हां, महाराज।” सिपाही कुछ देर रुका और उसका चेहरा पीला पड़ गया। “सलाहकार कालिदास ने अवंती के राज दरबार द्वारा अपने परिवार के नरसंहार के मामले में सिंहासन के न्याय की अपील की है।”

* * *

सिंहासन कक्ष में पूर्ण शांति थी।
सिंहासन कक्ष के बाहर, महल में एकदम सन्नाटा पसरा हुआ था।
झील के उस पार, उज्जैनी का शेष भाग बिल्कुल शांत था।
पक्षी अपने दड़बों पर चुप हो गए थे; अस्तबलों में घोड़े हिनहिनाना बंद कर चुके थे। सुबह से उत्तर दिशा से बह रही हवा, जो झील की सतह पर लगातार लहरें बना रही थी, अब धीमी होकर फुसफुसाहट में बदल गई, और फिर बाकी सब कुछ के साथ मिलकर थम सी गई। न कोई प्राणी हिला, न कोई पत्ता। ऐसा लग रहा था मानो समय स्वयं थम गया हो और अपनी सांस रोककर कालिदास के कहे शब्दों के महत्व पर विचार कर रहा हो।
मैं झो एरामी का पुत्र हूँ।

ज़ो एरामी। निडर ज़ो। हूणों के ख'सा वंश के सरदार, हूण कुलों में सबसे साहसी और निडर, जिनके योद्धाओं ने विस्तार के दौरान सिंधुवर्त में भारी तबाही मचाई थी। ख'सा वंश हूण सेना के अग्रिम मोर्चे पर रहा, साहस के साथ नेतृत्व करते हुए, एक ऐसा मार्ग प्रशस्त किया ताकि शेष सेना उनका अनुसरण कर सके और अपनी स्थिति मजबूत कर सके। ख'सा: सिंधुवर्त में कदम रखने वाले पहले बर्बर और महान रेगिस्तान में धकेले जाने वाले अंतिम बर्बर।
कहीं, किसी ने – शायद दरबारियों में से किसी ने – घबराहट में खाँसी की और जादू टूट गया। रुकी हुई साँसें सामूहिक आह के साथ निकलीं, जो ऊपर उठकर क्रिस्टल के दीपों को झनझना उठी और साथ ही नीचे धँसकर ज़मीन की धूल को हिला दिया। पैर घिसटने लगे और फुसफुसाहटें गूँज उठीं और सिंहासन कक्ष में आग की तरह फैल गईं, जब तक कि विशाल कक्ष रेशमी कोमल आवाज़ों से गूंज उठा। फिर, लगभग पूर्ण सामंजस्य के साथ, सभी की निगाहें विक्रमादित्य पर टिक गईं, जो काले संगमरमर के सिंहासन पर विराजमान थे, जिस पर सोने और हाथीदांत की नक्काशी उनके सिर के ऊपर और पीछे अवंती के सूर्य-शिखर का रूप धारण किए हुए थी।
“यदि तुम जन्म से हूण हो, तो मेरे मित्र, तुमने हरिष क्यों नहीं धारण किया है?” सम्राट ने कालिदास से पूछा, जो कक्ष के केंद्र में सिंहासन की ओर मुख करके, अंधकारमय और क्रोधित मुद्रा में खड़ा था, उसकी निगाहें व्यथित थीं फिर भी कोमल थीं।
“अगर उस दिन मेरे परिवार की हत्या न हुई होती, तो मैं भी मर गया होता।” वह दैत्य रुका, और उसके चेहरे पर गुस्से और मुस्कान का मिला-जुला भाव झलक उठा। “मैं पवित्र कवच नहीं पहनता, फिर भी उसी कवच ने उस दिन मेरी जान बचाई। यही एकमात्र कारण है कि मैं मृत्यु से बच गया और आज यहाँ खड़ा हूँ।”
“मैं तुम्हारा अनुसरण नहीं करता, मेरे मित्र,” विक्रमादित्य ने कहा। कालिदास ने चारों ओर एक नज़र डाली और उपस्थित लोगों के चेहरों पर भ्रम देखा। “हुना समुदाय के युवा लड़कों के माथे पर नौवें वर्ष में पवित्र ह्रीज़ अंकित किया जाता है। मेरे नौवें वर्ष का होने से पूरे एक सप्ताह पहले से ही मेरी दीक्षा की तैयारी चल रही थी। पिता पवित्र अग्नि में कटार को तेज करते थे और पुजारी प्रार्थनाओं और बलिदानों से रेगिस्तानी बिच्छू को प्रसन्न करते थे। जिस दिन मेरा नौवां वर्ष पूरा हुआ – पवित्र ह्रीज़

अंकित होने से पहले, समारोह के दिन – मुझे अकेले जंगल में जाकर तीन जानवरों का शिकार करना पड़ा। यह हुनाओं की दीक्षा रस्मों का हिस्सा है। मैं भोर में निकला और दोपहर से पहले ही मैंने एक खरगोश, एक मोर और एक मृग बछड़ा मार डाला। मैं प्रसन्न और विजयी होकर घर लौटा।” उनका चेहरा क्रोध से भर गया, “…और मैंने देखा कि सब कुछ आग की लपटों में घिरा है, सभी लोग मर चुके हैं या मरणासन्न हैं। अवंती की सेना ने सबको जलाकर मार डाला है। पवित्र ह्रीज़ ने मेरी जान बचाई, यही मेरा मतलब था – इसने मुझे जंगल में ले जाकर निश्चित मृत्यु से बचाया।”
कुछ देर के लिए कक्ष में सन्नाटा छा गया क्योंकि सभी राजा के बोलने का इंतजार कर रहे थे। तभी, अमारा सिंह ने बोलना शुरू किया।
“कालिदास, क्या आपको ठीक से याद है कि आपने अपनी स्मृति कब खोई थी?” धधकती लाल दाढ़ी के पीछे का चेहरा सहानुभूतिपूर्ण था, लेकिन साथ ही व्याकुल भी था।
“मेरे पिता ने मेरा नाम गौउर थ्राखा रखा था, यानी सलाहकार,” उस दैत्य ने ठंडे स्वर में उत्तर दिया। ऐसा लग रहा था मानो उसने अपने चारों ओर एक दीवार खड़ी कर ली हो ताकि कोई उस पर दया न करे। “कालिदास नाम मुझे अवंती ने दिया था।”
“अवंती ने नहीं,” वराहमिहिर ने सोफे पर बैठे हुए, जहाँ उनकी बैसाखी एक कंधे पर टिकी थी, सुधार करते हुए कहा। “यह नाम उस व्यक्ति ने रखा था जो तुम्हें अपने मित्र के रूप में इस महल में लाया था। अतीत की एक कड़वाहट को अपनी बाकी यादों पर हावी मत होने दो।”
कालिदास ने वराहमिहिर पर एक त्वरित नजर डाली, लेकिन अपनी निगाहें सम्राट से हटा लीं।
"तो क्या आपको याद है कि आपने अपनी स्मृति कब खोई थी?" अमारा सिम्हा ने फिर से पूछा, अभी भी दयालु और धैर्यवान स्वर में।
“मुझे याद है भागना। जंगल में छिपना, फिर रात में काली मंदिर ढूँढ़ना।” उस दैत्य ने अपना सिर झटक दिया, उस विचार को कम महत्वपूर्ण समझकर किनारे रख दिया। “लेकिन यह सब बाद में हुआ। मेरे पिता और बहन को मरते देखने के बहुत बाद।”

“क्या तुमने उनकी मृत्यु देखी?” विक्रमादित्य के चेहरे पर पीड़ा और व्याकुलता के भाव थे।
“मेरे पिता, मेरी बहन एही, मेरी चाची और उनकी बेटी… मैंने सैनिकों को उन्हें अन्न भंडार में धकेलकर आग लगाते देखा। मैंने उन सभी को जिंदा जलते हुए देखा।” कालिदास की मुट्ठियाँ भींच गईं। “मैंने उस व्यक्ति को भी देखा जिसने सैनिकों को आदेश दिया था, अवंती की सेना का सरदार।”
“वह कौन था, मित्र?” राजा ने पूछा।
“उसे।” कालिदास ने सिंहासन कक्ष की चौड़ाई में आरोप लगाते हुए उंगली घुमाई, और सभा में मौजूद लोगों में से एक दबी हुई सिसकी सुनाई दी। कालिदास दरबारियों की भीड़ में एक तरफ चुपचाप खड़े उस व्यक्ति को घूर रहे थे, जिसके हाथ छाती पर बंधे थे और जो आसानी से नज़रअंदाज़ हो गया था। वह घुड़सवार था।
पिछली सुबह, शहीद संसप्तक के घर से निकलते ही, लगभग उनके मन में यह बात आ पड़ी थी। सीढ़ियों से नीचे आते हुए, उन्होंने उस व्यक्ति को अपने घोड़े पर सवार देखा, जिसकी पीठ घर की ओर थी, और वह अमर सिंह से बातें कर रहे थे, तभी एक धुंधली सी याद उनके मन में कौंध गई।
घोड़े की पीठ पर वही संतुलन। बाएँ कंधे का स्पष्ट झुकाव।
जब अमारा सिम्हा ने उसे आवाज़ दी, तो वह आदमी मुड़कर देखने लगा - और फिर से उसमें कुछ अस्पष्ट रूप से परिचित सा लगा, कुछ ऐसा जो पहले देखा गया था। वही काले घने बाल, सिर का वही आकार और कंधों की वही बनावट, वही घमंडी आत्मविश्वास।
फिर उनकी निगाहें मिलीं। कल, वरारुचि की आँखों ने अभिवादन में मुस्कुराहट दिखाई थी। जबकि वर्षों पहले जलती, धुएँ से भरी घाटी में जिन आँखों ने उसे देखा था, वे ठंडी, कठोर और निर्दयी थीं। लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं था कि वे वही आँखें थीं।
अब उन आँखों ने सिंहासन कक्ष के विशाल विस्तार में उसे चुनौती भरी निगाहों से देखा। वे अब भी कठोर और पूरी तरह निर्दयी थीं। एक निर्दयी हत्यारे की आँखें।

* * *

“कालिदास जो कहते हैं वह सच है। यह मैं ही था।”
वरारुची आगे बढ़ा और सिंहासन कक्ष में चारों ओर एक नज़र घुमाई, फिर उसकी निगाहें उस विशालकाय व्यक्ति से मिलीं। उसे वह दिन भली-भांति याद था। उन्होंने महीनों पहले से इसकी योजना बनाई थी, रणनीतियां बनाईं और उनमें बदलाव किए, युद्धाभ्यासों पर बारीकी से काम किया, हमले के हर छोटे-बड़े पहलू की जाँच और संशोधन किया। सभी जानते थे कि लावा में स्थित हुना गैरीसन पर धावा बोलने और खूंखार ज़ो एरामी को हराने का उनके पास केवल एक ही मौका था।
उस रणनीति और सोच का भरपूर लाभ मिला। उन्होंने x’sa बटालियन को अप्रत्याशित रूप से घेर लिया था, और चौकी की रक्षा लगभग बिना किसी लड़ाई के ध्वस्त हो गई थी। सबसे अच्छी बात यह थी कि सिंधुवर्त के सबसे बड़े दुश्मनों में से एक, ज़ो एरामी, उसी सुबह अवंती की तलवार का शिकार हो गया था।
अब, सिंहासन कक्ष में खड़े होकर, वरारुचि को तटबंध के ऊपर से नीचे की ओर देख रहे उस चेहरे की याद आ गई; एक छोटा, काला, कालिख से सना हुआ चेहरा, कीचड़ से लिपटा हुआ, बड़ी-बड़ी आँखें भयभीत होकर उसे घूर रही थीं। फिर वह चेहरा तटबंध के पीछे छिपकर आँखों से ओझल हो गया।
बाद में उन लोगों ने उसे बताया कि वह एक छोटा लड़का था, फुर्तीला और चुस्त। लड़का उन्हें चकमा देकर धुएं में गायब हो गया था। उसे याद है कि उसने इस बात को नज़रअंदाज़ कर दिया था। उज्जैन लौटने पर जब विक्रमादित्य ने उसे अपना नया दोस्त बताकर मिलवाया, तब भी वह उसे पहचान नहीं पाया था। यहां तक कि यह तथ्य भी कि लड़का लावा के पास एक मंदिर में छिपा हुआ मिला था और उसे अपने अतीत की कोई याद नहीं थी, उसके लिए कोई मायने नहीं रखता था।
वह बच्चा अब उसे घूरता हुआ खड़ा था, मांसपेशियों का एक कसा हुआ पुतला और दबी हुई बेचैनी से भरा हुआ।
"तुमने मेरे परिवार को बेरहमी से मार डाला," ये शब्द कालिदास के गले से गूंज उठे।

“क्या तुमने कभी सिंधुवार्ता में लोगों से पूछा है कि तुम्हारे पिता ने कितने परिवारों को बेरहमी से मार डाला?” वरारुची ने विशालकाय व्यक्ति के आकार से ज़रा भी भयभीत हुए बिना उत्तर दिया। “ज़ो एरामी को वही मिला जिसका वह हकदार था।”
“लेकिन वो औरतें…” विक्रमादित्य ने अपने सौतेले भाई की ओर हैरानी से देखा। “क्यों? उन्होंने क्या नुकसान किया था?”
“हूणों और शकों ने कभी यह नहीं पूछा कि हमारी स्त्रियों और बच्चों, हमारे बूढ़ों और बीमारों ने उनका क्या बिगाड़ा है, सम्राट। सिंधुवर्त में हत्या और लूटपाट करते हुए उन्होंने नैतिकता के सवालों को बीच में नहीं आने दिया। जब हमारी बारी आई तो नियम क्यों बदलने पड़े? हूणों को सबक सिखाने का एकमात्र तरीका था उन्हें उन्हीं के तरीके से जवाब देना।”
“भाई, हमारे और उनके लिए नियम कभी एक जैसे नहीं हो सकते थे,” विक्रमादित्य की आवाज़ में पीड़ा स्पष्ट थी। “हमारी लड़ाई उपजाऊ ज़मीन के मालिकाना हक के लिए नहीं थी। यह नैतिकता, निष्पक्षता और गरिमा की पवित्रता की रक्षा के लिए थी – मानवता की रक्षा के लिए थी। ये वे मूल्य हैं जिनके लिए लड़ना चाहिए। अगर हम युद्ध में इन्हीं मूल्यों को त्याग देते हैं, तो हम वही बन जाते हैं जिसके खिलाफ हम लड़ रहे हैं। हम वही बन जाते हैं। फिर हमारे पास लड़ने के लिए क्या बचता है?”
“महाराज, आपके विचार तो उत्तम हैं, परन्तु वास्तविकता में युद्ध ऐसे नहीं जीते जाते। कम से कम सिंधुवर्त को आक्रमणकारियों से मुक्त कराने का तरीका तो यही नहीं था।” वरारुचि के लहजे से यह स्पष्ट नहीं था कि वह सम्राट का उपहास कर रहे थे या नहीं, परन्तु सिंहासन कक्ष का वातावरण स्पष्ट रूप से बिगड़ गया था। “उन बर्बरों को जिस चीज ने पीछे धकेला, वह था भय – यह भय कि हम भी उन्हीं के समान हो सकते हैं। भय ही वह मुद्रा थी जिसका वे व्यापार करते थे, वह मुद्रा जिसे वे समझते थे। भय ही वह तरीका है जिससे हमने अवंती का गौरव और सम्मान पुनः स्थापित किया।”
“निर्दोषों की जान लेने में न तो कोई गर्व है और न ही कोई गरिमा, पार्षद,” सम्राट ने एक दुख भरी आह भरी।

विक्रमादित्य के संबोधन के तरीके में आए बदलाव को देखते हुए वरारुचि ने दृढ़ता से प्रणाम किया। जब उन्होंने बात की, तो उनका लहजा ठंडा और औपचारिक था। “मैं सिंहासन पर दावा नहीं करता, लेकिन काश हम यह बात उस शत्रु से कह पाते जिसने सिंधुवर्त राज्यों को लूटते हुए हर निर्दोष को मार डाला।” वे रुके और कालिदास की ओर देखा। “निर्दोषों की बात करें तो, यहाँ मौजूद किसी से भी पूछ लीजिए जिसने निषाद राज्य के पूरे राजमहल का सफाया कर दिया, जिसने रानी विशाखा और क्षपणक के माता-पिता को मार डाला। वह एक क्षपण बटालियन थी। तो हो सकता है कि आपके पिता ने ही रानी और क्षपणक को अनाथ किया हो – दो निर्दोष बच्चे जिनका आपके पिता के युद्ध से कोई लेना-देना नहीं था।” कालिदास ने सभा पर एक नज़र डाली। क्षपणक और विशाखा के विरुद्ध अन्याय का आरोप लगाकर और यह संकेत देकर कि निषाद नरसंहार में झो एरामी का प्रत्यक्ष हाथ हो सकता है, राजा के सौतेले भाई ने चतुराई से दरबार की भावना को अपने विरुद्ध और हूणों के विरुद्ध मोड़ दिया था। कमरे में चारों ओर देखने से इसकी पुष्टि हुई। क्षपणक, जो अमर सिंह के दाहिनी ओर चुपचाप खड़ा था, अब सदमे, घृणा और संदेह के मिले-जुले भाव से उसे देख रहा था, और सभा में वरारुचि द्वारा बोए गए संदेह के बीज गूंज रहे थे।
सम्राट अपने आसन से उठे और फुसफुसाहट को शांत किया। वे सिंहासन को सहारा देने वाले ऊंचे चबूतरे से नीचे उतरे और कालिदास की ओर दो कदम बढ़े।
“उस दिन जो कुछ हुआ वह गलत था, और अवंती के राजा के रूप में, मुझे इस पर गहरा अफसोस है,” उन्होंने धीरे और स्पष्ट स्वर में कहा ताकि वहां मौजूद सभी लोग उन्हें सुन सकें। “काश मैं जो हो चुका है उसे बदल पाता, लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकता। मैं अवंती की ओर से आपसे क्षमा मांगता हूं, पार्षद। राज्य की सेनाओं के हाथों आपके परिवार की मृत्यु के लिए मुझे गहरा खेद है।”
मुझे माफी नहीं चाहिए।
तेज़ साँसों की सरसराहट, जिसके बाद और भी गहरी खामोशी छा गई। उस विशालकाय व्यक्ति के शब्दों में छिपी चुनौती को किसी ने भी नज़रअंदाज़ नहीं किया था।
“तो फिर हम आपको और क्या दे सकते हैं?” सम्राट ने पूछा।

“अवंती उस दिन जो कुछ हुआ उसे ठीक नहीं कर सकती। कोई भी चीज़ उस दर्द को भर नहीं सकती, इसलिए…” कालिदास ने अपने गले में पतली सी चेन से लटके सोने के सूर्य-चिह्न वाले पदक को खींच लिया। चेन टूट गई और पदक राक्षस की विशाल मुट्ठी में आ गिरा। पदक को हाथ में लिए कालिदास राजा की ओर बढ़े।
“यह क्या है?” विक्रमादित्य ने अनिश्चितता से उस पदक को देखा।
“जो कुछ घटित हुआ है, उसे जानने के बाद मैं अब इस महल की सेवा नहीं कर सकता। मैं उस सिंहासन के प्रति निष्ठा की शपथ नहीं ले सकता जो मेरे परिवार की मृत्यु का कारण बना। अवंती के प्रति मेरा कर्तव्य यहीं समाप्त होता है।” सिंहासन कक्ष में सन्नाटा छा गया। विशालकाय व्यक्ति और राजा एक-दूसरे के सामने स्थिर खड़े थे। सन्नाटा गहराता गया, कंपकंपाता रहा, मानो अराजकता के बवंडर में बदलने को तैयार हो।
“नहीं, कालिदास…” सम्राट ने निराशा से फुसफुसाते हुए कहा। “ऐसा मत करो। मैं…” अपने पुराने मित्र की आँखों में दृढ़ निश्चय देखकर वे रुक गए। उनके चेहरे पर असहनीय उदासी छा गई। “क्या ऐसा ही होना ज़रूरी है?”
उस दैत्य ने जवाब में केवल पदक को आगे बढ़ाया, जिसकी टूटी हुई जंजीर उसकी हथेली के दोनों किनारों से लटक रही थी, और जहां उसके कटे हुए सिरे सूर्य की रोशनी में चमक रहे थे।
“कालिदास, यह मूर्खता है,” अमर सिंह उत्तेजित होकर आगे बढ़े। “तुम हममें से एक हो। तुम अवंती के अपने हो।”
“मैं गौर थ्राखा हूँ, रक्त और जन्म से हूण हूँ,” कालिदास ने कठोर और सोच-समझकर उत्तर दिया।
“और इन बीते वर्षों का आपके लिए कोई महत्व नहीं है?” वराहमिहिर ने दीवान से पूछा। “हमारा क्या? उज्जैन के उन नागरिकों का क्या जो आपको अपना रक्षक मानते हैं? इन सब बातों को छोड़िए – सम्राट का क्या?”
कालिदास ने कोई उत्तर नहीं दिया। वे वहीं खड़े रहे, विक्रमादित्य की प्रतीक्षा करते रहे। परन्तु राजा ने पदक स्वीकार करने के लिए कोई हरकत नहीं की। अंत में, उस विशालकाय ने एक कदम और आगे बढ़ाया, झुककर सम्राट के चरणों के पास सिंहासन रख दिया। सीधा होकर, वे पीछे हटे, अपने कंधे सीधे किए और विक्रमादित्य की ओर देखा। पदक उनके बीच ज़मीन पर एक अलंकृत दाग, एक

चुभती हुई निंदा, उनकी मित्रता में आई हर उस बात का प्रतीक बनकर पड़ा था जो गलत हो गई थी।
अंत में सम्राट ने दैत्य की निगाहों में देखते हुए पूछा, "तुम कहाँ जाओगे?" “भाग्य मुझे इस महल में लाया, भाग्य ही मुझे वापस ले जा रहा है।” रहस्यमय, अस्पष्ट। “नियति के मार्गदर्शन पर सवाल उठाना हमारा काम नहीं है।” इतना कहकर कालिदास मुड़कर चले गए।
वह विशालकाय व्यक्ति सिंहासन कक्ष के द्वार तक आधा ही पहुंचा था कि वरारुचि ने उसे पुकारा, “यदि तुम अवंती के ऋणी नहीं हो, तो अपनी तलवार भी यहीं छोड़ दो।” ये शब्द कक्ष की विस्मयकारी शांति में गूंज उठे और कालिदास को वहीं रोक दिया।
कुछ क्षणों के लिए, वह विशालकाय व्यक्ति सिंहासन और सलाहकारों की ओर पीठ करके, मानो चिंतन में डूबा खड़ा रहा। उसका बायाँ हाथ कमर पर बंधी तलवार की मूठ पर जा टिका और उसकी आँखें तलवार के घुमावदार आकार को निहारने लगीं। फिर, उसी क्षण, उसकी निगाहें ऊपर उठीं और वह वरारुची की ओर मुड़ गया।
“यह तलवार मेरे लिए उदयपुरी के एक साधारण लोहार ने बनाई थी, जिसके बेटे की जान मैंने संयोगवश बचाई थी। यह उसका उपहार था, महल का नहीं। इस तलवार से मुझे अलग करने का केवल एक ही तरीका है – किसी को इसे मेरी मृत उंगलियों से छीनना होगा।”
वररुचि ने तिरछी निगाहों से कालिदास को बाहर जाते देखा। सम्राट की प्रतिक्रिया जानने के लिए उनकी ओर मुड़ते हुए, वे अपने भाई के चेहरे पर गहरी पीड़ा देखकर स्तब्ध रह गए। विक्रमादित्य द्वारा खुलेआम कालिदास का पक्ष लेने और सिंधुवर्त राज्यों की रक्षा के लिए आवश्यक कदम उठाने पर उन्हें फटकार लगाने से उन्हें बहुत दुख हुआ था; राजा द्वारा कालिदास से क्षमा मांगने पर उन्हें अपमानित महसूस हुआ था। लेकिन हूण ने क्षमा को ठुकरा दिया, सिंहासन के अधिकार का अपमान किया – और यहाँ तक कि किसी को उनकी तलवार छीनने की चुनौती भी दी। इन सबके बावजूद, विक्रमादित्य उन्हें जाने दे रहे थे। यह सब उस मित्रता के लिए किया जा रहा था जो तार-तार हो चुकी थी, जो वफादारी की असली परीक्षा में खरी नहीं उतरी थी। शत्रु को जीतने दिया जा रहा था।

वररुचि के भीतर कुछ टूट गया और बिखर गया। और उस अंधकारमय, निराशाजनक शून्य में, आक्रोश ने अपनी पहली कड़वी और जहरीली कोंपल को जन्म दिया।

Gandharvasena

अगर आप मुझे जाने से रोकने की सोच रहे हैं, तो ऐसा न करें। अमर सिंह और वराहमिहिर दोनों ही असफल रहे हैं।
शंकु ने कालिदास की ओर देखा, जो अपनी काठी पर अकड़े बैठे सीधे आगे घूर रहे थे, उनके चेहरे पर कोई भाव नहीं था। उसने कुछ नहीं कहा।
वे उज्जैन की गलियों से होते हुए, साथ-साथ घोड़े पर सवार होकर शहर के उत्तरी द्वार की ओर बढ़ रहे थे। गलियों में हर जगह कस्बे के लोग उन्हें गुजरते हुए देख रहे थे। महल में जो कुछ हुआ था, उसकी खबर जंगल की आग की तरह फैल चुकी थी। पार्षद कालिदास एक हूण हैं!
कुछ चेहरों पर जिज्ञासा थी, मानो वे किसी अजनबी को पहली बार देख रहे हों। कुछ अन्य चेहरों पर आशंका थी, और कुछ पर शत्रुता। निराशा और शोक भी स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे। कभी-कभी शंकु और कालिदास का सामना नगर रक्षक दल और राजसेना के सैनिकों से होता था। सभी सैनिक अत्यंत आदरपूर्ण थे – कुछ ने तो विदा होते हुए दानव के सामने सिर झुकाया। संसप्तकों के सेनापति उनमें से कई के लिए आदर्श थे, और उस योद्धा के प्रति उनका आदर क्षण भर में समाप्त नहीं हो सकता था।
"यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि इसका अंत इस तरह हुआ," शंकु ने अंत में कहा।

कालिदास ने तिरछी नज़र से उस लड़की पर एक नज़र डाली। वह सामने की ओर देख रही थी। उन्होंने देखा कि वह एक सफेद, छोटी पूंछ वाली घोड़ी पर सवार थी, वही घोड़ी जिसे उन्होंने पहली बार घोड़े के बाज़ार में देखा था, वही घोड़ी जिस पर शंकु ने चुपके से अपना दिल लगा रखा था। तीन दिन पहले, उन्होंने शंकु के लिए उपहार के रूप में वह घोड़ी खरीदी थी। महज़ तीन दिन, और ऐसा लग रहा था जैसे सदियाँ बीत गई हों। इतने कम समय में इतना कुछ घटित हो गया था; यादों की एक पूरी पीढ़ी अंकुरित हो गई थी और तीन दिनों में कड़वे फलों की फसल दे दी थी।
"मैं तुमसे अपने साथ आने के लिए कहता, लेकिन मुझे पता है कि तुम नहीं आओगी," उसने एक गहरी आह भरते हुए कहा।
“इतने साल बीत गए और अब तुम यही मौका निकाल रही हो इस बात को?” शंकु की आवाज़ थोड़ी लड़खड़ा गई और उसमें थोड़ी सी दरार आ गई। बड़ी मुश्किल से उसने खुद को संभाला। “तुम सही कह रही हो। मैं नहीं आती। मेरी वफ़ादारी मेरे राजा के प्रति है। तुम्हारी भी होनी चाहिए।”
“मैं ऐसा नहीं कर सकता,” उस दैत्य ने दबी आवाज़ में कहा। “मैंने इस सिंहासन की क्रूरता देखी है।”
और मैंने इसकी दया और करुणा देखी है।
दोनों के पास कहने के लिए कुछ और नहीं था, और उनकी लड़खड़ाती बातचीत अचानक रुक गई। वे दोपहर की तेज धूप में चुपचाप आगे बढ़ते रहे। एक मोड़ पर मुड़कर वे एक मुख्य सड़क पर आ गए। सौ गज की दूरी पर शहर की दीवार खड़ी थी। उत्तरी द्वार ठीक सामने, सड़क के अंत में था।
उनके और द्वार के बीच, तीस घुड़सवारों का एक दल खड़ा होकर उनका रास्ता रोक रहा था।
कालिदास का हाथ तलवार की ओर बढ़ा, इससे पहले कि उन्हें एहसास होता कि वे लोग संसप्तक थे, जिनके मुखिया अंगमित्र थे। उन लोगों के हथियार म्यान में थे, और उनकी मुद्रा में कोई धमकी का भाव नहीं था।
"राजा को नमस्कार, कमांडर," कप्तान ने कहा, और सैनिकों ने भी वैसा ही किया।
“नमस्कार… साथियों,” उस विशालकाय व्यक्ति ने अंतिम क्षण में स्वयं को सुधारते हुए कहा। वे अब उसके साथी नहीं थे।

“हम यहाँ… अलविदा कहने आए थे…” अंगामित्रा ने मुश्किल से शब्द निकाले। “…और आपको शुभकामनाएँ देने आए थे, कमांडर।”
“मैं आप सभी वीर पुरुषों को भी शुभकामनाएं देता हूं।” कालिदास ने अपने सामने मौजूद प्रत्येक चेहरे पर अपनी दृष्टि टिका दी।
“क्या मैं पूछ सकती हूँ कि आप कहाँ जा रहे हैं, कमांडर?” अंगामित्रा ने पूछा।
मैं वहीं जाऊंगा जहां मेरा भाग्य मुझे ले जाएगा।
संसप्तकों में से एक युवक ने अपने घोड़े को कुछ कदम आगे बढ़ाया। “आप जहाँ भी जाएँ, हम आपके पीछे चलने को तैयार हैं, सेनापति,” उस लड़के ने कहा। “मैं तो ज़रूर।” कालिदास की नज़र उस युवक की छाती पर बने एक ताज़े निशान पर पड़ी, जो उसकी दाहिनी कॉलरबोन के नीचे से कंधे तक फैली एक गुलाबी, झुर्रीदार रेखा थी। उन्हें अचानक वही प्रतिभाशाली कैडेट याद आ गया जिसे उन्होंने उस सुबह प्रशिक्षण मैदान में लगभग मार ही डाला था। उन्हें अंगामित्र द्वारा उसकी प्रशंसा की गई बातें भी याद आ गईं।
“चुप रहो, बालक,” कालिदास ने हाथ उठाया। “ऐसे मूर्खतापूर्ण, विद्रोही शब्द कभी मत बोलो। तुम सम्राट के सेवक हो। तुम्हारा कर्तव्य है अपने राजा और अपने राज्य की रक्षा करना। इसीलिए तुमने मृत्यु शपथ ली थी। इसे कभी मत भूलना। और मेरे साथ आने की बात करें तो… मेरी लड़ाई तो मेरी अपनी है, लेकिन तुम्हारी लड़ाई यहाँ है।” उन्होंने कुछ देर मौन धारण किया, उनके शब्दों में गहरा अर्थ छिपा था। द्वार की ओर इशारा करते हुए उन्होंने कहा, “तुम्हारी लड़ाई इसी द्वार से आएगी। उनका सामना करने के लिए अच्छी तरह तैयार हो जाओ।”
अंगामित्र ने अपने घोड़े को आगे बढ़ाया। "सेनापति, सैनिक आपके आदेश का पालन करेंगे।"
उस विशालकाय व्यक्ति ने हल्की सी मुस्कान दी। “तुम एक बहादुर योद्धा हो, जितने भी योद्धाओं को मैं जानता हूँ उनमें से सर्वश्रेष्ठ। अब समय आ गया है कि तुम एक योद्धा से बढ़कर कुछ बनो। अब समय आ गया है कि तुम सेनापति बनकर सैनिकों का नेतृत्व करो। सैनिक अब से तुम्हारे आदेश का पालन करेंगे। उनका अच्छे से मार्गदर्शन करो।”

सेनापति उस विशालकाय व्यक्ति को देखता रह गया, वह इतना अभिभूत था कि कुछ बोल नहीं पा रहा था। कालिदास ने एक बार सिर हिलाया और अपने घोड़े को हल्का सा धक्का दिया, और संसप्तक चुपचाप उनके और शंकु के लिए रास्ता बना दिया। वे अंगामित्र और उसके आदमियों के साथ सड़क पर आगे बढ़े, जब तक कि वे विशाल द्वार की छाया में नहीं पहुँच गए। जब पहरेदारों ने उन्हें प्रणाम किया, तो कालिदास ने आखिरी बार उस लड़की की ओर देखा।
“मैं आपको शुभकामनाएं देता हूं,” उसने कड़े स्वर में कहा।
“आपकी नियति आपको जहाँ भी ले जाए, मैं आपको शुभकामनाएँ देता हूँ। या यूँ कहूँ, जहाँ भी आप अपनी नियति को आगे ले जाने के लिए मजबूर करें?”
उस दैत्य ने कुछ क्षण शंकु की तीखी निगाहों को थामे रखा। बिना कुछ कहे, उसने अपने घोड़े को घुमाया और फाटक से बाहर निकल गया, उज्जैन की दीवार के बाहर जले हुए मकानों के पास से गुजरते हुए उसने अपनी गति बढ़ा दी।

* * *

आत्रेय को अपने कानों पर विश्वास करना मुश्किल हो रहा था।
“वे कब से एक दूसरे से मिल रहे हैं?” उसने पूछा।
राज्यपाल सत्यवेदा ने कहा, "शायद एक हफ्ते से, या शायद उससे भी पहले से। चिरायु पिछले एक हफ्ते से उनकी बैठकों पर नजर रख रहे हैं।"
आत्रेय ने मुंह बनाया और अपनी कोहनियों को घुटनों पर टिकाकर, अपनी ढीली ठुड्डी के नीचे उंगलियों को जोड़ लिया। उसकी आंखें धूल भरे, जर्जर कमरे के एक कोने से दूसरे कोने तक घूम रही थीं, वह राज्यपाल द्वारा कही गई बातों को समझने की कोशिश कर रहा था।
“मेरी बेटी उससे कैसे और कहाँ मिली?”
सत्यवेद ने कंधे उचका दिए। लकड़ी के फर्श के नीचे से पुरुषों के जयकारे और शोर की धीमी गड़गड़ाहट सुनाई दे रही थी। मुर्गे की लड़ाई किसी भी समय शुरू हो सकती थी, और वह नीचे कीचड़ के गड्ढे के पास जाकर खून-खराबा देखना चाहता था। लेकिन इसके बजाय, वह एक दीवान पर बैठा आत्रेय के बेतुके सवालों को सुन रहा था।

“उसे पता होना चाहिए कि वह कौन है, है ना?” व्यापारी ने पूछा। “मेरा मतलब है।”
“ऐसा लगता नहीं है। चिरायु ने मुझे बताया कि जब वे मिलते हैं, तो घटाकरपारा जानबूझकर सीमा रक्षक दल के एक साधारण सिपाही के रूप में खुद को पेश करता है। उसने उसे अपना असली नाम तक नहीं बताया है।”
आत्रेय ने अविश्वास से अपना सिर हिलाया। जैसे ही वह अपने विचारों में खो गया, राज्यपाल को लगभग मोटे व्यापारी के मन में चल रहे विचार और उभरती संभावनाएं सुनाई देने लगीं। उसकी बेटी, एक राजकुमार के आकर्षण का केंद्र – शायद प्रेम का भी? – और कोई साधारण राजकुमार नहीं। आदित्य वंश का राजकुमार, स्वयं सम्राट का भतीजा। सत्यवेद समझ सकता था कि यह प्रस्ताव आत्रेय जैसे लालची बूढ़े सूअर के लिए कितना आकर्षक था, और इस विचार ने उसे बेचैन कर दिया। उसे व्यापारी का साथ चाहिए था…
“यह लड़की मूर्ख है जो सोचती है कि इससे कुछ अच्छा होगा,” गवर्नर ने कठोर स्वर में कहा। “वह सोचती है कि उसके पिता अवंती के एक साधारण सैनिक से उसकी शादी को मंज़ूरी दे देंगे।”
“लेकिन वह वास्तव में सैनिक नहीं है,” आत्रेय ने अचानक कहा, जिससे सत्यवेद के डर की पुष्टि हो गई।
“नहीं, वह नहीं है। लेकिन जब तुम्हारी बेटी को उसकी असली पहचान पता चल जाएगी, तो यह सोचना उसकी मूर्खता होगी कि महल एक मामूली बाजरा व्यापारी से राजकुमार के लिए रिश्ता स्वीकार करेगा।” राज्यपाल ने आत्रेय को तीखी निगाहों से देखा, और फिर उसके मन में बची हुई सारी उम्मीदों को भी खत्म करने का फैसला किया। “खासकर ऐसे व्यक्ति से जो अवंती के सैन्य रहस्य मरुस्थली के बर्बर लोगों के साथ साझा करता रहा है।”
सत्यवेद को आत्रेय की नवोदित महत्वाकांक्षाओं को लड़खड़ाते और विफल होते देखकर आनंद आया। व्यापारी ने उदास स्वर में सिर हिलाते हुए कहा, "हाँ, अपारूपा ने बहुत बड़ी मूर्खता की है।" फिर सीधा खड़ा होकर उसने कहा, "मैं इस पूरे मामले का अंत कर दूंगा। मैं उसे अक्ल सिखाऊंगा और ज़रूरत पड़ने पर उसे उसके नाना-नानी के घर बलिपुरा भेज दूंगा।"

“नहीं, मेरे दोस्त, ऐसा मत करो,” राज्यपाल ने चेतावनी भरे लहजे में उंगली हिलाते हुए कहा। “उससे कुछ मत कहना। तुम जानते हो कि युवा कितने विद्रोही होते हैं। अगर तुम उसे मना करोगे तो वह तुम्हारी बात न मानने और उससे मिलने का कोई न कोई तरीका निकाल लेगी। और अगर तुम उसे भेज भी दोगे, तो भी राजकुमार को उसके ठिकाने का पता चल सकता है और वह उसे ढूंढ निकालेगा।” “तो फिर मुझे क्या करना चाहिए?”
सत्यवेद ने व्यापारी के कान के पास अपने होंठ लाकर फुसफुसाते हुए कहा, "राजकुमार का गायब हो जाना ही बेहतर होगा, है ना?"
आत्रेय ने राज्यपाल को हैरानी से देखा।
“अपरूपा उसे जानती ही नहीं। अगर वो गायब हो जाए, तो –” राज्यपाल ने मुट्ठी हवा में उठाई और अचानक उंगलियां खोलकर गायब होने का इशारा किया “– खैर, वो तो सैनिक है। उसे सीमा पर कहीं और तैनात किया जा सकता था, या फिर उसे वापस उसकी चौकी में बुलाया जा सकता था। हो सकता है वो उससे ऊब गया हो और बिना अलविदा कहे चला गया हो – निर्दयी सैनिकों से तो यही उम्मीद की जाती है, है ना? इससे उसका दिल टूट जाएगा, लेकिन वो खुद को संभाल लेगी। और अगर वो चाहे भी तो उसे कहाँ ढूंढेगी? उसे तो उसका असली नाम भी नहीं पता।” सत्यवेदा ने व्यापारी की ओर मुस्कुराते हुए कहा, “सीधा आसान है, है ना?”
आत्रेय ने सिर हिलाया। "यह ठीक लगता है, लेकिन हम राजकुमार को यूं ही गायब कैसे कर देंगे?"
“तुम मरुस्थली के हमारे दोस्तों को भूल गए हो, मेरे प्रिय। शाही बंधक को पाने के लिए वे क्या नहीं करेंगे?” राज्यपाल ने चालाकी भरी हंसी हंसते हुए कहा। “राजा का भतीजा, और कोई नहीं। मुझे लगता है कि इसके लिए इनाम बहुत बड़ा होगा।”
“हम ये करेंगे कैसे?” व्यापारी ने आश्चर्य से पूछा। “अपरूपा हमारी मदद करेगी।” आत्रेय की आँखों में उलझन देखकर सत्यवेद ने कहा, “वैसे उसे पता नहीं होगा।”
मुझे अब भी समझ नहीं आया।
“हाँ।” राज्यपाल मुस्कुराए और व्यापारी के कंधे पर दोस्ताना अंदाज़ में थपथपाया।

बाद में, उस निजी कक्ष में बैठे हुए, जहाँ से एम्फीथिएटर दिखाई देता था और जहाँ मुर्गे एक-दूसरे को मार रहे थे और लोग उन पर अवैध रूप से दांव लगा रहे थे, सत्यवेद का मन अखाड़े में चल रहे खेल से हटकर उस खेल की ओर चला गया जो वह अवंती के महल के साथ खेल रहा था।
उन्होंने उसे राजसभा में स्थान देने से इनकार कर दिया था, जबकि वह मुख्य सलाहकार आचार्य वेदविद्या का पोता और सलाहकार सगोपना का पुत्र था। जन्म से ही राजसभा में उसका स्थान होना चाहिए था। फिर भी, जब समय आया, तो उन्होंने उसे अनदेखा कर दिया और उसकी जगह निषाद की अनाथ राजकुमारी को चुन लिया - एक स्त्री को! उन्होंने उसे मालवा का राज्यपाल बना दिया, मानो यह कोई बड़ा सम्मान हो। लेकिन उसे बस यही याद था कि वह क्या नहीं था - अवंती का राजसभापति। बाद में, जले पर नमक छिड़कते हुए, उन्होंने उस विश्वासघाती वार्डन की पुत्री शंकुबाला को सलाहकार नियुक्त कर दिया। एक नासमझ लड़की, एक गद्दार की पुत्री! स्पष्ट है कि महल को न तो परंपरा का सम्मान था और न ही सच्ची प्रतिभा का। और फिर, अंत में, यह अनुभवहीन मूर्ख राजकुमार, घटाकरपारा। राजा का भतीजा होने का फायदा, और क्या। प्रेम में पागल मूर्ख! ईश्वर का धन्यवाद कि राजकुमार प्रेम में डूबा हुआ था, सत्यवेद ने तुरंत अपने विचार सुधारे। अवंती से बदला लेने का इससे बेहतर अवसर उसे सपने में भी नहीं मिल सकता था।

* * *

विक्रम, तुमने उसे क्यों नहीं रोका?
सम्राट ने तुरंत कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। काफी देर तक वे विशाखा का सफेद, बेजान हाथ पकड़े बैठे रहे, उसकी कोमल त्वचा को अपनी हथेलियों पर महसूस करते रहे। उन्होंने अपनी उंगली से उसकी मध्यमा उंगली में सजी जेड की अंगूठी को छुआ, फिर हाथ के पिछले हिस्से पर बनी नीली नसों को आगे-पीछे फेरा। अंत में, उन्होंने विशाखा के पलंग के पार रानी उपश्रुति की ओर देखा। “माँ, इससे क्या लाभ होता?” उसने पूछा। “उसे जाने से रोकने का एकमात्र उपाय उसे कैद करना था। अवंती ने उसके साथ जो कुछ भी किया है, उसके बाद उसे जंजीरों में जकड़कर जेल में बंद करना न्याय का घोर अपमान होगा।”

विक्रमादित्य ने सिर हिलाया। “नहीं, माँ। उसे आज़ादी देना ही हमारे लिए जो कुछ हुआ है उसका प्रायश्चित करने का सबसे छोटा उपाय है।”
“पर तुम जानती हो ना कि वह कहाँ जा रहा है?” माँ और पुत्र विशाखा के शयनकक्ष में अकेले थे। गृहिणी और दासियाँ कुछ समय के लिए कमरा खाली कर चुकी थीं, इसलिए उपश्रुति ने खुलकर बात की।
“उत्तर द्वार से उसका निकलना किसी को धोखा नहीं दे सका; यह बात वह खुद भी जानता है,” राजा ने सिर हिलाते हुए कहा। “वह अपनी जड़ों की तलाश में निकला है।”
और आप जानते हैं इसका क्या मतलब है। वह हमारे हर छोटे-बड़े रहस्य को जानता है। हर गुप्त द्वार, हर गुप्त सुरंग... उसे शायद हमारे हर शस्त्रागार में मौजूद तलवारों की सही संख्या भी पता है।
“मुझे पता है, माँ।”
उपश्रुति ने एक गहरी आह भरी। “उम्मीद है कि वह उन वर्षों की हमारी दयालुता को पूरी तरह से नहीं भूलेगा। शायद वह आपकी दोस्ती का इतना सम्मान करेगा कि हमें धोखा न दे।”
सम्राट ने कोई उत्तर नहीं दिया। तीनों दीपक टिमटिमा रहे थे और परछाइयाँ फर्श और दीवारों पर फैलती और हिलती-डुलती जा रही थीं। रात वैसे तो शांत थी। वे इतनी देर तक चुपचाप बैठे रहे कि महारानी माँ को नींद आने लगी और उनकी पलकें भारी होने लगीं। तेजी से पलकें झपकाते हुए वे चौंक गईं और अपने बेटे को अच्छी नींद की शुभकामना देने के लिए कुर्सी से उठने ही वाली थीं कि विक्रमादित्य ने उनकी ओर देखा।
“माँ, मैं इतनी बुरी तरह असफल क्यों हो गया?” उसने पूछा।
“क्या? मुझे समझ नहीं आ रहा कि कैसे…”
“मैंने उसकी रक्षा करने का वादा किया था।” विक्रमादित्य ने विशाखा के बेजान शरीर की ओर इशारा करते हुए कहा, “मैं इसमें असफल रहा। मैंने अवंती के लोगों को नुकसान से बचाने की शपथ ली थी। मैं उसमें भी असफल रहा। मेरा सबसे अच्छा दोस्त मुझसे न्याय मांगने आया था। मैं उसे न्याय नहीं दिला सका। मैं अपनी दोस्ती में असफल रहा। क्यों, माँ?”

“विक्रम, तुम अपने ऊपर बहुत कठोर हो रहे हो,” उपश्रुति ने सख्ती से, लेकिन स्नेहपूर्वक कहा। वह पलंग के चारों ओर घूमकर राजा के पास खड़ी हो गईं। उन्होंने उनके बालों को सहलाया और उनका सिर अपनी ओर खींचकर उन्हें प्यार से गले लगा लिया। “जो कुछ भी हुआ, वह तुम्हारे वश में नहीं था। विशाखा और अवंती के लोगों के साथ जो कुछ भी हुआ, वह देवताओं और असुरों के लालच का परिणाम था। और कालिदास… इसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं थी, पुत्र। तुम तो वहाँ थे ही नहीं। तुम तो उस समय राजा भी नहीं थे।”
“मैं अब यहाँ हूँ, फिर भी असफल हो गया। मुझे डर है कि सर्वज्ञ ईश्वर ने मुझ पर जो भरोसा जताया है, उसे निभाने में मैं अगली बार असफल हो जाऊँगा।” सम्राट ने विशाखा का हाथ धीरे से वापस पलंग पर रख दिया। फिर उन्होंने उपश्रुति के हाथों को अपने हाथों में लिया और उनकी ओर देखते हुए कहा, “माँ, अचानक सब कुछ बिखरने क्यों लगा है?”
“देवी ने हमें ग्रहण के बारे में चेतावनी दी थी। यह शायद सूर्य का अंधकार है।”
थकी हुई सी हल्की सी सहमति में सिर हिलाते हुए विक्रमादित्य ने अपनी माँ के हाथ छोड़ दिए और अपना सिर उनके कंधे पर टिका दिया। उपश्रुति की हथेली उनके माथे पर फिरी और चिंता की लकीरों को सहला दिया। सम्राट ने विशाखा की आँखों में देखा, अपने पति की चिंताओं से दूर। क्या ज़ो एरामी ने सचमुच निषाद के दरबार में नरसंहार का आदेश दिया था?
“कौन जानता है कि ग्रहण के कम होने से पहले कितना अंधेरा हो जाएगा,” उसने हैरानी से कहा, “…अगर यह कम होता भी है तो।”

* * *

समय ढलने के बावजूद, इंद्र की आँखें चमकती और निर्मल थीं, जब उन्होंने गरुड़ द्वारा शुक्राचार्य की सारी बातें सुनीं जो उन्होंने देवताओं से साझा की थीं। जैसे-जैसे वे सुनते गए, महापुजारी के प्रति इंद्र की प्रशंसा बढ़ती गई, और उन्हें यह स्वीकार करना पड़ा कि शुक्राचार्य को अपना दरबारी न चुनकर देवताओं ने शायद गलत निर्णय लिया था। मानव राजा के विरुद्ध महागुरु की रणनीति अनुकरणीय थी, और इंद्र के मन में यह विचार आया कि वीषाद के खंजर की खोज में उन्हें इससे बेहतर सहयोगी नहीं मिल सकता था।

इस विचार की विडंबना पर उसके होंठ ऊपर की ओर मुड़ गए। शुक्राचार्य कोई सहयोगी नहीं थे। केवल विवशता ने ही उन्हें एक साथ लाया था और एक-दूसरे के दुश्मन बनने से रोक रखा था। जिस क्षण सहयोग की आवश्यकता समाप्त हो जाएगी, वे फिर से कट्टर शत्रु बन जाएंगे।
“तो महागुरु ने जिस दरार की बात की थी, वह सचमुच हो गई है,” उसने संतुष्टि से अपनी जांघ थपथपाते हुए नारद को एक चौड़ी, विजयी मुस्कान दी। “नौ मोतियों को बांधने वाला धागा टूटना शुरू हो गया है, जैसा कि महागुरु ने वादा किया था।”
“महागुरु कहते हैं कि राजा के दरबार में उथल-पुथल मची हुई है और अगला कदम उठाने का यही सही समय है,” गरुड़ ने कहा। “वे शीघ्रता बरतने का आग्रह करते हैं ताकि हम महल में व्याप्त पीड़ा, भ्रम और निराशा का लाभ उठा सकें।” “ज़रूर।” इंद्र ने गरुड़ की बात को अस्वीकार करते हुए सहमति जताते हुए सिर हिलाया। फिर नारद से पूछा, “क्या हमें गंधर्वसेना के बारे में कोई खबर मिली है?”
“राजकुमार पहले से ही यहाँ हैं, महाराज। वे नीचे आपका इंतजार कर रहे हैं।” चलिए उनसे मिलते हैं।
दोनों देवता अंतहीन गलियारों से गुज़रते हुए और अनगिनत सीढ़ियों से उतरते हुए एक विशाल गैलरी में पहुँचे, जहाँ से एक विशाल, चमकीला फव्वारा दिखाई देता था। फव्वारे से पानी सफेद धुएँ की तरह ऊपर उठता, उबलता हुआ नीचे बने तालाब में गिरता, जहाँ चमकीले रंगों की मछलियाँ लहराती फर्न और नदी की घास के बीच तैर रही थीं।
एक आकृति फव्वारे के पास खड़ी थी, मछलियों को निहार रही थी, उसकी पीठ इंद्र और नारद की ओर थी। उनके कदमों की आहट सुनकर देव मुड़े और उन्हें देखकर उन्होंने प्रणाम किया। सीधे खड़े होकर उन्होंने इंद्र की ओर देखा, जिन्होंने देव को देखकर हल्की सी मुस्कान के साथ स्वीकृति का भाव व्यक्त किया। लंबा और सुगठित शरीर वाले देव में एक सहज, शांत भाव था जो स्त्रीत्व के समान था। कोमल, भूरे बालों की लटें उनके गोरे चेहरे को घेरे हुए थीं, जो यौवन से परिपूर्ण था। चेहरे की सभी विशेषताएं स्पष्ट और तीक्ष्ण थीं, मानो किसी कुशल मूर्तिकार ने बलुआ पत्थर से तराशी हों। उनकी हल्की भूरी आँखों

□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□, □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□

□□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□□

□□□□□□□□, □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□□□-□□□□□□ □□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□□, □□□ □□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□□□

□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□ □□□□□□, □□□□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□□, □□□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□ □□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□

*****□□□□□□ 2 □□ □□□*****

sjeet

"Flawlessly clubs fiction with Indian mythology" —DNA

VICTORY IS TEMPORARY.
THE BATTLE IS ETERNAL.

Vikramaditya and his Council of Nine have fought valiantly to repel the rampaging hordes from Devaloka and Patala—but Avanti has been brought to its knees. Ujjayini lies battered; its citizens are scared, and morale is badly shaken. Meanwhile, the barbaric Hunas and Sakas are gathering on the horizon, and cracks are emerging between the allied kingdoms of Sindhuvarta...

The only silver lining is that the deadly Halahala is safe. For now.

Bent on vengeance, Indra is already scheming to destroy Vikramaditya, while Shukracharya has a plan that can spell doom for the Guardians of the Halahala. How long can the human army hold out against the ferocity and cunning of the devas and asuras? And will Vikramaditya's love for his queen come in the way of his promise to Shiva?

SHATRUJEET NATH is the creator of the runaway national bestseller series Vikramaditya Veergatha, a four-book mytho-fantasy arc which comprises *The Guardians of the Halahala*, *The Conspiracy at Meru*, *The Vengeance of Indra* and *The Wrath of the Hellfires*. Described as "a new face to Indian mythology" by *DNA*, Shatrujeet writes for movies and web shows as well. He is also the author of *The Karachi Deception*, an Indo-Pak spy thriller.

JAICO BOOKS
www.jaicobooks.com Fiction

ISBN 978-81-8495-887-4
9 788184 958874
J-2368

Cover Illustration: Sarthaki Ambekar